धीरे से पूछा।

—कौन कहता है ? क्यों, मीत को क्यों बाँधेगा ?

आँगन की सीढ़ी से उतरते हुए, जित्तन बाबू ने कहा—रामपखारनसिंह कहता है···।

ताजमनी ने माथे पर कपड़ा डालने की चेष्टा की। मीत ने आँचल खींच लिया दाँत से ! प्रसन्नावस्था में ही कभी-कभी रामपखारनसिंह की रखी हुयी पगड़ी को दाँत से पकड़ कर खींचता-दौड़ता है ! और, रामपखारन-सिंह दोनों हाथ जोड़ कर आरजू करता है—ए, महराज ! ई कूल अंग्रेजी दिल्लगी बूढ़ा आदमी से काहे करते हैं ! मीत महाराज !

मीत की हरकतों को देख कर ताजमनी के ओठों पर एक मीठी सी मुस्कु-राहट कढ़ आई !···जित्तन बाबू को याद आयी, वह भी बचपन में माँ का आँचल खींच-खींच लेता था !

सामबत्ती पीसी को हवेली के अन्दर जाने का पूरा हक है। लेकिन, मीत किसी को नहीं आने देगा। बॉख, बॉख, बॉख !!

सामबत्ती पीसी ड्योढ़ी के बाहर जाती हुई बोली, परसाद उरसाद चढ़े तो हमारा हिस्सा रखा रहे। हाँ !···जितना-सा देखा है, वही काफी है साम-बत्ती पीसी के लिये। चार दिन का खुराक !

ताजमनी, सीढ़ी पर खड़े जित्तन बाबू के सामने बैठ कर पाँच दीप सजा रही थी। जित्तन बाबू अचरज से देख रहे थे··· । लेकिन, सामबत्ती पीसी के मुँह से उपर्युक्त दृश्य का वर्णन सुनकर जयवन्ती ने चहारदीवारी की एक छेद से झाँक कर देखा—सुन्नरि नैका का पाट तो अन्दर में हो रहा है !

मलारी ने कहा, छेद से जरा हँटो तो मैं भी देखूँ ?—ठीक कहती है तू। देर-पूजाई कर रही है, सुन्नरि नैका।

गेस्ट हाउसके सामने, बारामदे पर ऑगनाई में दर्जनों लोग खड़े हैं !···
औरतें दल बाँधकर आ रही हैं—गाँव में किसको नौ मन तेल होगा, जो
राधा का नाच देखेगा, दिखायेगा ?

—नौ मन तेल हो भी तो क्या ? मन में हुलास नहीं किसी के ।

—आखिर, रोशन बिस्वाँ के बाप का, रेंड़ी के तेल से जमाया हुआ पैसा
डकैत ही ले गया !

—रघ्घू बूढ़ा नेम-टेम करके व्यासगादी पर बैठेगा । कुंड में नहाने गया
है ।

व्यासगादी सजी हुई—आस पास बलते दीपों की माला ! सामने धूपदानी
में धूपकाठ की बुंडी सुलग रही है ।

जित्तन बाबू के मन के पर्दे पर एक ऋषि की मूर्ति उभरती है और मुखर
हो उठती है···ग्राम्य गीति-कॅथा के काव्य हिसावे ग्रॅहण करिते गेले, ताहार
संगे-संगे, मॅने-मॅने; समॅग्र ग्राम, समॅस्त लोकालय के जॅड़ाइया लॅइया पाठ्य
कॅरा परमावश्यक ! तारपरे, देखवे—तोमार ॲन्तरे-ॲन्तरे जन्तर बाजिया
उठिवे ! वर्बर-संगीते सहज सुरेर सन्धान···!!

नहा धोकर, हल्दीसे रंगा हुआ नया कपड़ा पहन आया है रघ्घू रामायनी !
जित्तन बाबू ने हाथ का सहारा देकर व्यासगादी पर बैठा दिया । गले में
माला डाल दी !···ललाट पर गोपी चन्दन ! पटसनकी तरह सुफेद दाढ़ी ।
आधी देह अर्धांग की मारी हुई । सन्तों की-सी सूरत ! अर्धांगवाली बाँह से
सटी लटक रही है, छोटी-सी सारंगी ! आधे अंग की पूर्ति करती हुई,
काठ और चाम की बनी सारंगी !

नैका-डीह पर पाँच बड़े-बड़े चिराग जल रहे हैं । गाँव से पच्छिम, दुलारी-
दाय के किनारे···।

—आँख मूँदकर गुरु को सुमर रहा है, शायद !

हुँ-ऊँ-ऊँ ! रघ्घू ने गुरु मन्तर गुनगुनाया । सूखी सारङ्गी ने गुरु मंतर के

सुर पर एक मोटी कारीगरी की—कुँ-हुँ-ऊँ-कुँकुँ-ऊँ !

अंतर के जंतर झंकृत हो उठे !

—जै, मैया सरोसती ! रघ्घू के मुँह से पहली वाणी निकली !

साठ साल से साधुओंके सत्संग में रहकर उसने जो भाषा सीखी है, उसी में कथा का गद्य भाग सुना रहा है !

ट्रिप-टि-रि-रि-रि-रि ! सुरपतिने टेप-रेकार्डर का बटन ऑन किया ! ट्रि-रि-रि-रि···!!

—कि-ई, सज्जन-दुरजन सब समतूल—मैया सरोसती के दरबार में क्या तुलसी और क्या रघुआ जैसा गाँव का गड़रीका फूल ! कि-उ, साँच-झूठ में कछुओ ना जानू, जो गुरु सपने में सिखा गये, सोहि अच्छर-अच्छर बखानू !···बहुत पुरानी बात रे भाई, जाने गंगा माई । और, जाने परानपुर गाँव की प्यारी नदी दुलारीदाई ! ऐसा दुरदिन कभी न आवे ! ऐसे दुरदिन की चर्चा भी है पा-ा-ा-प ! मगर गुरु के हुकुमसे सब कुछ माफ ! ऐसा दुरदिन···!

सुरपति ने बगलवाले बरामदे पर पड़े चिक की आड़ में बैठी ताजमनी पर एक नजर डाली । नाक के कील का पत्थर झलका । मीत ताजमनी की गोद में बैठा है—चुपचाप !

···ऐसा दुरदिन आया भाई ! कि, अचानक इस धरती को लकवा मार गया ! नदी-तालाब कूप, सभी गये सूख ! पानी चला गया पाताल ! गाछ-बिरिच्छ सब झुना के गिर पड़े । देश में महाकाल पड़ गया । हाहाकार मच गया एतराफ में । हजारों-हजार लोग रोज मरने लगे ! अरे, धरती कोख धरती का बेटा, धरती में मिल जाये ! फिर भी पानी का पता नहीं ! पानी कहाँ मिले रे दैवा ?

रघ्घू रामायनी ने दम बाँधने के लिए विराम दिया ! सुरपति ने टेप-रेकार्डर का बटन ऑफ किया ! पिट्-क्लिक !!

भीड़ बढ़ती जा रही है। लालटेन हाथ में लटकाये, खड़ाऊँ खटखटाते आ रहे हैं भिम्मल मामा। दक्खिनवाले महारपर कोई टार्च भुकभुकाता आ रहा है। आम के बाग में कोई पुकार कर कह रहा है—रेडियो नहीं, रेडियो नहीं। रघ्घू दास सारङ्गी पर महराय गा रहा है, महराय!

ट्रिप-टि-रि-रि रि-रि—

कि, तीसरे दिन इस हवेली इलाके के नायक सुन्दर नायक ने, जल बिनु तड़पते लोगोंको पुकार के कहा—हो जैवार! सुनो, कान पसार! मोरी छोटी बहिनियाँ सुन्दरि नैका रोज गुनवले पाताल से पानी मँगाकर जैवार भर के लोगों को पिलावेगी। लेकिन, पहले उसको आशीख दो सब मिल कर कि देवकुल में उसका ब्याह हो-ओ-ओ-ओ!।…

सुननेवाले के चेहरे पर प्रसन्न आतंक की रेखायें अंकित हैं!…पातालपुरी के एक चिल्लू पानी से क्या हो? सुनो न, कैसी लीला रचावेगी!

…सुन्दर नायक! बड़ा भारी गुनियाँ। नेपाल में किरात मंतर सीखकर आया हुआ गुनी! और, भाई से बढ़कर गुनवंती, उसकी बहिनियाँ—सुन्दरि नायका! कामरूप कामख्यासे गुन सीख कर आई हुई! उसको देवकुल का दुलहा चाहिये! सुन्दर नायक ने जिला-जैवार के लोगों से कहा—हो, पंचो! मोरी बहिनियाँ सुन्दरि नैका ने किया है एक उपाय! दंता राकस को फुसला कर प्रेम की डोरी में बांधा है। इस इलाके के एक सहस्र सुन्दरियों में सुन्दरि नैका मोरी बहिनियाँ—एक! भगवान उसकी रखें टेक। भला, उसको राकस कुल में जाने दूँगा?…पाँच रात में पाँच कुंड बनवायेगी, पाँच महापोखरों से पुरइन मँगवायेगी, पाँच महानदियों की मछलियाँ। सहस्रों पुरइन फूल में से एक पर आकर बैठेगा कोई देवपुत्र। फिर उसी देव के साथ मेरी बहिनियाँ ब्याही जायगी हो-ओ-पंचो!…

पिट्-क्रिक!

परानपुर हवेली को आहाते में, गेस्टहाउस के सामने पहली बार इतनी

बड़ी भीड़ जमते देख रहा है सुरपति।···यहाँ तो कोई दिन में भी नहीं आते!

रामपखारनसिंघ बड़ी दरी बिछाकर, खड़े लोगों को इशारे से बैठने को कह रहा है—चुपचाप सुनो। बोलो—भूँको मत! फिलिंग—रिकाट हो रहल वा।

ट्रिप-टि-रि रि-रि···!!

···सो, हो पंचो। राकसकुल में नहीं जाने देंगे बहिनियाँ को। धोखा से काम लेंगे। पहले, दंता राकस को प्रेम के बजर-बाँध में फँसने तो दो! इसलिये, कुछ देखो भी अपनी आँख से तो मोरी बहिनियाँ का कुचाल मत मानना हो लोगो!···फँस गया दंता सुन्दरि नैका के फाँस में! गाँव से पूरब! परपट परती पर!! चाँदनी रात में। बालूचर के किनारे दंता के दाँत चमके—ही-ही-ही-ई-ई-ह! हम हारल रे-ए-ए-ए—हारला आ! आँख मिचौली, लुकाचोरी खेल में दंता गया हार। हार कबूल कर हँसता है दंता—ही-ही-ही-ही-ई-ह! हम तैयार रे-ए-ए मानुस छोरी मोह-नियाँ—मुन्नरि नैका! सत्त करके बोला—ठीक्के बात, ठीक्के बात!! कुण्डा खोबैया करबे-करबे, पानी से भरबे! तोर परपट परती धरती पर पानी कलबुल बोले-हे-हे-हे-ए-ऐसा पानी भरबे!!···कुँ-ऊँ-हुँ···।

नम्मां नैका मुन्नरि सुन ले मोर बचनियाँ रे नाम्,
नम्मां पाताल फोड़ी आनब हम पनियाँ रे नाम्,
नम्मा पाँच किसिम के लायब पुरइनियाँ रे नाम्,
···नामां पूरन करब अपनो कहनियाँ रे नाम,
मुन्नरि नैका रे-ए-ए, जोड़लो पीरित जनि तोड़े रे-ए,
हम्हुँ मरि-जा-य-बा-रे-कि-इ-र!
कुहुँ कुँका-आँ-आँ!!

···अब, चला है दंता सरदार उत्तर राज। गढ़दंता की ओर! गढ़ में पहुँच कर अपनी राकसनी हिरन्नि रानी का मुँह भी न देखा। और न

बेटे की तुतलाती हुई बोली सुनी। दिया है सिंघा उठा के फूँक—ई-हिं-ई-ई !! हुँय-हुँय-हुँय-हुँय-हुर्र-र्र-र्र-र्र !!…धू-धू-धू-धू-धू-धु-र्र-र्र-र्र-र्र-र्र !!… कुँय-कुँय-कुँय-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ…!!

सारंगी के झनक तारों पर सिंघा की बोली, मानो चालीस जोजन दूर से आकर हनहना गई—कुँ-हुँ-हुँ-हुँ !!

जित्तन बाबू और सुरपति की आँखें आपस में मिलीं…अपूर्व ?

रघू रामायनी सुननेवालों को चेतावनी दे देता है—छोटे-छोटे बच्चे-बुतरु को सँभालिये !…जंगल-पहाड़, खोह-खंधको में शिकार करते हुए दो सहस्र राकसों के कान खड़े हुए—गुहार सुर्र-र्र-र ? रे-ए-ए ! गुहार-सुर्र सिंघा बजा रे बजा !!…साहुर्र-र्र, साहुर्र-र्र-र्र करते सभी राकस गढ़दन्ता में आ पहुँचे।

रे-सर्रदार-रे सर्रदार
की दरकार, की दरकार ?
कुँहुँ-कुँक्कुँ…कुँहुँ-कुँक्कुँ…!

बोला दन्ता सरदार—रे-भैर्रा-आ-आ-ह ! दन्ता सरदार के घर में ना भया खटपट, ना घटी खर्ची। दन्ता सरदार पर नहीं तानी किसी ने बर्छी ! दन्ता का तो छूट रहा है परान, मानुस छोरी मोहनियाँ के लागला मोहनबान रे भैर्र-आ-ह !…सभी राकसों ने एक दूसरे को देख कर सूँघा—हुँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ ? मानुसगन्ध, मानुसगन्ध !!

कुँहुँ-कुँक्कुँ…
भैर्रा परानपुर के नैका सुन्नर गुनियाँ रे नाम्,
भैर्रा तेकरो से तेजी तँ बहिनियाँ रे नाम्,
भैर्रा पाताल खोदि रोज पीये पनियाँ रे नाम्,
…भैर्रा दाँत छटके बदरा के बिजुरिया रे नाम्,
भैर्रा सुन्नरि छहके सोना के मछरिया रे नाम्,

भैरों मोरा पर मारली मोहनियाँ रे नाम ,
सुन्नरी नैका रे-ए-ए, जोड़लो पीरित्त जनि तोड़े रे-ए,
हम्हुँ मरि जा-इ-बा-आ-रे-कि !!

…मत रोवे सरदार मत रोवे । गड़दन्ता के राकस के रहते सरदार रोवे ? पाँच कुण्ड केर क्या बात ? परानपुर परती खोदि के समुद्दर बनैवे रे-ए-ए ! चल रे भैरों-आ-आ !!…धुर्र-धुर्र-धुर्र-धुतु-धुतु-धुत-तू-उ-उ-उ ।…कुँ-हुँ ऊँ !!

रोती रह गई हिरन्नि रनियाँ, हुलसता रहा बेटा दन्ता का–हाथी का बच्चा जैसा ! बाप ने उलट कर देखा भी नहीं । रो-रो कर बोली हिरन्नि रानी अपने बेटे से—मत रोवे ! मानुस छोरी मइयाँ लाने गया है पिता तोरा ! सोने के कटोरे में खीर भर कर—चकमक चान को बुलावेगी आकाश से तेरे लिए । तोर मानुस छोरी मइयाँ…।

इधर, एक ओट आकाश और दूसरा पाताल—मुँह बाकर दौड़े एक सहस्र राकस । धरती डोल गई भाइयो…धर-धर-पट-पट, पट-पट-पाट, धड़िंग

धड़िंगा गिड़पत गाग् :

कुहाँ-कुंकाँ…
’जी, धड़-धड़ धड़के धरती माय,
धड़क-धड़ा-धड़—हाय रे बाप,
थरक-थरा-थर थारिया जैसन—
थर-थर काँपे चान;
’कि, पातालपुरी में लुकनियाँ पनियाँ रे-ए-ए,
’कि रे खुआ रे-ए-ए, जगहो खोजि न पावे !
कुँकाँ-कुहाँ…

सुरपतिने मशीनका बटन ऑफ किया । रघ्घू रामायनी के लिए जित्तन बाबू अपने हाथ से चाय तैयार कर रहे हैं । भिम्मल मामा प्रसन्न हैं—गूड-बेटर-बेस्ट, अच्छा-बेहतर, सर्वश्रेष्ठ ! …पूछो मुझसे, आस्क मी ! मैं गाँव

में चक्कर लगा आया हूँ। सारे गाँव का बच्चा-बच्चा जग गया है। गाँव में पेनिक पनपना गया है मिस्टर कथा-कलक्टर! हर दरवाजे के पास कुछ मर्दों का झुंड, हर पिछवाड़े में खड़ी औरतों का गोल। सारंगी की बोली तो···।

—ओ? तुमने ढकनकल भी लगा दिया है? धुनफीताबन्दी हो रही है?

सुरपति ने मुस्कुरा कर कहा—जिद्दा! मामा हर पोर्टेबल मशीन के लिए ढकनकल शब्द दे रहे हैं और टेप रेकॉर्डर के लिए—धुनफीताबन्द!

बाहर, भीड़ से किसी ने कहा—बाबू! अभी खतम मत करवाइये। हर टोले का लोग दौड़ा आ रहा है।

दूसरे ने हिम्मत करके कहा—बन्द मत करवाइये।

औरतों की टोली से सामबत्ती पीसी ने कहा—एको कुंड तो खोदाइये!

रामपखारनसिंघ को सर्दारी करने का मौका मिला—चुप! फिलिंग रिकाट में बोली चल जाई···।

ट्रिप-टि-रि-रि-रि···।

'कि पहुँचे सभी राकस! दुलारीदाय के बरदिया घाट के पास—सुन्दरि नैका ने पाँच जगह दीप जला कर पहले ही रख दिया था! इधर, धरती डोलती रही, आकाश में चाँद चाँदीके थाल जैसा नाचता रहा। उसी ताल पर, सुन्दरि नैका हवेली के पिछले दरवाजे से नाचती हुई आयी और अपनी एक झलक दिखा दी, सभी राकसों को! किलकिला उठे खुशी से एक सहस्र राकस—मानुसछोरी मोहनियाँ रे-ए-ए! आँख मारे-ए-ए!!··· खुशी से जयडम्फ बजाकर नाचने लगे एक सहस्र राकस। ताल पर एक-साथ एक सहस्र राकस धरती पर दाँत मारते—खचाक्। पातालपुरी में कच्छप भगवान की पीटपर दाँत बजते—खट्टक्! पानी को ऊपर आना ही होगा :

ढाक् ढकर-ढाक् ढकर···

कोड़ भैर्रा-र्रा-आ-ह ! फोड़ भैर्रा-आ-ह !!
भरी राति में खोदाय, पनियाँ छह-छह छहाय
नदिया देबो वहाय-य-य !
भोर में फेर देखबो सुन्नरि कन्ना—
हे-य-आँख मारे !
होय दाँत मार-रे-ए-ए···खच्चाक् !
खट्टक् !! ढाक्-ढकर, ढाक्-ढकर··
कुँह कुँकाँ, कुँह कुँकाँ !!

—कृपया पूर्णविराम ! बटन ऑफ कीजिये कथा-कलक्टर-साहब। उधर देखिये क्या हुआ ?

—कोई बेहोश हुई, शायद।

एक औरत चिल्लाकर बोलने लगी—बाबू ! बन्द करिये। दु-तीन कम कलेजा वाली लड़की के कलेजे में डर समा गया है। बोलती है, हवेली के चारो ओर दैत्त दौड़ रहा है किलबिला कर ! इन लोगों को बरंडा पर जगह कर दीजिए !

भूमिहार टोली की एक औरत ने कहा—कैयट टोली की दो-तीन छँहक-बाज छौंड़ी और रैदास टोली की मलारी ! जहाँ जायँगी सब, एक-न-एक ढंग पसारेगी ही।

—कितना बढ़िया गा रहा था ! हर जगह ढंग देख कर देह जलने लगती है।

—बरंडा पर काहे, अराम कुर्सी पर जाकर बैठो न !

औरतों की मंडली में लड़ाई शुरू हुई। कैयट टोली की घेघी फुआ और गंगोला टोली की पनबतिया ने एक ही साथ जवाब दिया—छँहकबाज छौंड़ी हर टोले में है। टोला-टोली मत करो नहीं तो आज उघार कर रख देंगे !

ब्राह्मण टोली की आनन्दीदाय बोली—काँय-काँय क्यों करती है ?

भिम्मलमामा साष्टांग दण्डवत कर धरती पर लेट गये, औरतों की टोलियों के सामने वाले बारामदे पर। हाथ जोड़े उठ खड़े हुए—हे देवियो ! दुर्गाओ ! कालियो ! करालियो। करौतियो ! शान्तियो, कृपया शान्त हों !

—हि-हि-हि ! हा-हा-हा-हा !! दुर्, भिम्मलमामा तो हर जगह भगल पसारते हैं। अटर-पटर बोलते हैं। चुप चुप, नहीं तो ऐसा नाम चुनकर रख देंगे कि गाँव में मशहूर हो जाओगी। किसी को नहीं छोड़ेंगे, किसी भी टोले का क्यों न हो। चुप मलारी ! सेमियाँ !

—सुनो, शुरू हो गया। चुप। फिलिंग···!

'रातभर खोदते रहे दन्ता सर्दार के राकस ! कोड़ भैर्रा-र्रा-आ ह !

'भोर में नाचती आयी सुन्दरि नैका। देखा, एक कुंड-पानी से लाबेलाब है। कुंड के पानी में पूरनिमाँ का चाँद, सोने-चाँदी को एक साथ घोलने के लिए रुक गया थोड़ी देर—उस ताड़ की फुनगी के पास ! नाची सुन्दरि नैका—छम्म-छम्माँ-आँ ! रात भर के थके राकसों को मानो महुए के रस में मधु घोल कर पिला दिया गया ! झूम उठे—छम्म-छम्माँ !

करिके सोलहो सिंगार
गले मोतियन के हार
केशिया धरती लोटाय
चुनरी मोती बरसाय
चुन्नी-पन्नाँ बिखराय-य, छम्म-छम्माँ नाचे सुन्दरि नैका !
आँख मारे !···रे भैर्रा-आ-ह-दाँत मा रो-ओ !

'कुलबुला कर पानी के सोते परती पर दौड़े—कलकल-कलकल ! कुलकुल-कुलकुल !!···सारंगी पर एक महीन कारीगरी की रघ्घू रामायनी ने, पानी की कुलबुलाहट को स्वर मिला। झनक तार पर लहरें आईं !

'कि देस-विदेस के किसिम-किसिम के, रंग-बिरंग के पुरइन सूरज की किरनों

के परस से खिल उठे। कुंड में सोने की मछलियाँ छहकने लगीं। जल विनु तड़पते लोगों ने कुंड में नहा-नहा कर जलपान किया। तृप्त होकर आशीर्वाद दिया जैवार भर के पंचों ने—तोहर सब दोख माफ। देवकुमर दुलहा मिले सुन्दरि नैका को!

···रघ्घू रामायनी की सारंगी स्पष्ट आखर बोलती है! राकसों का गीत गाते समय उसके चेहरे की ओर गौर से देखा था? लगता था, उसके पोपले मुँह में दो बड़े-बड़े दाँत उग आये हैं! अर्धांग से अधमरी उँगलियों की कारीगरी! 'दाँत मार रे' कहने के बाद खच्चाक्, फिर खट् की आवाज? सारंगी के काठ पर उँगली मार कर ध्वनि पैदा करता था।···पातालपुरी में कच्छप महराज की पीठ पर दाँत बजते—खट्! सारंगी के तारों पर नौ सौ घुँघरू झनकते थे—सुन्दरि नैका के नाच के साथ!!

—दाँत मारे? उसकी याद मत दिलावे कोई। देह सिहर उठती है।

—भोर में फेर देखिबो सुन्नरि कन्ना! राकसों को भी सुन्दर चीज सुन्दर ही लगती है। अहा-हा! कितनी लालसा? मानुसछोरी सुन्नरि कन्ना उनकी सर्दारिन होकर जायँगी!

—एम्माँ-आँ-आँ! तूत गाछ तले कौन खड़ा है?

—तू हमेशा ढंग पसारती है मलारी। अपने भी डरती है, दूसरों को भी डराती है। कहाँ है कोई?

—मलारी को भी कोई दन्ता राकस लुका-चोरी खेलने के लिये बुला रहा है, शायद!

—अब, कल से तुम भी पाँच कुंडा खोदाओ मलारी!

सेविया दीदी जब बोलती है तो साफ बात—यह मलारी छौंड़ी जहाँ जायगी वहाँ आगे-पीछे ऐसे ही भूत-पिशाच, देव-दानव चक्कर मारेंगे। तूत तले तो सचमुच कोई है!

—मुझे क्यों दोख देती है सेवियादी। मैं खुद डर से मरी जा रही हूँ। देखो न···।

तूत तले खड़े व्यक्ति ने टार्च जलाया।

—ए! कौन भलामानुस है? छौंड़ी सब की आँख पर लैट मार कर चकचौंधी लगाता है?

एक लड़की ने दबी आवाज में कहा—जरूर बाबू टोली का कोई कलेजवा बाबू होगा।

—मामा ने ठीक नाम रखा है, कलेजवा बाबू!

तूत तले खड़ा आदमी बोला—इस झुंड में मलारी भी है?

—वही देखो!

—कौन है? मलारी बोली।···आवाज सुवंश की तो नहीं!

—मैं प्रेमकुमार दीवाना! बात यह है कि···।

—जो बात है सो दिन में नहीं हो सकती?

—तुम भी···याने पढ़ी लिखी होकर भी तुम थर्डक्लास गीत, महराय सुनने जाती हो!

—अकेले मैं ही पढ़ी-लिखी हूँ गाँव में? आप लोगों के मारे अब···।

सेविया दीदी ने कहा—क्या कहता है सो सुन ले पहले। रात में रास्ता रोक के जब कहने आया है तो जरूर कोई जरूरी बात होगी।

मलारी हनहनाती हुई, पगडंडी पर बढ़ गई—कल ही मैं इन्साफ करवाती हूँ, पाँच पञ्च में। क्या समझ लिया है लोगों ने?

दो कदम आगे बढ़कर, बगीचे से बाहर जाकर मलारी ने आवाज दी—
—बप्पा-आ-आ-हो!···बप्पा!

सभी औरतें खिलखिला कर हँस पड़ीं—प्रेम कुमार दीवाना तो तुरत अँधेरेमें बिला गया।—ही-ही ही! हा-हा-हा! नाम भी खूब रखा है अपना—

—परेमकु-मार दीमाना !

—ए, मलारी-ई, घोड़पाड़ा भागा। चुप रह।

—मंगनी सिंघ दीमाना रात भर सपना देखेगा—आँख मारे !

सुरपति की डायरी में कई पृष्ठों पर लाल रोशनाई से लिखी हुई पंक्तियाँ :

—आज परानपुर की पुरानी परती पर डेढ़ सौ पौधे, रोपे गये पहली बार !···अमलतास, जोजनगंधा, गुलमुहर, छोटानागपुर ग्लोरी, सेमल, आसन। तरह-तरह के पौधे !

एक पृष्ठ पर कटी हुई पंक्तियाँ : आज पहली बार ताजमनीदि से बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !

लिखा गया है : पवित्र सुन्दरता की प्रतिमा का मधुर मायामय स्वर सुना ! अन्तिम पृष्ठ पर रघ्घू रामायनी और सुन्दरि नैका गीत-कथा से सम्बन्धित बातें।···ताजमनीदि को कितना धन्यवाद दूँ बहुमूल्य प्राप्ति के लिए ?

लुत्तो हैरान है !···

···साला, क्या कहते हैं कि छोटे लोगों की बुद्धि भी छोटी। उस दिन महावीरजी का धुजा छूकर कसम खाई सबने। और, रघ्घू बूढ़े ने सारंगी पर रिंव-रिंव-रें-रें किया कि सब जाकर हाजिर हो गये, बालबच्चा सहित ! लुत्तो ने लक्ष्य किया है, जित्तन को एकबार नजदीक से देख लेने के बाद लोगों को न जाने क्या हो जाता है। आज सुबह से ही वह गाँव में घूम-घूम कर सुन आया है—चुपचाप।···अहा-हा, दूबर हो गए हैं जित्तन बाबू।

खबरदार ! मैं कहाँ जाता हूँ, नहीं जाता हूँ, क्या करता हूँ, यह सब पूछना है तो सीधे नैहर का रास्ता नापो।...तुम्हारे मगज में भगवान ने इतनी बुद्धि नहीं दी है। हाँ-हाँ, चली जाओ। बड़ा नैहर का गुमान दिखाती है, तो चली जा। लेकिन, याद रखो। यदि किसी दिन हम मिनिस्टर हुए, और भाई-बापको लेकर कभी आओगी तो हमारा चपरासी तुमको अन्दर आने ही नहीं देगा !

बिठैलीवाली डर से चुप हो गई।

लुत्तो को अब किसी पर विश्वास नहीं।...वीरभद्दर भी सुथनी आदमी है ! किसी से कुछ नहीं होगा। लुत्तो अकेला ही सब कुछ करेगा। ग्राम-पंचायत का चुनाव सामने है। यदि यही हालत रही तो जित्तन मुखिया हो जायगा, दिन-दिखाड़े। नहीं, इस तरह काम नहीं चलेगा।...

—जै हिन्द।

—कौन ? बालगोबिन ! आओ। मैं अभी तुम्हारे घर की ओर जा रहा था। ...क्या लीडरी करते हो जी ? अपनी जाति की औरतों पर भी तुम्हारा कोई परभाव नहीं। कोई परवाह ही नहीं करती है ? कोई भैलू नहीं तुम्हारा ? एक साथ परभाव, परवाह और भैलू वाली बात ने बालगोबिन के मुँह का थूक सुखा दिया। मुँह चटपटाकर वह बोला—सब टोले का यही हाल है।

—लेकिन, तुम्हारे टोल की मलारी तो जित्तन पर फिदा है। जित्तन पर ही क्यों, बाभन, रजपूत और भूमिहार टोली के लड़कों से जाकर पूछो ! सबको लेटर पर लेटर लिखती है। उसको सँभालो पहले। प्रेमकुमार दीवाना जी से पूछो जरा...।

बालगोबिन को लुत्तो की बात बुरी लगती है। कोई भी बात हो, औरतों पर बात फेंक देता है। पहले अपने टोले की लड़कियों को छान-पगहा लगावे। बालगोबिन बोला—उसके बाप को कहिये।

—तब, कर चुके तुम लीडरी। बाप की बात बड़ी या लीडर की ? बोलो ? जवाब दो, किसकी बात का ज्यादे पोजीशन है ? इसीलिए जब कुछ कहते

—हरगिज नहीं।

—तुम देख लेना ! रात में ही तो देखा, रघ्घू बूढ़े की सारंगी की बोली पर लोग इस तरह टूटे मानो परसाद बँट रहा है। दुश्मनी साधने के लिये आदमी सब कुछ कर सकता है। यदि वह थाना में पकड़ कर चालान कर देता कि चोरी या डकैती किया है, तब मालूम होता गीत सुनने का मजा !

—रघ्घू बूढ़े को बैकाट किया जाय पहले ! एक सोलकन्ह लीडर ने उत्तेजित होकर कहा—सोलकन्ह होकर वह हमारी बन्दिश से बाहर कैसे जा सकता है ? लुत्तो अपनी मिटिंग में किसी दूसरे को बोलने का मौका नहीं देना चाहता, कभी। लेकिन, गरुड़धुज झा को उसने कहा—और जो कुछ बोलना है, बोल लीजिये आप पहले।

—बोलना क्या है ? आज फिर देख लेना। दो घंटे के बाद ही। ज्यों ही सारंगी कुँकवाई कि···।

—हरगिज नहीं। हरगिज नहीं !! लुत्तो ताव में आ गया—झाजी ! देख लीजियेगा आप भी आज रात, बीच चौबटिया पर खड़ा होकर। एक चेंगड़ा भी नहीं जायगा। लुत्तो ने अपनी सोलकन्ह समिति के सदस्यों की ओर मुड़ कर कहा—क्यों जी ! बोलते क्यों नहीं तुम लोग !···जायगा एक चेंगड़ा भी ?

समिति में सन्नाटा छा गया। तब, लुत्तो ने फिर समझाना शुरू किया—सर्वे के समय इस संगठन का मीठा फल हम चख चुके हैं और चखनेवाले हैं। इस संगठन में जिन लोगों ने थोड़ा भी लामकाफ किया, कांग्रेस छोड़ कर सोसलिस्ट में गये, मिली जमीन उन्हें ? देखा ?

बालगोबिन ने कहा—जरा हमको फुर्सत दीजिये सभी पंच। हमारे टोले में न जाने क्यों बड़ा जोरावर झगड़ा शुरू हुआ है। सुनिये···।

सभी ने कान लगाकर सुना—हाँ। रैदास टोली में ही है यह झगड़ा !

—मलारी की आवाज है !

दीवाना ने कहा—लड़की बर्बाद हो गई। थी खूब चान्सवाली, लेकिन !

बालगोबिन की स्त्री, मलारी के पड़ोस की सुखनी मौसी के यहाँ कड़ाही माँगने गई—सुन्नरि नैका सुनने के लिये जाती हो क्या ? अब तो अपने टोले में ही सुन्नरि नैका की लीला होगी। देखना।

बालगोबिन की स्त्री से चमार टोली की सभी औरतें डरती हैं। बिना गंदी बात निकाले वह कुछ बोल ही नहीं सकती। सुखनी मौसी बोली—लीला कहाँ होगी, तुम्हारे मचान के पास ?

—मेरे मचान के पास क्यों ! तुम्हारे पड़ोस में ही होगी लीला। तुमको नहीं मालूम ? अरे ! बगल में ही चुह-चुह कर हिन्नूचागरमागरम पीते हैं लोग। तुमको एक भी कुल्फी नहीं मिली क्या ?

सुखनी मौसी ने कुछ नहीं समझा। बालगोबिन की स्त्री अभी-अभी कामेसर की दुकान गई थी, नून लाने के लिये। दुकान में गरमागरम चाह की बात चल रही थी,…गरमागरम !

मलारी ने बालगोबिन की स्त्री की धारवाली बोली को परख लिया। वह मन-ही-मन कछमछा कर रह गई। मलारी की माँ अब कैसे चुप रहे ? सुखनी मौसी के बगल में, पड़ोस में तो उसी की झोपड़ी है !—बगल में कौन चाह की दुकान है, यहाँ ? क्या बकती है ?

कड़ाही लेकर सुखनी मौसी के आँगन से निकलती हुई बोली बालगोबिन की बहू—खाली चाह नहीं, हिन्नूचागरमागरम !

मलारी की माँ को बालगोबिन की बहू की बात में मांस की गन्ध लगी, मानो। इस टोली में वही सबसे गई गुजरी है, क्या ? उसकी बेटी को कल ही पचास रुपये मिले हैं, मुसहरा के। बालगोबिन को जब कोई कांगरेसी बात समझ में नहीं आती है तो वह भी दौड़ कर मलारी के पास आता है—कागज पढ़वाने। और उसकी बहू कमर में साड़ी लपेट कर झगड़ा का बहाना ढूँढ़ती है ? आँगन से निकल कर बोली मलारी की माँ—ए !

बालगोबिन नहीं है घर में क्या ?

—नहीं है घर में। मिटिन में गया है। बालगोबिन की स्त्री अपनी झोपड़ी की ओर जाती हुई बोली—मैं बकती हूँ तो अपनी मास्टरनी बेटी से कहो न, हाथ में बेंत लेकर आयगी मारने।···अब तो शहर की हवा खा आई है।

मलारी की माँ के समझ में नहीं आई बात। बात की छोर पकड़ने के लिये उसने मलारी से कहा—क्या है री मलरिया ? क्या कहती है बालगोबिन की बहू, जरा बूझ तो ! मलारी इङ्गलिश-टीचर खोलकर 'वह मेमना मेरा है' रट रही थी। बोली—मैया ! उस दिन मैं एक टैन से शहर अररिया-कोठ गई थी। जीवन बीमा करवाई हूँ न ! सुवंश बाबू बीमा कम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोठ अस्पताल की डाक्टरनी से जाँच करवा कर तब जीवन बीमा होगा। इसलिए······।

मलारी की माँ ने पूछा—किसके साथ गई थी ?

मलारी का बाप महीचन दारू पीकर लौटा—साला ! कलाली में हिन्नू चा गरमागरम सुनते-सुनते मिजाज गरम हो गया। कहाँ, मलारी की माँ ? कहाँ है मलारी ?

मलारी का मुँह पीला पड़ गया ! अब, तीन दिन वह क्या पढ़ाने जा सकेगी ? हल्दी और चूना गरम करके तैयार रखे। मलारी थर-थर काँपने लगी !···बप्पाका हाथ तो ढोल बजाया हुआ हाथ है।

मलारी की माँ, तब तक एक चाँटा जड़ चुकी थी मलारी के गाल पर—मैं बूढ़ी हो गई, लेकिन आज तक टीशन के बाजार पर भी बिना किसी को संग लिये नहीं गई। और तू मास्टरनी होते ही उड़ने लगी ?···बाप को जवाब दो जाकर !

—कहाँ रमदेवा ? कहाँ है तुम्हारी माँ ? बुलाओ सभी को। इधर चोट पर लाओ, अभी।

मलारी की माँ को हठात् अपनी बेटी पर दया उमड़ आई, गला दाब कर बोली—बोल, अब क्या जवाब दोगी बाप को ?

—क्या कहते हो मलारी की माँ को ? क्या हुआ ?

—झोपड़ी के अन्दर से पूछती है कि क्या हुआ ? बाहर निकल जरा, दोनों को अभी हिन्नूचा पिलाता हूँ, गरमागरम।

मलारी की माँ झोपड़ीसे बाहर निकल कर बोली—तुम बड़ा अबूझ हो। बे-बात की बात···।

—बे-बात की बात ? लगाऊँगा अभी ऐसा लात कि··· !

—धीरे-धीरे बोल नहीं सकते ?

—क्यों गई थी अररिया कोठ ? पूछ, अपनी बेटी से। किसके हुकुम से गई थी ? किसके साथ गई थी, पूछ !

—सरकारी काम से गई थी। सरकारी नौकरी करती है, सरकारी हुकुम नहीं मानेगी ? गाँव के लोगों का कलेजा जलता है। बे-बात की बात नहीं बोलेंगे, तो कलेजा ठंढा कैसे होगा ?

बालगोबिन अरजन्टी मिटिंग छोड़ कर दौड़ा आया है—क्या है महीचन ? मलारी की माँ ! तुम लोगों के चलते मेरी मेम्बरी मारी जायगी, देखता हूँ।

महीचन ने, नशे में मलारी की माँ की आँख के इशारे का कोई मतलब नहीं समझा। मलारी की माँ चुप रहने को कह रही थी। लेकिन, महीचन ने चिल्लाना शुरू किया—ए ! बालगोबिन। बड़ा जात का लीडर बने हो ! दूसरी जात के लोग इज्जत खराब कर रहे हैं···।

—दूसरी जाति के लोगों को दोख मत दो ! बालगोबिन आज साफ-साफ कह देगा—कहाँ है मलारी ? सामने आकर सवाल का जवाब दो !

टोले के लोग महीचन के आँगन में आकर जमा होने लगे। बजाता पंचायत बैठ गई तुरत।···हाँ, हाँ। मार पीट, हल्ला-गुल्ला नहीं। जब मलारी

अपने माँ-बाप के कस-कब्जा में नहीं, तो जात की पंचायत को अब सोचना चाहिये उसके बारे में! महीचन बेचारे का क्या दोख ? उसने तो साफ कह दिया कि उसकी बेटी अब उसकी बात में नहीं ! पंचायत का सर्दार झल्लू मोची है। लेकिन वह क्या बोले, बालगोबिन के सामने ? उसने बालगोबिन पर बात फेंक दी, कंगरेसी झमेला है, यह तुम्हीं बूझो। बालगोबिन ने एक ही साथ कई सवाल किया—पहला सवाल यह है कि मलारी क्यों गई अररिया कोठ, अकेली ? दूसरी बात, गई तो गई—सुवंशलाल के साथ क्यों गई ? हिन्नूचागरमागरम क्यों पी ? दो जवाब !

मलारी की माँ ने अपनी बेटी की ओर देखा। मलारी बहुत देर से चुपचाप खड़ी, लोगों की बात सुन रही थी। ओसारे से नीचे, आँगन में गयी। पंचायत के सामने खड़ी हो गयी। क्यों डरे वह ?—मैंने जीवन बीमा करवाया है। सुवंशबाबू बीमाकम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोठ की डाक्टरनी के यहाँ तंदुरुस्ती की जाँच कराने गयी थी। सुवंशबाबू ने मेरा जीवन बीमा किया है···।

—क्या-क्या बोल रही है, तुम्हीं बूझो बालगोबिन। जीबन बीमा की तंदुरसती क्या है ?

—हाँ-हाँ। पहले बोलने दो क्या-क्या जवाब देती है।

—सुनोगे और क्या ? हम लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं तो क्या एकदम जानवर हैं ? इतनी-सी बात नहीं बूझेंगे ? साफ-साफ कह रही है कि सुबंसलाल ने उसका बीमा उठा लिया है जैसे तजमनियाँ का बीमा जित्तन···।

—चुप रहो ! सभी कोई लीडरी मत करो। सवाल उससे किया है, जवाब देते हो तुम लोग।···अच्छी बात। तुमने सुवंशलाल को जिनगी का बीमा क्यों दिया ? इस बात का जवाब दो।

—पहले, अपने सभापति से जाकर जीवन बीमा का मतलब समझ आओ। सुवंशलाल ने गाँव में बहुत लोगों का बीमा किया है। स्कूल की सभी मास्ट-

रनी ने जीवन वीमा करवाया है। मलारी ने झिड़की दी।

वालगोविन के कान लाल हो गए—सुनते हो जी महीचन? पंच लोग! सुन रहे हो न सव? औरत-मर्द-वाल-वच्चे सभी हैं। कैसी वोली वोल रही है मलारी?

—क्या वोल रही हूँ। जीवन वीमा···।

—रखो, जीवन वीमा! हमको भी मालूम है कि जीवन वीमा क्या होता है। जव हर जात के अलग-अलग लीडर होते हैं तो अपनी जाति का एजेंट भी कहीं न कहीं होगा, जरूर?···परजात से जीवन वीमा करवाई है और वढ़ वढ़ कर वोलती है?

—और, एक सवाल का जवाव तो दिया ही नहीं। हिन्नूचागरमागरम वाला सवाल? एक नौजवान चमार ने कहा।

मलारी वोली—चाय तो दारू नहीं?

वालगोविन ने कहा— चाह पीने में कोई हरज नहीं है। मगर, सुवंशलाल ने इसके हाथ का छूआ चाय क्यों पिया? सवाल यह है!

—सुवंशवावू जात-धरम नहीं मानते। गाँव में वहुत-से लोग हैं जो छूआ-छूत नहीं मानते।

—साफ-साफ क्यों नहीं कहती कि चिकनी-चुरमुनी चमारिन छौंड़ी के हाथ का छुआ खाने को सभी ललचते हैं। वालगोविन की स्त्री की वात कभी भोथरी नहीं निकलती! औरतों ने अपनी मंडली में टीका-टिपकारी शुरू की तो मलारी की माँ से चुप नहीं रहा गया। वोली—जात-धरम की वात पीछे करना। पहले यह फैसला करो कि मलारी सरकारी नौकरी करे या नहीं? जात से फाजिल पढ़ कर हमारी वेटी ने मास्टरी पास किया है। परजात वालों की छाती जलती है। तरह-तरह की वात उड़ावेंगे वे।

—और दीवाना जी ने रात में रास्ता रोक कर दिल्लगी किया है। सो भी सरकारी दिल्लगी है क्या? वालगोविन ने दाँत कटकटा कर वात गढ़ाई।

—लुत्तो बाबू कह रहे थे कि लेटरबक्स में सबके नाम चिट्ठी डालती है। ऐसे में सरकारी नौकरी नहीं रहेगी, सो जान लो! हाँ!

जातिवालों ने एक स्वर से कहा—मलारी की माँ जोर बात बोलती है।

मलारी की माँ अब सचमुच में जोर-जोर से बोलने लगी—मेरी बेटी पर अकलंग लगाने के पहले अपना-अपना मुँह देख लो। क्योंकि, बात जब उकट रहे हो तो मैं भी जानती हूँ उकटना!···पहले बालगोबिन यह जवाब दे कि जब बालगोबिन घर में नहीं रहता है तो लुत्तो आकर उसके आँगन में, कभी झोपड़ी के अन्दर, घंटा-पर-घंटा क्यों बैठा रहता है? उस समय जब कोई उसके आँगन में जाता है तो उसकी बहू क्यों झगड़ा करने पर उतारू हो जाती है? और···।

—ए, ए! मलारी की माँ! चुप रहो। चुप रहती है या लगाऊँ लात?

महीचन ने नशे में झूमते हुए कहा—कहाँ रमदेवा?

···कुँहुँ-ऊँ! हवेली की ओर से सारंगी की आवाज आई! मलारी का ध्यान भंग हुआ। वह झोपड़ी के अन्दर जाने लगी। बालगोबिन ने मलारी को रोका—सुन लो मलारी! सभी औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे—सुन लें। आज हवेली में नैका की कथा सुनने कोई नहीं जायगा। सुन लो। मिटिंग में पास हुआ है, अभी!

मलारी झोपड़ी के अन्दर चली गई। मिटिंग में पास हुई बात सुनकर सभी सोच में पड़ गये।···यह क्यों पास हुआ रे दैव? बालगोबिन ने समझाने के लिए भूमिका तैयार की। मलारी झोपड़ी से निकली—हाथ में डंटा लेकर। उसने साड़ी के खूँट को कमर में बाँध लिया था। बाहर आकर बोली—गाँव में अठारह पार्टी है और रोज अठारह किसिम का प्रस्ताव पास होता है। हमारे स्कूल में भी प्रस्ताव पास हुआ है। आज हेडमिस्ट्रेस ने नोटिस दिया है, गर्ल गाइड की लड़कियाँ, रात में हवेली में तैनात रहेंगी। मैं कैसे न जाऊँ? वही सुनो, सीटी बजा रही है। मेरी ड्युटी है!

—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !

मलारी ने कमर में खोंसी सीटी निकाल कर जवाब दिया—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !!

रैदास टोली के नर-नारियों ने हाथ में लाठी लेकर सीटी फूँकते देखा मलारी को तो उन्हें दुलारीदाय की याद आ गई।...चेहरे की तमतमाहट देखते हो ? मुँह कैसा बदल गया !

मलारी ने आँगन से निकलने के पहले कहा—रात में गाँव के कुछ बाबुओं ने हर टोले में कुछ हरकत की है। आज गर्लगाइड की ड्यूटी रहेगी। न झगड़ा, न हल्ला-गुल्ला और न रास्ते में भूत का डर ! बालगोबिन अवाक होकर देखता रहा ! उसकी स्त्री ने उठते हुए कहा—सीट्टीबाजी सुन लिया न, सबने अपने-अपने कान से ?...मैं कहती थी न, कोई सीटी बजाता है रोज।...जौवन बीमावाली जो-जो न सुनावे !

मलारी की मा अपनी बेटी को अकेले कैसे जाने देगी ? वह भी चल देती है।

'...ओ-ओ-ओ-मानुस छोरी मोहनियाँ-आँ-आँ पीरीतियो जनि तोड़े-ए-ए ! रघू रामायनी के गीत की कड़ी मड़राने लगी। टूटी, अधूरी, पूरी कड़ी—...मोहनियाँ ! पीरीतियो...!!

बालगोबिन ने देखा, उसकी बहू भी जाने को तैयार है। कह रही है, जो कानून पास होगा, सभी के लिये। नहीं तो, किसी के लिये भी नहीं। दो जनि जा रही हैं तो हम लोग क्यों नहीं जायँ !

बालगोबिन ने कहा—इस तरह सीट्टीबाजी करने से नौकरी नहीं रहेगी। सुन लो महीचन ! गाँव की बंदिश, जाति की बंदिश पहले तुम्हारे घर से ही टूट रही है।...महीचन का कुत्ता अचानक भूँकने लगता है।

रात में सोलकन्ह टोले की हर टोली में, सीटी की आवाज सुनकर ड्युटी पर दौड़ने वाली लड़कियों ने जाति की बन्दिश को तोड़ा ! कैयट टोली, गंगोला

टोली और खवास टोली की लड़कियों का नाम दर्ज कर लिया है, लुत्तो ने! लुत्तो गर्ल स्कूल की मास्टरनियों को भी राजनैतिक लगी लगायगा क्या ?

छित्तन बाबू के गुहाल में कभी इतना मवेशी भी नहीं जमा हुआ होगा। आज सर्वे कचहरी में ज्यादा भीड़ है। दुलारीदाय जमावाली नत्थी में जित्तन बाबू बयान देने आ रहे हैं। तीन कुंड का दावेदार समसुद्दीन मियाँ खरैहिया के जमील बाबू मुख्तार से मिसिल बनवा कर ले आया है। दो कुंड पर केयट टोली के सुचितलाल ने दावा किया है। नकवजना सूचितलाल! ...सारे परानपुर में पाँच सुचितलाल हैं। केयट टोली का नकवजना सुचितलाल अपने को सौ कानूनची का एक कानूनची समझता है। लल्लू बाबू या अनिल बाबू वकीलों से क्या पूछने जायगा, वह। उसने जिरह करने के लिये ऐसा-ऐसा चुनिन्दा सवाल—सँमझें! ऐंसाँ चुनिन्दाँ जिरँह।

आज कचहरी की भीड़ में रह-रह कर सुचितलाल की पतली आवाज कूक उठती है। पान की दुकान पर, चाय वाले के मचान पर—हर जगह, हर किस्म के लोगों से सुचित लाल अपनी कानूनी बुद्धि की बात सुनाता है—अँभीं देंख लींजियेंगाँ!

—आ गया! जैंटुलमैन साहब आ गया। गरुड़धुज झा ने चाय की दुकान पर बैठे लोगों की ओर देखकर कहा—आज तो जमीन वालों से तमाशबीनों की ही जमात बड़ी है!

रोशन बिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटते हुए कहा—देखो-देखो लुत्तो। गिरगिट को! कचहरी में एकदम सुदेशी डिजैन में आया है, धोती, कुर्ता,

चादर पहन-ओढ़कर।

लुत्तो ने कहा—टहलने के समय जो ट्रेटमार्क पोशाक पहन कर निकलता है, उसमें आता तो आज कचहरीमें मजा आ जाता !

पेड़ों के नीचे बैठे लोग उठकर कचहरी घर की ओर जाने लगे—जित्तन बाबू आ गये ! मीर समसुद्दीन और सुचितलाल ने माचिश की एक ही काठी में बीड़ी सुलगा कर बारी-बारी से धुँआँ फेका—सुचितलाल मड़र ! पेशकार को पान-सुपाड़ी खाने के लिये कुछ देकर, पहले तुम अपनी नत्थी ही ऊपर करवाओ।

सुचितलाल पुराना कचहरिया नहीं, लेकिन पुराने मुकदमाबाजों और मामलतगीरों के साथ वह रह चुका है। उसकी बोली महीन है तो क्या हुआ ? गरुड़धुज झा भी तो लम्बा है। रोशन बिस्वाँ काला है। सुचितलाल आज कचहरी में तमाशा लगा देगा। देखने-सुननेवाले भी याद रखेंगे कि गाँव में कभी सर्वे की कचहरी लगी थी। उसने इशारे से मीर समसुद्दीन को कहा—वह काम हो चुका है। पतली आवाज को मद्धिम करने पर भी उसकी बोली गनगनाई—तँमाँशाँ लँगाँ देंगें। जरॉं फुँकाँर तों होंने दींजियें।

गरुड़धुज झा ने हँसते हुए दूर से बात फेंकी—अरे सुचितलाल मड़र, भोज में कुंड की मछली एक मन ऊपर करवाओगे तो ?

—अँकबाँल आँप लोंगों कां। साँलाँ एँक मँन क्याँ, एँकदँम फिंरिं-ईं-ईं। जिंतनी मंछलीं चाहें···।

—कहाँ-आ-आ-रूदल साह बनियाँ-आँ-आँ ! रूदल साह बनियाँ, हा-जि-र-हैय !

—हाजिर है, हाजिर है। जरा सबुर करिये, लघुसंका करने गया है।

—कहाँ सुचितलाल मड़र दावेदार, जितेन्दरनाथ···।

वटवृक्ष के नीचे, पीपल के पेड़ोंके पास जमी हुई चौकड़ियाँ टूटीं। लोग बिखरे। कचहरी घर की ओर चले।

आज हाकिम का रुख एकदम बदला हुआ है !

—चपरासी ! बेकार लोगों को अन्दर से निकालो। मछलीहट्टा बना देता है। हाकिम साहब का दम घुट रहा है, मानो। रह-रह कर जित्तन बाबू की ओर नजर फेंक कर देख लेते हैं, हाकिम साहब।

पेशकार साहब कागज पर लिखते हुए पूछ रहे हैं—नाम ? बाप का नाम ? उम्र ?

कचहरी-घर शान्त है।

लुत्तो फिसफिसा कर समसुद्दीन के कान में कुछ कह रहा है। भिम्मल मामा चुपचाप खड़े हैं। मुन्शी जलधारीलाल दास, बस्ता के कागजों को निकाल कर छाँट रहा है। जित्तन बाबू के ओठों पर फैली मुस्कुराहट न घटती है, न बढ़ती है। हाकिम साहब बार-बार नजर फेंक कर देख लेते हैं, जितेन्द्रनाथ मिश्र को।···इस आदमी को कहीं देखा है ?

कहाँ ?···कहीं देखा जरूर है। ओ ? प्रोफेसर हालदार के बँगले पर। पटने में।···ठीक !

हाकिम ने मामलेकी सुनवाई शुरू की—दुलारीदाय के पाँच जलकरों में से तीन पर मीर समसुद्दीन का दावा है। और बाकी दो पर ?

—हँजूँर-मेंराँ-आँ आँ ! सुचितलाल की बोली कचहरी-घर में गनगना उठी।

—क्या नाम है तुम्हारा ?

—हँजूँर, बाँवूँ सुँचित्तँर लाँल मँड़ँर ! पँसँर बाँवूँ बिँ चित्तँर···।

लगता है, सुचितलाल की बोली कण्ठ के बदले नाक से निकल रही है। ततुआन टोली के लड़के जापानी-पोंपी कहते हैं उसको। अमीन साहब ने पर्चे पर लिखा है—सुचितलाल मड़र। ब्रैकेट में–पोंपी।···पाँच-सात सुचित लाल हैं गाँव में।

—तुम्हारा एक नाम पोंपी भी है ? हाकिम ने पूछा।

—जी˜ नँहीं !…हँजूर उँसमें पोंपी लिखाँ हुआँ हैं ? एं ?

भीड़ में से किसी ने कहा—अब क्या ? अब तो नाम सर्वे के पाँच-पाँच रेकट में दर्ज हो गया। अब तो पोंपी ही…।

हाकिम ने जित्तन बाबू से पूछा—पाँचो जलकरों के मामले को एक साथ टेक अप करें ?

जित्तन बाबू ने गर्दन हिला कर सम्मति दी !

सुचितलाल मड़र को भारी धक्का लगा है।…पोंपी नाम सर्वेके रिकाट में चढ़ गया ? जरूर यह काम मुन्शी जलधारी ने करवाया है। सुचितलाल बार-बार जलधारीलाल दास को देखता है। जलधारीलाल दास की मुस्कुराहट ? निर्विकार मुस्कुराहट ! जिसका अर्थ सुचितलाल ने ठीक लगाया—कलम की मार है, पोंपी !…लुत्तो के कान में मीर समसुद्दीन कहता है—लुत्तो बाबू ! मामला बड़ा गड़बड़ लौक रहा है। हाकिम इतना मोलायमियत से क्यों बतिया रहे हैं जित्तन से ?

—आपका बयान !…लिखकर दीजियेगा ?

—नहीं महोदय ! मुझे विशेष कुछ नहीं अर्ज करना है।

जितेन्द्रनाथने बयान शुरू किया—दुलारीदाय के पाँचों कुंडोंके अलग-अलग कागज हैं।…पहले, बाबू सुचितलाल मड़र ने जिन कुंडों पर तनाजा दिया है, मैं उन्हीं के बारे में बताऊँ। राज पारबंगा के मालिक ने किसी यज्ञ के उपलक्ष में मेरे पितामह को दान में दिया था। इन दोनों कुंडों में, मेरे पितामह ने लगातार दो महीने तक सहस्रों कमल की पँखुड़ियों पर रक्त-चन्दन से नवग्रह शान्ति यन्त्र लिखकर प्रवाहित किया था ! महाराजा पारबंगा ने दक्षिणा में दोनों कुंड दे दिया। कागज पेश कर दिया गया है। और मेरे पिता ने इन दोनों कुंडों का पट्टा कबूलियत मोसम्मात राजमनी के नाम बना दिया। इन दोनों कुंडों की मालकिन मोसम्मात

राजमनी की बेटी ताजमनी है।

—हँजूँर। हँमाँरी अँरजीं सुँनियें। सँब खिलाँफ बाँत!

जित्तन बाबू रुक गए। हाकिम ने सुचितलाल मड़र को समझाया—देखोजी, सुचितलाल मड़र! आज की तारीख सिर्फ जितेन्द्रनाथ के बयान के लिये रखी गयी है। तुम लोगों को जो कहना था, लिख कर दे चुके हो। बयान भी हो चुके हैं। फिर···

—हुँजूँर। एँक जिँरह कँरने दींजिएँ। ···हँजूँर जिरह कँरने दियां जाँय। जित्तन बाबू ने कहा—बाबू सुचितलाल मड़र को जिरह करने का मौका दिया जाय।

—मैं पहले आपका बयान ले लूँगा, इसके बाद जिरह!

—हँजूँर। बँस ऐंक सँवाल शुँरू में···।

—पूछो, क्या पूछना है?

सुचितलाल मड़र ने कठघरे में खड़े जितेन्द्रनाथ की ओर मुखातिब होकर पूछा—ताँजमँनीं आँपकीं कौंन लँगतीं हैं–एँ?

—ताजमनी की माँ के नाम रैयती हक लिखा है, इसलिए उसकी बेटी हमारी रैयत···।

—रैंयत वाँलाँ-आँ रिश्ता नँहीं-ईं-ईं।

···बड़ा कस कर पकड़ा है नकबजना सुचितलाल ने! मुँह पर हवाई उड़ने लगी जितेन्द्रनाथ की। वाह रे, सुचितलाल मड़र! एक ही सवाल में पोंपी बन्द कर दिया जित्तन का? छत्तो और रोशन बिस्वाँ की मुस्कुराती हुई आँखें मिलीं। बिस्वाँ ने जीभ से बार-बार ओठ चाटे।

—वीरभद्र बाबू कचहरी नहीं आये हैं। नहीं तो, देखते आज!

हाकिम साहब कागजों में उलझे हैं—मुसम्मात राजमनी गंध-र गंधर्व?

—जी हाँ।

—मिसेस रोजउड आपकी सौतेली माँ थीं ?

—हाँ। श्रीमती गीता मिश्रा।

—नहीं हुजूर ! वह मेम, रखेलिन थी।

जितेन्द्रनाथ के मुखड़े पर मानो किसी ने अबीर मल दिया। आँखों के लाल डोरे स्पष्ट हो गये। किन्तु, मुस्कुराहट बनी रही ओठों पर ! हाकिम की ओर देख कर बोले—पेश किये गये कागजों में विवाह-पत्र भी है। दोनों के हस्ताक्षर से स्वीकृत दलील !···

हाकिम ने कल ही रख दी फैसले की तारीख।···सभी मुकदमों की आखिरी तारीख !!

आजकी सुबह का सूरज जरा देर करके उगा, शायद ! ···गाँव के लोग, तीन बजे रात से ही उठ कर प्रतीक्षा करते रहे। आज सर्वेकचहरी में फैसला सुनाया जायगा !

सुचितलाल के लड़के ने बहुत रोका। लेकिन, नाक की नोक पर आई छींक भला रुके—आँछी-ई !

—बँड़ाँ हँड़ाशंख हैं साँलां ! सुचितलाल ने अपने हड़ाशंख और अभागे लड़के की ठीक नाक पर थप्पड़ मारी ! लड़का चीख-चीख कर रोने लगा और सुचितलाल की घरवाली आँगन से दौड़ती आई—हाय रे देव ! बेटा को तो मारकर बेदम कर दिया। हैत्तेरे हाथ में··मारने की और कोई जगह नहीं मिली देह में ? नाक में मार कर मेरे बेटे को भी नकबजना बनाना चाहता है !

बढ़ गया। साथ में रोशन बिस्वाँ भी है—टिड़िंग-टिड़िंग !

—यात्रा पर महाजन का मुँह देख लो। सब काम पक्का ! गरुड़धुज झा ने बात फेंकी।

बस, अब तीन चार दिनों का मेला है। सब चलाचली की बेला है। फारबिसगंज शहर से आये हुए चाय और पानवाले अपने नौकरों को हिदायत दे रहे हैं—बकाया हिसाब की बही सामने रख देना !···चाय माँगे तो पहले मेरी ओर देखना। कुछ लोगों की नियत अच्छी नहीं। रोशन बिस्वाँ को कल हिसाब देखने दिया तो गुम हो गया। फिर, बाद में बोला—गरुड़ झा से पूछेंगे।···पैंतीस रुपैया पानी में गया समझो !

चपरासीजी आज जयहिन्द लेते-लेते परीशान हो गये हैं। पान खाते-खाते ओठ काले पड़ गये हैं। हाकिम के मन की बात थोड़ा चपरासी भी जानता होगा ! उसके मुँह पर ही लोग तारीफ कर रहे हैं—बड़ा भला आदमी हैं चपरासीजी। वैसे तो बहुत-से चपरासी आये। लेकिन, सुभाव ? इतना अच्छा किसी चपरासी का नहीं।···भला-बुरा तो हर जगह होता है।

पेशकार साहब निकले !

पेशकार साहब परानपुर के सभी टोलें के लोगों को पहचानते हैं, अलग-अलग, नाम बनाम। आदमी को चरा कर खाने का पेशा किया है। आदमी को नहीं पहचानेंगे पेशकार साहब। बरामदे पर खड़े लोगों को झिड़की देते हैं—भीड़ क्यों लगा रहे हो, अभी से ?

—तो, इसका मतलब हुआ कि हाकिम आज देर से कचहरी में आवेंगे। मुन्शी जलधारीलाल दास आज रेशमी कुर्ता पहन कर आया है ! रामपखारनसिंघ ने पुरानी पगड़ी पर नया रंग चढ़ाया है।

—अच्छा। और लोगों को जमीन मिलेगी। खुशी से नाचेंगे। नहीं मिलेगी तो रोयेंगे। लेकिन मुन्शीजी और सिंघको क्या मिलेगा ? तिसपर भी देखो,

खवास टोले के टेटन बूढ़े को क्या हो गया है? लोगों की भीड़ के पास जाकर, बारी-बारी से सबको हाथ जोड़कर पाँवलागी कर रहा है। दो शब्द बोलते-बोलते आँखों से आँसू झरने लगते हैं। अजीब आदमी है, यह टेटन!

—ए! टेटन। कहाँ से सुन आये तुम अपनी राय? कचहरी तो अभी बैठी भी नहीं है। रो क्यों रहे हो?

टेटन बूढ़ा आँसू पोंछ कर कहता है—यों ही। विचार हुआ कि सबसे हिल-मिल कर पाँवलागी कर लिया जाय। कहा-सुना माफ़…।

—तुम कोई तीरथ करने जा रहे हो?

—नहीं। यों ही मन में हुआ कि जरा…।

लुत्तो कड़क कर कहता है—ऐ टेटन। सट्टप! काहे रोते हो?

इन्हीं लोगोंके चलते लुत्तो को खवास टोली में रहने का मन नहीं करता। जाकर, सभी जात के लोगों को पाँवलागी कर रहा था? पागल!

टेटन का बेटा भेटन बोला, समझा कर—मत कहिये कुछ। जबसे हवेली से गीत सुनकर आया है, इसकी मतिगति एकदम बदल गई है।

—लो, मजा!

—जयदेव बाबू भी आये हैं। मकबूल भी?

इस सर्वे में सोशलिस्ट पार्टी वाले मात खा गए।…प्रस्ताव पास कर दिया कि पाँच सौ एकड़ तक जमीन वाले किसानों की जमीन पर किसी किस्म का दावा नहीं किया जाय। गाँव में पाँच सौ एकड़ वाले किसान बबुआन टोली में भी इने-गिने ही हैं। सो, हलवाहा–चरवाहा भी बहुत मुश्किल से रख सके हैं, जयदेव बाबू। कुल पन्द्रह मेम्बरों में पाँच रामनिहोरा के साथ निकले या निकाले गये। बाकी दस मेम्बरों के घरवालों ने एक दूसरे मेम्बर की जमीन पर तनाजे दिये हैं, दावे किये हैं।…पार्टी में घरेलू झगड़ा होने लगे तो हुआ! जयदेव बाबू हमेशा खुश रहते हैं लेकिन।

—एमेले–टिकट के लिए लैनकिलियर हो गया जयदेव बाबू का। बेखटक टिकट मिल जायगा पार्टी का। रामनिहोराको निकाल कर निष्कंटक हो गए।

—कहाँ-आँ-आँ बरकत मियाँ! जितेन्दरनाथ मिसरा जमींदार हा-आ-आ-जिर है-य।

—लो, पहले मुसलमान टोली से ही शुरू किया?

—बिसमिल्लाह?

—कितनी जमीन पर दावा किया था?

—पाँच एकड़, तीन डिसमिल।

—जाओ। जमीन तुमको हुई।

—या अल्ला। या अल्ला···

चपरासी ने बरकत मियाँ को बाहर करते हुए कहा—अल्ला-खुदा मसजिद में जाकर करो। भीड़ मत लगाओ!

—चपरासी। पुकारो, मुसम्मात राजो!

—राजो का बेटा आया है, हजुर!

एक दस-ग्यारह साल का लड़का कटघरे में जाकर खड़ा हो जाता है। हाकिम ने पूछा—कितनी जमीन पर तनाजा दिया था तुम्हारी माँ ने? लड़के ने रटे हुए तोते की तरह कहा—एक पर्चा, तीन एकड़। दूसरा, दो एकड़।

—जाओ! जमीन मिली।

—ईमान से? लड़के ने पूछा। सभी हँस पड़े!

हाकिम साहब नाराज हुए—चपरासी, भीड़ हटाओ। जल्दी-जल्दी पुकारो!

सर्वे कचहरी में ऐसी लहर कभी नहीं आयी ! तीन साल तक रंग-बिरंगे आशाओं के गुब्बारे, रेशमी डोरियों में बँधे, हवा में फूले-फूले उड़ते रहे। आज रह-रहकर गुब्बारे फटते हैं, फट्टाक् !—आछीं-इ-क्।

—कहाँ सुचितलाल मड़र ?

—हाँजिर हैं, हाँजिर हैं।

हाकिम ने कहा—सुनोजी सुचितलाल। मैंने जोड़ कर देखा है, तुमने पूरे तीन सौ एकड़ जमीन पर तनाजा दिया है। तुम्हें अपनी जमीन भी दो सौ एकड़ है।···गाँव के सभी जमींदारों की आधीदारी करते हो ?

सुचितलाल को छींक लग गई ! हाकिम ने फैसला सुनाया—दुलारीदाय जमा के दोनो कुर्दों पर तुम्हारा दावा गलत साबित हुआ।···डिसमिस !

बैलून की हवा निकली, मानो—सिस-सिस। सुचितलाल सुसुआने लगा—इस्स ! ···अँपील कँरेंगाँ !

—चपरासी ! जिसका फैसला हो जाय, तुरत उसको निकालो उस दरवाजे से। पुकारो, मीर समसुद्दीन।

—हाजिर हैं, हुजूर ! किस जमा का···?

—नड़हा बाँध जमा वाली नत्थी। जमीन हुई आपको।

—मार दिया !···नहीं, नहीं। नड़हा बाँध जमा वाली जमीन समसुद्दीन की अपनी है। घर की मुर्गी दाल बराबर। दुलारीदाय वाली जमा का क्या होता है ?

—दुलारी दाय जमा की नत्थी ? पेशकार साहब ने समसुद्दीन की ओर इस तरह देखा मानो किसी पुरानी बात की याद दिलाकर कह रहे हैं—देखा ?

—हाँ, हुजुर।

—दावा गलत साबित हुआ !

—या खुदा !

एक गुब्बारा फिर फटा—फट्टाक् !

—कहाँ खुदाबक्स मियाँ !

—जमीन मिली ।

—कहाँ मथुरी हजरा ?

—जमीन मिली ।

—कहाँ अघोरी मंडल ।

—जमीन मिली ।

—कहाँ फगुनी महतो ।

—दावा गलत साबित हुआ ।

—फट्टाक् !

फगुनी महतो ने छाती पर मुक्का मार कर कहा—हाय रे बाप !

—कहाँ··· ?

रात में दो बजे तक कचहरी में पुकार होती रही !

तीन साल से अविराम बजता हुआ नगाड़ा अचानक रुक गया । नगाड़े के ताल पर बजती हुई अजानी रागिनी बन्द हो गई ।···नाचता हुआ लट्टू निष्प्राण होकर लुढ़क गया । लुढ़क कर थिर हुए लट्टू जैसा गाँव ! आखिरी फैसला सुनाने के बाद ही हाकिमों ने कैम्प तोड़ दिया !

अब जिनको लड़ना हो, अपील करनी हो—जाय पुरनियाँ कचहरी । लड़े दीवानी !

नहीं, इस लट्टू पर फिर से डोरी लपेटने वाले लोग हैं !

—अभी क्या हुआ है ? ग्राम पंचायत का चुनाव बढ़िया हो जाय। देखो, फिर न जाना पड़ेगा पुरनियाँ, न दीवानी करने की जरूरत होगी। पंचायत का मुखिया यदि अपनी पार्टी के आदमी को चुनोगे तो, समझो कि गयी हुई जमीन फिर मिल कर रहेगी।...ग्राम-पंचायत चुनाव की तैयारी करो !

समसुद्दीन मीर कहता है—सभी मुसलमानों के दस्तखत और अँगूठे का टीप लेकर कलक्टर साहब के पास जायेंगे। साफ कहेंगे, यदि हिन्दुस्तान में नहीं रहने देना है तो साफ-साफ जवाब दे दीजिये। हमलोग पाकिस्तान चले जायेंगे।...एस० ओ० ने मुँहदेखी करके मुकदमा डिसमिस कर दिया!

—लेकिन, उन कुंडों पर तो कभी आपका कब्जा नहीं था। आपने तो जबरन ही दावा किया था !

—इससे क्या ? कितने लोग हैं जिसने सोलहो आने सही दावा किया था ? नहीं था कब्जा तो क्या हुआ ? आप लोग हजार घर हैं, हम लोग तो बस एक ही टोले में हैं। बात यह है कि...।

लुत्तो कहता है—ठीक है। यह तो पौलटीस है। जरूर दीजिये दर्खास्त। साफ-साफ कहिये कलक्टर साहेब से। आपने ठीक ही सोचा है। कहिये कि हम लोग पाकिस्तान भागने के लिए मजबूर हैं। जरूर फत्तेह होगा, आपका।

—जानें खुदा !

—खुदा जो करता है, अच्छा ही करता है। बीरभद्दर बाबू ने लुत्तो को समझा कर कहा—समझे लुत्तो बाबू ! समसुदिया को एक भी कुंड नहीं मिला। चलो, यह भी अच्छा हुआ।

लुत्तो ने कहा—भला, मैंने अपना काम पहले ही बना लिया था। तीन

बीघा जमीन अपने नाम से रजिस्ट्री करवाने के बाद मैंने पैरवी शुरू की थी !···डर है कि कहीं ग्राम-पंचायत के चुनाव में समसुद्दीन कुछ गड़बड़ न करे। चलिए, गड़बड़ करेगा तो सभापति जी से कह कर कांग्रेस से इस-पेल्ट करवा देंगे।

—देखो लुत्तो ! बहुत सोच विचार कर, बहुत माइंड खर्च करने के बाद एक जोजना तैयार किया है मैंने। एजेन्ट भी मिल गया है। यदि सिड्डुल से काम किया जाय तो समझो कि एक ही बार में चार शिकार !

लुत्तो दाँत निपोर कर देखता रहा। ···वीरभद्दर बाबू हर बार इसी तरह पहले चुटकी बजा कर कहते हैं—मिल गया ! छक्का हाथ मार दिया !! लेकिन, कोई भी तीर निशाने पर नहीं लगता।—कौन एजण्ट, जरा नाम भी सुनें ?

—मनका की माय, सामवत्ती !

—हाँ, ठीक ! लुत्तो ने मन-ही-मन मान लिया, बड़ी जाति वालों का मैंड सचमुच में थोड़ा तेज होता है। आज तक उसके दिमाग में यह बात नहीं आई। लुत्तो अब उछलने लगा। दौड़कर सामवत्ती पीसी के यहाँ पँहुचने के लिए उसका पैर चुलचुलाने लगा।

श्री कुबेरसिंह ने पटने से पत्र दिया है, अपने दोस्त-भाई वीरभद्दर को। ···'हुआ सवेरा' का पूरा एक पेज रिजर्व है, तुम लोगों के लिए। और भी तेज खबर भेजो। तुम लोग सिर्फ फैक्ट लिखकर भेजो। स्टोरी यहाँ बना ली जायगी। और एक काम जरूरी है। तुम्हारे गाँव में नट्टिन टोली है। उनमें से किसी एक की नंगी फोटो नहीं खिंचवा सकते ? तुम्हारे गाँव में एक हरिजन लड़की पढ़ी-लिखी है। उससे यह नहीं लिखवा सकते कि उसके साथ··· ?

दोनों काम कठिन हैं। लेकिन, करना ही होगा। फोटोवाला काम पीछे, पहले मलारी का सिट्टल बना लिया जाय !

वीरभद्दर बाबू कांग्रेस कमिटी के लेटर-पैड पर सिड्डुल बनाने लगे। आज-कल शिवा, न जाने क्यों, कांग्रेसियों और कांग्रेस के खिलाफ बोलने लगा है। वीरभद्दर बाबू अपने छोटे भाई शिवभद्दर की मूर्खता पर दुखित रहते हैं। महामूर्ख है! इसलिए, अपने कमरे में भी फुसफुसा कर बोलना-बतियाना पड़ता है।

—लुत्तो! क्या बतलावें? हमारा शिवा इतना डोल्ट है कि क्या बतावें। विभीषण है। कल से क्या बोल रहा है, जानते हो? कहता है, जित्तन भैया बहुत भला आदमी है। नेनू की तरह मन है, उनका। दूध की तरह दिल सादा है। आप लोग उससे पार नहीं पा सकते। ···सुनो भला!

लुत्तो ने आँखें नचा कर चेतावनी दी—उस पर आँख रखिये। बड़ा डंजरस बात है यह!

वीरभद्दर ने पैड पर सिड्डुल बनाना शुरू किया! = चिह्न लगा कर जय हिन्द, फिर = चिह्न। नीचे—दूसरे काम का सिड्डुल। नम्बर एक को गोल घेरे में डाल कर बोला—क्या लिखा जाय?

—सबसे पहले, जाना सामबत्ती के पास। सुनाना उसको देश-दुनिया, जात-धरम वगैरह का हाल-चाल। फुसलाना सामबत्ती को एक सौ रुपया देकर। भेजना उसको मलारी के पास, रोज एक बार या दो बार। जब जैसी जरूरत पड़े। फुसलाना सामबत्ती का मलारी को, दिखलाना लोभ स्कूल की हेड मिस्ट्रेसी का। दिखलाना लोभ, कांगरेस की लीडरानी बनने का···।

बिना सिड्डुल किये काम का क्या भरोसा? इस बार देखना है!

काम जल्दी हो, इसका भी उपाय है। डबल फीस! जब कचहरी में डबल फीस दाखिल करने से एक ही दिन में दस्तावेज निकास होता है तो सामबत्ती की क्या बात?

लुत्तो के उठने की देरी है। काम हुआ जाता है, अभी!

कवैयावाली जगी हुई है। सपना देख कर जग पड़ी है।

—आप लोग हवेली के देवर के पीछे क्यों लगे हैं ? सर्वे तो खतम हुआ। अपने आँगन के कमरेमें प्रवेश करते ही वीरभद्र बाबू की मिडल पास स्त्री ने पूछा—क्या जरूरत ?

वीरभद्र बाबू अवाक् होकर कुछ देर तक अपनी स्त्री की ओर देखते रहे। फिर बोले—देवर के लिए दिल में बड़ा दर्द है !···देखो, सभी काम में तुम लोग इण्टरफियर मत करो।

—आज नहीं लाये वह किताब ? नुनुदाय यानी वीरभद्र बाबू की आसन्न-प्रसवा स्त्री कवैया वाली ने पूछा।

आज कल, वीरभद्र बाबू एक अंग्रेजी सचित्र मासिक पत्रिका ले आते हैं, रात में। डिक्शनरी की मदद लेकर, चित्रों की सहायता से अपनी स्त्री को समझाते हैं—प्रायमी केस माने पहिलौंटी अवस्था में क्या-क्या नियम कानून पालना चाहिये।···दही खाने में हर्ज नहीं। विलायती बैगन खूब खाये···।

वीरभद्र बाबू चौकी पर बैठ कर बोले—क्यों, कुछ खाने का मन डोला है ?

नुनुदाय को अपने पति की कांग्रेसी किस्म की रसिकता पसन्द नहीं। वह चिढ़ जाती है। वह, अपनी माँ की ही नहीं, चाचियों की सभी बेटियों से भी छोटी है अपने मैके में। मैके का नाम लेते ही वीरभद्र बाबू चिढ़ कर अंग्रेजी में गाली देने लगते हैं, उसके भाई-बाप के नाम ! जेठानी को अपने आठ नौ बच्चे-बच्चियों से छुट्टी नहीं मिलती। उसके पति वीरभद्र बाबू को तो खुद सोचना चाहिये कि ···। नुनुदाय आजकल डर के मारे सो नहीं सकती। आए हैं, बड़ा प्रेम से पूछने—कुछ खाने को मन डोला है ?

—मन डोले भी तो क्या ! फारबिसगंज के गाजीराम की दुकान से उधार लिया हुआ बासी गाजा खाने के लिए मन का हाल नहीं सुनाती किसी को।

वीरभद्र बाबू अपनी बात को वजनी बनाने के लिए अंग्रेजी शब्द ढूँढ़ने लगे। बोले—तुम मेरी एक छोटी-सी दिल्लगी से भी टेम्पर लूज़ कर देती हो। आजादी देवी···।

—मुझे आजादी मत कहे, कोई। मेरा अपना नाम है।

—नुनुदाय नाम भी कोई नाम है ? और, कवैया वाली कह कर देहातियों की तरह पुकारना तुमको अच्छा लगता है ? कैसी बातें करती हो, आजादी देवी नाम में क्या बुराई है !

—मुझे पसन्द नहीं। आजादी देवी, जैहिन्दी देवी ! अपनी झोली में रखिये ऐसे नाम।

—क्यों ?

शादी के पहले ही, सौ नामों में से एक नाम चुन कर डायरी में नोट करके रखनेवाले वीरभद्र बाबू को ठेस लगती है—तुम देख रही हो, गाँव में तीन आजाद हैं। परानपुर कोई छोटा गाँव नहीं, तुम्हारी नैहर कवैया की तरह। एक आजाद तो घर के बगल में ही है, सोशलिस्ट, सीताराम आजाद ! दूसरा केयट टोली का, राष्ट्रीय गीत गवैया, अजबलाल आजाद। तीसरा, बंगटप्रसाद आजाद। लेकिन, बता तो दो। एक भी लड़की नाम आजादी देवी है ? ढूढ़ कर देखो ?

—मैं पूछती हूँ कि रोज रात में खराब सपना देखने से क्या करना चाहिये ? यह उस किताब में नहीं लिखा हुआ है ?

—क्यों ?

—मैं रोज रोज एक ही सपना देखती हूँ। बड़ा डर लगता है।

—क्या ? वीरभद्र बाबू आतंकित हुए।

—एक बूढ़ी औरत रोज आँखें तरेर कर डराती है !

—सपने में ?

—हाँ, इसीलिए कहती हूँ कि तुम लोग हवेली के देवर के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़े हुए हो ?

वीरभद्र बाबू चिढ़ कर बोले—क्यों। इसमें पीछे लगने की क्या बात है ?···रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्रान जाँहि वरु वचनो न जाँहि। बर्ड का भैल् होना चाहिये, इन्सान का। तुम नहीं जानती ? उसकी माँ ने, बाबूजी को किस तरह बेइज्जत करके, नंगाझारी करके, चोरी का चार्ज लगा कर बदनाम किया ? तीन-तीन झूठे मुकदमें किये।

—जिसका जमा बुड़ावेगा कोई, उस पर मोकदमा नहीं होगा ? नुनुदाय ने घात गड़ाई, अपने पति की देह में। वह जानती है, सब कुछ !

वीरभद्र बाबू के मन में आया कि एक फुलपावर का थप्पड़ मुँह पर लगा कर मुँह लाल कर दे। लेकिन कुछ सोच कर गम खा गये—देखो, एक तो अपनी फैमिली में कहाँ से एक डोल्ट डम्फास विभीषण पैदा हुआ है। अब तुम भी ऐसी बात करती हो ? अपने फादरइनलौ के नाम पर झूठा तोहमत लगाती हो ? कौन कहता है ? किसका जमा बुड़ाया ?

—बच्चा-बच्चा जानता है, बोलता है।

—बोलने दो !

अब वीरभद्र बाबू ने मौन-सत्याग्रह की तैयारी की। कुछ नहीं बोल सकते, ऐसी जाहिल औरत से !

मुचितलाल मड़र अपनी जाति का मड़र है। गाँव वाले माने या नहीं माने, वह मड़री करने में नहीं चूकता कभी। कोई भी बात हो, उसे पंच की

दृष्टि से देखता है सुचितलाल। वह भी सोलकन्ह है, लेकिन सोलकन्हों ने ही उसके साथ दगाबाजी की।

—हाँ-हाँ। जँदिं लुँत्तों नें थोंड़ीं भीं मँदद दीं हों, सॉबित कँर दें कोंई!

—तो, तुम कांग्रेस का मेम्बर काहे नहीं बने? जिस दिन चौअन्नियाँ रसीद बही लेकर आये लुत्तो बाबू, तुमने लम्बे बाँस से ठेल दिया। हम सभी पार्टी का मेम्बर हैं।

—सोशलिस्ट लोगों के साथ में रहने का फल भोगो! तुमने तो अपना दावा अपनी मड़री के शान में खो दिया। यह मैं हजार बार कहूँगा।

—सोंसलिस? सोंसलिस क्यों, अँब हँम कोंमलिस कें सॉथ रँहेंगे ओंर कुंडा दँखल कँरकें दिंखलॉं देंगे।

—अच्छी बात!

—अँच्छीं बॉंत नँहीं तो बुँरीं बाँत? अँब हँम भी झॅन्डॉं लेंकें खिलॉंफँत कँरेंगे।

—देखो, सुचितलाल। मकबूल समझा रहा है सुचितलाल को—यदि तुम कुण्ड दखल करने के लिए पार्टी का मेम्बर होना चाहते हो तो, घर बैठो। समझे? पार्टी की मेम्बरी मामूली चीज नहीं है।

सुचितलाल मड़र ने बार-बार ईमान-धरम खाकर कहा—धँमोंस्तीं, मेंरें मॅन में कुँण्ड कॉं कोंई लोंभ नहीं।

मकबूल ने बात टालते हुए कहा—हठात् तुमको पार्टी की मेम्बरी का धुन क्यों सवार हुआ? इस सवाल पर हम कल की बैठक में एकजूट होकर गौर करेंगे। मकबूल के साथ चालाकी?...द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जिसने नहीं पढ़ा है, सुचितलाल उसको चकमा देकर ठग ले। मकबूल और मकबूल के साथी सभी समस्या और सवालों को काट-पीट कर परखते हैं। ऊपर से टटोल कर अटकल नहीं लगाते! प्रश्न है : सुचितलाल मड़र हठात् कम्युनिस्ट

पार्टी का सदस्य क्यों होना चाहता है ?

बैठक से एक दिन पूर्व ही, बजरिए गश्ती-चिट्ठी के, मकबूल ने इस प्रश्न को चारो-पाँचों कौमरेडों के सामने पेश किया। बैठक के दिन सभी इस महत्त्वपूर्ण सवाल पर सोच कर गौर करेंगे !

—मुझे तो इस बात में हृदय परिवर्तन के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते हैं। और, यदि मेरा अध्ययन और अनुमान सच हो, तो सुचितलाल मड़र को पार्टी प्लेज देना हमारे उसूलों के खिलाफ होगा। रंगलाल गुरुजी ने बैठक में अपनी राय जाहिर की। रंगलाल गुरुजी ने पन्द्रह साल तक विभिन्न खानगी प्रायमरी स्कूलों में गुरुवाई की है। उसको गौरव है—फलाने बाबू, चिलाने सिंह और अमुक वकील ने उसके चटसार में ही खल्ली पकड़ कर 'ओना-मासिधं' लिखा था!···उसके चेहरे को देखते ही लोगों के समझ में आ जाती है, यह आदमी गरीबी से बजाप्ता लड़ता रहा है, ढाल तलवार लेकर। ढाल उसकी ईमानदारी, तलवार, उसकी खरी-खोटी बोली। तीन साल पहले उसने पार्टी की मेम्बरी ग्रहण कर ली। किन्तु, अपने हथियार को नहीं छोड़ा है अब तक।···दो पैसा का वाउचर बनवाने के लिए, जगिया ग्वालिन का पैर तक पकड़ लिया रंगलाल गुरुजीने—जगिया दाय ! पार्टी के काम में दहो खर्चा हुआ है, वौचर तो देना ही होगा !

रंगलाल की बात सुन कर बाकी कौमरेडों ने एक दूसरे की ओर देखा। मकबूल ने दूसरे सदस्य से पूछा। मिडल फेल लड़के ने पिछले साल पार्टी में प्रवेश किया है। वह रंगलाल गुरुजी की तरह बात में छोआ गुड़ लपेटना नहीं जानता—सुचितलाल अपनी जाति का मड़र है। उसके कब्जे में कम-से-कम पचास-साठ घर हैं। इतने घर सिम्पथाइजर हो जायेंगे, तुरत !···

तीसरा सदस्य, शहर से आकर गाँव में बसे हुए, लोहार का लड़का है। मकबूल के बाद खाँटी साम्यवादी रहन-सहन, चाल-चलन बस उसी के व्यक्तित्व में पाया जाता है। विश्वकर्मा ने कहा—गाड़ीवान टोली में कितने सिम्पथाइजर थे ? कहाँ हैं वे ? इसीलिए तो हमलोगों की पार्टी ने यह फैसला

किया है। भेड़ियाधसान मेम्बरी नहीं। एक-एक सदस्य का पोस्माटम करके, ठोक-बजा कर मेम्बर बनाना होगा।

चौथे सदस्य ने वैधानिक दर-सवाल उपस्थित किया। काँग्रेस से आया हुआ उत्तिमचन्द कहता है—सिर्फ, कनफर्म मेम्बरों की बैठक नहीं। जरनल मीटिंग करके, पन्द्रहों-बीसों कौमरेडों को मिल कर तय करना चाहिये। और, जल्दी ही।

मकबूल ने बारी-बारी से सबकी बात सुन ली। बात सुनने के समय वह बीच में टोक-टाक नहीं करता है। चुपचाप अपनी दाढ़ी को चुटकी से नुकीला बनाता रहता है। बात, मीटिंग के बीच हो या किसी सदस्य से, पेश करना जानता है, मकबूल। किसी बात को धीरे-धीरे भूमिका बाँध कर समझाने को वह धूर्तता समझता है। बात को धमाके के साथ धड़-धड़ा कर पेश करता है वह—साथियो! मैंने इस बात के हर पहलू पर ज़ुदा-ज़ुदा नुक्तेनिगाह से ग़ौर क़िया है। अभी हमारे एक़ कॉमरेड ने रिमार्क़ क़िया क़ि गाड़ीवान् टोली में क़ितने सिम्पथाइजर थे! मैं क़बूल क़रता हूँ, यह हमारी और खास क़र मेरी क़रारी हार क़ा एक़ मजार है। क़िन्तु, हर बात क़े अन्दर समाजवादी सत्यक़ा क़ुछ मिक़दार होता है। उस चीज़ क़ो हमने पक़ड़ना सीखा है, अपनी हारों से।···सुचितलाल मड़र क़े पार्टी-प्रेम क़ो परखने में हम गलती कर सकते हैं, यह बात नहीं। मेरा मक़सद है कि पार्टी के प्रति उसक़ी सदिच्छा के समाजवादी सत्य क़ो हमें ग्रहण क़रना चाहिए।

सुचितलाल ने बीच मीटिंग में दही-चुड़ा और माल-भोग केला का भार भेज दिया। उसके नौकर ने कहा—मड़र बोले, बीच मीटिंग में जलपान पहुँचा दो जाकर। जलपान करने के पहले ही यह तय रहा कि सुचितलाल के समाजवादी सत्य को ग्रहण कर लिया जाय!

विश्वकर्मा खूब समझता है! मकबूल उसकी बात को काट कर हथौड़े की चोट दे रहा है। इसका कारण है। जनयुग में फारबिसगंज की गन्दी

सड़कों के बारे में और हरिजन क्वार्टर में जलकष्ट पर सम्पादक के नाम पत्र विश्वकर्मा ने अपने नाम से प्रकाशित करवाया है। तभी से मकबूल मन ही मन विश्वकर्मा से असन्तुष्ट रहता है। बात-बात में, बात को काटता है मकबूल, विश्वकर्मा की बात को, बस एक ही धार से—तुम शहर के नुक्तेनिगाह से देखते हो।…शहरी मजदूरों की समस्या नहीं, खेतिहर मजदूर की समस्या है। तुम्हारा अध्ययन ऊपरी है, इत्यादि।

शाम को सुचितलाल मड़र पुस्तकालय के पठनागार में गनगना आया—सुँचितलॉल मँड़र नँहीं। आँज सें कॉमरैंड सुँचितलॉल। जिन सॉलो नें अँमीन कीं बँहीं में पोंपीं लिंखायाँ हैं—सुँन लें। आँज सें सँफ्फासँफ्फी कॉमरैंड।

भिम्मल मामा ने कहा—लो! अरुणोदय हो गया साँझ ही, मुर्गे ने बाँग दी!

मकबूल जानता है, और बातें बाद में हो, कोई हर्ज नहीं। किन्तु, पार्टी के संगठन के लिए, गाँव में जनबल आवश्यक है। सुचितलाल के हाथ में जनबल है। और, यही है सुचितलाल का समाजवादी सत्य! मान लिया जाय, सुचितलाल कुण्ड दखल करने के लिए ही हमारी पार्टी में आ रहा है। तो, क्या हर्ज है? सामाजिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह हमारे साथ आ मिला है।…

नहीं, वह कुण्ड के लोभ में पड़ कर नहीं आया है। फिर भी, मकबूल का फर्ज है, उसके लिए पैरवी करके कुण्ड हासिल करवा देना!

—वॉख! वॉख!! मीत ने मकबूल की नुकीली दाढ़ीवाली सूरत देखकर भूँकना शुरू किया।

—अन्दर आइए।

—जय जनता! मकबूल के मुट्ठी-अभिवादन का उत्तर जित्तन बाबू ने हाथ जोड़ कर दिया—नमस्कार।

मकबूल की निगाह सामने खड़ी पत्थर की औरत पर गई। पत्थर की मूर्ति

के अंग-अंग से जिन्दगी टपक रही है, मानो। किन्तु, इसका समाजवादी सत्य···!

—क्या मँगाऊँ आपके लिए? चाय या कॉफी?

—काफ़ी मुझको सूट नहीं करता। नींद मर जाती है।

जित्तन बाबू के सिगरेट केस से सिगरेट लेकर सुलगाते हुए, मक़बूल ने पूछा—

—आपने अभी तक पार्टी प्लेज क्यों नहीं लिया है?

—पार्टी प्लेज? क्या करूँगा पार्टी प्लेज लेकर?

—करना क्या है? आप प्लेज लेकर घर में इसी तरह बैठे रहिये, कोई बात नहीं। आपको फील्डवर्क करने नहीं कहूँगा।

जित्तन बाबू मुस्कुराये।

—खैर! प्लेज, जब आपके जी में आवे लीजियेगा। मैं आज एक महत्वपूर्ण काम से आया हूँ।

—कहिये।

—सुचितलाल मड़र को जानते हैं न? बड़ा कनसस किसान है।

—जी।

—कम-अज़-कम कनसस किसानों के लिए कनसेसन करना आपका कर्तव्य है। कुण्ड का तस्फिया कर दीजिये।

—समसुद्दीन से क्यों नाराज हैं, आप? वह भी काफी चैतन्य किसान है। उसके बारे में भी कहिये। कम से कम मुसलमान के नाते भी··· ।

मकबूल ने जित्तनबाबू की बात काट दी—मैं मुसलमान नहीं हूँ। आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं पीताम्बर झा, तखल्लुस मक़बूल!··· मैं नीलाम्बर झा का छोटा भाई। जितेन्द्रनाथ मुँह फाड़ कर देखते रहे, मकबूल को—पीत्तू!···तुम्हारे स्वास्थ्य में काफी परिवर्तन हुआ है। वर्जिश भी करते हो?···एण्ड हू शेव्स सच क्यूबिस्ट? गाँव के नाई फ्रेंचकट बनाना

जानते हैं क्या ?

जित्तनबाबू के उत्साह को देख कर मकबूल जरा चिंता में पड़ गया।...शायद दाढ़ी अच्छी नहीं कटी। कौन बनावेगा गाँव में ऐसी दाढ़ी ? मकबूल खुद कैंची और रेजर से तराशता है, लेनिन की फोटो सामने रख कर, उससे एकदम मिलाकर। फिर भी खोट ?

फिर, असल बात की ओर मुड़ने की चेष्टा की मकबूल ने—आप जनयुग में लेख क्यों नहीं लिखते ? प्रोविंसियल पार्टी के अछैवट कामरेड कह रहे थे कि जित्तनबाबू का अध्ययन...।

—आप...माफ करना, तुम शायरी उर्दू में करते हो या हिन्दी में ?

—मैं हिन्दी में कभी-कभी तुक मिलाकर कुछ सुनाता जरूर हूँ। उर्दू पढ़ना जानता हूँ। लिख नहीं सकता। जहाँ तक लिखने की बात है...।

—बाय-द-वे, तुम अँग्रेजी क्यू से तो अपनी पार्टी का नाम नहीं लिखते ?

—नहीं। मकबूल अचानक भड़का। .. क्या समझ रहे हैं जित्तनबाबू ? ग्रेजुएट नहीं हूँ तो क्या हुआ, मैट्रिक पास करके 'आइए' में पढ़नेवाला भला क्यू से लिखेगा—भला क्यू से कौन लिखेगा ? मकबूल अप्रतिभ हो कर मिनमिनाया। जित्तनबाबू ने अति अचरज भरी मुद्रा में पूछा—क्या ? क्यूक्लक्सक्लान ?

—क्यू से कौन लिखेगा। इस बार मकबूल ने अपनी बात को जरा रुखाई से पेश किया।

जित्तनबाबू ने अपने को धिक्कारा मन-ही-मन। इतनी-सी आत्मीयता बर्दाश्त नहीं कर सके जो उसको सबसे पहले चाय की प्याली देनी चाहिए। जित्तनबाबू भूल ही गए। हठात्, उठ खड़ा हुए—चाय के लिए कह दूँ।

बात उखड़ी।

मकबूल भी इसी बात का ताना-बाना जोड़ रहा है, जित्तनबाबू हमेशा ऐसी ही उखड़ी-उखड़ी बातें करते हैं, सबसे शायद ? सचमुच पागल हैं ?

लेकिन, अछैवट कॉमरेड ने कहा था कि काम का आदमी है ! काम की बात तो हुई ही नहीं अभी, कोई । नहीं, वह बात को उखड़ने नहीं देगा। जित्तनबाबू हवेली के अन्दर से लौट आए—पाँच मिनट प्रतीक्षा का कष्ट सह्य हो ।

—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं । आप बैठिये ।

—तो, सुचितलाल मड़र कनसस किसान को मैं आपके द्वारा संवाद दे रहा हूँ । वे दोनों कुण्ड ताजमनी के हैं । मैं लेने-देनेवाला कौन होता हूँ ?

—ज़मींदारी झाँई मत दीजिए । यह सब कचहरी में बोलने-बतियाने के लिए रखिये । सीधी बात, कुण्ड दीजिएगा सुचितलाल को या नहीं ? हाँ-नहीं में जवाब दे दीजिए—छुट्टी ! मकबूल ने मौका पाकर चोट बैठाई-बातों पर-तड़ातड़ !!

जरा भी नहीं तिलमिलाये जितेन्द्रनाथ ।

मकबूल ने देखा, यह आदमी पोलिटिकली काफी पोला है ।

मुस्कुरा कर बोले जितेन्द्रनाथ—नहीं !

मकबूल आश्चर्यित हुआ । उसकी नुकीली दाढ़ी के केश खड़े हो गए, मानो । उसने पुनः एक संक्षिप्त प्रश्न किया—आप कम्युनिस्ट पार्टी के सिम्पथाइज़र हैं या नहीं ?

—नहीं ।

—आप जनयुग पढ़ते हैं या नहीं ?

—हाँ । माफ कीजियेगा—मैं 'हुआ सवेरा' भी पढ़ता हूँ ।

—'हुआ सवेरा' ने सब ठीक ही लिखा है, आपके बारे में ?

—हाँ ।

—एँ ? हाँ ? मैं आपको चुनौती देता हूँ, आप पीछे पछताइएगा । सुचित-लाल तो कुण्ड दखल करके छोड़ेगा ।

ताजमनी के अंग-अंग में गुदगुदी लगी ! मालकिन माँ मुस्कुराती कहती—ताजू ! आज एक आदमी फलाहार करेगा। सुबह से गुस्सा खा-पीकर बैठा है। कुपित पित्त में फलाहार···!

ताजमनी पर्दे के उस पार से हँट गई ! मीत उसके पीछे-पीछे भागा।

सुरपति राय टेप रेकर्डर बजाकर गीतका आखर लिख रहा है !

पंचरात्रि !

पाँच रातों तक अहोरात्रि गीत कथा गाकर असाध्य रोग अधांग से मुक्ति नहीं मिले, नहीं चाहिये अस्सी वर्ष के रघू रामायनी को अब गई हुई देह।···गुरु के ऋण से उऋण हुआ है, वह। उसका जन्म अकारथ नहीं गया।

चार रातें, सुनने वाले ही कह सकते हैं, कैसी धड़कती हुई रातें थीं ! किन्तु पाँचवीं रात तो कथा का सुर ही बदल गया। यह क्या हुआ ?

सुन्दरि नैका का भी दिल डोल गया—दन्ता राकस पर ? खुद फँस गई प्रेम के फंद में !···महाबलशाली दन्ता, किसी देवता से क्या कम है ? देवता तो रात-दिन सेवा करवायेंगे। और, यहाँ दन्ता कहता है कि रोज पैर पखारेगा सुन्दरि नैका का ! जिसकी हिरन्नि रानी रने-वने रो रही है। जिसका प्यारा बच्चा आस लगाकर बैठा है। हाय, हाय ! सुन्दरि नैका दिल की बात कहने चली दन्ता से। लेकिन, सुन्दर नायक भी भारी गुनी आदमी। सब चलित्तर देख रहा था अपनी बहन का। अस्सी मन लोहे को बेड़ी-बाँध में जकड़ कर बाँध दिया सुन्दरि को !

सुन्दरि नैका का ब्याह देवपुत्र से ही हुआ !

किन्तु ऐसा श्रापभ्रष्ट देवपुत्र, जो एक ही रात धरती पर सुख भोगने के लिए आया था।···पुरइन फूल से भरे कुण्ड में, दूसरे दिन देवपुत्र का निष्प्राण शरीर फूल कर तैरता रहा !

सुन्दरि नैका इस संसार में रह कर क्या करे ?···ओ रे मीता दन्ता ! मैं आ रही हूँ। दन्ता कुण्ड में एक बड़ी मछली कूदी—छपाक् !!

दन्ता के मरने के बाद कुण्ड के पास पहुँची हिरन्नि रानी। उसके कुछ ही क्षण पहले विधवा सुन्दरि नैका डूब मरी थी कुण्ड में। किनारे पर रख गई थी, सोने की एक कटोरी, खीर से भरी हुई ! दन्ता के बेटे के लिए।

औरत के दिल की बात, औरत नहीं परखेगी ? कलेजा कूट कर गिर पड़ी हिरन्नि रानी :

> दन्ता रे दन्ता, तोरा बिना धरती पे कछुओ ना सूझे
> मोरा लेखे कठिन जीवनियाँ रे, सुनु दन्ता !
> दन्ता रे दन्ता, कूल के निशनियाँ तोरा बेटवा नदनवाँ,
> सेहो, छोड़ि केकरा पे जायब रे, सुनु दन्ता !

···मानुस छोरी मइया भी चली गई तेरी, ओ रे मेरे लाल !···रघू इससे आगे नहीं गा सका ! कथा के अन्त में, सभी बाल-बच्चे वाली माताओं से रघू ने प्रार्थना की। उसकी सफेद दाढ़ी से झर झर कर आँसू गिर रहे थे—कल रात घर-घर से खीर से भरी कटोरी उत्तर की ओर से दूसरे कुण्ड में दन्ता के टूअर बेटे के नाम चढ़ाइये। बाल-बच्चों का कल्याण होगा !

···छोटा-सा भोला-भाला राकस का बालक ! हाथी के बच्चे जैसा, हुलसता हुआ कटोरों से खीर लेकर खाता हुआ। न जाने कब का भूखा-प्यासा टूअर बच्चा ! बच्चा आदमी का हो या राकस का !···ओ री मानुसछोरी मइया-या-या !!

—जैकिट कहो या जमाहिर कोट, एक ही बात है। लुत्तो ने सामबत्ती पीसी को बात समझाते हुए तुलनात्मक उदाहरण दिया—चाहे दो सौ रुपया नकद लो या दो सौ रुपये का धान तौला लो। एक ही बात है। वीरभद्दर बाबू बादशाह आदमी हैं। लुत्तो अपने साथ जितवापन्हेड़ी की दुकान से पिपरमेंट वाला पान ले आया है। सामबत्ती पीसी पान मुँह में लेकर बोली—अच्छा! इसका जवाब, मन में बूझ विचार कर कल दूँगी। लेकिन, मेरी एक बात का जवाब दो पहले। आखिर, जित्तन के पीछे तुम लोग क्यों लगे हुए हो? सर्वे अब खतम हुआ, झगड़ा-झंझट भी खतम करो! और, जिसको तुम सिकन्नर-शा-बादशा समझते हो उसको मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ।···आ रे गरुड़ा-आ-आ तू तू!!

सामबत्ती पीसी जब अपने कुत्ते को पुकारे तो समझो कि आस-पास कहीं गरुड़ झा की बोली उसने सुनी है।

गरुड़धुज झा चौबटिया पर खड़ा होकर किसी से पूछ रहा है—इधर लुत्तो आया है? लुत्तो पर नजर पड़ी है किसी की?

लुत्तो को गरुड़धुज झा पर जरा भी विश्वास नहीं। लेकिन उसका संग करना पड़ा है। मजबूरी है!

लुत्तो ने सामबत्ती पीसी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। बोला—तुम सोलकन्ह टोली की सबसे चान्सवाली हो, इसीलिए तुम्हारे पास आया। मैं अभी चलता हूँ। सोच-समझ कर जवाब देना।···खूब पौलिसी देना मलारी को!

—ई-पी-ही-ही-ही! ई-पी-ही-ही-ही!!

इसको मैथिलास ठहाका कहते हैं। मैथिलों की खास पहचान! कण्ठ से कटाई हुई हँसी के साथ निकलता है यह ठहाका!

गरुड़धुज झा ठहाका लगा कर सूचना देता है लुत्तो को—बड़ा अकबाली

आदमी हो, तुम लुत्तो बाबू ! मालूम है ? मकबूल भी अब बिलकुल उलट गया है। अभी कह रहा था, लुत्तो ठीक कर रहा है। जित्तन नरक का कीड़ा है। उसको गाँव से भगाना होगा, नहीं तो सारा गाँव नरक के कीड़ों से भर जायगा !

—ठीक पहचाना है मकबूल ने। देर से ही सही, लेकिन पहचाना है।··· नरक के कीड़े तो बढ़ रहे हैं गाँव में !

—हाँ, कल देखा। कौलेजिया लड़कों का एक गिरोह हवेली की ओर से खूब खुशी-खुशी आ रहा था। पता लगाना चाहिये।

—कौन-कौन था ?

—भूमिहार टोले का सुवंशलाल, कमलानन्द, प्रयागचन्द, नितिया। मैथिल टोले का अनरूध, शशभूखन, किरता। और···सोलकन्ह टोली का रधवा, सत्रूघन, मोहना। कमेसरा भी था !

—हूँ-ऊँ-ऊँ ! लुत्तो ने दाँत से ओठों को चबाते हुए कहा—देखियेगा, सभापति जी से कह कर सबको कौलेज से इसपेल्ट करवाते हैं या नहीं !

गरुड़धुज ने मुँह में खैनी तम्बाकू लेते हुए थुकथुकाया—थूः, अरे इससे क्या होता है ? जाने दो लोगों को। एक मकबूल अकेला ही काफी है। कौलेज के लड़कों की लड़कभुड़भुड़ी चार दिन भी नहीं चलेगी। मकबूल के दिमाग में काफी फौसिंग है। फुफुआ रहा था गेहुअन साँप की तरह ! उससे मिल कर बात करोगे तो, समझोगे !···अच्छा, मैं अभी चलता हूँ। रोशनबिस्वाँ का बेटा जरा पगला गया है। बाप से लड़ाई-झगड़ा करके अलग खाना-पीना कर रहा है।

लुत्तो सिड्यूल से बाहर की बात सुन कर इतना प्रसन्न हुआ कि राह चलते नौटंगी की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा—किस गफलत की नींद में रहे पलंग पर सोय, अजी अब तो मजा सब मालूम होय। अजी, हाँ-हाँ-जी ! मालूम होय !!

के बीच कोई काम होना मुश्किल है।

खाली बोतलों की तरह लोगों के दिमाग, इसमें जो कुछ भी भर दो समा जायगा! प्रेमकुमार दीवाना ने कहा—कितना काम करूँ, अकेला? देखो, अभी भी डाक से चिट्ठी आयी है—चार कविता, दस कहानी और करीब बारह नाटक की माँग पटने से आई है। लोहारपुर मुहल्ला से।…पटना की क्या बात? वहाँ जब मैं गया तो स्टेशन पर एक हजार पबलिक मुझे सिर्फ देखने के लिए जमा हो गई थी।

—इस्स! एक हजार?

—तो, हो न तैयार? तुम लोग सहायता दोगे न? शुरू करें लिखना, प्यार का बाजार?

—हाँ, हाँ, तैयार ही तैयार हैं सब! अब तो सर्वे का भी झंझट नहीं। जरा, एक चोटिलवा पाट हमारे लिए भी लिखिएगा।

—जोकड़ का पाठ हमको दीजिएगा।…अहा-हा, सुचितलाल हम लोगों के दल से निकल गया। नहीं तो, प्यार का बाजार में वह भी कमाल दिखला देता। बिदेसिया नाच में वह जब बटोहिया बनकर आता था और—तोंहँरों बँलेंमूजों कें चिन्हियों नां जाँनियों—गाने लगता था तो सारंगी भी उसके मोकाबले में मात खा जाय।

प्रेमकुमार दीवाना ने दलित नाटक मंडली की कच्ची-बही पर नाम दर्ज करना शुरु किया। दीवाना कहता है—कलकत्ता, बम्बै के थेटर के असली भेद का पता लगाकर आया हूँ। सब एलिक्ट्रिक की चालाकी सीख आया हूँ। देखना, प्यार का बाजार कैसा जमता है!

—दीमाना जी…।

—गलत नाम मत बोलो, दीवाना जी नहीं बोल सकते?

—दीनावाँ…नहीं-नहीं, दीवानाम…।

मलारी सोच रही है, इस दीवाना जी को क्या कहा जाय ?···

उस रात में तुम दबा कर भागे और आज फिर स्कूल से लौटते समय दीवाना को एक जरूरी बात पूछने की जरूरत हो गई। बड़ा आया है, मलारी का भला-बुरा सोचने वाला ! मलारी अपना भला-बुरा खुद सोचती है। दीवाना की आँखों में हमेशा शैतान हँसता रहता है ! मलारी का यह दुःख नया नहीं। सात वर्ष की उम्र से ही वह दुनिया के लोगों की जहरीली निगाहों को पहचानने लगी है। मलारी सच-सच बयान कर कभी लिखे तो···तो, न जाने क्या हो जाय !···

मलारी अपने बाप को दोष नहीं देती। चिड़चिड़ा है, मद्की है। लेकिन गाँव के बहुत भले लोगों से अच्छा है उसका बाप। मलारी का बाप ही क्यों, गाँव की किसी लड़की का बाप ऐसा ही मद्की और चिड़चिड़ा हो जायगा, हमेशा आदमी को हाँकते-हाँकते !···पिछली चार-पाँच रात से चौबे जी पर भूत सवार हुआ है। रोज रात में चौबे जी की बछेड़ी खो जाती है। दोपहर रात में मलारी के बाप को जगा कर पूछने आते हैं–महीचन मेरी बछेड़ी को देखा है ? कल रात मलारी के जी में आया कि पण्डित सरदजीत चौबे जी से पूछे···। क्या समझ लिया है चौबे जी ने ? उस दिन ठाकुर बाड़ी गई थी मलारी, रामलला का दर्शन करने—दूर से चौबे जी ने कहा—तुम मन्दिर की सीढ़ी पर या बरामदे पर से दर्शन कर सकती हो, मलारी ! कोई हर्ज नहीं। तुम्हारा संस्कार बदल गया है। इसके बाद चौबे जी ने इधर-उधर देखकर हाथ के इशारे से बुलाया—पगली ऐसा मौका कभी नहीं हाथ लगेगा। कहीं, कोई नहीं ! आकर चुपके से रामलला का चरण छू ले। आ ! आजा !! डरती है काहे ?···

रामलला और रामलला के पुजारी पण्डित सरदजीत चौबे को दूर से ही नमस्कार करती है, मलारी। लेकिन, भँगनीसिंह···प्रेमकुमार दीवाना की क्या दवा की जाय ? अभी-अभी डाक से एक गुमनाम चिट्ठी मिली है, मलारी को। दोहा, चौपाई वाली चिट्ठी !···

—मैं किसी के प्रेम में पागल हुआ हूँ, वर्ष भर से रात में जागल हुआ हूँ। मेरी जान, मलारी ! तुम पर कुर्बान-यह प्राण। आओ, चलो ! इस भेदभाव की दुनिया से दूर, बहुत दूर चल चलें हम। जहाँ मैं रहूँ, तुम रहो और कोई न रहे।...तुम सुवंशलाल से हँस-हँस कर बात करती हो और मुझको दुतकारती हो। खैर, मेरी किस्मत में यही है। मैं रस चूस कर उड़ जाने वाला भौरा नहीं हूँ। कलात्मक-प्रेम किसे कहते हैं, यह क्या जाने सुवंशलाल ? कलात्मक प्रेम करने वाला मधुकर रस चूस कर उड़ नहीं जाता। वह गुन-गुन मुन-मुन कर फूल के अधर पल्लव पर...।

शैतान ! बदमाश !!

न जाने क्यों, जब से सुवंशलाल और मलारी की चायवाली कहानी उड़ी है गाँव में, मलारी को रोज पाँच-सात बार सुवंशलाल की याद आ जाती है।...सुवंशबाबू ? ऐसा आदमी आजकल कहाँ मिलेगा ? कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन कह नहीं सकते हैं ? कई दिनों से देख रही है, मलारी। सभी नौजवानों को जानती पहचानती है।...

अररिया कोठ जाने की बदनामी ? मलारी अपनी या सुवंश की सफाई देने के लिए, दाल-भात की तरह कसम पर कसम नहीं खायगी। जिसको परतीत न हो, उसकी खुशामद तो नहीं करने जायगी, मलारी ? हाँ, इतनी-सी बात वह जरूर कहेगी कि पाँच छै घंटा साथ रहने पर भी, सुवंशबाबू ने कोई बेकाम की बात नहीं कही। घोड़ा गाड़ी पर, एक बार सुवंश बाबू की गोद में गिर पड़ी वह। अररिया कोठ की सड़क तो अपने गाँव की सड़क से भी गई गुजरी है। घुटने भर गड्ढों में घोड़ागाड़ी हिचकोले खाती।...सुवंशबाबू का मुँह लाल हो गया था। वे सरक कर अगली गद्दी पर बैठ गए थे।

मलारी चाहती है, सुवंशलाल के नाम के साथ उसकी बदनामी फैले। खूब जोर से ! वह, अब किसी से नहीं डरती। सुवंशबाबू क्या कहना चाहते हैं ? कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ? बोलो न सुवंशबाबू, मंगनीसिंह की क्या दवा की जाय ? कायर ने अपना नाम नहीं लिखा है। नाम के बदले दोहा

—ढाई आखर शब्द का मैं हूँ बेचलर ब्याय, चिन्हन वाले कहत हैं, है मजनू का भाय !···

—सुबो रे, सुबो ! सुवंशलाल की बूढ़ी माँ अपनी पुतोहुओं के मुँह से सुनी हुई बात का विश्वास क्यों करे ? सुवंश उसका कोरपच्छू लड़का है। कोरपच्छू, सब से आखिरी संतान ! माँ से कुछ नहीं छिपावेगा उसका सुबो।
—सुबो ?

—क्या है माँ ? सुवंशलाल को माँ के मन की बात की झलक मिल गई, मानो। वह अपनी माँ से आँखें नहीं मिला सका।

—तुम्हारी भाभियाँ क्या कह रही हैं···।

—भाभियों का नाम क्यों लेती है मइयाँ ? मझली भाभी ओसारे के नीचे से बोली—आँगन छोड़ कर कहीं जाती हूँ तो बस एक ही बात सुनाती हैं, सभी। कोई ताना मार कर कहती है—नई देवरानी के लिए कोठरी बनवाओ, मँझली ! कोई कूट करती है—घर की भौजी रस वाली बात नहीं करे तो आदमी क्या करे ? जिस टोली में, जिस आँगन में रस मिलेगा जायेंगे।··· आज भी मैं लड़ आई हूँ छत्री टोली की संतोखीसिंह की बेटी से !

बड़ी भाभी बोली—जिस दिन से अखबार में फोटो छापी हुआ है, गाँव के लहँगड़े लड़कों ने मलारी को बाभनी समझ लिया है।···मकबूल, मनमोहन और दीनदेलदा ने तो मुसल्मान हाड़ी-काछी-मोची को पहले से ही माथे पर उठा लिया था। ···अब लोग घर में चाह नहीं पीकर मलारी के हाथ का परसाद पीने जाते हैं।

—सांती के बाबू कह रहे थे कि इस बार फागुन चढ़ने के पहले ही, अगहन में काशा गनेसपुर वाले शादी करने को तैयार हैं।

सुवंशलाल चुपचाप सामने पड़ी हुई बीमा-पुस्तिका को उलटता रहा। उसकी माँ ने अपने सुबो का मुँह देख कर न जाने क्या समझा कि फूट-

फूट कर रोने लगी—बेटा रे !

—माँ ! क्यों रो रही हो ?···सब झूठी बात है। जीवन बीमा के काम में चार पैसा कमा लेता हूँ घर बैठे। यह भी लोगों को बर्दाश्त नहीं होता !

—तँ, चाह की बात झूठ है ? मँझली ने पूछा।

—हाँ, झूठ है। सरासर झूठ !

—लेकिन, मलरिया ने तो अपने मुँह से कबूल किया है। बड़ी भाभी बोली। मँझली ने बात में जोड़ा-पट्टी लगाई—इतना ही नहीं ! कहती थी कि रकसागाड़ी में एक आदमी की जगह में दो आदमी बैठ कर कैसे जाते ? इसलिए, सुवंशबाबू कोरियाये हुए ले गये।

सुवंश के मँझले भाई यदुवंशलाल ने आँगन में प्रवेश किया—संतो की माय ? मैं कह देता हूँ–मेरी थाली, मेरा लोटा, गिलास वगैरह अलग रखो। सभी लोटे-थालियों के साथ क्यों रखती है ? पीठ की खाल खींच लूँगा।··· आग में जलाओ कटोरी को !

गुस्से से पैर पटकता हुआ बैठक की ओर चला गया यदुवंस। बड़ा भाई रघुवंश बहुत शांत प्रकृति का आदमी है। मँझले भाई की बोली सुन कर पिछवाड़े की बगिया से आया—मइयाँ, क्या बात है ? आग में थाली-लोटा क्यों झोंकने कहता है यद्दू ?

बूढ़ी ने आँखों को पोंछते हुए कहा—जमराज दुस्मन को मेरे ही साथ दुस्मनी है। उठा नहीं ले जाता !

रघुवंश बाबू ने अपनी स्त्री से पूछा—क्यों मोरंगवाली ? क्या बात है ?

मोरंगवाली, बड़ी भौजी ने घूँघट के नीचे से जवाब दिया—जद्दूबाबू वैस्नव हैं। माँस मछली उनकी थाली में कोई क्यों परोसती है ?

—आज कहाँ से मछली आई ?

सुवंश की माँ बात पर राख डालना नहीं चाहती—मछली नहीं, मलारी !

—मलारी ?

—हाँ ! सुवो ने जीवनबीम्मा किया है उसका । इसलिए, जद्दू अपनी थाली में नहीं खाने देगा, सुवो को ।

रघुवंश बाबू ने सरलता से कहा—उसका माथा खराब है ।

—मेरा माथा खराब है ? जाकर पूछिये गरुड़ झा से, छत्री टोला के मंगना से, तेतर टोली की सामबत्ती से । क्या कहते हैं, लोग ? आप तो दिन भर गाँव में रहते नहीं, खेत में क्या सुनियेगा ? यदुवंश ने बैठक की खिड़की से आँगन की ओर जवाब दिया ।

—क्या कहते हैं लोग ? क्या है रे सुवो ?

सुवंशलाल ने कहा—मुझे क्या मालूम ? भैया को ही पूछिये ।

—काम करो तुम और पूछा जाय भैया से ? यदुवंश आँगन में आ गया । बोलो, क्या चाहते हो तुम ? काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखें ?

—काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखने की क्या बात है ? सुवंश ने साहस से काम लिया ।

शांति स्कूल से आई और हाथ की किताब सुवंश काका को देती, बोली—मलारी मास्टरनी ने दिया है । बोली कि आज पुस्तकालय बंद है । किताब लेती जा, काका को दे देना !

सुवंशलाल की अन्यमनस्कता से किताब गिर पड़ी और किताब के अन्दर का लिफाफा छिटक कर बाहर आ गया !···सुवंश बाबू को मिले । जरूरी, बहुत जरूरी, लाल स्याही से रेखांकित !

रघुवंश बाबू ने कहा—कम्पनी की चिट्ठी-पत्री, हर-हिसाब इधर-उधर न हो ! तुम्हारे जैसा भुलक्कड़ आदमी कहीं नहीं देखा ।···गड़बड़ होने पर बूझना ! पोस्टमास्टर का क्या हवाल हुआ था ? चार आने पैसे के हिसाब की गड़बड़ी में, चार सौ रुपये दण्ड । कम्पनी का कारबार है !

सुवंश ने लिफाफे को पाकेट में रख लिया । मँझली बहू ने बड़ी की ओर देखा ।

दोनों भाई जब दरवाजे पर चले गये तो मँझली ने अपनी लड़की को डाँटते हुए कहा—तू स्कूल में पढ़ने जाती है या डाकपेन का काम सीखने ? शांन्ति को मलारी मास्टरनी कितना प्यार करती है ! बेटी कहती है।—शांति बेटी, भूख लगी है ? जाओ घर, छुट्टी ।

सुवंशलाल ने अपने कमरे से निकलते हुए कहा—जिस स्कूल की मास्टरनी रैदास की बेटी है, उसमें पढ़ने के लिए भेजती ही क्यों हो अपनी बेटी को ?

बड़ी ने मँझली की ओर देखा—बात सच है !

मँझली तुनक कर बोली—कोई कुछ करे, हमको क्या ?...जीवनबीम्मा का सब रुपैया मलारीके पेट में जायगा । देखना, दीदी ।

—सुबो का क्या कसूर ? वह छौड़िया ही ऐसी है। जब तक छौड़ी न दे आस, तो छौड़ा क्यों जाये पास ?

सुवंश सीधे हवेली की ओर जा रहा है, अपने आँगन से निकल कर। यदुवंश ने पुकार कर कहा—दरवाजे पर मच्छड़ काटता है तुमको, क्यों ? कहाँ जा रहे हो ? गुरुमंतर लेने ?

रघुवंश बाबू ने बछिया को घास देते हुए कहा—तुम तो बेकार उसके पीछे पड़े हुए हो ?

—बेकार ? देखियेगा, एक दिन सभी चमार मिलकर सिर तोड़ेंगे, इसका। आपकी ढिलाई से ही···।

—क्या किया है सुवंश ने ? किसका घी का घड़ा उलटाया है ?

—मलारी से फँस गया है ! यदुवंश ने खोल कर कहा—अब समझे ?

—फँस गया है ?

—और यह बात छिपी रहेगी ? काझा-गनेशपुर वालों को यदि मालूम हो जाय कि चमार की बेटी से फँसा है लड़का, तुरत भड़क जायेंगे ।···रघुवंश बाबू चुपचाप सोचने लगे ।

प्यार का बाजार !

एक गाँव-समाज का सामाजिक नाटक !

लेखक : श्री प्रेमकुमार 'दीवाना'।

भूमिका !

नाटक लिखने के पहले ही मंगनीसिंह नाटक की भूमिका लिख रहा है !

···प्रेम सरोवर स्नान करि, धर नटवर को ध्यान,

दीवाना रचता अहो, नाटक एक महान !

संसार में प्रेम के नाम पर, प्यार की दुहाई देकर आजतक घनेरों नाटककारों ने अपनी लेखनी को कलंकित किया है। कलात्मक प्रेम उठ गया है, समाज से।···

कला पर प्रेम की कलई कलम मेरी चढ़ावेगी,

कलात्मक प्रेम का झंडा जगत भर में उड़ावेगी ! इति शुभम्। निवेदक—दीवाना।

पात्र-परिचय :

१—पागल प्रेमी—प्रेम तत्व को ढूँढ़नेवाला एक युवक।

२—जागल प्रेमी—प्रेम में वर्षों से जगा हुआ प्रेमी। अधेड़।

३—अभागल प्रेमी—जिसकी प्रेमिका की शादी दूसरे से हो गई।

४—मूक प्रेमी }
५—हूक प्रेमी } —एक ही प्रेमिका को प्यार करनेवाले दो प्रेमी।

···पैंतीस पात्र हैं। पात्री ?

दीवाना ने सबसे पहले, मलारी को पत्र लिखना आवश्यक समझा।··· मनमोहन बाबू की बहन लीला पटने में नाटक करती है। गाँव में भी स्टेज पर उतरेगी। लेकिन, दलित-नाटक-मंडली को उससे क्या लेना-देना ? यदि

मलारी तैयार हो जाय तो नाटक में एक पात्री का भी समावेश कर सकता है, दीवाना।...

—प्यार का बाजार हो या नहीं हो। इस बार शामा-चकेवा तो जरूर होगा। इसी पूर्णमासी की रात को शामा-चकेवा है। तैयारी करो! मलारी कहती है लड़कियों से। अपनी उम्र की लड़कियों और सखी सहेलियों को उत्साहित कर रही है—कौन कहता है कि यह गँवार पर्व है?...इसे मानने वाली लड़की फॉरवर्ड लड़की नहीं समझी जायगी? रहने दो वह सब फॉरवार्डी, शहर में।

—लेकिन लीलिया भी कह रही थी कि शामा-चकेवा की याद आयी थी पिछले साल पटने में। सो, सुना कि गाँव में भी दो-तीन साल से शामा-चकेवा बन्द ही कर दिया है। जयवन्ती बोली।

मलारी विहँस कर बोली—कहती थी लिलिया?

लीला पढ़ चुकी है मलारी और जयवन्ती के साथ। जयवन्ती ने तो बहुत पहले ही पढ़ना छोड़ दिया। मलारी और लीला ने एक साथ मिडल पास किया है। मलारी का तीन वर्ष मुफ्त में ही खराब हुआ। लीला कौलेज में पढ़ रही है। मलारी के जी में आया कि दौड़ कर लीला के पास जाय। लेकिन तीन-चार साल से तो भेंट-मुलाकात हुई नहीं। तिस पर, कौलेज में पढ़ती है।—सुनती हूँ कि लिलिया लड़कों की तरह केश छँटा कर आई है?

—नहीं, नहीं। जयवंती बोली, मैं अभी देख कर आ रही हूँ।...असल में जिस साल गई पटना, उसी साल शादी की बात होने लगी। वह भी कौलेज

में पढ़ने वाला लड़का ! उसने कहा, लीला यदि मर्दों की तरह बाल कटावे और सायकिल पर चढ़ना सीखे तो शादी कर सकता हूँ। बस लीला के मामू लीला को एक अँग्रेजी बालबर की दुकान में ले गये। वहाँ सोडा-वाटर-लेमलेट से केश को धोया, बालबर ने। फिर···।

—इस्स ! तू भी जुलुम लड़की है जयवन्तिया ! ह : ह : ! बिना पटना शहर गये ही ऐसा बियाम करती हो जैसे आँख से तू देख रही थी ! समियाँ बोली।

—आँख की सपथ ! खुद बोल रही थी, लिलिया। दोपहर को मैं कहाँ थी ? लिलिया के यहाँ खाकर सारी दोपहरी कहानी सुन रही थी।

—शादी का क्या हुआ ?

—सो, बाल तो कटा दिया। सायकिल पर, भोरे-भोर गिर-पड़कर किसी तरह लीला ने सायकिल सीखी। लेकिन, तब तक दुलहा को दूसरी लड़की पसंद आ गई !

—अच्छा ? तब क्या हुआ ?

—फिर, दूसरा दुलहा ठीक हुआ। तो, उसने कहा कि जब तक बाल नहीं बढ़ेगा, शादी ही नहीं करेंगे।

—लो मजा ! इस बार क्या हुआ ? इसको भी दूसरी लड़की···।

—नहीं-नहीं। कहती थी, ज्यों-ज्यों मेरा बाल बढ़े त्यों-त्यों उसका आना-जाना ज्यादे शुरू हो गया। लेकिन, है उस्ताद उसका दुलहा ! केश बढ़ता गया, फोटो छापता गया, केश बढ़ता गया, फोटो छापता गया।

—इस्स ! हद हो तुम भी छौंड़ी—ई-ई हः हः ! ई तो वही फोटो खींचने वाले भच्ची बाबू की तरह फटाफट फोटो खींचने लगी, जैसे !

—हाँ, लिलिया कहती थी। मलारी का फोटो समाचार पत्र में देखा। बड़ी खुशी हुई। उसके कौलेज की लड़कियों ने कहा कि तुम भी आग पर चलना जानती हो, तब। दिखलाओ, एक दिन !

मलारी बोली—आज शाम को जाओगी जयवंती, फिर ?

—चलेगी ?

—हूँ !

—चल। लिलिया बदली नहीं है। एकदम, सब आदत वैसी ही।

सेमिया भी चलेगी !

केंक्-केंक् ! क्रें-एँ, क्रें-एँ—क्रेंक्। केंक्-केंक् !!

शामा-चकेवा की बोली दुलारी दाय के किनारे सुनाई पड़ती है—आ गई, आ गई शामा-चकेवा की जोड़ी ! देखो, कहा था न ? शामा-चकेवा से ठीक एक दिन पहले ही आ जाती है शामा-चकेवा की जोड़ी। कोई पर्व मनावे या न मनावे !

शामा-चकेवा ही नहीं। सैकड़ों किस्म की चिड़िया उतरी हैं हिमालय से, दल बाँधकर ! खंजन-पंखी सबसे पहले ही सन्देश लेकर आ गई थी—टिंउ-टिंउ, ट्रिटाँ ! खंजन को देखते ही कुमारी लड़कियाँ ओरियावन शुरू कर देती हैं !

नये नौजवानों की नजर में इस तरह के पर्व-त्योहार रूढ़िग्रस्त समाज की बेवकूफी के उदाहरणमात्र हैं। शामा-चकेवा, करमा-धरमा, हाक-डाक इत्यादि पर्वों को बन्द करना होगा।

बूढ़े भी कहेंगे—मुफ्त में चावल, केला, गुड़, मिठाई और दूध में पैसे लगते हैं। फिजुलखर्ची ! चिड़िया-पंछी का भी पर्व होता है, भला ? सो भी इस जमाने में ?

फिर भी हर साल लड़कियाँ खेलती ही आ रही थीं। जिस साल सर्वे शुरू हुआ, उस साल से एकदम बन्द। गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने कहा—कहाँ खेलेगी शामा-चकेवा ! कोई भी अपनी जमीन में खेलने नहीं देगा।...

फ़ुटबॉल खेलने का मैदान स्कूल वाला दर्ज हो गया है। कबड्डी खेल हो या फ़ुटबॉल चाहे शामा-चकेवा। सर्वे के पर्चे में दर्ज हो ही जायगा। इसीलिए, जमीन वालों ने कहा—नहीं, मेरी जमीन में नहीं। एक पर्व मना कर मुफ़्त में जमीन नहीं छिनवानी है। दर्ज हो जायगा कि यह शामा-चकेवा खेलने का मैदान है।

इस साल, हर टोले की लड़कियाँ धूमधाम से शामा-चकेवा मनाने की तैयारी कर रही हैं! कहने को सिर्फ़ कुमारी लड़कियों का त्योहार है। साथ रहती हैं, सभी। व्याही, बेटा-बेटी वाली, अधेड़, बूढ़ी सब मिल कर गाती हैं।

मिट्टी का शामा, मिट्टी का चकेवा। छोटे-छोटे दर्जनों क़िस्म के पंछियों के पुतले। अन्दी धान के चावल का पिटार घोलती है। पोतती है प्रत्येक पुतले को। इसके बाद लिपे-पुते सफ़ेद पुतलों पर, पुतलों के पाँखों पर, आँखों पर तरह-तरह के रंग-टीप, फूल-लत्ती। लाल, हरे, नीले, पीले, बैंगनी, सुगापंखी, नीलकण्ठी। पुतले, व्याही बहनें बना देती! बूढ़ियाँ रङ्ग-टीपकारी आदि कर देती हैं।

—कौन कहता है गँवई पर्व है? लीला बोली—मैंने दैनिक आर्यभूमि और इण्डियन-नेशनल-टाइम्स में लेख पढ़ा है, इस पर्व पर। समझी मलारी? मलारी ने कहा—और मैंने भी पढ़ा है। परिजात की पुरानी कौपी उलटा रही थी। देखा, शामा-चकेवा पर भी लेख है। लिखा है, नैपाल की तराई से सटे, उत्तर बिहार के जिलों में होता है, यह पर्व।

—ए, मलारी। तू अपना हाथ काट के मुझे देगी? कितना सुन्दर बनाती है तू! शहर की लड़कियों को भी मात कर देगी तुम्हारी चित्रकारी।

—दुत्त!

—आँख की क़सम कहती हूँ…।

—अरी, लिलिया ? तू अभी तक आँख की कसम खाती है। शहर में भी ! लीला बोली—सच कहती हूँ, आजकल ऐसी ही चित्रकारी को पसन्द करते हैं लोग। हाथ में सीकी की बनी डोलची लेकर घूमती हैं, लड़कियाँ। सो भी कितनी भद्दी ! यदि महीन कारीगरी तुम्हारी देखें, वे ! तू चल मलारी पटने···।

—दुत्त।

—तू नहीं जायगी तो हाथ काट के दे अपना। मैं तो सब भूल गई !

—मैं हाथ काटकर दूँगी ! लेकिन, तुम एक चीज दोगी ?

—क्या ?

जयवंती, सेमियाँ, रतनी और मलारी एक ही साथ हँस पड़ीं। सबसे पहले जयवंती बोली—उँहुक्। वह देनेवाली चीज नहीं !···खबरदार, लिलिया !

—क्या माँगती है ? भोली लीला ने पूछा।

—माँगती है तुम्हारा दुलहा-आ !

—हा-हा-हा-हा !···

मनमोहन बाबू ने अपनी माँ से कहा—माँ ! जरा इधर सुनो !

—क्या है ?

—देखो, यह मलारी बड़ी कर्रप्टेड है।

—क्या है ?

—माने, बदनाम है न ! लीला को उसके साथ ज्यादे मिलने-जुलने देना, अच्छी बात नहीं।

मनमोहन की विधवा माँ घर की मालकिन है। मनमोहन बाबू से नाराज रहती है। बहू की बात पर उठने-बैठने वाले बेटे को फूटी निगाह से नहीं देख सकती, वह। बोली—चार साल के बाद चार दिन के लिए गाँव आई है, बेचारी। उस पर मैं हुकुम नहीं चला सकती। तुम्हीं कहो।

—बिनराबन बनाई है या नहीं ? जरा देखने दे, मलारी दैया !

मलारी हँसकर कहती है—बिनराबन मत बोल। वृं-दा-व-न ! रटो पाँच बार ! मलारी के आँगन में खड़ी लड़कियों ने दुहराने की चेष्टा की—बिन-बिर-बिंद-बिंदराबन। अब दिखा दो।

—बेकार वृन्दावन क्यों बनाऊँ ? मलारी बोली—जित्तन बाबू ने तो दो हजार गाछ रोप कर असली वृन्दावन लगा ही दिया है। मैंने इस बार ऐसा चुगला बनाया है कि देखोगी तो देखती ही रह जाओगी।

पूर्णिमा से दो रात पहले से शामा-चराई की रात शुरू होती है। घर-घर से डालियाँ लेकर आती हैं लड़कियाँ। डालियों में चावल, फल, फूल, पान-सुपारी के साथ पंछियों के पुतले। लंबी पूँछवाली खजन, पूँछ पर सिंदूरी रंग का टीका वाला पंछी, ललमुनियां। बिनरा···वृन्दावन ! जहाँ, शामा चकेवा की जोड़ी चरेगी। छोटे-छोटे कीड़े पतंगे, बरसात के जन्मे। असली कीड़े पतंगे नहीं, मिट्टी के ही। वृन्दावन में चुगला आग लगा देगा। जली-अधजली चिड़िया वृन्दावन की आग को अपने छोटे-छोटे डैने से बुझावेगी। धान, दही, दूब और मिट्टी के ढेले खिला कर, लड़कियाँ बिदा करेंगी शामा चकेवा को—जहाँ का पंछी तहाँ उड़ि जा, अगले साल फिर से आ। चुगला की चोटी में और मुँह में आग लगाकर लड़कियाँ ताली बजाकर गावेंगी—तोरे करनवाँ रे चुगला, तोरे करनवाँ ना ! रोये परानपुर की बेटिया रे, तोरे करनवाँ ना !

—मैं नहीं देख सकूँगी मलारीदी का चुगला। महती पेट पकड़ कर बोली देख, जिसकी शामा कँक-कँक करके अब उड़ी। ऐसा लगता है, जिसके खंजन को छूते ही टिंउ-टिंउ-ट्रिटैं करके सरसरा कर दौड़ पड़ेगी।···उसका चुगला कैसा होगा, हे राम !

—एक बार सब मिलकर ताली बजाओ।

फट-फट-फट-थप-थप-ढन-ढन-ढन···।

—ए, रमदेवा। फटी ढोलकी मत बजा!

मलारी धीरे-धीरे चँगेरी की झाँपी उघार कर चुगला निकालती है—हाँ, मेरा चुगला ऐसा-वैसा नहीं। दु-मुँहा चुगला है! एक मुँह पक्का काला, दूसरा सादा···।

—ह-ह-ह-ह-ह! हा-हा-हा-हा! ही-ही-ही···बन्द करो, बन्द करो। मर गई। पेट में दर्द होने लगा। बन्द करो, मलारी दैया!

डेढ़ हाथ का मिट्टी का पुतला। एक शरीर, दो मुँह। एक मुँह काला, आँखें उजली और ओठ पर थोड़ी जीभ निकली हुई। दूसरा मुँह सफेद, दोनों आँखें, काली। दंतपंक्ति में एक दाँत सादा, बाकी सरीफा के बीज की तरह काले!

—हाय रे। रूप देख कर जी जुड़ा गया। लगता है, मुँह चिढ़ा कर कुछ बोलेगा और बोल कर आँख मटकावेगा। चुटिया देखो, छुछुँदरराम की! इसका नाम चुगलैंट साहेब रखो मलारी!

बाहर से किसी ने आवाज दी—महीचनदास! मलारी की माँ!

—कौन है? ए! चुप-चुप!···के है?

मलारी की माँ घूँघट जरा-सा सिर पर सरका कर आँगन से बाहर आई।

—क्या है? कौन है?

—मैं सुवंशलाल। एक किताब···मासिक पत्रिका···मलारी से पूछो।

मलारी की माँ सब कुछ समझती है। लेकिन, जोर-जोर से कुछ कैसे बोले, वह? बूढ़ा जग जायगा तो आफत लेकर उठेगा। वह धीमी आवाज में, हाथ नचा-नचा कर कहती है—बाबू साहेब। उ सब बात पूछना था तो उस दिन डागडरनी के मार्फत ही काहे न पुछवाये? सरकारी बात है तो क्या किसी का लाज-धरम भी ले लेंगे? बोलिए तो, भतखौकी टेन थाने

की बेला में आए हैं पूछने कि···। जरा-सा भी मुँह में लगाम नहीं ?

सुवंशलाल अवाक् होकर मलारी की माँ की बातों को समझने की चेष्टा करने लगा—क्या हुआ ?

आँगन से निकल आई मलारी—एक मासिक पत्रिका पुरानी और एक हाल की। सो, अभी रात में किसको जरूरत पड़ी ?

मलारी मन्दमन्द मुस्काती है ! मलारी की माँ घूँघट के नीचे से दाँत कट-कटा कर कहती है—हरजाई, लाज-सरम तो घोल कर पी गई। क्या खराब खराब बात बोलती है !

—सुरपति बाबू शामा-चकेवा पर लेख पढ़ना चाहते हैं।

—एक मासिक पत्र में तालाबी पंछी पर पद्द है।

मलारी की माँ अपनी बेटी को डाँटती है—मलारी ! बाप जगेगा तो···।

—जगेगा तो क्या होगा ?

सुवंश के रोम-रोम बज रहे हैं। एक झलक के भूखे सुवंश को और कुछ नहीं चाहिये।

मलारी ने कहा—अच्छा, तो प्रणाम !

सुवंशलाल के जाने के बाद दहलीज में गुमसुम खड़ी मलारी को टुनका मारते हुए बोली, उसकी माँ—फिर मार खाने को मन हुआ है तेरा ? मर्दों से खराब-खराब बातें बोलते तुम्हारी जीभ नहीं लड़खड़ाती ?

—तू बेकार खराब बात खराब बात रट के मरी जा रही है। मासिक पत्रिका किताब को कहते हैं।···देखती हूँ, अब जल्दी ही ट्रेनिंग के लिए भेजा जायगा हमको।

इधर मलारी ने एक नया तरीका निकाला है। समय-समय पर कहती है—ट्रेनिंग करने के लिए जाऊँगी, मुजफ्फरपुर ! सुनते ही उसकी माँ चुप हो जाती है।

शामा चरावे गेली हम-आँ जित्तन बाबू'क बगिया हे-ए,
सोहि रे बगिया,
शामा मोरा हेराइल हे-ए,
सोहि रे बागिया…।

गाँव से सटी, गोबर के खाद से पटाई हुई जमीन। तम्बाकू रोपने के लिए तैयार की गई जमीन में लड़कियाँ जमा हुई हैं, बबुआन टोली की।

—ऐं ? बबुआन टोली की लड़कियाँ मुकाबला करेंगी ? मजा आयगा।

—लीला आई है। उसी ने उकसाया है सबको।

—अँग्रेजी में गायेगी शामा का गीत ?

—अँग्रेजी में नहीं, फारसी में ! मलारी कहती है, मुकाबला की बात तो करती हो। सकोगी लीला से ? गीत वह भूली नहीं है।

लीला कहती है—देख, सोल्कन्ह टोली वाली सब गाली-वाली भी दें तो तुम लोग गाली मत निकालना। समझी ?

—सब से पहले किसकी बगिया से ?

—हमेशा, पहले हवेली की बगिया से शुरू होता है।

गोड़ तोरा लागों भइया, पखारनसिंघ सिपैहिया-या' कि पैंयाँ पड़ो ना !
काहे शामा मोर छिपावला
'कि छोड़ि देहु ना, मोरा शामाँ रे चकेवा राम,
खोलि देहु ना !

—तब ? इसके बाद ?…नाचेगी नहीं तो गीत कैसे जमेगा ? एक ही पद गाकर हाँफने लगी ? उधर सुन, बुर्ज के उस पार से मलारी के गले की आवाज, कैसी सुरीली सुनाई पड़ रही है !

—तू भी लिलिया, रिकाट से कम नहीं गाती है। सामवत्ती पीसी कहती है। सामवत्ती पीसी के लिए दोनों दल बराबर हैं। बबुआन टोली की मंडली में आई है। गीत नहीं जमेगा, पान-पत्ता का इन्तजाम ठीक नहीं होगा तो सोलकन्ह टोली की मण्डली में चली जायगी। पान जर्दा खाने से गला खराब हो जाता है, किसने कहा ? गाने दो सामदत्ती पीसी को। पीसी नाचना भी जानती है।

—ले। कमर कस के पकड़। बाल खोल ले। पद गाकर झूमना पड़ेगा।

—हाँ, पखारनसिंघ बिना गाली सुने, शामा नहीं छोड़ेगा।

सामवत्ती पीसी शुरू करती है :

> आ-रे, लाज तोरा नाँहि भड़वे, पखारनसिंघ सिपैहिया-या कि सरमो नाँहि रे।
> तोरा देहि में धरमवाँ, एको रत्ति ना···।

सोलकन्ह टोली की करीब पाँच सौ औरतों की मूलगैन है, मलारी। सुर देने का काम करती है घेघी फुआ।

—ऐ। घेघी फुआ को कौन चिढा रही है ? बेन बाजा कहती है तो कहो। बेगपैप क्यों कहती हो मलारी ? घेघी फुआ सुर छोड़ देगी तो तू तुरत हाँफ जाओगी।

—बेनबाजा की तरह, भाथी में हवा भर कर छोड़ भी दो, फिर भी, रॅं-ऍं-ऍं-ऍं !!

—कमर कस के पकड़, मुट्ठी बाँध। जयवन्ती, कुलमन्ती, धनवन्ती, गुनमन्ती चारों बहिनियाँ ! मलारी को बीच में रखो। दो-दो जनि दोनों बगल में। हाँ !

—लिलिया आई है पटना शहर से मुकाबिला करने ! देखना है।

—नहीं, नहीं। मोकबला-मोकदली की बात लिलिया नहीं करती। बेचारी

कह रही थी कि एक साथ शामा-चकेवा क्यों नहीं खेलतीं ?

—जब पहले ही नहीं हुआ कभी तो अब क्या होगा ? बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहू को तो हम लोगों की देह की मँहक लगती है।

—मलारी ऐसी शामा चकेवा खेलनेवाली लड़की नहीं कि शामा चराने के लिए आते ही खो बैठेगी सामां!···अरे, अभी बाग देख बगैंचा देख, पुरइन के गलैंचा देख। वृन्दावन में घूमेगी नहीं, मस्ती में झूमेगी नहीं तो शामा को कैसे भूलेगी ?—चल ! जरा फैल के गिर्दाव बाँध। ताल मत तोड़ना। नवसिखू छौंड़ियों से कह दो। बेकार गला न भाँजे ! नहीं तो, मेरा मन खराब हो जायेगा।

सभी मलारी की बात मानते हैं। मूलगैन है, मलारी। गला क्या पाया है छिनाल ने !···हमउम्र लड़कियाँ अपनी सखी सहेलियों को प्यार से भी छिनाल कहती हैं, गाँव में। मीठी हो जाती है यह गाली, तब !

बाहों में बाँह डालकर कड़ी जोड़ती है मूलगैन के साथ की लड़कियाँ। हाँ, मूलगैन की कड़ी में जुड़कर गीत गाना खेल नहीं। बेताली की हिम्मत नहीं होती कि उस कड़ी में जुड़ जाँय।···मूलगैन की पाँति चली !

मलारी बनहाँसिन की तरह चलती है। पहाड़ से तुरत आकर धरती पर बैठी हुई बनहाँसिन ! तकमका कर इधर उधर देखती है, अचरज से :

देखे में जे आवे सखिया, बाग रे बगैंचवा कि पोखरी-मंडलिव,
रम्मां ऊँची रे हवेलिया, देखु-देखु ना !
कहाँ बाग रखवारवा से पूछि लेहुना, हमारा शामा के पीरितिया
से नेति देहुना !

बाग के रखवाले को पान-सुपारी से नेति दो, निमंत्रित करके कहो—शामा तेरे बाग में चरेगी। बस, पान-सुपारी से फाजिल कुछ माँगे या कुछ इधर-उधर बतियावे तो सुना दो :

परानपुर के सोलकन्ह टोला, नामि रे लठेलवा

'कि जानि लेहुना, हम्मरो बप्पा के पगड़िया कि भैया के रुपइया,
'हम जाइब कचहरिया'''।

शामा चराई की पहली रात बीत गई!

सुबह को मर्दों ने आपसमें बातें करते हुए कहा—रात में बहुत हल्ला मचा रही थीं लड़कियाँ सब।'''लड़कियाँ ही नहीं, बूढ़ियाँ भी गला खोलकर चिल्ला रही थीं! तीन साल के थके हुए, सर्वे की दौड़धूप से चूर लोगों को इधर कई रात से गहरी नींद आ जाती है। जमीन जीतनेवाले, मुकदमा हारनेवाले, सभी सोते हैं। अघोर निद्रा में बेसुध! उनके स्वप्नों में कभी-कभी सर्वे के अमीनों की जरीब की कड़ियाँ खनखनाती हैं—खन-खन, खन-खन! हाकिम गुस्सासे गरजते हैं—ए! औप! चपरासी पुकारता है—कहाँ-आँ-आँ!···

दूसरी रात के बाद, तीसरी रात। विसर्जन की रात।

आज की रात, किसकी जीत और किसकी हार होती है, देखना है! पहली रात के बाद ही मुकाबले की चुनौतियाँ दी गई हैं, दोनों ओर से। आज दिन भर दोनों दलों की प्रमुख लड़कियों ने देह मालिश करवाया है। दूध, मिसरी के साथ गोलमिर्च की बुकनी खाकर गला साफ किया है।

लीला तो पगली हो गई है, मानो। उसका दल कैसे जीते? मूलगैन ही नहीं!

—एक मूलगैन ऐसी है कि यदि वह आ जाय तो सोलकन्ह टोली की बोली बन्द कर दे। लेकिन, उसमें एक लेकिन लगा हुआ है!

—कौन? क्या लेकिन? कौन लगाता है लेकिन? मैं नहीं लगाने दूँगी किसी को कोई लेकिन। बोलो, कौन मूलगैन?

सुवंश की बड़ी भाभी बोली—ताजमनी! अब बोलो? है न लेकिन लगा हुआ?

—क्या लेकिन लगा है ? ···दस साल पहले वह तुम लोगों के साथ शामा चकेवा और झूमर खेल चुकी है। अब क्यों न खेलेगी? जित्तन मामा ने मना किया है क्या ?

—मना किसी ने नहीं किया है। अपनी माँ से पूछ कर देखो। तुमको तजमनियाँ के साथ खेलने देगी ?

—क्यों, क्या हुआ ?

—तुम जैसे कुछ नहीं जानती !

—मैं सब कुछ जानती हूँ। ताजमनी तुम लोगों के दल की मूलगैनी कर चुकी है, वर्षों।···हवेली की नानी के राज में खेलती थी, अब क्यों नहीं ? बिना मूलगैन के आज की रात भी फजीहत होगी। मलारी से मुकाबला करना आसान नहीं। मैं जा रही हूँ ताजमनी को बुलाने।

सुवंश की बड़ी भाभी खुश है। वह चाहती है कि मलारी की छेँहकबाजी छुड़ा दे कोई। कल रात पद जोड़-जोड़कर ताना दे रही थी मलरिया—बाभिन भौजी हे, भूमिहारिन भौजी हे—गावलो गीत जनि गाउ···!

—अरे ! लीला सायकिल पर चढ़कर आ रही है। देखो-देखो मर्दों का कान काटती है सायकिल चलाने में। घंटी भी बजाती है ? टिड़िंग-टिड़िंग !!

—किसी को एतराज हो तो, अभी बोलो ! टिड़िंग-टिड़िंग !!

—ठीक है, बुला लाओ। वह तो हमलोगों की पुरानी मूलगैन है।

—तजमनियाँ अब नट्टिन थोड़ो रही ? नट्टिन वे हैं जो कल जा रही हैं तम्बू लेकर, मेले में।

—काली बाड़ी में कीर्तन गाती थी तजमनियाँ। देवी के आगे !···शामा चकेवा साथ खेलने में क्या है ?

···टिड़िंग-टिड़िंग !!

—काकी ! तुम क्या कहती हो ?

—ठीक है।

बबुआन टोली के हर टोले की औरतों ने, अपने मर्दों से बिना कुछ पूछे या सलाह लिये ही स्वीकृति दे दी—मर्दों से क्या पूछना है इसमें ?

—अरी, नट्टिन टोली नहीं जा रही है लिलिया। ताजमनी आज कल हवेली में ही रहती है। नहीं जानती ?

शरद की चाँदनी में, पहाड़ से उतरनेवाले पंछियों की पहली पाँति को स्वागत !

शामा-चकेवा, अधिंगा, चाहा, बनहाँस, मुर्गाबी, पनकौआ, पनचिर्री, झिल्ला, जलमुर्गी, लालसर, सिल्ली की अलग-अलग पंक्तियाँ आकाश में भाँवरे लेती हैं।

···उतरो, उतरो ! धरती पर पैर रखो। हाँ, यही है परानपुर गाँव। दुलारी-दाय के कुंडों में मखाने, सिंघाड़े, कमलगट्टे, पानीफल खूब फले हैं।··· वही तलैये, वही पोखरे, पुरानी चौर और धान के खेत। डरो मत, आज की रात बंदूक का निशाना साधे धरती पर कोई नहीं बैठा है। आओ ! गाँव की कुमारियाँ अपने सफेद आँचलों को हिलाकर बुला रही हैं—शामा-चकेवा अइहऽहे···।

—कंक-कंक ! क्रेंगा-आ ! क्रेंगा-आ ! कंक-कंक !!

हहास ! हहास !! एक के बाद दूसरी पाँति धरती पर उतरती है—हहास !

फेकनी की माय कहती है—आकि देखो ! कल से ही मैं समझा रही थी लड़कियों को कि गला फाड़-फाड़ कर मत गा। उधर बाभन टोली की बेटी पुतोहुओं को देखो आकि, सलीमा टेटर की तरह हानस कर रही है। आकि देखो···!

—मलारी के साथ आज गा रही है सेमियाँ !

—उधर, सामवत्ती पीसी है तो इधर फेकनी की माय। उधर भूमिहार टोली की फूहादी है तो इधर सेवियादी। उधर चौकी वेवा और इधर वेवी फुआ।

—सुनती है ? तजमनियाँ को बुलाया है उन लोगों ने ! अब ?

—अब क्या ? मलारी किस बात में कम है, उससे ? कलेजा मत छोटा करो कोई ?

—क्या गावेगी तजमनियाँ, अब ? ढलती बैस में जवानी का गला कहाँ से पावेगी ?

मलारी कहती है—ऐसा मत कहो। सधा हुआ गला है उसका।

ताजमनी ने जब गीत शुरू किया तो मुँह में घुलती हुई पेप्स की गोली चबा कर निगल गई, लीला।...क्या गला दिया है भगवान ने ताजमनी को !

लीला के साथ दूसरी लड़कियों ने भी ताजमनी के गीत का आखर पकड़ा। मुँह ऊपर ! चाँद की ओर देखकर यह गीत गाना चाहिए।

—ले ! कोई जानती थी यह गीत ?

—मिसराइन की सिखाई-पढ़ाई कोयलिया है, तजिया।

—गलबल मत करो। सुनो !

> आँ-रे, मानसा-सरो-ओ-वरा के झलमल पनियाँ-याँ-याँ,
> खचमच मोतिया भं-डा-आ-र—
> काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए मिरतू भवनियाँ-याँ-याँ,
> बिनराबन करि पा-आ-आ र !
> आँ-रे, गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ-याँ-याँ,
> काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए...हमरो अभागल गाँव।
> बाबा मोरा आ-रे-हंसा-आ-आ, पोखरी खोदाई गइले

पोखरी में फूले पुरइन फूल-आ-रे-हंसा हमरो पोखरिया-या,
पोखरी भरायब दूध !···

···दूधसे पोखरा भरवा देंगी कुमारियाँ—उतरो ! आओ-ओ हंसा चकेवा !
ताजमनी जब गा रही थी, पेड़ का एक पत्ता भी न हिला। सब, चुप होकर सुन रहे थे !

मलारी चुप होकर सुनती है। सभी चुप हैं—ताजमनी गा रही है।···सुन !
—मन का बहुत पुराना बिरोग गीत में घोल कर धीरे-धीरे ढाल रही है काँच के बर्तनों में। मेरी देह देखो, रोयें खड़े हो गए हैं।
—ले, बलैया ! बेधी फुआ रो रही है। लो, बेनबाजा कौन बजायगा ? क्यों रो रही है ? ताजमनी का गीत सुन कर ?
—तैयार हो जा। ताजमनी के रुकते ही तुम शुरू कर देना मलारी ! कहाँ, ठेविया ? तैयार रह जयवन्ती !
उधर ताजमनी रुकी। इधर, मलारी ने शुरू किया। फेकनी की माय गुड़ और काली मिर्च की बुकनी खिला रही है पच्छक लड़कियों को—गला साफ होगा।

गैहरी-ई-ई नदिया-या-या अगम बहे धारा-आ कि रामरे,
हंसा मोरा डूबियो नि जाये
रोई-रोई मरली-ई-ई चकेवा-वा, कि रामरे,
आ रे हंसा लौटी के आव··· ।

पुराने गीत पर मलारी ने नया तर्ज दिया है !
ताजमनी मुस्कुरा कर कहती है—मलारी के कलेजा में बहुत दम है। इतना ऊपर खींचती है। वाह !!

लीला बोली—अब, एक गीत पनकौआवाला शुरू करो।

हाँ, रे पन-कउवा···
सावन-भादव केर उमड़ल नदिया
भाँसि गेल भैया केर बेड़वा रे, पन-कउवा !
हाँ रे, पनकउवा, मचिया बैसली मैया मने-मने गुनैछे,
भैया गइले बहिनी बुलावेले रे, पनकउवा···।

पूर्णिमा का चाँद हवेली के बागों के ऊपर उठ आया और धरती को ठिठक कर देखता ही रह गया !

बुर्ज की मीनार पर जलता हुआ पेट्रोमेक्स भुकभुका कर बुझ गया, अचानक ! नींद में विभोर सोए हैं गाँव के मर्द, थके-मारे, हारे-जीते, भरे-रीते !

गीतों के पंख पर उड़ता हुआ गाँव ! गीत-गंगा में नहाती औरतें !

गाँव में सब मिला कर मात्र आठ-दस प्राणी जगे हुए हैं।

मीत भी जगा हुआ है। रह-रह कर उत्कर्ण होकर सुनता है और बाहर भागना चाहता है। जित्तन बाबू डाँटते हैं।

सुवंशलाल की आँखों में नींद अँगड़ाई लेती है। मलारी की सुरीली आवाज उसे एक घूँट कुछ पिला जाती है, वह उँघते-उँघते जग पड़ता है।··· अजीब हाल है। न सो सकता है और न जगने में ही कल ! बेकल है सुवंश लाल। यह कैसी बेकली है ? मलारी के बिना वह कुछ नहीं। मलारी का जन्म सुवंश के लिए ही हुआ है। और, अब तो मलारी उसकी आँख की भाषा को पढ़ कर आँख से जवाब भी देती है ! मासिक पत्रिका वापस करते समय उसने जान-बूझ कर ही सुवंश की उँगलियों को छेड़ दिया था। ···क्या लेगी ? किताब ? कितनी किताबें हैं, देख। रवीन्द्र, शरद, प्रेम-चन्द, यह ले, यह ले !! एँ ? पुस्तकों में पंख लग गए हैं ? पुस्तकें उड़ती

हजार—फ्लैश ! क्लिक !! छटक-छटक !

—देखो। बिजली छटकी ?···देखो बदमाशी। फोटो छाप रहा है !

—फ्लैश ! छटक-छटक !!

पाँच सात लड़कियों के साथ लीला ने छापा मार कर छापी लेनेवाले को गिरफ्तार किया—कहिए महाशयजी ! क्या हो रहा है ? चलिए औरतों की कचहरी में। कुछ नहीं सुनी जायगी। लो, जयवन्ती, पकड़ो !

औरतों के बीच भवेश की सूरत ? लीला देख कर मन-ही-मन मुस्कुराती है—चेहरे पर बारह बज गए ?···एक बल्ब दीजिए तो !

भवेश की तुतलाहट बढ़ गई—इसमें बल्ब बदलने की ज ज-ज-रु···। —फ्लैश !—चलो उतर गई तस्वीर, छापी लेनेवाली की भी। दूर से बड़ा तीर मार रहे थे। इनकी तस्वीर कौन लेगा ?

लीला ने दिखलाया—हजारों पुतले पंछियों के ! रंग-बिरंगे ! चुगले, चुगलैंट। बृन्दावन। इनकी तस्वीर···!

मलारी बोली—मेरे चुगले की तस्वीर सचित्र साप्ताहिक के सबसे ऊपर वाले पन्ने पर नहीं छपेगी ?···यदि आपके साथ इसका फोटो लिया जाय, तो भी नहीं ?

—हा-हा-हा-हा।—छोड़ दो, छोड़ दो। बेचारे का फोटो बिगड़ रहा है।

—अब लगाओ चुगलैंट साहेब की चुटिया में आग। फिर, मुँह में। मलारी ने अपने चुगले की चुटिया में आग लगाई। सभी लड़कियों ने अपने चुगलों को अन्तिम बार देखा :

> तोरे करनवाँ ना रे चुगला, तोरे करनवाँ ना—
> जरल हमरो बिनरावनवाँ रे तोरे करनवाँ ना।
> तोरे करनवाँ ना रे चुगला···।

लड़कियाँ हँस-हँस कर गा रही हैं, तालियाँ बजा कर।

द्वितीय परिवर्त

स्थिर-निबद्ध, तीव्रदृष्टि !

विनिद्र सुरपतिराय ने शरद पूर्णिमा के चाँद को देखा, हवेली के पोखरे में। सहस्त्र कमल दल पर शशिकला !

सुरपतिराय की आँखों में स्नेहसिंचित लावनी की झलक !···दूध की सुगन्ध चारों ओर ! प्रकृति के अंग वात्सल्य गन्ध से सराबोर। सरोवर में दूध ही दूध !

सुरपतिराय कई दिनों से दूसरी ही दुनिया में है। बहुमूल्य प्राप्ति के नशे में झूमती कटी हैं रातें, उसकी !

गीतवास हाट के पास रजौड़ गाँव में, एक गरीब ताँती परिवार में कुछ पुरानी पाण्डुलिपियों जैसी चीजें प्राप्त हुई थीं। नेपाली, बँसहा कागज के पचास-साठ पृष्ठ बहुत बुरी दशा में मिले। अस्पष्ट लिखावट और दीमकभुक्त दशा को देख कर सुरपति ने जिन्हें एक ओर रख दिया था, निराश होकर। ···यत्र-तत्र स्पष्ट पंक्तियों को पढ़ कर, एक दिन विस्मित हुआ। भवेश ने कहा—इन्फ्रा-रेड फोटोग्राफी ही बस एकमात्र उपाय है।

उस दिन, भवेश लौटा है ७० प्रेट्स प्रिंट करवा कर। मोती जैसी जग-मगाती, 'श्रीमती-लिखावट' ! टूटी लड़ियों के लटके जैसे दीमकभुक्त स्थान।

दो रात जग कर पढ़ गया है। तीसरी रात, वह हिन्दी अनुवाद करने बैठा। शामाँ-चकेवा विसर्जन की रात। शरद पूर्णमासी की गीत भरी रात की गोद में बैठ कर उसने देखा, स्थिर-निबद्ध, तीव्र दृष्टि से !

दूधभरे पोखरे में चाँद ! अदृश्य अचंचल अंचल से दूध झरते देखा। माँ-

परती : परिकथा—२७६

माँ की मृदुगन्ध से उसका आँगन मँहक उठा !

माँगलिक अनुष्ठान भरा वातावरण ! पंछियों की पातियाँ उड़ रहीं दूधिया आकाश में । पोखरे में पुरइन के पात, महार पर स्थलपद्म की शीत में नहाई पँखुड़ियाँ ! पंछियों के बीच हठात् राजहंसिनी पर दृष्टि पड़ी उसकी ।

स्निग्ध-धवल पंख पसार कर पोखरे में उतरी ।···उसका जोड़ा कहाँ है ? राजहंस ? किसी ने पुकारा ? नारीकंठ ? लॉली ! लॉली !! बेटा लॉली !

सुरपति ने पहचाना—द्रोणी-पुष्प-रंग के वस्त्र में आवृता : मिसिस रोजऊड। गीता मिश्रा । श्रीमती गीता !

···'लाली, डेडी आयगा ?

···'आय, आय !

···'लॉली, डेडी आयगा ?

···'आय, आय !!

[प्रथम तीन अर्धभुक्त पृष्ठों से प्राप्त वाक्यांश !

इसके बाद ?]

···माइ लास्ट एंड लॉस्ट लव !

मेरा अंतिम प्यार, जो खो गया !

माँ मरियम के पवित्र चरणों पर जवा फूल चढ़ाना अपराध है ? क्या अपराध है और क्या नहीं, माँ मरियम मुझे बता जाती है । इसलिए, धर्म के संकुचित···!

······!!

और मेरा अपराध ?

में कन्वर्ट होकर हिन्दू हो गई हूँ। इसीलिए तो ? किन्तु, प्यार की परिभाषा मैंने अपने पवित्र धर्मग्रंथों से ही सीखी है।

जिसे, जो जी में आवे कहे। किन्तु, दुहाई ! मेरे प्यार को कभी भला बुरा न कहे कोई !

एक हिन्दू को मैंने अपने गुरु, स्वामी अथवा पति के रूप में प्राप्त किया। प्यार की मारी मैं, इसी पुरुष की खोज में जन्म-जन्मान्तर भटकी फिरी, और इस जन्म में, यहाँ आकर मैंने जिसे प्राप्त किया। सन १९१० ···में। अपना सर्वस्व समर्पित कर मैंने उसे प्राप्त किया। मेरा सौभाग्य !

···नहीं मालूम मुझे !

पूरब-पगली बचपन से ही मैं थी। पड़ोस की सहेली के पिता पूरब से लौटे थे। भारत से लौटे थे, महाभारत का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे। ···मैंने बाद में पढ़ा। सूर्य-पुत्र-गण ! ···कृष्ण ! कृष्ण नहीं, मैं पहले कहती—क्रिश्चना !

बाद में ऐसी लगने लगी कि मैं एबनार्मल हो गई। लिटल-लॉर्ड क्रिश्ना को पढ़ते-पढ़ते मैं एकान्त में आतुर होकर पुकारती—गोपाला ! ओ, नन्दलाला !!

···एक रात तो मक्खन की पूरी टिकिया लेकर बैठी रही—आओ ! बटरथीफ़ !

[इसके बाद, पाँच पृष्ठोंसे प्राप्त शब्दोंको झरे हरसिंगार के फूलों की तरह बटोरा है सुरपति ने !]

···हिम मंडित ! तुषार मुकुट ! इन्द्रधनुषी देश ! गंगाजल ! देवपुत्र ! आर्यपुत्र ! स्वामी !

स्वामी के रूप में मैंने उसे स्वीकार किया।

डिस्पेप्सियासे अधमरे वृद्ध अंग्रेज व्यापारी को मैंने बात दे दी। उसे एक ऐसी सहधर्मिणी की आवश्यकता थी जो क्वाँरी हो, सुन्दर और स्वस्थ हो। रबर स्टेट के कारोबार को समझ कर व्यापार में उसका हाथ बँटा सके। मलय प्रदेश, पूरब जाने की शर्त अनिवार्य थी !

व्याह और मलय के लिए प्रस्थान। उसके दोनों कदम कब्र की ओर !

वह पूरब जा रहा था। भारत के निकट। भारत में भी रह आया है वह। बनारस में पाँच दिन रह चुका था। पुण्यवान था वह !

उस पुण्यवान को मैंने सबल, स्वस्थ और सुन्दर नौजवान पति की तरह स्वीकार किया। वह पूरब जो जा रहा था !

मेरी मम्मी जीवन में पहली बार नाराज हुई—क्या पागलपन है ? जरा, फिर से सोच कर देखो तो !

फिर से सोचने को समय कहाँ था ? वह अगले सप्ताह ही सेल कर रहा था !

शादी के बाद, मेरी एक शोख सहेली ने चुटकीली टिठोली की थी, धीरे-धीरे, कान के पास—उसकी पसलियों का ख्याल करना। …टेक केयर ऑफ हिज रिब्स !

जहाज समुद्र में है।…कोई अदृश्य शक्ति मुझे खींच रही है अपनी ओर !

एडवर्ड, मेरा स्वामी बीमार है। वह समुद्रमें कभी स्वस्थ नहीं रहता : वह कहता है…।

[बीच के कुछ पृष्ठ खो गये हैं !]

मलय की सिर्फ सात चाँदनी रातों से हमारा परिचय करवा कर, मेरे पति-देव ने सदा के लिए आँखें मूँद लीं।…एडवर्ड कहा करता, मुझे मलय का अपना बँगला बुला रहा है !

मलय के जंगल में, अपने बँगले में ही एडवर्ड को चिरशान्ति मिली।

मेरे पति के साझेदार मित्र ने हमारी बड़ी मदद की। रोज रात में मम्मी भय खाकर उठ बैठती—एडवर्ड नाराज है!

मेरे पति के साझेदार मित्र ने सभी हिस्से बिकवा दिये। पूरे दो महीने के बाद हमने भारत की ओर प्रस्थान किया।···टु कैलकटा!

सारी घटनाएँ कुछ इस तरह घटीं, जिन्हें मैं अदृश्य शक्ति की कृपा के सिवा और कुछ नहीं मानती।

कलकत्ते में, दूसरे ही दिन ब्रंटी से भेंट हो गई—रेसकोर्स में। ब्रंटी भी पूरब-पगली थी। पिछले साल, एक राजा की रानी होकर भारत आयी है।

ब्रंटी और उसके राजा साहब ने हमें सूचना दी, उसके जिले में एक अंग्रेज-कोठीवाला प्लाण्टर अपना स्टेट बेचना चाहता है, मिस्टर ब्लेकस्टोन। कल कलकत्ते आया है। वह आधी कीमत पर बेचने को तैयार हैं।···गोईंग डेराडून!

एक दिन मम्मी बोली—ब्रंटी ने अच्छा किया है। उसका राजा सुन्दर है। भला आदमी है। सुपुरुष है।

मिस्टर ब्लेकस्टोन ने बताया—डेरीफार्म के लिए बहुत उपयुक्त स्थान है। कोठी के पास ही छोटी-सी अकेली नदी है। पास में विस्तृत चारागाह!

मिस्टर ब्लेकस्टोन अपने बैग में जमींदारी के अन्य दस्तावेजों के साथ मैक-मिलन एण्ड कम्पनी का एक बालकोपयोगी भूगोल भी हमेशा रखता। किताब खोलकर रेखांकित पंक्तियों की ओर दिखा कर बोला—पूर्णियाँ जिला। थाना—रानीगंज!

जिले के नक्शे पर, उत्तर कोने में नेपाल की सीमा के पास एक लाल बिंदी डाल दी थी उसने—यही है वह जगह। यही है वह नदी—डोलरेडेय!

ब्रंटी और उसके पति राजा महिपालसिंह की सहायता से हमने जमींदारी की कीमत तय करवायी।

राजा महिपालसिंह मुझे बहुत भद्र जँचे। लापरवाह, हँसमुख, हास्यप्रिय और चतुर। किन्तु, उनको भारतीय मानने को मन तैयार नहीं होता। रूपरंग, पहरावा-पोशाक, बोलचाल और खानपान, सब इंगलिस्तानी।···मेरे, कल्पनालोक के पूर्वपुरुष से कोई मेल नहीं। मुखाकृति भी नहीं मिलती।

हमने जमींदारी खरीद ली।

तीन महीने कलकत्ते में रहकर, हम मिस्टर ब्लेकस्टोन के साथ पूर्णियाँ आये। माँ के विशेष आग्रह पर मिस्टर ब्लेकस्टोन ने हमारे साथ एक सप्ताह रहना मंजूर कर लिया।···इलाके से परिचय कराते समय उसने बार-बार चेतावनी दी हमें···।

—परानपुर स्टेट के पत्तनीदार मिसरा से होशियार। माइण्ड यू···।

सन १८५६ ई० में इस कोठी की नींव डाली गयी है।

हीरा दरवान का कहना है—सात साहबों ने इस कोठी में वास किया है। चार ने इलाके पर राज किया है। ब्लेकस्टोन साहब चार साल भी नहीं चला सके, जमींदारी!···बंगले की सजावट में कहीं कोई कमी नहीं हुई थी। कोठी की फुलवारी में, विदेशी पेड़-पल्लवों के बीच स्थानीय फूलों के कुंज! बूढ़ा माली उत्तिमलाल आदमी से ज्यादा फूलों की भक्ति करता है।

पुटुस फूल! यहाँ का जंगली फूल है। बाँसवन के घने अन्धकार में खिली फूली झाड़ियाँ! छोटे-छोटे स्टार जैसे फूल, घोर लाल, गुलाबी, सफ़ेद, बैंगनी।

इस उपेक्षित फूल को फुलवारी में लगाने के प्रस्ताव को सुन कर उत्तिम-लाल बहुत उत्साहित हुआ। हीरा दरवान के मार्फ़त उसने हमें समझाया, पिछले आठ दस वर्षों से वह, इस फूल की झाड़ी को फुलवारी में रोपना

चाहता है । किन्तु'''। बाद में मालूम हुआ, पुटुस को फुलवारी में लाने का विरोध, कोठी के मालिक ने नहीं, कोठी के दरबान हीरा मंडल ने विशेष रूप से किया था । इस बार भी देखा, जंगली फूल के इस सम्मान को देख कर हीरा खुश नहीं । बूढ़ा हीरा दरबान गत बीस वर्षों से इस कोठी में दरबानी करता है । वह समय-असमय मुझसे अपनी टूटी अंग्रेजी में बातें करता । आसपास के गाँव और गाँव के लोगों के बारे में—थिक विलेज, ग्रेट विलेज, लास रैयाट, भेरी बैड मैनी एण्ड भेरी गूड मैन नन !

डेरी फार्म खोलने के विरोध में हीरा ने कहा—नॉट गूड । एवरीवडी से यू विलायती ग्वालन !

सुनते ही मैं समझ गई, सभी मुझे ग्वालिन समझेंगे । समझेंगे ग्वालिन ? अहोभाग्य ! मैं ग्वालिन । मैं गोरस का कारबार करूँगी ! अवश्य !

जापानी डॉल ! ताजमनी का पहरावा देख कर जितेन्द्रनाथ को जापानी गुड़िया की याद आई । माथे पर सीकी की डाली—रंग-बिरंगे फूलोंवाली डाली ! ओठों पर सरल मुस्कराहट ! जितेन्द्रनाथ प्रसन्न हुआ । '''वक्र मुस्कराहट नहीं ?

गोविन्दोने जितेन्द्रनाथ की गुनगुनाहट को सुनकर समझ लिया, मन का फूल खिला है ! '''मॅन का फूल ही नैंहि फूटता है दादाबाबू का ! फिर कैसे कॅर के क्या होगा ?

—क्यों गोविन्दो ? रसोईघर में अड़हुल फूल से किस देवता की पूजा हो रही है ? गोविन्दो ऐसी बातों का मतलब बहुत शीघ्र समझता है । नुकीले ओठों पर हँसी को स्थिर करके बोला—ही-ही-ही । श्यॆमा पूजा माने माँ

काली का पूजा नजीक आ गिया कि नेंहि, इसी वास्ते। ताजनदि बोला···। दादाबाबू, आप नेंहि मॅत कॅरिये। पूजा को हुकुम जॅरुर दीजिये। माँ श्येंमा···।

—गोविन्दो। अपने चूल्हे की आँच देखो जाकर। श्यामा पूजा के लिए हुकुम लेने की जरूरत नहीं। हुकुम लेकर पूजा होगी?

जापानी गुड़िया को एकान्त में खिलनेवाले दो फूलों की मँहक लग गई। ·· गोविन्दो अपने दादाबाबू के हृदय के कोने-कोने में घूम चुका है। बचपन से ही!

ताजमनी को देखते ही गोविन्दो ने जितेन्द्रनाथ को आँख के इशारे से सूचित किया। पुरानी आदत! जितेन्द्रनाथ को हँसी आई! गोविन्दो हाथ में खाली प्याली लेकर रसोईघर की ओर भागा। मीत ने धमकी दी— इसमें दौड़ने की क्या बात है? बॉख!

जितेन्द्र और ताजमनी की उम्र एक साथ ही बीस वर्ष घट गई, मानो। दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। मीत ने उत्कर्ण होकर दोनों की ओर देखा। ···इन्हें भी एक धमकी दे दे? बॉख!

—जानते हैं? जोर-जोर से हँसने पर मीत नाराज होता है। मीत ने अपना नाम उच्चारण करनेवाले प्राणी के घुटने पर अपने दोनों पैरों को रखकर प्यार प्राप्त किया। दूसरे ने उसके लम्बे कान को पकड़ कर जरा खींच दिया। ···आऊँ! बॉख!!

ताजमनी ने दीवार पर लटकती हुई तस्वीरों की ओर देखा।···तस्वीरों के आसपास मकड़ी के जाले हैं या ये भी तस्वीर हैं?

—मन्दिर और हवेली घर के कमरों की सफाई के लिए मुंशीजी को मजदूर नहीं मिलते हैं। और दुनिया जहान के फरेबी कामों के लिए उन्हें आदमी ढूँढ़ते फिरते हैं! ···आज यदि मालकिन-माँ होती! ताजमनी धूपबत्ती जलाने लगी।

—मुंशी जलधारीलाल ने चालीस साल पहले ही फरेब कर्म की ट्रेनिंग ली है। नया फरेबी नहीं, वह। जितेन्द्रनाथ को अचरज हुआ, ताजमनी की मुस्कराहट जरा भी टेढ़ी नहीं हुई ! नागफनी के डंठल जैसे होल्डर में धूप की बत्तियाँ सजाती हुई बोली—लेकिन, ऐसा कुकर्म न मालकिन-माँ के समय में हुआ और न उनसे पहले !

जितेन्द्रनाथ हठात् गम्भीर हो गया। ताजमनी मन-ही-मन मुस्कराई··· मुझे चिढ़ाने चले थे ! धूपबत्तीके नागफनीनुमा होल्डर को सामने के ताख पर रख कर ताजमनी बोली—नकली नागफनी में असली काँटे लगाने की क्या जरूरत ? उँगली के अगले पोर को टीप कर रक्त की नन्हीं-सी बिन्दी निकाली और सिर में लगाकर बोली। जितेन्द्रनाथ ने पूछना चाहा—यह क्या हुआ ? खून का टीका···! किन्तु, कँटीली बात उसे चुभ गई थी। बोला—क्या किया है मुंशी जलधारीलाल ने ! किसी की पीठ पर लाल दगनी से फिर कुछ लिखा है क्या ?

—पीठ पर नहीं। कलेजे पर दगनी दाग रहे हैं मुन्शीजी।

—मुन्शीजी का क्या कसूर ?

—कसूर जिसका भी हो। लेकिन, जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है, वह आपके जोग नही। जित्ता, आप नहीं जानते !

—क्या ?

ताजमनी हँसी। वह अच्छी तरह जानती थी, जित्ता को कुछ नहीं मालूम। बोली—इस्टेट से मामले मुकदमे करनेवाले रैयतों, या इस्टेट के बरखिलाफ होनेवाले किसानों की लहलहाती हुई फसल रातों रात चौपट कभी नहीं करवायी गयी। गाय-भैंस और बैलों की चोरी नहीं करवायी गयी। किसी के घर में आग लगाने के लिए··· ।

—ताजू ?

—सन्तोखीसिंह की बीस बीघे की खेती, एक ही रात में लोप हो गई।

उस रात में मुन्शी जलधारी ने अपने 'गणों' को बुलाया था, हुजूर से भेंट कराने के लिए। चलो ! तुम लोगों की किस्मत खुल गई !

बहुत देर तक जितेन्द्रनाथ बकला की बनावट को देखता रहा। लम्बे तरबूज की तरह सिर। कपाल सामने की ओर निकला हुआ। देह से दूध की गन्ध ! जो कितनी भी पवित्र क्यों न हो, किसी-किसी के लिए दुर्गन्ध अवश्य है। घुड़कती हुई आँखें !···बकला की मुस्कराहट ! उसकी बोली भी अजीब !

—हें-हें-हें। हुजू-उ-उ-र। आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभी नहीं पकड़ा गया। बीस रस्सी दूर के आदमी के पैर की आहट को परेख लेती है मेरी भैंस ! फिर मेरा खूनियाँ भैंसा ! उसके तीन नवतुरिया जवान पाँड़ा की जोड़ी ! बारी-बारी से चौकन्ना होकर देखने लगते हैं। ···मैं ? हुजू-उ-उ-र, मैं तो अपनी मोरंगनी भैंस की पीठ पर नींद में फोंफ-फोंफ् ! उधर खेत साफ !!

बकला का फोंफ-फोंफ सुन कर, पहले से ही आतंकित, और जंजीर में बँधे मीत ने तीन बार बॉख किया ! ···एक-एक व्यक्तिको प्रवेश करते समय मीत ने डाँट बताई—बॉख-बॉख-बॉख !! बकला ने मीत की ओर सशंक दृष्टि से देखते हुए कहा—हुजू-उ-उ-र। मटरकाट भी हमारी भागती हुई हाँज[१] का मुकाबला नहीं कर सकती। एक बार रानीगंज थाना के दारोगा ने इलाके के नामी पहाड़ी घोड़े पर चढ़ कर पीछा किया ! कहाँ मेरी मोरंगनी भैंस के छूए-पूए और कहाँ मँगनी का माल, पहड़िया घोड़ा। मेले के रेस में बाजी मारनेवाला पहाड़ी घोड़ा का पेशाब अटक गया और चार चितंग-हें-हें-हें !!

बकला अपने हुनर में माहिर है। उसकी भैंसों को देखने की इच्छा हुई जितेन्द्रनाथ की। क्योंकि बकला ने बताया—मेरी हाँज की भैंस सिर्फ चरती

---

१. भैंसों का झुण्ड।

ही नहीं ! कल ही, तो चौरीटोलेवाले का दस बीघा सकरकन्द और पटनिया आलू उखाड़ कर कचर गई ! ···हाँ, चारों खुरों से खोदती है मेरी भैंस !···हें-हें-हें । चेले चपाटी भी साथ रहते हैं । हें-हें-हें !!

ननकू नट ! मुन्शी जलधारी का दूसरा दस्तादार ।—वॉख ! वॉख ! वॉख ! वॉख !!

जितेन्द्रनाथ को मांस की गन्ध लगी । मांस की नहीं, शहर के बूचड़खाने की बगलवाली गली में ऐसी ही गन्ध लगती है । ननकू नट की बावड़ी ! खाल से सटा कर कटी हुई पट्टी ! मिस्सी मलकर काले किए दाँत !··· जितेन्द्रनाथ ने सुना—यह ननकू नट मवेशी चुरानेवालों का मेंठ है, इलाके का ! राह के हर गाँव में जिसका एक शागिर्द सतर्क होकर रात में सोता है । डाक के दौड़ाहे की जैसी ड्यूटी ! डाक में आये हुए मवेशी को तुरत दूसरे अड्डे तक पहुँचाने का काम आसान नहीं । सुबह को अपने घर से आँखें मलते हुए उठ कर गाँव में चक्कर मारना होगा ! इसके अलावा ननकू नट का जेबी बूचड़खाना भी चलता है ! हाथ की झोली में जितना सामान है, उसी से वह आध दर्जन मवेशी के मांस का कारबार कर लेता है गुपचुप । जितेन्द्रनाथ ने ननकू नट को मात्र पाँच मिनट अटकाया । गीत रह रह कर गुर्रा उठता था !

खन्तर गुलाबछड़ीवाला ! ···गुलाबछड़ी कड़कड़ बोले, लड़िकन सब के मनुआँ डोले । घण्टी बजाता हुआ खन्तर गुलाबछड़ी वाले को देखते ही गाँव के लड़के धान, चावल या पैसे लेकर दौड़ते । उन लड़कों के पीछे-पीछे उनकी माँ, दादी या चाची ! खन्तर गुलाबछड़ीवाला वैद्य भी है, ओझा भी ! इसलिए, दूसरे गुलाबछड़ी वालों से चौगुना सौदा देने पर भी खन्तर घाटे में नहीं रहता ! गुलाबछड़ी की कड़कड़ी मिठाइयों में, लड़कों की बलि लेने वाले तरह-तरह के जहर लपेट कर खन्तर घण्टी बजाता है । मौत की ओर दौड़ते हुए लड़के ! ···बनहल्दी की एक कच्ची गोली की कीमत दो रुपया ! और झाड़ फूँक में जैसा घर, जैसी बीमारी देखा वैसा हिसाब ।

—भाइयो !

—साला, थेथर है। चमार के हाथ की मार खाकर भी भाइयो-भाइयो करता है। मारो गाल में थप्पड़ !

···चटाक ! पटाक-चटाक !!

—भाइयो ! सुन लें···।

—अच्छा, सुन लो। साला चमगादड़ का बच्चा क्या कहता है !···एं ! बाजा बन्द करो।

—भाइयो ! किसी बात को सोचे-विचारे बिना···।

—हमलोगों ने खूब सोच-विचार लिया है। हम लोगों को भी बुद्धि दिया है भगवान् ने !

—मैं मानता हूँ, गलती आपकी नहीं !···पुरानी नौकरशाही अब भी काम कर रही है !

—सुनो, सुनो। क्या कहता है।···उसकी जमीन भी तो डूबेगी।

—दुलारीदाय में, जहाँ तक मेरा ख्याल है, सब से ज्यादे मेरी जमीन ही पड़ती है।···यदि आपको इस योजना के पहले सारी बातें बता दी जातीं तो मेरा विश्वास है, आप आज खुशियाँ मनाते।···

—मारो साले को !···फोटो लेता है, लेने दो। छोड़ दो, छोड़ दो !!

—हाँ, खुशियाँ मनाने की बात है।

—साला, पगलैटी करता है !···मारो !···छोड़ो !···आगे बढ़ो !

जित्तन के कपाल पर एक रोड़ा आकर लगा ! उसका सफेद कुर्त्ता खून में तरबतर हो गया। ओठों पर जमते हुए लहू को पोंछकर उसने हाथ उठाया —आप मेरी बात सुन लीजिए, पहले ! इसके बाद ढेले, रोड़े और लाठियों से जवाब देना चाहें, दें।···आपने जिस अफसर को कुछ देर पहले मारा है, वह मरते समय भी आपकी भलाई की बात सोचकर मरेगा।···

भिम्मल मामा के साथ इरावती भी आ गई। दौड़ती, हाँफती !···आज के पत्रों में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ है। जितेन्द्र के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। समाचार-पत्र खोल कर वह जोर-जोर से पढ़ कर सुनाता है—परानपुर की परती पर इसी साल जूट, और धान की खेती···इसमें जूट धान, दलहन, तिलहन, मकई, ज्वार आदि की उपज होगी, जब कि दुलारीदाय में सिर्फ जूट और धान की ही खेती होती थी। ···दुलारीदाय में कुल उपजाऊ जमीन, ढाई हजार एकड़, जब कि परती पर सात-आठ हजार एकड़ जमीन अगले वर्षों में तैयार हो जायगी !···दुलारीदाय के पाँचो कुंड में बारहो महीने पानी भरा रहेगा। गीतवास के पास एक छोटा बाँध तैयार होगा।···परती की सिंचाई।···गंगा के किनारे तक दुलारीदाय के कछार पर फैली ऊसर धरती, खेती के लायक हो जायगी।···दुलारीदाय के किसानों को परती पर जमीन दी जायगी। इसके साथ बेजमीन लोगों को भी···। फसल की कीमत के साथ नकद क्षतिपूर्ति !···तीन साल तक सरकारी सहायता मिलेगी, नई खेती करनेवालों को ! दुलारीदाय नहर और गीतवास-बाँध-निर्माण में गाँव के लोगों को काम···।

—सब झूट ! ठगने वाली बात। परती पर कुछ नहीं होगा।··· फुसला रहा है ! इस साले को जरूर सरकार की ओर से पैसा मिलता है।···नारा लगाओ।···भाइयो ! जिस अफसर को आपने आज घेर कर मारा है, उसने आप के लिए नई किस्म का एक पाट पैदा किया है। चन्नी पाट से भी बढ़िया !···एक बीज में एक ही पौधा उगेगा, लेकिन बारह इंच के बाद ही उसमें पांच से लेकर सात डंठल निकल आवेंगे। जहाँ एक मन पाट होता है, वहाँ चार मन तो अवश्य होगा। साल में दो बार पाट उपजेगा। साँच झूट बात !!

—दोष हमारे विशेषज्ञों का नहीं। हमारी सरकार के पुराने कल-पुर्जे ही इसके लिए जिम्मेवार हैं। वरना, जैसा कि मैंने बतलाया, आप आज

तोड़ने-फोड़ने के बदले गढ़ने का सपना देखते !···इतना बड़ा काम हो रहा है किन्तु आप इससे नावाकिफ़ हैं कि क्या हो रहा है, किसके लिए हो रहा है !···मुझे ऐसा भी लगता है कि जानबूझ कर ही आपको अन्धकार में रखा जाता है ! क्योंकि, आपकी दिलचस्पी से उन्हें खतरा है।··· इन कामों से आपका लगाव होते ही नौकरशाहों की मनमानी नहीं चलेगी ! एक कप चाय पीने के लिए तीन गैलन तेल जला कर वे शहर नहीं जा सकेंगे ! सीमेंट की चोर-बाजारी नहीं कर सकेंगे ! एक दिन में होने वाले काम में एक महीने की देरी नहीं लगा सकेंगे !···नदियों पर बिना पुल बनाये ही कागज पर पुल बना कर बाद में बाढ़ से पुल के बह जाने की रिपोर्ट वे नहीं दे सकेंगे !···और इस जुलूस के राजनीतिक संगठन कर्त्ताओं से एक अर्ज़ ··· ।

मकबूल ने कहा—मैं क़बूल करता हूँ, हमने गलत क़दम उठाया था।

रंगलाल गुरुजी का चिर-संकुचित चेहरा आज पहली बार खिला है !

जयदेव बाबू, डी०डी० टी० और रामनिहोरा ने एक ही साथ कहा—सोशलिस्ट लोगों का इसमें कोई हाथ नहीं।

जुलूस की उत्तेजना कम गई है।···गांजे का नशा उतर गया !

—राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ताओं से मैं कहूँगा। जनता की सरलता का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं करें।···क्षतिपूर्ति, पुनर्वास तथा ज़मीन-वितरण आदि मसले ऐसे हैं जिसमें सरकारी लाल फीता और घूसखोरी से आप ही बचा सकते हैं, जनता को। जागरूक···

लुत्तो ने दाँत कटकटा कर कहा—ए! बालगोबिन, ढोलवाले चुप क्यों हैं ! बजाने कहो !···नारा लगाओ !

मानिकपुर के जत्थेदार ने कहा—मानिकपुर वालो ! वापस चलो।

मधुलता के एक बूढ़े किसान ने कहा—अहमक ही हमलोगों को परेशान किया।

सरवन बाबू के भाई लालचन ने कहा—परानपुर वालो ! आप लोग पैर पीछे मत कीजिए। आगे बढ़िए !…लुत्तो बाबू ! नारा लगाइए !

—नहर का फैसला !

……… !!

भिम्मल मामा अब तक चुपचाप खड़े थे। बोले—सुबुद्धि की जय !!

…चलो, चलो। वापस चलो। झूठमूठ परेशान किया। अन्याय बात ! छीः, छीः ! औरत को घेर कर मारा ! हाय-हाय !…चलो, चलो, वापस चलो। अपने-अपने गाँव में उत्सव करो। सर्वे में भी जो बेजमीन रहे, उसको भी जमीन मिलेगी !

ऑपरेशन पार्टी के बुलडोजर की गड़गड़ाहट सारे प्रांतर पर फैल रही है।

नाखा के हवलदार साहब तार देकर लौटे स्टेशन से तो अवाक् हो गए—कहाँ चले गए सब ? लो मजा ! दारोगा साहब को क्या जवाब देंगे ? झूठमूट…!

—आओ, जिद्दा ! तुम्हारी ही राह देख रहा है मीत… ।

ताजमनी बिलख-बिलख कर रो रही है—जिद्दा !

—क्या हुआ !…रोओ मत। मुझे कुछ नहीं हुआ है। छोटे से कंकड़ की चोट है।…हवेली की आँगन में औरतों और छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की भीड़ लगी हुई है। तुलसी चौरा के पास, खाट पर मीत को लिटा दिया गया है। खून से लथपथ शरीर !

फेकनी की माय जंगली जड़ी-बूटी पीस रही है—हाय, हाय ! बेचारे की गर्दन ही तोड़ दी है। फूहा गरम पानी से घाव धो रही है। सामदत्ती पीसी और जयवंती दूध की कटोरी लेकर मीत को दूध पिलाने की कोशिश कर रही हैं !…दिल बहादुर उत्तेजित होकर कहता है—त्यो हुधना लाने म

काटहूँ !

––किसने मारा ?

रामवती पीसी बोली—न जाने किस गाँव के कुत्ते थे ! हः हः, मेरे यहाँ कम्फू की बीबी, मैं कैसे छोड़कर जाती कहीं ? उसके जाने के बाद जैसे ही मैं जयवंती के घर के पास आई···।

जयवंती और सेमियाँ एक ही साथ बोली—यदि सुधना ने कुत्तों को नहीं हुलाया होता तो कुछ नहीं होता। ···सुधना की बदमाशी है।

—सरवन बाबू का बेटा भी था।···परसदवा भी था। जंगलू का बेटा भी।···चार-चार कुत्तों ने दाँत से पकड़ कर झकझोरा है !

—जुलूस की ओर जा रहा था मीत !

जितेन्द्र ने खाट के पास जाकर पुकारा—मीत ! ···ताजू ! रोती क्यों है ? मीत रह-रह कर कराहता—उँ-उँ-ऊँ !···मीत ?

मीत ने आँखें खोलीं। शराबी की आँखों जैसी झपकती हुई आँखें।—मीत ! मीत इस बार अपनी बची-खुची ताकत को बटोर कर उठ बैठा। कान झाड़े। खून के छींटे चारों ओर छरछरा कर पड़े। आँ-ऊँ !! और, वह जित्तन की गोदी में गिर पड़ा। देह काठ की तरह कड़ी हो गई। मुँह से, थोड़ी-सी जीभ अर्धचन्द्राकार बाहर की ओर निकली हुई···!

पछाड़ खाकर गिर पड़ी ताजमनी—ओ माँ तारा ! यह क्या किया ? मीत रे-ए-ए ! गोविंदो की आँखें बरस पड़ीं। रामपखारन सिंह अवाक् है !··· आज सुबह से उसकी अक्ल गुम है। इतनी बड़ी बात पर तो वह क्या न कर देता ! लेकिन, बौवाजी का हुकुम—हवेली छोड़कर कहीं मत जाना।

गाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी रो पड़े।···हवेली का आँगन सिहर उठा ! मुंशी जलधारीलाल दास पूछता है जितेन्द्र से—कलमबाग की जमीन में ही तो···? जितेन्द्र ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और अपने कमरे में चला गया।

चार-पाँच दिनों तक गाँव में डर समाया रहा। कोसी कैम्प और ऑपरेशन-पार्टी की रक्षा के लिए हथियारबन्द पुलीस का एक जत्था आया। सब-डिवीजनल पुलीस इन्सपेक्टर दल-बल के साथ गाँव में आए।

···कम्फू के साहब को धक्कम-धुक्की किया है! कम्फू की बीबी पर हाथ दिया है!! जित्तन का सिर फूटा है! बड़ा भारी केस चलेगा। सेशन!···रेलवे-लाइन के मुकदमे में कालेपानी और फाँसी तक की सजा होती है!

—क्या? केस नहीं करेगी, पुलीस? कैसे मालूम हुआ?

—कोसी कम्फू की बीबी ने दारोगा-निसपिट्टर से कहा—कुछ नहीं हुआ है! हवलदार साहब कह रहे थे अभी, जित्तनबाबू ने सरकार को ही दोखी साबित कर दिया। कोसी के बंगालीसाहब ने भी कहा—कोई बात नहीं हुआ।

—जै काली माय!

घर-घर में छिपे हुए लोग चार-पाँच दिनों के बाद निकले। गरुड़धुज झा अचरज से मुँह फाड़कर सोचता है—मुकदमा नहीं करने का क्या तुक? ऐसे मार-केस को भी भला मटिया देते हैं लोग? भूदानियों ने तो अनसन की धमकी दी थी। इन लोगों ने वह भी नहीं···!!

हर जगह जितेन्द्र के मीत की मृत्यु की चर्चा हुई—च: च:!! कितना प्यारा कुत्ता था।···बोली कितना समझता था। हाय, हाय!!

रोशन बिस्वाँ की साइकिल का मेंढ़क-हार्न बोला, कई दिनों के बाद—पें-ऐं-ऐं-ग! सुनिए, झा जी! मैंने आपके और दुलो के नाम के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन बाहर किस्म की बातें कर के नामंजूर कर दिया लोगों ने!

कलेजे में रह-रह कर कचोट उठती है।···वह बेचारा तो, अबोला जानवर था।···आदमी को घेरकर दाँत से झकझोर कर मार डालना चाहता है, आदमी का गिरोह! तुम्हारा मुरझाया हुआ मुँह देखकर मैं हताश हो जाता हूँ। चलो, अमहरा के बाजा बजानेवाले चमारों का दल आया है। उन लोगों की पिपही-शहनाई बड़ी मीठी होती है। है न? मैंने बुलाया है। कौन गीत बजाने को कहें?···ताजू रानी। मैं मीत की पत्थर की मूर्ति बनवा कर मँगवा दूँगा। भवेश ने मूवी से उसके बहुत एक्शन-फिल्म लिए हैं! बोलो, कौन गीत? सावित्री-नाच का?

जितेन्द्र के मन में उसकी मेम-माँ की बातें प्रतिध्वनित होती हैं, बार-बार। ···इन कुण्डों के पास बैठकर एक-एक पद्म को अंकित करेगा, तू। पंछियों का गीत सुनेगा। भौंरों की गुंजन से अपना तानपूरा मिलावेगा। तू गायेगा। नाचेगा।···नाचगान में इन कुण्डों को बेचकर फूक भी दे तो कोई हर्ज नहीं।

मीत के विछोह से मुरझाई ताजमनी हँसकर उसके बालों को सहला देती है, वह तरोताजा हो जाता है! इरावती, इस जाड़े के मौसम में भी पसीना पोंछती हुई आती है, भागती है, प्रेरणा दे जाती है। प्रेमजीत अपने सपने में भी लोकमंच की बातें ही देखता है। परमा, शिवमंगल, प्रयागचन्द··· और, समाजशास्त्री शैलेन्द्र!

—क्यों, इरावती! भवेश की प्रयोगशाला से कोई आशाजनक सूचना मिली है? छायानाट्य···शैडो-प्ले के बिना···। उम्मीद दिलाता है? गुड! इस जिले के कई इलाकों में, चम्पानगर के शारदाबाबू की जात्रा-पार्टी से प्रेरित होकर नौजवानों ने जात्रा-दल बनाये थे। जात्रा-दल असफल रहे। किन्तु, क्लारनेट और बेहाला का उपयोग कीर्तन-पार्टियों में करके काफी नाम कमाया, उन लोगों ने। कैयट टोली में, कसबा और धरमपुर से कुछ नये बाशिंदे आकर बसे हैं। उनमें से एक के पास क्लारनेट है। हालाँकि उसका क्लारनेट अध-गूँगा है, फिर भी कीर्तन का सुर अच्छा निकाल लेता

है।···प्रेमजीत उसको बुलाने गया है, प्रेम से !

प्रेमजीत को एक लफ़्ज़ बोलने की आदत लग गई है। हर बात के अंत में वह जोड़ देता है—प्रेम से !

ठके-ठके-ठक्का ! ठक्ठ-ठकट्ठा !! ठके-ठके···।

···लकड़ी का ढोलक। भिम्मलीय नाम, कठम ! चमड़े को पूरे नहीं, लकड़ी के ही पूरे हैं। लकड़ी के हथौड़े से बजाया जाता है। बड़ा खटाखट ताल लगाता है, भाई ! हद है, जित्तन बाबू भी। लकड़ी का ढोलक !!

···परमानंद, पेट से माटी की नई हाँड़ी सटा कर बजाने का रियाज कर रहा है—घटम-घटम-घुट, टिड़िकट-टिड़िकट !! हँसी से दम फूलने लगता है, उसको हाँड़ी बजाते देख कर। टुँग-ढुंग, टुँग-ढुंग, ढुँगा-आ-आ !! घड़ीघंट-घड़ियाल टँगे हुए हैं, दो सुर के।···छम्मक-खट्छक, छम्मक-खट्छक ! चारजोड़े करताल।

एक माइल पूरब की ओर, परती पर ऑपरेशन पार्टी का ट्रैक्टर भटभटा रहा है। भटभटाहट के तालपर, नैका सुन्नरि का एक पद गुनगुना कर मिलाता है, जितेन्द्रनाथ—नम्मा, नैका सुन्नरि सुनले मोर बचनियाँ रे नाम्। भट-भट, भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट-भट्ट !···कुँहाँ-कुँका ! कुँहाँ-कुहाँ !! वायलिन पर रघू रामायनी की सारंगी का विशेष-सुर बजता है !

मलारी आयी है !

—अँय ! आई है मलारी ? सुवंश भी ? आँख शपथ ?

—सामदत्तो पीसी और नेविया अभी आई है, देख कर।···हवेली में !

—चलो जाएगी, देखने ? मलारी की माँ गई है या नहीं, बेटी को देखने ? और सुवंश की माँ भी नहीं !

—सामवत्ती पीसी कहती है : आई है ठेठर में पाठ करने। लिलिया को भी चिट्ठी गई है, मनमोहन बाबू की। वह भी आ रही है।···छौंड़ा-छौंड़ी मिलकर नाटक करेंगे ? सच ? हँ-हँ-हँ !!

—अरी, मलारी की माँ, बेटी को देखने नहीं गई है ?

महीचन चिल्ला-चिल्लाकर पड़ोस की औरतों को गाली देता है—कौन साली लेती है, मलारी का नाम ? मन में खुजली होती है तो गाली सुनने···।

महीचन की बोली बन्द हो गई !···यह दोनों कौन आ रही हैं ? कम्फू की मेम साहब और···मलारी ? ऐं !

···हाँ, मलारी ही है ! है, घोतना की माय ! सुखनी मौसी ! ढोलबजावाली ! दौड़ के आ ! देख-देख ! कौन आ रही है !···कोई कहेगा कि चमार की बेटी है ? रमपतिया !!

मलारी की माँ आँगन से निकल आई। मलारी के पहुँचने के पहले ही घूँघट से मुँह ढँककर, सुर से रोने लगी—आ-गे बेटी-ई-ई !! तोरा खातिर सब दिन बोली-ठोली सहली-ई-ई-ई, पर-जे-परोसनी के ठोना-जे-ठिठोली-ई-ई, हमरा छोड़ि कहाँ चलि गेली गे-ए-ए, बे-ए-ए-टी !!

इरावती पूछती है—गीत गा रही या रो रही है ?

मलारी भरे गले और भरी आँखों से बोली—मेरी माँ !···रोती है !! रमदेवा ने रोना शुरू किया। अपने दुलारे भाई को प्यार से चुमकार कर चुप करती है और खुद रोती है—भैया रे-ए !···रोती हुई बाप के पास गई, पैर छूकर पाँवलागी की। महीचन भी आँख में अँगोछा लगाकर रोने लगा। घिघिया कर बोला—बेटी ! काहे आई ? तुम्हारे लिए तो हम लोग मर गए।

इरावती, चुपचाप इस मिलन-रुदन को देखती-सुनती रही। उसका दिल भी रह-रह कर भर आता। माँ-बेटी, बाप-भाई···!!

मलारी की माँ का आँगन खचाखच भर गया। मलारी रेवड़ी बाँट रही है।

किसी के मन में अभी मैल नहीं। सभी उसके मुँह की ओर देखते हैं। चेहरा-मोहरा, पहरावा-ओढ़ावा !! कम्फू की बीबी भी उसके सामने मलिन लगती है। शहर जाकर चेहरे पर कैसी चमचमाहट आ गई है !···गले की सोने की सिकरी देह के अंगोठ से मिल गई है। देह की गढ़न भी बदल गई है !

बालगोबिन की बहू धीरे से पूछती है—सुवंशलाल अपने घर गया है या नहीं ?

मलारी ने कोई जवाब नहीं दिया।···बात समझ में आ गई, सबकी।

परमा ने पुस्तकालय के पटनागार में गरुड़धुज की अभद्र दिल्लगी का जिक्र करते हुए कहा—बहुत भद्दी-भद्दी बातें करता है। भगताइन कह रही थी, इरावती बहन को नैनी मछली कहता है। सुनोगे भला ? इरावती बहन की साड़ी का पल्ला खींचने का इशारा भी उसी ने दिया था ! इस पाँच हाथ लम्बे लुच्चे को क्या किया जाय ? अभी मुझसे दिल्लगी की उसने, तुम लोगों की फिलिम कम्पनी कब से स्टाट हो रही है ? खूब फूलेगी-फलेगी तुम लोगों की कम्पनी ! देशी-बिदेशी दोनों किस्म का माल···। मैंने चेतावनी दे दी है।···हसने की बात नहीं, परानपुर की प्रतिष्ठा का प्रश्न है प्यारे भाइयो !

—अरे, हटाओ उन लोगों की बातों को।

—हटाओ क्या ? अब कभी उसने ऐसी दिल्लगी की तो दिखला दूँगा। उसके भंटाइज्म को बर्दाश्त नहीं कर सकता ! भिम्मल मामा पटनागार

के कोने से बोले—उसकी काष्ठहँसी की ध्वनि से लाभ उठाया जा सकता है।

परमा ने जोर से ठहाका लगाकर गरुड़धुज की अविकल नकल की—ई-पी-ही-ही-ही। ई-पी-ही-ही-ही !!

—कौन ड्रामा होगा ? मालूम हुआ नाम ? मँगनीसिंह दीवाना का प्यार का बाजार तो नहीं ?

प्रेमजीत पठनागार में प्रवेश करता हुआ बोला—मँगनीसिंह दीवाना नहीं ! प्रेमजीत।···लोकमंच के सदस्यों की बैठक है, कल सुबह। इरावती बहन कह रही है, जितने लोग पार्ट चाहेंगे, दूँगी। देखा, मैंने कहा था न ! गाँव में, गाँव के लिए, गाँव के द्वारा···। हाँ, हाँ ! जो लोग बाजा-गाजा बजाना जानते हैं, उनको भी मौका दिया जायगा। अभी, फेनाइल···नहीं-नहीं··· डी० डी० टी० बाँसुरी बजाकर आ रहा है। बँगला भठियाली गीत के रेकर्ड का धुन बजाकर सुना दिया। जित्तन भैया खुश हो गए !

परमा ने कहा—महीने में पाँच नाम बदलते हो, ठीक है। मलारी और सुवंश के प्रति तुम्हारा विचार···। प्रेमजीत हँसकर कहता है—तुम इरावती बहन के सामने ऐसी-ऐसी दिल्लगी मत करना, परमा भाई ! कल मैं लाज से गड़ गया !

निगरानी कमिटी के प्रस्ताव पर बहुत जल्दी ध्यान दिया है, अधिकारियों ने। आश्चर्य···! लिखकर जवाब दिया है—अगस्त तक कुण्डों के तट की बँधाई समाप्त करने के लिए यह आवश्यक समझा गया है कि इसी महीने से काम शुरू कर दिया जाय।···निगरानी कमिटी के सहयोग के लिए धन्यवाद !

···सेटलमेंट-ऑफिसर होकर आ रहे हैं, खुद कलक्टर साहब ! इस बार सर्वे-सेटलमेंट की तरह गड़बड़ी नहीं होगी।···गाँव के बैलगाड़ीवालों की

लिस्ट तैयार हो गई ? पाँच सौ बैलगाड़ियाँ रोज चाहिए !

···लुत्तो से पुलीस इन्स्पेक्टर साहेब ने मुचलका लिया है !···काँग्रेस का पाँच सौ रुपैया चन्दा वसूल कर गपतगोल कर गया है ! ईंट बनवा रहा है, देखते हो नहीं !

सुबह से शाम तक ऑपरेशनपार्टी की अनवरत भटभटाहट वातावरण में गति का संचार करती है। ···पहिए घूमते हैं !

नुचितलाल मड़र ने निगरानी कमिटी में अर्जी दी है—इस बार उसके नाम में सुधार करवा दिया जाय।···पोंपी नहीं। कमिटी के मेम्बरों को वह दही-चूड़ा और केला खिलावेगा।···हा-हा-हा !!

दुलारीदाय योजना से सम्बन्धित छोटे-बड़े समाचार को गाँव के हर औरत-मर्द तक पहुँचाने के लिए पुस्तकालय के मन्त्री प्रयागचन्द ने एक योजना बनाई है।···पुस्तकालय के सदस्यों से छित्तन बाबू ने माफी माँग कर बची-खुची किताबें वापस दे दी हैं। बिकूबाबू ने रेडियो की कीमत देने का वचन दिया है ! पुस्तकालय को जित्तन बाबू की हवेली का हॉल मिल गया है, अगले महीने में स्थान-परिवर्तन किया जायगा।

'पंच-चक्र' !···लोकमंच पर 'पंच-चक्र' गीति-नाट्य पाँच दृश्यों में, परान-पुर के सवा सौ कलाकारों के सक्रिय सहयोग से प्रस्तुत किया जायगा ! प्रेमजीत, प्रचारवाणी प्रसारित करके लोगों के उत्साह को बढ़ाता है—कटिहार, पूर्णियाँ, फारबिसगंज से भी दर्शक आवेंगे ! 'पंच-चक्र' !!

दुलारीदाय के तट को बाँधनेवाली पार्टी आ गई ! बरदिया घाट के पास कैम्प के खूँटे गड़ रहे हैं। गाँव के मजदूरों के पहले जत्थे को काम मिल गया। गाड़ीवानों का इंचार्ज मकबूल ही है। गीतवास के पास से चिकनी मिट्टी लाने के लिए एक सौ गाड़ीवानों को पुर्जा दिया गया है।···उधर, परती-ऑपरेशनपार्टी में भी अब लोगों की आवश्यकता हुई है।

गाड़ीवानों का आखिरी जत्था चिकनी मिट्टी लेकर लौट रहा है। बैलगाड़ी की कतार! चर्रर-चूँ चूँ करती हुई। गाड़ी की धीमी गति की तरह गाया जाने वाला गाड़ीवानों का गीत, मोरंग-बनिजरवा अलाप रहा है कोई सरस गाड़ीवान—जो तेंहू जइबे पियरवा-आ-आ-आ कि मोरंग बनि-इ-इ-इ-जरवा रे-ए-ए-ए रा-आ-म, हम धनि जऽइ-इ-बे नै-ए-हर-वा कि हमरा-आ-आ-जनि छा-आ-आ-ड़ी जा-आ-रे-ए-ए-ए निर-मो-ओ-ओ-हि-यो-ओ-ओ!! ···चल भैया, आखिरी खेप। मोरंग जाने की जरूरत नहीं! चर्रर-चूँ-ऊँ-उ!!

अब लोगों के कलेजे नहीं धड़कते!

देहाती कच्ची सड़क के गड्ढे, खाई और आँक-बाँक को समतल बनाती हुई बड़ी-बड़ी मशीनें आई हैं। गाँववालों के चेहरों पर अब आतंक के चिन्ह नहीं अंकित होते!

औरत-मर्दों के झुण्ड बरदिया घाट पर मेला लगाए खड़े हैं।···डी० डी० टी० कहता है—ओवरसियर साहब! इन ट्रैक्टरों और मशीनों के बारे में समझाने वाला कोई आदमी दीजिये, कृपा कर। लोग जानना चाहते हैं···।

—ठीक है। आइए, मैं आपको बतला दूँ। आप उन्हें अपनी बोली में समझा दें। यह है, ट्रैक्टर शोवेल्स। रोड़े, सुर्खी, मिट्टी वगैरह को ढोने के काम आता है। इसकी विशेषता है कि खुद ट्रेलर में लदाई-बोझाई करता है और खुद खाली करता है। यह, एक्सकेवेटर क्रेन है, बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों को नीचे-ऊपर ले आयगा, ले जायगा। और यह ट्रैक्टर लौगर्स! लकड़ी की मोटी-मोटी सिल्लियों को हाथी की तरह उठा कर···!

अचरज भरी मुस्कराहट हर मुखड़े पर छाई हुई है! पत्थर के बड़े-बड़े चिप्स, हिप्पो-ट्रैक्टर में लद कर आ रहे हैं।···गाँव के काम करने वालों के दूसरे जत्थे के लोगों को काम मिल गया। पार्टी के साथ आये हुए बाहरी मजदूर उन्हें सिखाते हैं, बिना बोल मिलाये काम नहीं होता! लजाने की क्या बात? आवाज देना—मार जवानों, हइयो! पत्थर तोड़,

हइयो···!! गाँव के बच्चे भी गली-कूचे में खेलते समय ताल पर हइयो कहना सीख गए हैं।

सुधना को बुलाकर प्यार से समझा रही है, ताजमनी—सुधो भैया ! जाओ, जिद्दा बुला रहे हैं। कुछ नहीं कहेंगे। जा। बाबू··· ।

—दिदिया, मीत···! सुधना आत्मग्लानि और पश्चाताप से घुल रहा है, अब। बुरे-बुरे सपने आते हैं। वह हिचकियाँ लेकर रोने लगा। जितेन्द्र ने कहा—सुधीन बाबू ! इरावती दिदिया बुला रही है। जाओ ! इरावती, गाँव के एक-डेढ़ दर्जन बच्चों को बटोर कर बात कर रही है, घुल-मिलकर। सबकी बोली-वाणी और मुख-मुद्रा को ध्यान से देखती है।···सचमुच, सुधीन के चेहरे में एक विशेषता है। भोलाभाला भाव !

—अब, तुम्हारी बारी है ताजू ! तुमने वचन दिया था।···निश्चय ही, माँ तारा ने आज्ञा दे दी है।

ताजमनी हँसी—सभी नाटक ही करेंगे तो देखेंगे कौन ?

—उसकी फिक्र तुम मत करो।···आज से रिहर्सल शुरू हो रहा है। तुम मेरे साथ रहोगी। हाँ, मुझे हमेशा तुम्हारी जरूरत होती है। सचमुच, अमहरावालों की पिपही-शहनाई ने हमारे वाद्यवृन्द में नया रंग डाल दिया है।

जितेन्द्र के उत्साह को देखकर ताजमनी का मन उत्फुल्ल हो जाता है। किन्तु, तुरत मीत की याद !

—ताजू ! क्या कहती हो ?···

···अब बच्चों की तरह मनुहार कर रहे हैं, जिद्दा। ताजमनी बोली—रिहर्सल में जाने के पहले तारा मन्दिर जाइएगा तो ?

—जाऊँगा !

···अब और क्या ? ताजमनी ने पूछा—'कारन' ?

—नहीं। अब 'कारन' नहीं।···मधु!

जितेन्द्र को याद आई, यह बात उसकी अपनी नहीं!

परानपुर की पुरानी रीत है, नैन देने के पहले देवी की मिट्टी की प्रतिमा नहीं देखने जाते, बड़े-बूढ़े। और नाटक के रिहर्सल में कोई बेकार आदमी नहीं जाते, भीड़ लगाने के लिए। देवी की प्रतिमा की आँखों में मणि दी मूर्तिकार ने, पुजारी ने प्राण-प्रतिष्ठा की। तब, भक्ति भरे मन से देवी का रूप देखते हैं जाकर।···रिहर्सल देखने के बाद नाटक में क्या रस मिलेगा?

किन्तु, इस बार रिहर्सल में ही भीड़ है। डेढ़ सौ कलाकार आ गए हैं। प्रेमजीत कहता है—एक बार आखिरी एलान कर आऊँ फिर, प्रेम से?

—हाँ! जितेन्द्रनाथ ने सिर हिला कर कहा। डी० डी० टी० ने विरक्त मुद्रा में कहा—अब कितने लोगों को बुला रहे हैं? ···सो, कितना बड़ा नाटक है?

मकबूल रिहर्सल में नहीं आया है। लेकिन, रास्ते में उसने डी० डी० टी० से धीरे से जो बात कह दी, वह डी० डी० टी० के मन में कचक रही है—कहीं कोई गहरा मजाक़ तो नहीं कर रहा है!

जितेन्द्रनाथ ने कहा—इसमें सभी किस्म के कलाकार हैं। गायक, वादक, अभिनेता के अलावा कला-सलाहकार और मंचकार!

मलारी और सुवंश आए।···सुवंशलाल अपनी माँ से मिलने गया था। मुँह लटकाकर लौटा है। मँझली भाभी ने नहीं, भाई ने ठेस लगाई होगी! ···यदुवंश के मुँह में लस नहीं है! जितेन्द्रनाथ ने कलाकारों से निवेदन किया—आप लोग मुझे क्षमा करें! बिना पार्ट का बँटवारा किये ही मैं रिहर्सल शुरू कर रहा हूँ। असफल होऊँगा तो पार्ट बाँट कर काम करूँगा!

सभी ने एक दूसरे की ओर देखा! जितेन्द्र ने कहा—मलारी और ताजमनी

दोनों ही जानती हैं, बटोहिया गीत ! पहले मलारी शुरू करे··· । बटोहिया-गीत के बारे में तो आप जानते ही होंगे !···आ जाओ ! मीठे-मीठे शुरू करो तो दीदी !

मलारी, ताजमनी और इरावती तीनों एक साथ मुस्कराईं । मलारी जरा भी नहीं लजाती है ।

> सुन्दर सुभूमि भइया, भारत के देशवा से-ए-ए,
> मोर प्राण बसे हिम खोह-रे-ए बऽटोहिया-या !

—सिर्फ सारंगी !···घटम !!···घड़ियाल !!

डेढ़ सौ कलाकारों के अन्तर के जन्तर बज उठे ।···कूँ-हूँ-कूँ-कूँ-कूँ···टिड़ि-ड़िक-टिड़िड़िक, टक्का ।···बटोहिया ! डुँ गा-आ, डुँ गा-आ, डुँ ग-डुँ गा-आ !

> ···गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ से-ए-ए !

—बेहाला और सारंगी !···खोल और मंदिरा !! ताजमनी । सिर्फ, ताजमनी और मलारी ।···झाँझ और करताल !!···

> ···जँहवा कुहुकी कोइली गावे रे बटोहिया-या-या !

—बाँसुरी !···घटम ! शंख । घड़ियाल !! झाँझ-करताल !! खोल नहीं, उपेन्द्र !

आम-कदम्ब-नीम-वट तरु पर कूकती अनेकों कोकिलाएँ ! झहरता झरना··· घहरता समुद्र···कलाकारों की उमड़ती आँखें ! गुग्गुल-धूम्र से परिव्याप्त वातावरण !

जितेन्द्र ने शिवभद्दर से कहा—कोशका महारानी का गीत जो उस दिन तुमने सुनाया था । गाओ !

शिवभद्दर बचपन से ही भैंस चराता है । कोशका महारानी का गीत वह अच्छा गाता है ।

—मलारी ! तुम जरा इस गीत को ध्यान से सुनना । इस पर एक नाच

की कल्पना तुम कर सकती हो, मुझे विश्वास है ! अध-गूँगा क्लारनेट बजाने वाले को लोग मेहमान कहकर पुकारते हैं। जितेन्द्र ने कहा—मेहमानजी ! आप तैयार रहिए !···कोशका मैया गौर में दीप जलाकर भागी जा रही है नैहर, वहीं से शुरू करो शिवा !···खँजड़ी तैयार रखो, कामा ! और, उस बाजे का क्या नाम है बालाजी महाराज, गिड़िंग बाजा ?···लकड़ी की कटिया में एक ओर चमड़े से छाया हुआ, बीच में ताँत लगाया हुआ। काँख से कटिया को दबाकर बालाजी तैयार हैं। शिवभद्र ने कान पर हाथ रखकर शुरू किया।

थर-थर काँपे धरती मैया, रोये जी आकासः
घड़ी-घड़ी में मूर्छा लागे, डेग-डेग पियासः

—खँजनी !···गिड़िंग बाजा, बालाजी !···मेहमानजी, बस उतना ही !!···

घाट न सूझे बाट न सूझे सूझ'न अप्पन हाथः

—कठम, काठ की ढोलकी।···करताल। चलाए चलो शिवा !

चटक-चटक-डिम, चटक-चटक-डिम !···उँक-उँक्का, उँक-उँक्का !!···पिट-पें पिट-पें !!···ठके-टक्का, ठके-ठक्का। छम्मक-खट्छक !!

मलारी सिर्फ घुँघरू की बोली मन-ही-मन भर रही है इस द्रुत स्वर-तरंग में। छुम्म-छुम्मक···! मूसलधार वृष्टि में, विशाल परती पर भागती कोशका-मैया ! उनके पाँव की झनकती पैजनी !!

माघ मास की लम्बी रात, न जाने किधर से कट गई !

रिहर्सल से लौटते समय, मन में पवित्र प्रातकी फूट रही थी सबके !

मन की परती टूट गई···!

माघ मास कब गया, फागुन किस दिन आया, परानपुर गाँव को नहीं मालूम। कोयल की मधु लिपटी बोली सुनकर एक-एक प्राणी ने अपने मन के मधु-कोष में देखा—टटके मधु का एक बूँद संचित हो गया है !

दुलारीदाय के पूर्वी महार पर पत्थर के टुकड़ों के अम्बार लग गए हैं। एक्सकेवटर-क्रेन पत्थरों के टुकड़ों को ऊपर उठाता है, फिर नीचे दुलारी-दाय के वलवाही कगार पर उझिल देता है। काम में मगन लोगों को लगन लगी है—वर्षा के पहले तटबन्ध तैयार हो जाय !···और भी जोर से !! मार जवानों, हइयो। परबत तोड़, हइयो। पत्थर तोड़, हइयो !!

जितेन्द्रनाथ के नये बाग के पेड़ और भी एक हाथ बढ़े !···ऑपरेशन पार्टी द्वारा तोड़ी हुई परती पर श्रीपंचमी के दिन नई जाति के पाट की बोवाई होगी। वर्ष में दो बार पाट की खेती होगी, इस नई जाति के पाट की।···भिम्मलमामा ने इस नये पाट का नाम दिया है—क्रांति पाट। सोना पाट, चानी पाट नहीं !

'पंचचक्र' के पाँच दृश्यों के ताल-तरंग लोकमंच के कलाकारों के प्राण में समा गये हैं ! सहज सुर में बँधे हुए लोग एक विशेष ताल पर चलते हैं !

पनघट पर मुक्त हँसी की हिलोर उठती है ! गाँव की गलियों में हीरे-मोती खिल जाते हैं। आज श्रीपंचमी है। लोकमंच के कलाकार वीणा-पुस्तक धारिणी माँ शारदा के चरण में नत हैं—जय माँ शारदे !

कृषि विशारदों ने तोड़ी हुई परती की तैयार मिट्टी में बीज वपन किया—

ओ ! धरती माता···!

सूरज डूबने के पहले ही परानपुर नाट्यशाला की नई अँगनाई भर गई। हाई स्कूल के बालचर और कन्या पाठशाला की स्वयंसेविकाओं के अलावा गाँव के बड़े-बूढ़े लोग भी लोगों को बैठा रहे हैं। भीड़ बढ़ती ही जाती है। ···कोसी कैम्प के लोग गाँववालों को नाम-बनाम जानने लगे हैं—ए ! सुचितलाल मडर ! इधर एक दरी बिछा दीजिये ! कोलाहल ! कलरव !! औत्सुक्य ! चांचल्य ! रोशनी, मुखड़े अनेक ! सब पर हँसी, एक ! यांत्रिक करतल-ध्वनि नहीं। सरल, सहज, मुखर मानव !···

'पंचचक्र' ! निवेदक लोकमंच, परानपुर···। पर्दा खुला। भनभनाहट भी बन्द हो गई। मंच पर अन्धकार !! सन्नाटा। एक सिसकी भी नहीं ! निःशब्द मंच के पिछले पर्दे पर एक पंछी की छाया उभरी···क्षीण आलोक। पंछी ने पंख फड़काये। छवि स्पष्ट हो गई, पंडुकी ! ध्वनि—तुर-तु-त्तू, तू-ऊ-तू-तू ! उठ जित्तू चाउर पुरे-पुरे-पुरे !···चाउर-पुरे ! चाउर-पुरे !! रे-ए-म-रे-ए-ए-म। तानपूरे की झंकार के साथ मंच पर प्रकाश बढ़ता जाता है, क्रमशः ! तानपूरे की झंकार विलीन हुई। सारंगी के झनक-तारों पर सुन्दर सुभूमि की रागिनी उतरी, हौले-हौले ! सुकण्ठ से सुरीले गीत की सुनहरी धारा फूटी। वाद्यवृन्द और पार्श्वगीत को भेदकर उद्घोषक का नम्र स्वर, ध्वनि-विस्तारक यन्त्र पर प्रतिध्वनित होता है—पूर्णियाँ के जन-जीवन में जिनकी स्मृति आज भी गुनगुना रही है—बटोहिया गीत के अमर गायक स्वर्गीय रघुवीरनारायण को निवेदित। ···गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ से-ए।···ताँग-खेरे-खेरे-खेरे, ताँग खेरे। टिन्नक-किनकाँ-टिन्नक। खोल, मंदिरा बाँसुरी, धटम, शंख, घड़ियाल, झाँझ, करताल !! प्राण का प्रथम रंग उभरा मंच पर !

दर्शकों की आँखों में तरल तरंग ! आनन्दोल्लास ! हे-ए-ए ! कोशका महरानी ! कौन ? ताजमनी ?···रेशमी पटोर मैया फाड़ि के फेकाउली, सोना के गहनवाँ मैया गाँव में बँटाउली, आँरे रूपा के जे।···छम्म, छम्माँ !···थर-

थर काँपे धरती मैया !···खँजनी, गिड़िंग बाजा !···मंच पर लहराता प्रकाश, जलछवि-सा ! मूसलाधार वृष्टि में विशाल परती पर भागती कोशका मैया ! ···बड़े-बड़े ढोलों की हल्की गड़गड़ाहट, अन्धकार !···वायलिन की दर्द भरी सिहरन ! एक दीप टिमटिमा उठा ! उजाला हुआ !···दुलारीदाय ? हे-ए-ए-ए ! मलारीदाय ?···दोनों रे बहिनियाँ रामा गला जोड़ी बिलखय ! ···युग-युग के बाद, एक-एक प्राणी पाप से मुक्त होगा !···प्राणों के नये-नये रंग उभरेंगे ! अल्पविरामकालीन कलरव !

दूसरा चक्र : नैका सुन्नरि गीत कथा !···नैका सुन्नरि, मलारी ? नाचती है मलारी ? हैं-हैं ! सुन्नर नैका, मिम्मल मामा ! कुँका-कुँहा !···दन्ता राकस का दाँत देखो ! पहचानो कौन है ! परमा के गले की आवाज है···ई-पी-ही-ही-ही ! गरुड़ झा की तरह हँसता है !···सुन्नरि नैका रे, जोड़ लो पीरित जनि तोड़े रे-ए !···दन्ता का बेटा, सुधना !

तीसरा चक्र : स्टैंडो-स्ले और १६ मिलीमीटर का चलचित्र ! छाया-नाट्य··· कंकालों की टोली, बेघरबार लोगों की छाया ! वाद्यवृन्द के बीच करुण पुकार भरते हुए लोगों की टोली —आह-रे-ए-ए-ए-हे ! कोशी की बाढ़ से पीड़ित इलाकों की तस्वीर, पर्दे पर उभरी···डूबे हुए गाँव, बहती हुई लाशें, गिद्धों की टोली मँड़राती आस्मान में ! आह रे-ए-ए-ए-हे !···चारों ओर निराशा का अन्धकार !···दर्शकों के मुखड़े पर भय की काली छाया !!

चौथा चक्र : सामयिक प्रहसन ! मिम्मल मामा, परमा ! एक, दूध में पानी मिलाकर बेचनेवाला ग्वाला ! दूसरा, दवा में मिलावट करनेवाला डाक्टर ! ···बनस्पतिया नौजवान ! लिलिया ? मेम साहेब बनी है—कैसा गिटिम-पिटम बोलती है ! हो-हो-हो ! हा-हा-हा !! वनस्पतिया नौजवान मँगनी-सिंह, नहीं-नहीं, प्रेमजीत ! हा-हा-हा ! मुँह देखो जरा !

पाँचवाँ चक्र : उद्घोषक की आवाज—निराश, हताश, कोसी-कवलित मानवों की टोली में जनजागरण ने विद्रोह मन्त्र फूँका—धु-तु-तु-तु-तु···!! लड़ाई के नगारे बजते हैं ! कोसी बह रही है, लहरें नाच रही हैं ! अर्धनग्न

जनता का विशाल दल ! पर्वत तोड़, हइयो। पत्थर जोड़, हइयो। इस कोसी को साधेंगे।...बच्चे मर गये, हाय रे। बीबी मर गई, हाय रे। उजड़ी दुनिया, हाय रे।...हम मजबूर, हो गये। घर से दूर, हो गये। वर्ष महीना, एक कर। खून पसीना, एक कर। बिखरी ताकत, जोड़कर। पर्वत पत्थर, तोड़कर। इस डायन को, साधेंगे। उजड़े को, बसाना है... ठकम-ठकम, ठक-ठक ! घटम-घटम, घट-टिड़िरक-टिड़िरक !...ट्रैक्टरों और बुलडोजरों की गड़गड़ाहट !...लहरें पछाड़ खाती हैं। अट्टहास !! मंच रह-रहकर हिलता है।...दर्शकों के मुँह अचरज से खुले हुए हैं। कौन जीतता है—मार जवानो, हइयो ! एक डैम की प्रतिच्छाया-पर्दे पर ! गड़-गड़ गुड़गुड़ गर्र-र्र-र्र-र्र-र्र !!...

धीरे-धीरे ध्वनियाँ विलीन हुईं। मंच पर अन्धकार छाया रहता है। ...डी० डी० टी० की बाँसुरी भठियाली धुन छेड़ती है, अकेली...नदीर धारेर काछे-पासे...! पर्दे पर धीरे-धीरे बादामी छाया छा जाती है। वीरान धरती का रंग बदल रहा है धीरे-धीरे...हरा, लाल, पीला, बैंगनी।...हरे भरे खेत ! परती पर रंग की लहरें !...बँधुआ सेथाय थाके मोर, बँधुआ सेथाय थाके-ए-ए ! डी० डी० टी० की बाँसुरी रंगों को सुर प्रदान कर रही है। अमृत हास्य परती पर अंकित हो रहा।...पाँच चक्र नाच रहे हैं। घन घन, घन घन !!...पंडुकी का जिल्लू उठ गया। पंडुकी नाच नाच कर पुकार रही है—तुतु-तुत्त, तुरा तुत्त !! ...पिपही-शहनाई बजने लगी।

खेल समाप्त हो गया। जनता बैठी है।...और भी होगा ? पर्दा उठाइए ! कोलाहल ! कलरव !!...दुलारीदाय ? कोशका महारानी ! खोलो-ओ-ओ !... पर्दा उठा। लोकमंच के कलाकार, मंच पर खड़े होकर जनता को नमस्कार करते हैं।...डाक्टर रायचौधुरी की मुद्रा—तुमी पारबे !

हर्षोन्मत्त जन-मन...!

सेमलबनी के आकाश में अबीर-गुलाल उड़ रहा है !

आसन्नप्रसवा परती हँसकर करवट लेती है !

धूसर, वीरान, अन्तहीन प्रान्तर।

पतिता भूमि, परती जमीन, वन्ध्या धरती···।

धरती नहीं, धरती की लाश, जिस पर कफन की तरह फैली हुई हैं—बालू-चरों की पंक्तियाँ। उत्तर नेपाल से शुरू होकर, दक्षिण गंगा तट तक, पूर्णिया जिले के नक्शे को दो असम भागों में विभक्त करता हुआ—फैला-फैला यह विशाल भूभाग। लाखों एकड़ भूमि, जिस पर सिर्फ बरसात में क्षणिक आशा की तरह दूब हरी हो जाती है।

सम्भवतः तीन-चार सौ वर्ष पहले इस अञ्चल में कोसी मैया की यह महा-विनाश-लीला हुई होगी। लाखों एकड़ जमीन को अचानक लकवा मार गया होगा। एक विशाल भू-भाग, हठात् कुछ से कुछ हो गया होगा! सुफेद बालू से कूप, तालाब, नदी-नाले पट गये! मिटती हुई हरियाली पर हल्का बादामी रंग धीरे-धीरे छा गया।

कच्छपपृष्ठसदृश भूमि! कछुआ-पीठा जमीन? तन्त्रसाधकों से पूछिये, ऐसी धरती के बारे में वे कहेंगे—असल स्थान वही है जहाँ बैठ कर सब कुछ साधा जा सकता है। कथा है···।

कथा होगी अवश्य इस परती की भी। व्यथाभरी कथा वन्ध्या धरती की! इस पाँतर की छोटी-मोटी, दुबली-पतली नदियाँ आज भी चार महीने तक भरे गले से, कलकल सुर में गाकर सुना जाती हैं, जिसे हम नहीं समझ पाते।

कथा की एक कड़ी, कातिक से माघ तक प्रति रात्रि के पिछले प्रहर में, सुनाई पड़ती है—आज भी! सुफेद बालूचरों में चरने वाली हंस-चकेवा की जोड़ी रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर किलक उठती है कभी-कभी।

परती : परिकथा—८६

कारू मियाँ के विरुद्ध उसने माँ के पास नालिश की थी—मेले में रोनेवाले लड़के को मेरा दुलहा कहता है, कारू मियाँ !

—कारू-उ-उ ! ऐसी ठिठोली ठीक नहीं।

आज ताजमनी ने सपने में अपनी मालकिन माँ की नौंड़ी, जिवछी फुआ को देखा है···!—ओ मालकिन माँ ! तुम्हारे गुरुदेव की समाधि की माटी से मैंने हवेली की चौहद्दी बाँध दी है। तुम्हारे पुत्र का अकल्यान नहीं होगा !

होल्डिंग डॉग-ओ-सॉवजेवाल्हः !

भिम्मल मामा की इस पेटेंट पंक्ति का अर्थ आज तक कोई नहीं बता सका। जो बतायेगा, उसको एक अंग्रेजी डिक्शनरी से पुरस्कृत करेंगे, मामा। भिम्मलीय पुरस्कार !

भिम्मल मामा, सारे परानपुर के मामा !···परिवार के हर व्यक्ति के मामा !

मामा ग्रामवासी योगी हैं। तीस साल पहले नारी मुई उनकी, मुकदमेबाजी में घर की सम्पति नाशी। दोनों बड़े भाई तो हिम्मत बाँध कर गृहस्थी में लगे रहे। किन्तु, भिम्मल मामा तीस साल की उम्र में ही बिना मूड़ मुड़ाये संन्यासी हो गये।

लगातार, आठ वर्षों तक उन्होंने अपनी मेट्रिकफेल विद्याबुद्धि से बहुत किस्म के उद्योग किये, धन्धे फैलाये। मगर हाथ कुछ न आया। पिछले बीस वर्षों से उनके आचरण और दिमाग के बारे में तरह-तरह की फुलझड़ी कहानियाँ सुनी सुनाई जाती हैं। गाँव के हर टोले के लोग कुछ-न-कुछ

लिए कॉलेज में उतर पड़ी हैं…।

—गजब की इंटेलिजेन्ट हैं मिस चटर्जी। एक-से-एक प्रोफेसर के दुलरुवा मेल स्टूडेंट की नाक काट ली उसने ! फर्स्ट क्लास फर्स्ट ?

—देखने में कैसी है ? यह तो बताओ। उसमें कौन क्लास ?

भिम्मल मामा पठनागार के एक कोने में बैठ कर किसी बासी मासिक पत्रिका में डूबे रहते हैं। श्रवणशक्तिको क्षीण करने के लिए बटुए से देव-कपास निकाल कर कानों में डाले लेते हैं। क्योंकि, ऐसी बातों में पड़ने का अर्थ है, बनस्पतिया नौजवानों से खटपट खड़मंगल !

—केन यु से व्हट पाकिस्तान वॉट्स ? कह सकते तुम, क्या चाहता है पाकिस्तान ?…नो नो। नहीं, नहीं—कह नहीं सकते तुम, कह नहीं सकता वह। जाने और कहे तो कहे भिम्मल ! अनवरत बुदुर-बुदुर बोलते रहते हैं। राह चलते लोगों से प्रश्न करते हैं, परिभाषा माँगते हैं और विभिन्न भाषाओं में अभिवादन करते हैं। गाली, सिर्फ मैथिली भाषा में ही देते हैं।

मामा दैनिक अथवा साप्ताहिक पत्रिका नहीं पढ़ते। बासी मासिक-पत्रिका ही पढ़ते हैं ! उपन्यास नहीं पढ़ते क्योंकि, उपन्यास की सही परिभाषा आजतक किसी ने नहीं सुझायी है। और किसी बात को बगैर परिभाषा के गाँव में चलाना चाहे कोई, चला ले। लेकिन, भिम्मल मामा अपने सामने उसको नहीं चलने देंगे—धूल किसी अन्य के अक्षिगोलकों में झोंकना ! प्रताप से सैनिक और मतवाला से हिन्दूपञ्च कण्ठगत है अभी भी। हिन्दू-पञ्च का बलिदान-अंक और चाँद का फाँसी-अंक जब जप्त हुआ तो मैंने ललकार कर कहा था—कर लो जप्त ! परवाह नहीं। दोनों अंक हैं मेरे कण्ठ में !

तीन साल पहले जिला साहित्य सम्मेलन के मन्त्री को तीन लेख सुनाये थे भिम्मल मामा ने। बीच-बीच में कुछ टूट पड़ गये थे।—शेषांश अनुक-

गाँव वालों को याद है...सिर पर नीली टोपी, हाथ में चाँद-सितारा मार्क झण्डी एक लाठी में फहराते हुए जब भिम्मल मामा ने पहली बार गाँव में प्रवेश किया था। गाँव के अधिकांश लोग उनके इस पागलपन से दुखी हुए। किन्तु आर० एस० एस० के कुछ लड़कों के खून में बहुत गर्मी आ गयी। गाँव की सीमा पर जाकर रोका। समरेन्दर के भाई अमरेन्दर ने चेतावनी दी—खबरदार ! एक कदम भी आगे बढ़ने की कोशिश मत कीजिए।

भिम्मल मामाने बड़ी लापर्वाही से हाथ की झण्डी हिलाकर कहा—तो तुम लोगों ने मुसोलिनिज़्म का प्रयोग शुरू कर दिया ? गाँव के आदमी को गाँव में लौटने नहीं दोगे ?

—मुसलो···मुसोलिनिज़्म क्या बकते हैं ?

—मुसोलिनी की पार्टी भी स्याहपोश और तुम्हारे दल में काले···!

—स्याहपोश का क्या अर्थ ?

—तुमको अब किस भाषा में समझाऊँ ? जरमनियाँ भाषा में ? क्योंकि वाइड मैन कैम्फ आर्यभाषा तो जरमनियाँ भाषा ही हो सकती है।
भीड़ बढ़ गयी थी। गाँव के कई बड़े बूढ़े आ गये। कुछ शान्त प्रकृति के शीतल शब्द कहे—परमा ! जरा उम्र का ख्याल करो। जाने दो मामा को।

किन्तु भिम्मल मामा ने इस तरह जाने में अपना अपमान समझा—नो नो। होल्डिंग डांग-ओ-सावजेवाल्ह ! अपनी काष्टपादुका को एक तिल भी आगे नहीं जाने दूँगा। लेट कायदे आजम डिसाइड ···। हाँ हाँ ! आइ वॉण्ट पाकिस्तान। मैं चाहता हूँ पाकिस्तान, विदाउट एनी एडल्ट्रेशन एण्ड विद सम लिमिटेशन।

—आप हिंदू होकर भी पाकिस्तान क्यों चाहते हैं ?

—हाँ, मैं चाहता ही नहीं, आइ ट्राय, मैं चेष्टा करता हूँ। आइ क्राय, मैं रोता हूँ या चिल्लाता हूँ। क्योंकि, पाकिस्तान बनने के बाद जो बचा

रहेगा—वह स्वयं मुसल्लम हिन्दुस्तान बन जायगा। इसलिए, जितना जल्दी पाकिस्तान बने, आइ ट्राय, आइ क्राय!

एक-एक शब्द के लिए लड़नेवाले भिम्मल मामा ने बहुत से शब्दों की रचना की है। उनके साथ उन्हीं के शब्दों में बातें करने से बहुत प्रसन्न होते हैं।

दुखान्त नहीं दुखदायेन्ड। सुखान्त नहीं, सुखदायक। टेलिग्राम शब्द से बहुत चिढ़ते हैं—नो नो, इतना बड़ा नाम नहीं चलेगा। इसके लिए उप-युक्त है— ट्रा। टका ट्रा, ट्रा-ट्रा!!—प्रोड्युस और प्रस्तुत को मिलाकर प्रद्युस्य क्यों नहीं?

भिम्मल मामा 'साइक्लिस' में सैकड़ों कहानियाँ हैं। उनके नाम की भी कहानी है। सही नाम—विजयमल्लसिंह। सिंह को मामा ने सन् उन्नीस सौ बीस में कतर कर फेंक दिया। तब लिखने लगे—व्ही० मल्ल, म० म०। चूँकि भिम्मलकृत भानुमती पेटिका के एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका कोई, एक साल तक प्रतीक्षा करने के बाद भिम्मल मामा ने अपने नाम के साथ महामहोपाध्याय जोड़ना शुरू कर दिया। संक्षेप में—म० म०! व्ही० मल्ल म० म०। कालान्तर में भिम्मल मामा। वे किसी के मामा नहीं, कोई उनका भाञ्जा नहीं।

खटम खड़म, खटम खड़म!

भिम्मल मामा सार्वजनिक सर्वदलीय सभा में जा रहे हैं—चलो, चलो! परानपुरके पीड़ितो, पतितो, दलितो, गलितो…!

—अच्छा? तो भिम्मल मामा ने भी अब जित्तन बाबू का साथ छोड़ दिया?

—आज की सभा तो जित्तन बाबू के खिलाफ हो रही है। उसमें इस तरह

उत्साहित होकर लोगोंको गुहारते जा रहे हैं। इससे तो यही अर्थ निकलता है।

—हाँ भाई, दो पागलों में और कितने दिनों तक दोस्ती रह सकती है?

—चलो, चलो। परानपुरके पीड़ितो, पतितो, दलितो! अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो—अर्थात जो अश्वत्थामा को मारे वह आदमी, नहीं तो हाथी—हा-हा-हा। चलो, चलो!!

लुत्तो सभामंच पर खड़ा होकर देख रहा है, एकत्रित भीड़ में खोज रहा है—उँहु। एक भी सोसलिस्ट नहीं, कौमलिस्ट का एक बच्चा तक नहीं आया है सभा में! ठीक है, इसी बार रंग डिकलियर हो जायगा!

—ए! मिस्तरीजी सिनेमा का गाना वाला रिकाट मत चढ़ाइये। हाँ, हाँ, सभापतिजी का ही हुक्म है। सिनेमा का एक भी गाना नहीं।

लाउडस्पीकर का ऑपरेटर कहता है—लेकिन, राष्ट्री गीत तो एक्के गो है। वही माता के सिर पर ताजवाला। सो भी थोड़ा कटा हुआ है।

—जो भी है, जैसा भी है, उसी रिकाट को बजाइए। जानते हैं नहीं, उस बार क्या हुआ था? गाँव कौन है, सो याद है? परानपुर है। हाँ!

उस बार क्या हुआ था?…चार महीना पहले की बात, जिला सभापतिजी का प्रोग्राम था, परानपुर में। लुत्तो ने बहुत मेहनत की थी। खूब बड़ी सभा हुई थी। इस मैदान में तिल धरने की जगह नहीं रह गयी थी। दो घंटे तक बोलते रहे थे सभापतिजी! मुँहसे झाग उड़ने लगी थी। उसी सभा के बाद से लुत्तो को कांग्रेसी लोगों ने लुत्तो बाबू कहना शुरू किया।

क्योंकि, खुद जिला सभापति ने कहा था—वाह ! लुत्तो बाबू ! आपने तो इस गाँव को पूरी तरह कैपचर कर लिया है।

सोशलिस्ट लोग चिढ़ कर बैंगन का भर्ता हो गये, उस सभा के बाद ! गाँव में इतनी बड़ी सभा कभी नहीं हुई।...पण्डित जवाहरलालजी वाली सभाओं को छोड़ कर। सो, कम्युनिस्ट पार्टी वालों को और कुछ नुक्स नहीं मिला तो हारे हुए बच्चे की तरह मुँह चिढ़ाकर सन्तोष किया। जिले की एक कांग्रेस विरोधी पत्रिका में उस सभा की एक व्यंग्यपूर्ण रिपोर्ट प्रकाशित करवायी—जिला सभापति ने इस सभा की कार्यवाही, आ जा मोरे बालमा तेरा इन्तजार है, गीत से शुरू की। और सभा समाप्त हुई—हल्ला गुल्ला ला-ए-ला, भजन से !

ताज-ताज-ताज-ताज...!

मेरी माता के सर पर ताज वाला कटा हुआ रेकर्ड ताज पर आकर ताज-ताज-ताज कर रहा है।—ए, मिस्तरीजी ! रिकाट ठीक कीजिए !

—ए, मिस्तरीजी ! अब गाना रहने दीजिए अभी। जरा-सा इनका भासन होगा। लौडपीस्कर का कलकाँटा ठीक कीजिए।

...एं ? जयमंगल तांती भी लेक्चर देगा ? क्यों नहीं देगा। कॉलेज में पढ़ता है। तिस पर सरकार के पैसे से पढ़ता है। कहाँ लिखा हुआ है, किस कानून की किताब में लिखा हुआ है कि भासन लेक्चर सिर्फ ऊँची जातिवाला ही देगा ? तांतीटोली वालों को कम सताया है इसटेट वालों ने ?...वाह, जयमंगल तांती लौडपीस्कर के सामने कितना शोभता है, देखो देखो !

—इस सभा में समवेत समादरणीय सन्तत साथियो ! तथा, मैंयां...माँम्-भाइयों बहिनों ! ...सुधार लीहिस ! हमको तो डर हुआ कि शुरू में ही मेंमियाने लगा। खूब लम्बा बेर बाँधा है जयमंगल तांती ने।

परती : परिकथा–१४

कैयटटोली की बहरी बूढ़ी को उसकी जवान पोती ने समझाया—जय-मंगल कहता है कि इस सभा में जो आये हैं, सबको एक साथ रहना होगा। माँ बहन की सौगन्ध देकर जयमंगल···।

लाउडस्पीकर के भोंपे से निकली अपनी आवाज को सुनकर जयमंगल की देह रोमांचित हो उठी ! उसके खून में एक लहर आयी—भाइयो ! आप लोगोंने ब्रमपिचाश या ब्रह्मपिशाच का नाम जरूर सुना होगा ! और, यह भी सुना होगा आपने कि बरदिया घाट के ताड़ पर एक पुराना ब्रम-पिचाश रहता है। आप लोगों ने सिर्फ सुना है। किसी ने आँख से देखा नहीं।···आपने, एक-एक आदमी ने उस ब्रमपिचाश को देखा है ! आपने कभी पहचानने की कोशिश ही नहीं की !

—देखा है ? किसने देखा है ? सबने देखा है, कहता है !सभा में एकत्रित अधिकांश लोगों के मुँह अचरज से खुल गये !···भिम्मल मामा अपनी बही पर पेंसिल रोककर, रुके हुए भाषणकर्ता की अगली बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं। गत बीस वर्षोंमें गाँव में जितनी सभाएँ हुईं, किसी भी दल या पार्टी की ओर से भाषण हुआ, भिम्मल मामा ने इसी मोटी बही में नोट किया है। तीन-तीन बार थानेदार साहेब ने उनकी इस बही को जत किया है। अभी भी मोहर मारा हुआ है।

जयमंगल ने श्रोताओं में ब्रह्मपिशाच का भय दो मिनटों तक फैलने दिया। इस अवधि में उसने अपनी बात माँज ली। फिर, उसने नाटकीय ढंग से अपना दाहिना हाथ उठाया—जिन्हें देखना हो, अभी भी जाकर देख सकते हैं। बदरिया घाट पर जाकर देख सकते हैं। लम्बे लम्बे बाल ! आँख पर कोल्हू के बैलों वाला काला चश्मा ! साथ में कुत्ता, हाथ में छड़ी और मुँह में···पैप-चुरुट !

भिम्मल मामा मंच के पास ही बैठे हैं। धीरे से कहते हैं—पैप, चुरुट क्या ! सीधे नलचिलम कहो !···वाह ! जयमंगल ने खूब रसीला लेकचर देना सीखा है, कॉलेज में !···बात कहाँ से शुरू कीहिस और कहाँ से कहाँ फेंक

धूसर, वीरान, अन्तहीन प्रान्तर।

पतिता भूमि, परती जमीन, वन्ध्या धरती…।

धरती नहीं, धरती की लाश, जिस पर कफन की तरह फैली हुई है—बालू-चरों की पंक्तियाँ। उत्तर नेपाल से शुरू होकर, दक्षिण गंगा तट तक, पूर्णिया जिले के नक्शे को दो असम भागों में विभक्त करता हुआ—फैला-फैला यह विशाल भूभाग। लाखों एकड़ भूमि, जिस पर सिर्फ बरसात में क्षणिक आशा की तरह दूब हरी हो जाती है।

सम्भवतः तीन-चार सौ वर्ष पहले इस अञ्चल में कोसी मैया की यह महा-विनाश-लीला हुई होगी। लाखों एकड़ जमीन को अचानक लकवा मार गया होगा। एक विशाल भू-भाग, हठात् कुछ से कुछ हो गया होगा! सुफेद बालू से कूप, तालाब, नदी-नाले पट गये! मिटती हुई हरियाली पर हल्का बादामी रंग धीरे-धीरे छा गया।

कच्छपपृष्ठसदृश भूमि! कछुआ-पीठा जमीन? तन्त्रसाधकों से पूछिये, ऐसी धरती के बारे में वे कहेंगे—असल स्थान वही है जहाँ बैठ कर सब कुछ साधा जा सकता है। कथा है…।

कथा होगी अवश्य इस परती की भी। व्यथाभरी कथा वन्ध्या धरती की! इस पाँतर की छोटी-मोटी, दुबली-पतली नदियाँ आज भी चार महीने तक भरे गले से, कलकल सुर में गाकर सुना जाती हैं, जिसे हम नहीं समझ पाते।

कथा की एक कड़ी, कातिक से माघ तक प्रति रात्रि के पिछले प्रहर में, सुनाई पड़ती है—आज भी! सुफेद बालूचरों में चरने वाली हंसा-चकेवा की जोड़ी रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर किलक उठती है कभी-कभी।

दीहिस ! समझे ? ब्रमपिचाश !

—लेकिन ! जयमंगल तांती ने अपनी बड़ी उँगली उठा कर कहा—याद रखिए ! साधारण ओझा गुनी इस ब्रमपिचाश को काबू में नहीं ला सकते। यह उसी ब्रमपिचाश का बच्चा है, जिसके जुल्मी बाप ने गाँव को ही नहीं, सारे सबडिविजन को तबाह किया था···!—फुलस्टाप प्लीज ! भिम्मल मामा अपनी बही बन्द कर खड़ा हुए—कृपया पूर्णविराम ! सभा के प्रधान महोदय, क्या मैं इस गाली गलौज सभा की विधि-विधान जान सकता हूँ ?

—बैठ जाइए। बैठ जाइए।···पागल आदमी है। अजी, उसको बैठाओ ! ऐ। स्वयंसेवक !

—अरे भाई, बोलने दो न ! क्या कहता है, जरा सुनो भी तो ?

—दिमाक्रेसि ! दिमाक्रेसि के दामन में दाग मत लगाइए प्रधान महोदय ! व्यक्तिगत विद्वेषपूर्ण···, भिम्मल मामा की आवाज क्रमशः तेज होती गयी—देन, आइसे···। इसका कोई विधिविधान नहीं तो, मैं कहता हूँ। दिस मोबोक्रेसि विल स्वीप यु आउट। लीप पोत कर बराबर कर देगा यह भेंड़ भिड़ौवल गुंडावाद दैट इज मोबोक्रेसि···।

—परानपुर गाँव के बँटैयादार ! जिन्दाबाद !!

लुत्तो ने जयमंगल को एक ओर हटा कर, माइक पर नारा लगाना शुरु किया। वह जानता है, सभा में किसी किस्म की गड़बड़ी फैलने लगी तो तुरत जोर-जोर से नारा लगाना चाहिए !

—लगाइये, आप लोग जोर से नारा। इतने जोर से, कि सुनकर दुश्मन का कलेजा काँप उठे और हार्ट फैल हो जाये !

भिम्मल मामा खड़ाऊँ खटखटाते हुए चले—गॉड सेव पण्डित नेहरू, भगवान बचावें। कांग्रेसकी बढ़ी हुई प्रतिष्ठा को ये मूड़ने पर तुले हुए हैं···दे'ल शेव दि लॉग एंड ग्रोन प्रेस्टिज ऑफ दि रूलिंग पार्टी, क्लीन-

हाथ जाकर लौट आया !

लुत्तो थर-थर काँपने लगा। उसने चिल्लाकर कहा—देखो···देखिए ताज-मनी···यह मुझ पर बेकार बिगड़ गया। मैंने कुछ कहा है? आँगन से बाहर आकर सबसे दरियाफ्त कर लीजिए।

—तुम कुछ नहीं बोला ? नहीं बोला कुछ ? हम नहीं समझा ? लुते मुजी ! तुम अब्बी भुच नहीं बोला ?···तुम कुछ नहीं बोला तो हमपनि कुछ नहीं बोला, लुते मुजी !

दिलबहादुर अपनी भाषा में बड़बड़ाता हुआ ताजमनी की आँगन की ओर जाने लगा !

ताजमनी ने आँगन की दहलीज से पुकार कर कहा—बहादुर भैया, मीत को ले जाओ। भूख लगी है, इसे।

—हम तो चुपचाप मीत को लेने आया उधर में ! दिलबहादुर ने रुक कर कहा—फिन हामको काहे वास्ते बुलाया इधर में ?

गेंदा ने फुर्ती से उठ कर, बड़ी मीठी बोली में कहा—दाजू भाय ! मोर कसूर हुन्छः ले, मेरो गर्दन खुकरी से काटिन्छः तो काटिन्छः ! ले !!

गेंदा अपनी गर्दन झुका कर दिलबहादुर के करीब चली आयी। गेंदा के बाल नीचे की ओर लरज गये।···कस्तो लुती ? दिलबहादुर ने सोचा, कैसी लुची है ? छक पर्ने ! अचरज की बात !! इस बार, दिलबहादुर की मुद्रा बदली। भ्रूहीन आश्चर्य !!

दिलबहादुर, ताजमनी के साथ आँगन में चला गया तो गेंदाबाई मद्धिम आवाज में बोली—आप भुच क्यों बोले लुत्तो बाबू ? पहाड़िया बोली में भी भुच को भुच ही कहते हैं।

सभी नट्टिनों ने एक दूसरे को देख कर आँखों-ही-आँखों में बातें कीं—अपनी-अपनी झोपड़ी के अन्दर चलो।···दरवाजा मजबूती से बन्द करना। लुत्तो की बात लुत्तो जाने !

लुत्तो कम चालाक नहीं। नट्टिनों के उठने के पहले ही बिल्ली की तरह बिना कोई आहट किये उठ खड़ा हुआ! रबर का जूता हाथ में लेकर अँधेरे में गायब हो गया!

रब्बू रामायनी सुन्नरि नैका की गीत कथा नहीं गायेगा?

दोपहर को जित्तन बाबू ने रामपखारनसिंह के मुँह खबर भेजी—रब्बू रामायनी नैका सुन्नरि की गीत-कथा गाने को तैयार नहीं हो रहा है। क्या उपाय है?···जिद्दी हो जाता है आदमी बुढ़ापे में!

रामपखारनसिंघ को रब्बू रामायनी का नखरा जरा भी पसन्द नहीं।—जे-बा-से, भर रात रिब-रिब सरंगी बजाई और गवले गीतको बेर-बेर गावेगा। इसी के खातिर इतना खुशामद! सुबहे से पाँच-हाली हमको घाट हाकिम ने दौड़ाया है! वही जो कहावत है नूँ—कहला से बरेठा गधा पर नहीं चढ़ता है!

ताजमनी ने रामपखारनसिंघ की बुद्धि पर पड़े झोलको झाड़ते हुए कहा—रब्बू रामायनी न तो तुम्हारे इस्टेट का रैयत है और न वह इस्टेट का नमक खाता है। उसके यहाँ लाठी लेकर बुलाहट भेजनेवालों की बुद्धि की बलिहारी। मुंशीजीने परवाना लिख के नहीं भेजा?—बजरिए इस परवाना के तुमको हुकुम दिया जाता है!···मेरे पास क्यों आये हो? गाँव के गुनी-मानी के साथ कैसा व्योहार करना चाहिये, यह मैं बता दूँगी?

रामपखारनसिंघ की कड़वाई हुयी सूरत को देखकर ही समझ गये जित्तन बाबू, खूब झालदार बातें सुनकर वापस आया है।···माँ जब कभी रामपखारनसिंघ पर बिगड़ती तो ऐसा ही चेहरा हो जाता था, इसका!

धीरे से पूछा ।

—कौन कहता है ? क्यों, मीत को क्यों बाँधेगा ?

आँगन की सीढ़ी से उतरते हुए, जित्तन बाबू ने कहा—रामपखारनसिंह कहता है···।

ताजमनी ने माथे पर कपड़ा डालने की चेष्टा की। मीत ने आँचल खींच लिया दाँत से ! प्रसन्नावस्था में ही कभी-कभी रामपखारनसिंघ की रखी हुयी पगड़ी को दाँत से पकड़ कर खींचता-दौड़ता है ! और, रामपखारन-सिंह दोनों हाथ जोड़ कर आरजू करता है—ए, महराज ! ई कूल अंग्रेजी दिल्लगी बूढ़ा आदमी से काहे करते हैं ! मीत महाराज !

मीत की हरकतों को देख कर ताजमनी के ओठों पर एक मीठी सी मुस्कु-राहट कढ़ आई !···जित्तन बाबू को याद आयी, वह भी बचपन में माँ का आँचल खींच-खींच लेता था !

सामबत्ती पीसी को हवेली के अन्दर जाने का पूरा हक है। लेकिन, मीत किसी को नहीं आने देगा। बॉख, बॉख, बॉख !!

सामबत्ती पीसी ड्योढ़ी के बाहर जाती हुई बोली, परसाद उरसाद चढ़े तो हमारा हिस्सा रखा रहे। हाँ !···जितना-सा देखा है, वही काफी है साम-बत्ती पीसी के लिये। चार दिन का खुराक !

ताजमनी, सीढ़ी पर खड़े जित्तन बाबू के सामने बैठ कर पाँच दीप सजा रही थी। जित्तन बाबू अचरज से देख रहे थे··· । लेकिन, सामबत्ती पीसी के मुँह से उपर्युक्त दृश्य का वर्णन सुनकर जयवन्ती ने चहारदीवारी की एक छेद से झाँक कर देखा—सुन्नरि नैका का पाट तो अन्दर में हो रहा है !

मलारी ने कहा, छेद से जरा हँटो तो मैं भी देखूँ ?—ठीक कहती है तू। पैर-पूजाई कर रही है, सुन्नरि नैका।

गेस्ट हाउसके सामने, बारामदे पर अँगनाई में दर्जनों लोग खड़े हैं !···
औरतें दल बाँधकर आ रही हैं—गाँव में किसको नौ मन तेल होगा, जो
राधा का नाच देखेगा, दिखायेगा ?

—नौ मन तेल हो भी तो क्या ? मन में हुलास नहीं किसी के ।

—आखिर, रोशन बिस्वाँ के बाप का, रेंड़ी के तेल से जमाया हुआ पैसा
डकैत ही ले गया !

—रघू बूढ़ा नेम-टेम करके व्यासगादी पर बैठेगा । कुंड में नहाने गया
है ।

व्यासगादी सजी हुई—आस पास बलते दीपों की माला ! सामने धूपदानी
में धूपकाठ की धुंडी सुलग रही है ।

जित्तन बाबू के मन के पर्दे पर एक ऋषि की मूर्ति उभरती है और मुखर
हो उठती है···ग्राम्य गीति-कॅथा के काव्य हिसावे ग्रॅहण करिते गेले, ताहार
संगे-संगे, मॅने-मॅने; समॅग्र ग्राम, समॅस्त लोकालय के जॅड़ाइया लॅइया पाठ्य
कॅरा परमावश्यक ! तारपरे, देखबे—तोमार ॲन्तरे-ॲन्तरे जन्तर बाजिया
उठिबे ! बर्बर-संगीते सहज सुरेर सन्धान···!!

नहा धोकर, हल्दीसे रंगा हुआ नया कपड़ा पहन आया है रघू रामायनी !
जित्तन बाबू ने हाथ का सहारा देकर व्यासगादी पर बैठा दिया । गले में
माला डाल दी !···ललाट पर गोपी चन्दन ! पटसनकी तरह सुफेद दाढ़ी ।
आधी देह अर्धांग की मारी हुई । सन्तों की-सी सूरत ! अर्धांगवाली बाँह से
सटी लटक रही है, छोटी-सी सारंगी ! आधे अंग की पूर्ति करती हुई,
काठ और चाम की बनी सारंगी !

नैका-डीह पर पाँच बड़े-बड़े चिराग जल रहे हैं । गाँव से पच्छिम, दुलारी-
दाय के किनारे···।

—आँख मूँदकर गुरु को सुमर रहा है, शायद !

हुँ-ऊँ-ऊँ ! रघू ने गुरु मन्तर गुनगुनाया । सूखी सारङ्गी ने गुरु मंतर के

सुर पर एक मोटी कारीगरी की—कुँ-हुँ-ऊँ-कुँकुँ-ऊँ !

अंतर के जंतर झंकृत हो उठे !

—जै, मैया सरोसती ! रघ्घू के मुँह से पहली वाणी निकली !

साठ साल से साधुओंके सत्संग में रहकर उसने जो भाषा सीखी है, उसी में कथा का गद्य भाग सुना रहा है !

ट्रिप-टि-रि-रि-रि-रि ! सुरपतिने टेप-रेकार्डर का बटन ऑन किया ! ट्रि-रि-रि-रि···!!

—कि-ई, सज्जन-दुरजन सब समतूल—मैया सरोसती के दरबार में क्या तुलसी और क्या रघुआ जैसा गाँव का गड़रीका फूल ! कि-उ, साँच-झूठ में कछुओ ना जानू, जो गुरु सपने में सिखा गये, सोहि अच्छर-अच्छर बखानू !···बहुत पुरानी बात रे भाई, जाने गंगा माई। और, जाने परान-पुर गाँव की प्यारी नदी दुलारीदाई ! ऐसा दुरदिन कभी न आवे ! ऐसे दुरदिन की चर्चा भी है पा-ा-ा-प ! मगर गुरु के हुकुमसे सब कुछ माफ ! ऐसा दुरदिन···!

सुरपति ने बगलवाले बरामदे पर पड़े चिक की आड़ में बैठी ताजमनी पर एक नजर डाली। नाक के कील का पत्थर झलका। मीत ताजमनी की गोद में बैठा है—चुपचाप !

···ऐसा दुरदिन आया भाई ! कि, अचानक इस धरती को लकवा मार गया ! नदी-तालाब कूप, सभी गये सूख ! पानी चला गया पाताल ! गाछ-बिरिच्छ सब झुना के गिर पड़े। देश में महाकाल पड़ गया। हाहाकार मच गया एतराफ में। हजारों-हजार लोग रोज मरने लगे ! अरे, धरती कोई धरती का बेटा, धरती में मिल जाये ! फिर भी पानी का पता नहीं ! पानी कहाँ मिले रे दैवा ?

रघ्घू रामायनी ने दम बाँधने के लिए विराम दिया ! सुरपति ने टेप-रेकार्डर का बटन ऑफ किया ! पिट्-क्लिक !!

भीड़ बढ़ती जा रही है। लालटेन हाथ में लटकाये, खड़ाऊँ खटखटाते आ रहे हैं भिम्मल मामा। दक्खिनवाले महारपर कोई टार्च भुकभुकाता आ रहा है। आम के बाग में कोई पुकार कर कह रहा है—रेडियो नहीं, रेडियो नहीं। रघ्घू दास सारङ्गी पर महराय गा रहा है, महराय !

ट्रिप-टि-रि-रि रि-रि—

कि, तीसरे दिन इस हवेली इलाके के नायक सुन्दर नायक ने, जल बिनु तड़पते लोगोंको पुकार के कहा—हो जैवार ! सुनो, कान पसार ! मोरी छोटी बहिनियाँ सुन्दरि नैका रोज गुनवले पाताल से पानी मँगाकर जैवार भर के लोगों को पिलावेगी। लेकिन, पहले उसको आशीख दो सब मिल कर कि देवकुल में उसका व्याह हो-ओ-ओ-ओ !।···

सुननेवाले के चेहरे पर प्रसन्न आतंक की रेखायें अंकित हैं !···पातालपुरी के एक चिल्लू पानी से क्या हो ? सुनो न, कैसी लीला रचावेगी !

···सुन्दर नायक ! बड़ा भारी गुनियाँ। नेपाल में किरात मंतर सीखकर आया हुआ गुनी ! और, भाई से बढ़कर गुनवंती, उसकी बहिनियाँ—सुन्दरि नायका ! कामरूप कामख्यासे गुन सीख कर आई हुई ! उसको देवकुल का दुल्हा चाहिये ! सुन्दर नायक ने जिला-जैवार के लोगों से कहा—हो, पंचो ! मोरी बहिनियाँ सुन्दरि नैका ने किया है एक उपाय ! दंता राकस को फुसला कर प्रेम की डोरी में बांधा है। इस इलाके के एक सहस्र सुन्दरियों में सुन्दरि नैका मोरी बहिनियाँ—एक ! भगवान उसकी रखें टेक। भला, उसको राकस कुल में जाने दूँगा ?···पाँच रात में पाँच कुंड बनवायेगी, पाँच महापोखरों से पुरइन मँगवायेगी, पाँच महानदियों की मछलियाँ। सहस्रों पुरइन फूल में से एक पर आकर बैठेगा कोई देवपुत्र। फिर उसी देव के साथ मेरी बहिनियाँ व्याही जायगी हो-ओ-पंचो !···

पिट्-क्रिक !

परानपुर हवेली को आहाते में, गेस्टहाउस के सामने पहली बार इतनी

बड़ी भीड़ जमते देख रहा है सुरपति।···यहाँ तो कोई दिन में भी नहीं आते ?

रामपखारनसिंघ बड़ी दरी बिछाकर, खड़े लोगों को इशारे से बैठने को कह रहा है—चुपचाप सुनो। बोलो—भूँको मत ! फिलिंग—रिकार्ट हो रहल बा।

ट्रिप-टि-रि रि-रि···!!

···सो, हो पंचो। राकसकुल में नहीं जाने देंगे बहिनियाँ को। धोखा से काम लेंगे। पहले, दंता राकस को प्रेम के बजर-बाँध में फँसने तो दो ! इसलिये, कुछ देखो भी अपनी आँख से तो मोरी बहिनियाँ का कुचाल मत मानना हो लोगो !···फँस गया दंता सुन्दरि नैका के फाँस में ! गाँव से पूरब ! परपट परती पर !! चाँदनी रात में। बालूचर के किनारे दंता के दाँत चमके—ही-ही-ही-ई-ई-ह ! हम हारल रे-ए-ए-ए—हारला आ ! आँख मिचौली, लुकाचोरी खेल में दंता गया हार। हार कबूल कर हँसता है दंता—ही-ही-ही-ही-ई-ह ! हम तैयार रे-ए-ए मानुस छोरी मोह-नियाँ—मुन्नरि नैका ! सत्त करके बोला—ठीक्के बात, ठीक्के बात !! कुण्डा खोवैया करबे-करबे, पानी से भरबे ! तोर परपट परती धरती पर पानी कलबुल बोले-हे-हे-हे-ए-ऐसा पानी भरबे !!···कुँ-ऊँ-हुँ···।

नम्मां नैका मुन्नरि सुन ले मोर बचनियाँ रे नाम्,
नम्मां पाताल फोड़ी आनब हम पनियाँ रे नाम्,
नम्मा पाँच किसिम के लायब पुरइनियाँ रे नाम्,
···नामां पूरन करब अपनो कहनियाँ रे नाम,
मुन्नरि नैका रे-ए-ए, जोड़ल्हो पीरित जनि तोड़े रे-ए,
हम्हुँ मरि-जा-य-बा-रे-कि-इ-ह !
कुहुँ कुँका-आँ-आँ !!

···अब, चला है दंता सरदार उत्तर राज। गढ़दंता की ओर ! गढ़ में पहुँच कर अपनी राकसनी हिरन्नि रानी का मुँह भी न देखा। और न

बेटे की तुतलाती हुई बोली सुनी। दिया है सिंघा उठा के फूँक—ई-हिं-ई-ई !! हुँय-हुँय-हुँय-हुँय-हुर्र-र्र-र्र-र्र !!…धू-धू-धू-धू-धू-धु-र्र-र्र-र्र-र्र-र्र !!…कुँय-कुँय-कुँय-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ…!!

सारंगी के झनक तारों पर सिंघा की बोली, मानो चालीस जोजन दूर से आकर हनहना गई—कुँ-हुँ-हुँ-हुँ !!

जित्तन बाबू और सुरपति की आँखें आपस में मिलीं…अपूर्व ?

रघू रामायनी सुननेवालों को चेतावनी दे देता है—छोटे-छोटे बच्चे-बुतरु को सँभालिये !…जंगल-पहाड़, खोह-खंधको में शिकार करते हुए दो सहस्र राकसों के कान खड़े हुए—गुहार सुर्र-र्र-र ? रे-ए-ए ! गुहार-सुर्र सिंघा बजा रे बजा !!…साहुर्र-र्र, साहुर्र-र्र-र्र करते सभी राकस गढ़दन्ता में आ पहुँचे।

रे-सर्रदार-रे सर्रदार
की दरकार, की दरकार ?
कुँहुँ-कुँक्कुँ…कुँहुँ-कुँक्कुँ…!

बोला दन्ता सरदार—रे-भैर्रा-आ-आ-ह ! दन्ता सरदार के घर में ना भया खटपट, ना घटी खर्ची। दन्ता सरदार पर नहीं तानी किसी ने बर्छी ! दन्ता का तो छूट रहा है परान, मानुस छोरी मोहनियाँ के लागला मोहनबान रे भैर्र-आ-ह !…सभी राकसों ने एक दूसरे को देख कर सूँघा—हुँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ ? मानुसगन्ध, मानुसगन्ध !!

कुँहुँ-कुँक्कुँ…
भैर्रा परानपुर के नैका सुन्नर गुनियाँ रे नाम्,
भैर्रा तेकरो से तेजी तँ बहिनियाँ रे नाम्,
भैर्रा पाताल खोदि रोज पीये पनियाँ रे नाम्,
…भैर्रा दाँत छटके बदरा के बिजुरिया रे नाम्,
भैर्रा सुन्नरि छहके सोना के मछरिया रे नाम्,

मेरा मोरा पर मारली मोहनियाँ रे नाम् ,
सुन्नरी नैका रे-ए-ए, जोड़लो पीरित जनि तोड़ रे-ए,
हम्हुँ मरि जा-इ-ना-आ-रे-कि !!

···मत रोये सरदार मत रोये। गड़दन्ता के राकस के रहते सरदार रोये ? पाँच कुण्ड केर क्या बात ? परानपुर परती खोदि के समुद्दर बनैबै रे-ए-ए ! चल रे मैरां-आ-आ !!···धुर्र-धुर्र-धुर्र-धुतु-धुतु-धुत-तू-उ-उ-उ।···कुँ-हुँ ऊँ !!

रोती रह गई हिरन्नि रनियाँ, हुलसता रहा बेटा दन्ता का—हाथी का बचा जैसा ! बाप ने उलट कर देखा भी नहीं। रो-रो कर बोली हिरन्नि रानी अपने बेटे से—मत रोये ! मानुस छोरी मइयाँ लाने गया है पिता तोरा ! सोने के कटोरे में खीर भर कर—चकमक चान को बुलावेगी आकाश से तेरे लिए। तोर मानुस छोरी मइयाँ···।

इधर, एक ओट आकाश और दूसरा पाताल—मुँह बाकर दौड़े एक सहस राकस। धरती डोल गई भाइयो···धर-धर-पट-पट, पट-पट-पाट, धडिंग

धडिंगा गिड़पत गाग् :

कुहाँ-कुंकाँ···
'जी, धड़-धड़ धड़के धरती माय,
धड़क-धड़ा-धड़—हाय रे बाप,
थरक-थरा-थर थारिया जैसन—
थर-थर काँपे चान;
'कि, पातालपुरी में लुकनियाँ पनियाँ रे-ए-ए,
'कि रे खुआ रे-ए-ए, जगहो खोजि न पावे !
कुँकाँ-कुहाँ···

सुरपतिने मशीनका बटन ऑफ किया। रम्घू रामायनी के लिए जित्तन बाबू अपने हाथ से चाय तैयार कर रहे हैं। भिम्मल मामा प्रसन्न हैं—गूड-बेटर-बेस्ट, अच्छा-बेहतर, सर्वश्रेष्ठ ! ···'पूछो मुझसे, आस्क मी ! मैं गाँव

में चक्कर लगा आया हूँ। सारे गाँव का बच्चा-बच्चा जग गया है। गाँव में पेनिक पनपना गया है मिस्टर कथा-कलक्टर ! हर दरवाजे के पास कुछ मर्दों का झुंड, हर पिछवाड़े में खड़ी औरतों का गोल। सारंगी की बोली तो···।

—ओ ? तुमने ढकनकल भी लगा दिया है ? धुनफीताबन्दी हो रही है ?

सुरपति ने मुस्कुरा कर कहा—जिद्दा ! मामा हर पोर्टेबल मशीन के लिए ढकनकल शब्द दे रहे हैं और टेप रेकॉर्डर के लिए—धुनफीताबन्द !

बाहर, भीड़ से किसी ने कहा—बाबू। अभी खतम मत करवाइये। हर टोले का लोग दौड़ा आ रहा है।

दूसरे ने हिम्मत करके कहा—बन्द मत करवाइये।

औरतों की टोली से सामबत्ती पीसी ने कहा—एको कुंड तो खोदाइये !

रामपखारनसिंघ को सर्दारी करने का मौका मिला—चुप ! फिलिंग रिकाट में बोली चल जाई···।

ट्रिप-टि-रि-रि-रि···।

'कि पहुँचे सभी राकस ! दुलारीदाय के बरदिया घाट के पास—सुन्दरि नैका ने पाँच जगह दीप जला कर पहले ही रख दिया था ! इधर, धरती डोलती रही, आकाश में चाँद चाँदीके थाल जैसा नाचता रहा। उसी ताल पर, सुन्दरि नैका हवेली के पिछले दरवाजे से नाचती हुई आयी और अपनी एक झलक दिखा दी, सभी राकसों को ! किलकिला उठे खुशी से एक सहस्र राकस—मानुसछोरी मोहनियाँ रे-ए-ए ! आँख मारे-ए-ए !!··· खुशी से जयडम्फ बजाकर नाचने लगे एक सहस्र राकस। ताल पर एक-साथ एक सहस्र राकस धरती पर दाँत मारते—खचाक्। पातालपुरी में कच्छप भगवान की पीटपर दाँत बजते—खट्टक् ! पानी को ऊपर आना ही होगा :

ढाक् ढक्कर-ढाक् ढक्कर···

कोड़ भैंर्रा-र्रा-आ-ह ! फोड़ भैंर्रा-आ-ह !!
भरी राति में खोदाय, पनियाँ छह-छह छहाय
नदिया देवो बहाय-य-य !
भोर में फेर देखबो सुन्नरि कन्ना—
हे-य-आँख मारे !
होय दाँत मार-रे-ए-ए···खचाक् !
खट्टक् !! ढाक्-ढकर, ढाक्-ढकर··
कुँह कुँकाँ, कुँह कुँकाँ !!

—कृपया पूर्णविराम ! बटन ऑफ कीजिये कथा-कलक्टर-साहब । उधर देखिये क्या हुआ ?

—कोई बेहोश हुई, शायद ।

एक औरत चिल्लाकर बोलने लगी—बाबू ! बन्द करिये । दु-तीन कम कलेजा वाली लड़की के कलेजे में डर समा गया है । बोलती है, हवेली के चारो ओर दैत्त दौड़ रहा है किलबिला कर ! इन लोगों को बरंडा पर जगह कर दीजिए !

भूमिहार टोली की एक औरत ने कहा—कैयट टोली की दो-तीन छँहक-बाज छौंड़ी और रैदास टोली की मलारी ! जहाँ जायँगी सब, एक-न-एक ढंग पसारेगी ही ।

—कितना बढ़िया गा रहा था ! हर जगह ढंग देख कर देह जलने लगती है ।

—बरंडा पर काहे, अराम कुर्सी पर जाकर बैठो न !

औरतों की मंडली में लड़ाई शुरू हुई । कैयट टोली की बेधी फुआ और गंगोला टोली की पनबतिया ने एक ही साथ जवाब दिया—छँहकबाज छौंड़ी हर टोले में है । टोला-टोली मत करो नहीं तो आज उघार कर रख देंगे !

ब्राह्मण टोली की आनन्दीदाय बोली—काँय-काँय क्यों करती है ?

भिम्मलमामा साष्टांग दण्डवत कर धरती पर लेट गये, औरतों की टोलियों के सामने वाले बारामदे पर। हाथ जोड़े उठ खड़े हुए—हे देवियो ! दुर्गाओ ! कालियो ! करालियो। कराँतियो ! शान्तियो, कृपया शान्त हों !

—हि-हि-हि ! हा-हा-हा-हा !! दुर्, भिम्मलमामा तो हर जगह भगल पसारते हैं। अटर-पटर बोलते हैं। चुप चुप, नहीं तो ऐसा नाम चुनकर रख देंगे कि गाँव में मशहूर हो जाओगी। किसी को नहीं छोड़ेंगे, किसी भी टोले का क्यों न हो। चुप मलारी ! सेमियाँ !

—सुनो, शुरू हो गया। चुप। फिलिंग···!

'रातभर खोदते रहे दन्ता सर्दार के राकस ! कोड़ भैर्रा-र्रा-आ ह !

'भोर में नाचती आयी सुन्दरि नैका। देखा, एक कुंड-पानी से लाबेलाब है। कुंड के पानी में पूरनिमाँ का चाँद, सोने-चाँदी को एक साथ घोलने के लिए रुक गया थोड़ी देर—उस ताड़ की फुनगी के पास ! नाची सुन्दरि नैका—छम्म-छम्माँ-आँ ! रात भर के थके राकसों को मानो महुए के रस में मधु घोल कर पिला दिया गया ! झूम उठे—छम्म-छम्माँ !

करिके सोलहो सिंगार
गले मोतियन के हार
केशिया धरती लोटाय
चुनरी मोती बरसाय
चुन्नी-पन्नाँ बिखराय-य, छम्म-छम्माँ नाचे सुन्दरि नैका !
आँख मारे !···रे भैर्रा-आ-ह-दाँत मा रो-ओ !

'कुलबुला कर पानी के सोते परती पर दौड़े—कलकल-कलकल ! कुलकुल-कुलकुल !!···सारंगी पर एक महीन कारीगरी की रघू रामायनी ने, पानी की कुलबुलाहट को स्वर मिला। झनक तार पर लहरें आईं !

'कि देस-विदेस के किसिम-किसिम के, रंग-विरंग के पुरइन सूरज की किरनों

के परस से खिल उठे। कुंड में सोने की मछलियाँ छहकने लगीं। जल बिनु तड़पते लोगों ने कुंड में नहा-नहा कर जलपान किया। तृप्त होकर आशीर्वाद दिया जैवार भर के पंचों ने—तोहर सब दोख माफ। देवकुमर दुलहा मिले सुन्दरि नैका को!

···रब्बू रामायनी की सारंगी स्पष्ट आखर बोलती है! राकसों का गीत गाते समय उसके चेहरे की ओर गौर से देखा था? लगता था, उसके पोपले मुँह में दो बड़े-बड़े दाँत उग आये हैं! अधींग से अधमरी उँगलियों की कारीगरी! 'दाँत मार रे' कहने के बाद खच्चाक्, फिर खट् की आवाज? सारंगी के काठ पर उँगली मार कर ध्वनि पैदा करता था।···पातालपुरी में कच्छप महराज की पीठ पर दाँत बजते—खट्! सारंगी के तारों पर नौ सौ घुँघरू झनकते थे—सुन्दरि नैका के नाच के साथ!!

—दाँत मारे? उसकी याद मत दिलावे कोई। देह सिहर उठती है।

—भोर में फेर देखिबो सुन्नरि कन्ना! राकसों को भी सुन्दर चीज सुन्दर ही लगती है। अहा-हा! कितनी लालसा? मानुसछोरी सुन्नरि कन्ना उनकी सर्दारिन होकर जायँगी!

—एम्माँ-आँ-आँ! तूत गाछ तले कौन खड़ा है?

—तू हमेशा ढंग पसारती है मलारी। अपने भी डरती है, दूसरों को भी डराती है। कहाँ है कोई?

—मलारी को भी कोई दन्ता राकस लुका-चोरी खेलने के लिये बुला रहा है, शायद!

—अब, कल से तुम भी पाँच कुंडा खोदाओ मलारी!

सेविया दीदी जब बोलती है तो साफ बात—यह मलारी छौंड़ी जहाँ जायगी वहाँ आगे-पीछे ऐसे ही भूत-पिशाच, देव-दानव चक्कर मारेंगे। तूत तले तो सचमुच कोई है!

—मुझे क्यों दोख देती है सेवियादी। मैं खुद डर से मरी जा रही हूँ। देखो न…।

तूत तले खड़े व्यक्ति ने टार्च जलाया।

—ए ! कौन भलामानुस है ? छौंड़ी सब की आँख पर लैट मार कर चक-चौंधी लगाता है ?

एक लड़की ने दबी आवाज में कहा—जरूर बाबू टोली का कोई कलेजवा बाबू होगा।

—मामा ने ठीक नाम रखा है, कलेजवा बाबू !

तूत तले खड़ा आदमी बोला—इस झुंड में मलारी भी है ?

—वही देखो !

—कौन है ? मलारी बोली।…आवाज सुवंश की तो नहीं !

—मैं प्रेमकुमार दीवाना ! बात यह है कि…।

—जो बात है सो दिन में नहीं हो सकती ?

—तुम भी…याने पढ़ी लिखी होकर भी तुम थर्डक्लास गीत, महराय सुनने जाती हो !

—अकेले मैं ही पढ़ी-लिखी हूँ गाँव में ? आप लोगों के मारे अब…।

सेविया दीदी ने कहा—क्या कहता है सो सुन ले पहले। रात में रास्ता रोक के जब कहने आया है तो जरूर कोई जरूरी बात होगी।

मलारी हनहनाती हुई, पगडंडी पर बढ़ गई—कल ही मैं इन्साफ करवाती हूँ, पाँच पञ्च में। क्या समझ लिया है लोगों ने ?

दो कदम आगे बढ़कर, बगीचे से बाहर जाकर मलारी ने आवाज दी—

—बप्पा-आ-आ-हो !…बप्पा !

सभी औरतें खिलखिला कर हँस पड़ीं—प्रेम कुमार दीवाना तो तुरत अँधेरेमें बिला गया।—ही-ही ही ! हा-हा-हा ! नाम भी खूब रखा है अपना—

परती : परिकथा—१९८

—परेमकु-मार दीमाना !

—ए, मलारी-ई, घोड़पाड़ा भागा। चुप रह।

—मंगनी सिंघ दीमाना रात भर सपना देखेगा—आँख मारे !

सुरपति की डायरी में कई पृष्ठों पर लाल रोशनाई से लिखी हुई पंक्तियाँ :

—*आज परानपुर की पुरानी परती पर डेढ़ सौ पौधे, रोपे गये पहली* वार !···अमलतास, जोजनगंधा, गुलमुहर, छोटानागपुर ग्लोरी, सेमल, आसन। तरह-तरह के पौधे !

एक पृष्ट पर कटी हुई पंक्तियाँ : आज पहली बार ताजमनीदि से बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !

लिखा गया है : पवित्र सुन्दरता की प्रतिमा का मधुर मायामय स्वर सुना ! अन्तिम पृष्ट पर रघ्घू रामायनी और सुन्दरि नैका गीत-कथा से सम्बन्धित बातें।···ताजमनीदि को कितना धन्यवाद दूँ बहुमूल्य प्राप्ति के लिए ?

लुत्तो हैरान है !···

···साला, क्या कहते हैं कि छोटे लोगों की बुद्धि भी छोटी। उस दिन महावीरजी का धुजा छूकर कसम खाई सबने। और, रघ्घू बूढ़े ने सारंगी पर रिंव-रिंव-रें-रें किया कि सब जाकर हाजिर हो गये, बालबच्चा सहित ! लुत्तो ने लक्ष्य किया है, जित्तन को एकबार नजदीक से देख लेने के बाद लोगों को न जाने क्या हो जाता है। आज सुबह से ही वह गाँव में घूम-घूम कर सुन आया है—चुपचाप।···अहा-हा, टूअर हो गए हैं जित्तन बाबू।

खबरदार ! मैं कहाँ जाता हूँ, नहीं जाता हूँ, क्या करता हूँ, यह सब पूछना है तो सीधे नैहर का रास्ता नापो।···तुम्हारे मगज में भगवान ने उतनी बुद्धि नहीं दी है। हाँ-हाँ, चली जाओ। बड़ा नैहर का गुमान दिखाती है, तो चली जा। लेकिन, याद रखो। यदि किसी दिन हम मिनिस्टर हुए, और भाई-बापको लेकर कभी आओगी तो हमारा चपरासी तुमको अन्दर आने ही नहीं देगा !

बिठैलीवाली डर से चुप हो गई।

लुत्तो को अब किसी पर विश्वास नहीं।···वीरभद्दर भी सुथनी आदमी है ! किसी से कुछ नहीं होगा। लुत्तो अकेला ही सब कुछ करेगा। ग्राम-पंचायत का चुनाव सामने है। यदि यही हालत रही तो जित्तन मुखिया हो जायगा, दिन-दिखाड़े। नहीं, इस तरह काम नहीं चलेगा।···

—जै हिन्द।

—कौन ? बालगोबिन ! आओ। मैं अभी तुम्हारे घर की ओर जा रहा था। ···क्या लीडरी करते हो जी ? अपनी जाति की औरतों पर भी तुम्हारा कोई परभाव नहीं। कोई परवाह ही नहीं करती है ? कोई भैल्यू नहीं तुम्हारा ? एक साथ परभाव, परवाह और भैल्यू वाली बात ने बालगोबिन के मुँह का थूक सुखा दिया। मुँह चटपटाकर वह बोला—सब टोले का यही हाल है।

—लेकिन, तुम्हारे टोल की मलारी तो जित्तन पर फिदा है। जित्तन पर ही क्यों, बाभन, रजपूत और भूमिहार टोली के लड़कों से जाकर पूछो ! सबको लेटर पर लेटर लिखती है। उसको सँभालो पहले। प्रेमकुमार दीवाना जी से पूछो जरा···।

बालगोबिन को लुत्तो की बात बुरी लगती है। कोई भी बात हो, औरतों पर बात फेंक देता है। पहले अपने टोले की लड़कियों को छान-पगहा लगावे। बालगोबिन बोला—उसके बाप को कहिये।

—तब, कर चुके तुम लीडरी। बाप की बात बड़ी या लीडर की ? बोलो ? जवाब दो, किसकी बात का ज्यादे पोजीशन है ? इसीलिए जब कुछ कहते

—हरगिज नहीं।

—तुम देख लेना ! रात में ही तो देखा, रघू बूढ़े की सारंगी की बोली पर लोग इस तरह टूटे मानो परसाद बँट रहा है। दुश्मनी साधने के लिये आदमी सब कुछ कर सकता है। यदि वह थाना में पकड़ कर चालान कर देता कि चोरी या डकैती किया है, तब मालूम होता गीत सुनने का मजा !

—रघू बूढ़े को बैकाट किया जाय पहले ! एक सोलकन्ह लीडर ने उत्तेजित होकर कहा—सोलकन्ह होकर वह हमारी बन्दिश से बाहर कैसे जा सकता है? लुत्तो अपनी मिटिंग में किसी दूसरे को बोलने का मौका नहीं देना चाहता, कभी। लेकिन, गरुड़धुज झा को उसने कहा—और जो कुछ बोलना है, बोल लीजिये आप पहले।

—बोलना क्या है? आज फिर देख लेना। दो घंटे के बाद ही। ज्यों ही सारंगी कुँकवाई कि···।

—हरगिज नहीं। हरगिज नहीं !! लुत्तो ताव में आ गया—झाजी ! देख लीजियेगा आप भी आज रात, बीच चौबटिया पर खड़ा होकर। एक चेंगड़ा भी नहीं जायगा। लुत्तो ने अपनी सोलकन्ह समिति के सदस्यों की ओर मुड़ कर कहा—क्यों जी ? बोलते क्यों नहीं तुम लोग ?···जायगा एक चेंगड़ा भी ?

समिति में सन्नाटा छा गया। तब, लुत्तो ने फिर समझाना शुरू किया—सर्वे के समय इस संगठन का मीठा फल हम चख चुके हैं और चखनेवाले हैं। इस संगठन में जिन लोगों ने थोड़ा भी लामकाफ किया, कांग्रेस छोड़ कर सोसलिस्ट में गये, मिली जमीन उन्हें ? देखा ?

बालगोबिन ने कहा—जरा हमको फुर्सत दीजिये सभी पंच। हमारे टोले में न जाने क्यों बड़ा जोरावर झगड़ा शुरू हुआ है। सुनिये···।

सभी ने कान लगाकर सुना—हाँ। रैदास टोली में ही है यह झगड़ा !

—मलारी की आवाज है !

दीवाना ने कहा—लड़की बर्बाद हो गई। थी खूब चान्सवाली, लेकिन !

बालगोबिन की स्त्री, मलारी के पड़ोस की सुखनी मौसी के यहाँ कड़ाही माँगने गई—सुन्नरि नैका सुनने के लिये जाती हो क्या ? अब तो अपने टोले में ही सुन्नरि नैका की लीला होगी। देखना।

बालगोबिन की स्त्री से चमार टोली की सभी औरतें डरती हैं। बिना गंदी बात निकाले वह कुछ बोल ही नहीं सकती। सुखनी मौसी बोली—लीला कहाँ होगी, तुम्हारे मचान के पास ?

—मेरे मचान के पास क्यों ! तुम्हारे पड़ोस में ही होगी लीला। तुमको नहीं मालूम ? अरे ! बगल में ही चुह-चुह कर हिन्नूचागरमागरम पीते हैं लोग। तुमको एक भी कुल्फी नहीं मिली क्या ?

सुखनी मौसी ने कुछ नहीं समझा। बालगोबिन की स्त्री अभी-अभी कामेसर की दुकान गई थी, नून लाने के लिये। दुकान में गरमागरम चाह की बात चल रही थी,…गरमागरम !

मलारी ने बालगोबिन की स्त्री की धारवाली बोली को परख लिया। वह मन-ही-मन कछमछा कर रह गई। मलारी की माँ अब कैसे चुप रहे ? सुखनी मौसी के बगल में, पड़ोस में तो उसी की झोपड़ी है !—बगल में कौन चाह की दुकान है, यहाँ ? क्या बकती है ?

कड़ाही लेकर सुखनी मौसी के आँगन से निकलती हुई बोली बालगोबिन की बहू—खाली चाह नहीं, हिन्नूचागरमागरम !

मलारी की माँ को बालगोबिन की बहू की बात में मांस की गन्ध लगी, मानो। इस टोली में वही सबसे गई गुजरी है, क्या ? उसकी बेटी को कल ही पचास रुपये मिले हैं, मुसहरा के। बालगोबिन को जब कोई कांगरेसी बात समझ में नहीं आती है तो वह भी दौड़ कर मलारी के पास आता है—कागज पढ़वाने। और उसकी बहू कमर में साड़ी लपेट कर झगड़ा का बहाना ढूँढ़ती है ? आँगन से निकल कर बोली मलारी की माँ—ए !

बालगोबिन नहीं है घर में क्या ?

—नहीं है घर में। मिटिन में गया है। बालगोबिन की स्त्री अपनी झोपड़ी की ओर जाती हुई बोली—मैं बकती हूँ तो अपनी मास्टरनी बेटी से कहो न, हाथ में बेंत लेकर आयगी मारने।···अब तो शहर की हवा खा आई है।

मलारी की माँ के समझ में नहीं आई बात। बात की छोर पकड़ने के लिये उसने मलारी से कहा—क्या है री मलरिया ? क्या कहती है बालगोबिन की बहू, जरा बूझ तो ! मलारी इङ्गलिश-टीचर खोलकर 'वह मेमना मेरा है' रट रही थी। बोली—मैया ! उस दिन मैं एक ट्रेन से शहर अररिया-कोठ गई थी। जीवन बीमा करवाई हूँ न ! सुवंश बाबू बीमा कम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोठ अस्पताल की डाक्टरनी से जाँच करवा कर तब जीवन बीमा होगा। इसलिए······।

मलारी की माँ ने पूछा—किसके साथ गई थी ?

मलारी का बाप महीचन दारू पीकर लौटा—साला ! कलाली में हिन्नू चा गरमागरम सुनते-सुनते मिजाज गरम हो गया। कहाँ, मलारी की माँ ? कहाँ है मलारी ?

मलारी का मुँह पीला पड़ गया ! अब, तीन दिन वह क्या पढ़ाने जा सकेगी ? हल्दी और चूना गरम करके तैयार रखे। मलारी थर-थर काँपने लगी !···बप्पाका हाथ तो ढोल बजाया हुआ हाथ है।

मलारी की माँ, तब तक एक चाँटा जड़ चुकी थी मलारी के गाल पर—मैं बूढ़ी हो गई, लेकिन आज तक टीशन के बाजार पर भी बिना किसी को संग लिये नहीं गई। और तू मास्टरनी होते ही उड़ने लगी ?···बाप को जवाब दो जाकर !

—कहाँ रमदेवा ? कहाँ है तुम्हारी माँ ? बुलाओ सभी को। इधर चोट पर लाओ, अभी।

मलारी की माँ को हठात् अपनी बेटी पर दया उमड़ आई, गला दाब कर बोली—बोल, अब क्या जवाब दोगी बाप को ?

—क्या कहते हो मलारी की माँ को ? क्या हुआ ?

—झोपड़ी के अन्दर से पूछती है कि क्या हुआ ? बाहर निकल जरा, दोनों को अभी हिन्नूचा पिलाता हूँ, गरमागरम।

मलारी की माँ झोपड़ीसे बाहर निकल कर बोली—तुम बड़ा अबूझ हो। बे-बात की बात···।

—बे-बात की बात ? लगाऊँगा अभी ऐसा लात कि··· !

—धीरे-धीरे बोल नहीं सकते ?

—क्यों गई थी अररिया कोठ ? पूछ, अपनी बेटी से। किसके हुकुम से गई थी ? किसके साथ गई थी, पूछ !

—सरकारी काम से गई थी। सरकारी नौकरी करती है, सरकारी हुकुम नहीं मानेगी ? गाँव के लोगों का कलेजा जलता है। बे-बात की बात नहीं बोलेंगे, तो कलेजा ठंढा कैसे होगा ?

बालगोबिन अरजन्टी मिटिंग छोड़ कर दौड़ा आया है—क्या है महीचन ? मलारी की माँ ! तुम लोगों के चलते मेरी मेम्बरी मारी जायगी, देखता हूँ।

महीचन ने, नशे में मलारी की माँ की आँख के इशारे का कोई मतलब नहीं समझा। मलारी की माँ चुप रहने को कह रही थी। लेकिन, महीचन ने चिल्लाना शुरू किया—ए ! बालगोबिन। बड़ा जात का लीडर बने हो ! दूसरी जात के लोग इज्जत खराब कर रहे हैं···।

—दूसरी जाति के लोगों को दोख मत दो ! बालगोबिन आज साफ-साफ कह देगा—कहाँ है मलारी ? सामने आकर सवाल का जवाब दो !

टोले के लोग महीचन के आँगन में आकर जमा होने लगे। बजाता पंचा-यत बैठ गई तुरत।···हाँ, हाँ। मार पीट, हल्ला-गुल्ला नहीं। जब मलारी

अपने माँ-बाप के कस-कब्जा में नहीं, तो जात की पंचायत को अब सोचना चाहिये उसके बारे में! महीचन बेचारे का क्या दोस ? उसने तो साफ कह दिया कि उसकी बेटी अब उसकी बात में नहीं ! पंचायत का सर्दार झल्लू मोची है। लेकिन वह क्या बोले, बालगोबिन के सामने ? उसने बालगोबिन पर बात फेंक दी, कंगरेसी झमेला है, यह तुम्हीं बूझो। बालगोबिन ने एक ही साथ कई सवाल किया—पहला सवाल यह है कि मलारी क्यों गई अररिया कोठ, अकेली ? दूसरी बात, गई तो गई––सुवंशलाल के साथ क्यों गई ? हिन्नूचागरमागरम क्यों पी ? दो जवाब !

मलारी की माँ ने अपनी बेटी की ओर देखा। मलारी बहुत देर से चुपचाप खड़ी, लोगों की बात सुन रही थी। ओसारे से नीचे, आँगन में गयी। पंचायत के सामने खड़ी हो गयी। क्यों डरे वह ?––मैंने जीवन बीमा करवाया है। सुवंशबाबू बीमाकम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोटकी डाक्टरनी के यहाँ तंदुरुस्ती की जाँच कराने गयी थी। सुवंशबाबू ने मेरा जीवन बीमा किया है···।

—क्या-क्या बोल रही है, तुम्हीं बूझो बालगोबिन। जीबन बीमा की तंदुरसती क्या है ?

—हाँ-हाँ। पहले बोलने दो क्या-क्या जवाब देती है।

—सुनोगे और क्या ? हम लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं तो क्या एकदम जानवर हैं ? इतनी-सी बात नहीं बूझेंगे ? साफ-साफ कह रही है कि सुबंसलाल ने उसका बीमा उठा लिया है जैसे तजमनियाँ का बीमा जित्तन···।

—चुप रहो ! सभी कोई लीडरी मत करो। सवाल उससे किया है, जवाब देते हो तुम लोग।···अच्छी बात। तुमने सुवंशलाल को जिनगी का बीमा क्यों दिया ? इस बात का जवाब दो।

—पहले, अपने सभापति से जाकर जीवन बीमा का मतलब समझ आओ। सुवंशलाल ने गाँव में बहुत लोगों का बीमा किया है। स्कूल की सभी मास्ट-

रनी ने जीवन बीमा करवाया है। मलारी ने झिड़की दी।

बालगोबिन के कान लाल हो गए—सुनते हो जी महीचन ? पंच लोग ! सुन रहे हो न सब ? औरत-मर्द-बाल-बच्चे सभी हैं। कैसी बोली बोल रही है मलारी ?

—क्या बोल रही हूँ। जीवन बीमा…।

—रखो, जीवन बीमा ! हमको भी मालूम है कि जीवन बीमा क्या होता है। जब हर जात के अलग-अलग लीडर होते हैं तो अपनी जाति का एजंट भी कहीं न कहीं होगा, जरूर !…परजात से जीवन बीमा करवाई है और बढ़ बढ़ कर बोलती है ?

—और, एक सवाल का जवाब तो दिया ही नहीं। हिन्नूचागरमागरम वाला सवाल ? एक नौजवान चमार ने कहा।

मलारी बोली—चाय तो दारू नहीं ?

बालगोबिन ने कहा— चाह पीने में कोई हरज नहीं है। मगर, सुवंशलाल ने इसके हाथ का छूआ चाय क्यों पिया ! सवाल यह है !

—सुवंशबाबू जात-धरम नहीं मानते। गाँव में बहुत-से लोग हैं जो छूआ-छूत नहीं मानते।

—साफ-साफ क्यों नहीं कहती कि चिकनी-चुरमुनी चमारिन छौंड़ी के हाथ का छुआ खाने को सभी ललचते हैं। बालगोबिन की स्त्री की बात कभी भोथरी नहीं निकलती ! औरतों ने अपनी मंडली में टीका-टिपकारी शुरू की तो मलारी की माँ से चुप नहीं रहा गया। बोली—जात-धरम की बात पीछे करना। पहले यह फैसला करो कि मलारी सरकारी नौकरी करे या नहीं ? जात से फाजिल पढ़ कर हमारी बेटी ने मास्टरी पास किया है। परजात वालों की छाती जलती है। तरह-तरह की बात उड़ावेंगे वे।

—और दीवाना जी ने रात में रास्ता रोक कर दिल्लगी किया है। सो भी सरकारी दिल्लगी है क्या ? बालगोबिन ने दाँत कटकटा कर बात गड़ाई।

—लुत्तो बाबू कह रहे थे कि लेटरबक्स में सबके नाम चिट्ठी डालती है। ऐसे में सरकारी नौकरी नहीं रहेगी, सो जान लो ! हाँ !

जातिवालों ने एक स्वर से कहा—मलारी की माँ जोर बात बोलती है।

मलारी की माँ अब सचमुच में जोर-जोर से बोलने लगी—मेरी बेटी पर अकलंग लगाने के पहले अपना-अपना मुँह देख लो। क्योंकि, बात जब उकट रहे हो तो मैं भी जानती हूँ उकटना !···पहले बालगोबिन यह जवाब दे कि जब बालगोबिन घर में नहीं रहता है तो लुत्तो आकर उसके आँगन में, कभी झोपड़ी के अन्दर, घंटा-पर-घंटा क्यों बैठा रहता है ? उस समय जब कोई उसके आँगन में जाता है तो उसकी बहू क्यों झगड़ा करने पर उतारू हो जाती है ? और···।

—ए, ए ! मलारी की माँ ! चुप रहो। चुप रहती है या लगाऊँ लात ?

महीचन ने नशे में झूमते हुए कहा—कहाँ रमदेवा ?

···कुँहुँ-ऊँ ! हवेली की ओर से सारंगी की आवाज आई ! मलारी का ध्यान भंग हुआ। वह झोपड़ी के अन्दर जाने लगी। बालगोबिन ने मलारी को रोका—सुन लो मलारी ! सभी औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे—सुन लें। आज हवेली में नैका की कथा सुनने कोई नहीं जायगा। सुन लो। मिटिंग में पास हुआ है, अभी !

मलारी झोपड़ी के अन्दर चली गई। मिटिंग में पास हुई बात सुनकर सभी सोच में पड़ गये।···यह क्यों पास हुआ रे दैव ? बालगोबिन ने समझाने के लिए भूमिका तैयार की। मलारी झोपड़ी से निकली—हाथ में डंटा लेकर। उसने साड़ी के खूँट को कमर में बाँध लिया था। बाहर आकर बोली—गाँव में अठारह पार्टी है और रोज अठारह किसिम का प्रस्ताव पास होता है। हमारे स्कूल में भी प्रस्ताव पास हुआ है। आज हेडमिस्ट्रेस ने नोटिस दिया है, गर्ल गाइड की लड़कियाँ, रात में हवेली में तैनात रहेंगी। मैं कैसे न जाऊँ ? वही सुनो, सीटी बजा रही है। मेरी ड्युटी है !

—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !

मलारी ने कमर में खोंसी सीटी निकाल कर जवाब दिया—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !!

रैदास टोली के नर-नारियों ने हाथ में लाठी लेकर सीटी फूँकते देखा मलारी को तो उन्हें दुलारीदाय की याद आ गई।···चेहरे की तमतमाहट देखते हो ? मुँह कैसा बदल गया !

मलारी ने आँगन से निकलने के पहले कहा—रात में गाँव के कुछ बाबुओं ने हर टोले में कुछ हरकत की है। आज गर्लगाइड की ड्यूटी रहेगी। न झगड़ा, न हल्ला-गुल्ला और न रास्ते में भूत का डर ! बालगोबिन अवाक होकर देखता रहा ! उसकी स्त्री ने उठते हुए कहा—सीट्टीबाजी सुन लिया न, सबने अपने-अपने कान से ?···मैं कहती थी न, कोई सीटी बजाता है रोज।···जौवन बीमावाली जो-जो न सुनावे !

मलारी की मा अपनी बेटी को अकेले कैसे जाने देगी ? वह भी चल देती है।

'···ओ-ओ-ओ-मानुस छोरी मोहनियाँ-आँ-आँ पीरीतियो जनि तोड़े-ए-ए ! रघू रामायनी के गीत की कड़ी मड़राने लगी। टूटी, अधूरी, पूरी कड़ी—···मोहनियाँ ! पीरीतियो···!!

बालगोबिन ने देखा, उसकी बहू भी जाने को तैयार है। कह रही है, जो कानून पास होगा, सभी के लिये। नहीं तो, किसी के लिये भी नहीं। दो जनि जा रही हैं तो हम लोग क्यों नहीं जायँ !

बालगोबिन ने कहा—इस तरह सीट्टीबाजी करने से नौकरी नहीं रहेगी। सुन लो महीचन ! गाँव की बंदिश, जाति की बंदिश पहले तुम्हारे घर से ही टूट रही है।···महीचन का कुत्ता अचानक भूँकने लगता है।

रात में सोलकन्ह टोले की हर टोली में, सीटी की आवाज सुनकर ड्युटी पर दौड़ने वाली लड़कियों ने जाति की बन्दिश को तोड़ा ! केयट टोली, गंगोला

परती : परिकथा—२१०

टोली और खवास टोली की लड़कियों का नाम दर्ज कर लिया है, लुत्तो ने! लुत्तो गर्ल स्कूल की मास्टरनियों को भी राजनैतिक लगी लगायगा क्या ?

छित्तन बाबू के गुहाल में कभी इतना मवेशी भी नहीं जमा हुआ होगा। आज सर्वे कचहरी में ज्यादा भीड़ है। दुलारीदाय जमावाली नत्थी में जित्तन बाबू बयान देने आ रहे हैं। तीन कुंड का दावेदार समसुद्दीन मियाँ खरै-हिया के जमील बाबू मुख्तार से मिसिल बनवा कर ले आया है। दो कुंड पर केयट टोली के सुचितलाल ने दावा किया है। नकबजना सूचितलाल! ...सारे परानपुर में पाँच सुचितलाल हैं। केयट टोली का नकबजना सुचितलाल अपने को सौ कानूनची का एक कानूनची समझता है। लल्लू बाबू या अनिल बाबू वकीलों से क्या पूछने जायगा, वह। उसने जिरह करने के लिये ऐसा-ऐसा चुनिन्दा सवाल—सँमझें! ऐंसाँ चुनिन्दाँ जिरँह।

आज कचहरी की भीड़ में रह-रह कर सुचितलाल की पतली आवाज कूक उठती है। पान की दुकान पर, चाय वाले के मचान पर—हर जगह, हर किस्म के लोगों से सुचित लाल अपनी कानूनी बुद्धि की बात सुनाता है—अँभीं देंख लींजियेंगाँ!

—आ गया! जैंटुलमैन साहब आ गया। गरुड़धुज झा ने चाय की दुकान पर बैठे लोगों की ओर देखकर कहा—आज तो जमीन वालों से तमाशबीनों की ही जमात बड़ी है!

रोशन बिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटते हुए कहा—देखो-देखो लुत्तो। गिर-गिट को! कचहरी में एकदम सुदेशी डिजैन में आया है, धोती, कुर्ता,

चादर पहन-ओढ़कर।

लुत्तो ने कहा—टहलने के समय जो ट्रेटमार्क पोशाक पहन कर निकलता है, उसमें आता तो आज कचहरीमें मजा आ जाता !

पेड़ों के नीचे बैठे लोग उठकर कचहरी घर की ओर जाने लगे—जित्तन बाबू आ गये ! मीर समसुद्दीन और सुचितलाल ने माचिश की एक ही काठी में बीड़ी सुलगा कर बारी-बारी से धुँआँ फेका—सुचितलाल मड़र ! पेशकार को पान-सुपाड़ी खाने के लिये कुछ देकर, पहले तुम अपनी नत्थी ही ऊपर करवाओ।

सुचितलाल पुराना कचहरिया नहीं, लेकिन पुराने मुकदमाबाजों और मामलतगीरों के साथ वह रह चुका है। उसकी बोली महीन है तो क्या हुआ ? गरुड़धुज झा भी तो लम्बा है। रोशन बिस्वाँ काला है। सुचितलाल आज कचहरी में तमाशा लगा देगा। देखने-सुननेवाले भी याद रखेंगे कि गाँव में कभी सर्वे की कचहरी लगी थी। उसने इशारे से मीर समसुद्दीन को कहा—वह काम हो चुका है। पतली आवाज को मद्धिम करने पर भी उसकी बोली गनगनाई—तँमाँशाँ लँगाँ दंगं। जराँ फुँकाँर तों होंने दींजियें।

गरुड़धुज झा ने हँसते हुए दूर से बात फेंकी—अरे सुचितलाल मड़र, भोज में कुंड की मछली एक मन ऊपर करवाओगे तो ?

—अँकबाँल आँप लोंगों कां। साँलाँ एँक मँन क्याँ, एँकदँम फिंरिं-ईं-इं। जितनी मंछलीं चाहें···।

—कहाँ-आ-आ-रूदल साह बनियाँ-आँ-आँ ! रूदल साह बनियाँ, हा-जि-र-हैय !

—हाजिर है, हाजिर है। जरा सबुर करिये, लघुसंका करने गया है।

—कहाँ सुचितलाल मड़र दावेदार, जितेन्दरनाथ···।

वटवृक्ष के नीचे, पीपल के पेड़ोंके पास जमी हुई चौकड़ियाँ टूटीं। लोग बिखरे। कचहरी घर की ओर चले।

आज हाकिम का रुख एकदम बदला हुआ है !

—चपरासी ! बेकार लोगों को अन्दर से निकालो। मछलीहट्टा बना देता है। हाकिम साहब का दम घुट रहा है, मानो। रह-रह कर जित्तन बाबू की ओर नजर फेंक कर देख लेते हैं, हाकिम साहब।

पेशकार साहब कागज पर लिखते हुए पूछ रहे हैं—नाम? बाप का नाम ? उम्र ?

कचहरी-घर शान्त है।

छुत्तो फिसफिसा कर समसुद्दीन के कान में कुछ कह रहा है। भिम्मल मामा चुपचाप खड़े हैं। मुन्शी जलधारीलाल दास, बस्ता के कागजों को निकाल कर छाँट रहा है। जित्तन बाबू के ओठों पर फैली मुस्कुराहट न घटती है, न बढ़ती है। हाकिम साहब बार-बार नजर फेंक कर देख लेते हैं, जितेन्द्रनाथ मिश्र को।...इस आदमी को कहीं देखा है ?

कहाँ ?...कहीं देखा जरूर है। ओ ? प्रोफेसर हालदार के बँगले पर। पटने में।...ठीक !

हाकिम ने मामलेकी सुनवाई शुरू की—दुलारीदाय के पाँच जलकरों में से तीन पर मीर समसुद्दीन का दावा है। और बाकी दो पर ?

—हँजूर-मेंराँ-आँ आँ ! सुचितलाल की बोली कचहरी-घर में गनगना उठी।

—क्या नाम है तुम्हारा ?

—हँजूँर, बाँबूँ सुँचित्तँर लाँल मँड़ँर ! पँसँर बाँबूँ बिँ चित्तँर...।

लगता है, सुचितलाल की बोली कण्ठ के बदले नाक से निकल रही है। बबुआन टोली के लड़के जापानी-पोंपी कहते हैं उसको। अमीन साहब ने पर्चे पर लिखा है—सुचितलाल मड़र। ब्रेकेट में—पोंपी।...पाँच-सात सुचित लाल हैं गाँव में।

—तुम्हारा एक नाम पोंपी भी है ? हाकिम ने पूछा।

—जी ँ नँहीं !···हँजूँर उँसमें पोंपी लिंखाँ हुआँ हैं ? एं ?

भीड़ में से किसी ने कहा—अब क्या ? अब तो नाम सर्वे के पाँच-पाँच रेकट में दर्ज हो गया। अब तो पोंपी ही···।

हाकिम ने जित्तन बाबू से पूछा—पाँचो जलकरों के मामले को एक साथ टेक अप करें ?

जित्तन बाबू ने गर्दन हिला कर सम्मति दी !

सुचितलाल मड़र को भारी धक्का लगा है।···पोंपी नाम सर्वेके रिकार्ट में चढ़ गया ? जरूर यह काम मुन्शी जलधारी ने करवाया है। सुचितलाल बार-बार जलधारीलाल दास को देखता है। जलधारीलाल दास की मुस्कुराहट ? निर्विकार मुस्कुराहट ! जिसका अर्थ सुचितलाल ने ठीक लगाया—कलम की मार है, पोंपी !···लुत्तो के कान में मीर समसुद्दीन कहता है—लुत्तो बाबू ! मामला बड़ा गड़बड़ लौक रहा है। हाकिम इतना मोलायमियत से क्यों बतिया रहे हैं जित्तन से ?

—आपका बयान !···लिखकर दीजियेगा ?

—नहीं महोदय ! मुझे विशेष कुछ नहीं अर्ज करना है।

जितेन्द्रनाथने बयान शुरू किया—दुलारीदाय के पाँचों कुंडोंके अलग-अलग कागज हैं।···पहले, बाबू सुचितलाल मड़र ने जिन कुंडों पर तनाजा दिया है, मैं उन्हीं के बारे में बताऊँ। राज पारबंगा के मालिक ने किसी यज्ञ के उपलक्ष में मेरे पितामह को दान में दिया था। इन दोनों कुंडों में, मेरे पितामह ने लगातार दो महीने तक सहस्रों कमल की पँखुड़ियों पर रक्त-चन्दन से नवग्रह शान्ति यन्त्र लिखकर प्रवाहित किया था ! महाराजा पारबंगा ने दक्षिणा में दोनों कुंड दे दिया। कागज पेश कर दिया गया है। और मेरे पिता ने इन दोनों कुंडों का पट्टा कबूलियत मोसम्मात राजमनी के नाम बना दिया। इन दोनों कुंडों की मालकिन मोसम्मात

परती : परिकथा—२१४

राजमनी की बेटी ताजमनी है।

—हँजूँर। हँमाँरी अँरजीं सुँनियें। सँब खिलाँफ बाँत!

जित्तन बाबू रुक गए। हाकिम ने सुचितलाल मड़र को समझाया—देखोजी, सुचितलाल मड़र! आज की तारीख सिर्फ जितेन्द्रनाथ के बयान के लिये रखी गयी है। तुम लोगों को जो कहना था, लिख कर दे चुके हो। बयान भी हो चुके हैं। फिर···

—हुँजूँर। एँक जिँरह कँरने दींजिएँ। ···हँजूँर जिरह कँरने दियां जाँय। जित्तन बाबू ने कहा—बाबू सुचितलाल मड़र को जिरह करने का मौका दिया जाय।

—मैं पहले आपका बयान ले लूँगा, इसके बाद जिरह!

—हँजूँर। बँस ऐंक सँवाल शुँरू में···।

—पूछो, क्या पूछना है?

सुचितलाल मड़र ने कठघरे में खड़े जितेन्द्रनाथ की ओर मुखातिब होकर पूछा—ताँजमँनीं आँपकीं कौंन लँगतीं हैं—एँ?

—ताजमनी की माँ के नाम रैयती हक लिखा है, इसलिए उसकी बेटी हमारी रैयत···।

—रैंयत वाँलाँ-आँ रिश्ता नँहीं-ईं-ई।

···बड़ा कस कर पकड़ा है नकबजना सुचितलाल ने! मुँह पर हवाई उड़ने लगी जितेन्द्रनाथ की। वाह रे, सुचितलाल मड़र! एक ही सवाल में पोंपी बन्द कर दिया जित्तन का? लुत्तो और रोशन बिस्वाँ की मुस्कुराती हुई आँखें मिलीं। बिस्वाँ ने जीभ से बार-बार ओठ चाटे।

—वीरभद्र बाबू कचहरी नहीं आये हैं। नहीं तो, देखते आज!

हाकिम साहब कागजों में उलझे हैं—मुसम्मात राजमनी गंध-र गंधर्व?
—जी हाँ।

—मिसेस रोजउड आपकी सौतेली माँ थीं ?

—हाँ। श्रीमती गीता मिश्रा।

—नहीं हुजूर ! वह मेम, रखेलिन थी।

जितेन्द्रनाथ के मुखड़े पर मानो किसी ने अबीर मल दिया। आँखों के लाल डोरे स्पष्ट हो गये। किन्तु, मुस्कुराहट बनी रही ओठों पर ! हाकिम की ओर देख कर बोले—पेश किये गये कागजों में विवाह-पत्र भी है। दोनों के हस्ताक्षर से स्वीकृत दलील !···

हाकिम ने कल ही रख दी फैसले की तारीख।···सभी मुकदमों की आखिरी तारीख !!

आजकी सुबह का सूरज जरा देर करके उगा, शायद ! ···गाँव के लोग, तीन बजे रात से ही उठ कर प्रतीक्षा करते रहे। आज सर्वेकचहरी में फैसला सुनाया जायगा !

सुचितलाल के लड़के ने बहुत रोका। लेकिन, नाक की नोक पर आई छींक भला रुके—आँछी-ईं !

—बँड़ाँ हँड़ाशंख हैं सॉलां ! सुचितलाल ने अपने हड़ाशंख और अभागे लड़के की ठीक नाक पर थप्पड़ मारी ! लड़का चीख-चीख कर रोने लगा और सुचितलाल की घरवाली आँगन से दौड़ती आई—हाय रे दैव ! बेटा को तो मारकर बेदम कर दिया। हैत्तेरे हाथ में···मारने की और कोई जगह नहीं मिली देह में ? नाक में मार कर मेरे बेटे को भी नकबजना बनाना चाहता है !

बढ़ गया। साथ में रोशन बिस्वाँ भी है—टिड़िंग-टिड़िंग !

—यात्रा पर महाजन का मुँह देख लो। सब काम पक्का ! गरुड़धुज झा ने बात फेंकी।

बस, अब तीन चार दिनों का मेला है। सब चलाचली की बेला है। फारबिसगंज शहर से आये हुए चाय और पानवाले अपने नौकरों को हिदायत दे रहे हैं—बकाया हिसाब की बही सामने रख देना !···चाय माँगे तो पहले मेरी ओर देखना। कुछ लोगों की नियत अच्छी नहीं। रोशन बिस्वाँ को कल हिसाब देखने दिया तो गुम हो गया। फिर, बाद में बोला—गरुड़ झा से पूछेंगे। ···पैंतीस रुपैया पानी में गया समझो !

चपरासीजी आज जयहिन्द लेते-लेते परीशान हो गये हैं। पान खाते-खाते ओठ काले पड़ गये हैं। हाकिम के मन की बात थोड़ा चपरासी भी जानता होगा ! उसके मुँह पर ही लोग तारीफ कर रहे हैं—बड़ा भला आदमी हैं चपरासीजी। वैसे तो बहुत-से चपरासी आये। लेकिन, सुभाव ? इतना अच्छा किसी चपरासी का नहीं।···भला-बुरा तो हर जगह होता है।

पेशकार साहब निकले !

पेशकार साहब परानपुर के सभी टोलों के लोगों को पहचानते हैं, अलग-अलग, नाम बनाम। आदमी को चरा कर खाने का पेशा किया है। आदमी को नहीं पहचानेंगे पेशकार साहब। बरामदे पर खड़े लोगों को झिड़की देते हैं—भीड़ क्यों लगा रहे हो, अभी से ?

—तो, इसका मतलब हुआ कि हाकिम आज देर से कचहरी में आवेंगे। मुन्शी जलधारीलाल दास आज रेशमी कुर्ता पहन कर आया है ! रामपखारनसिंघ ने पुरानी पगड़ी पर नया रंग चढ़ाया है।

—अच्छा। और लोगों को जमीन मिलेगी। खुशी से नाचेंगे। नहीं मिलेगी तो रोयेंगे। लेकिन मुन्शीजी और सिंघको क्या मिलेगा ? तिसपर भी देखो,

खवास टोले के टेटन बूढ़े को क्या हो गया है ? लोगों की भीड़ के पास जाकर, बारी-बारी से सबको हाथ जोड़कर पाँवलागी कर रहा है। दो शब्द बोलते-बोलते आँखों से आँसू झरने लगते हैं। अजीब आदमी है, यह टेटन !

—ए ! टेटन। कहाँ से सुन आये तुम अपनी राय ? कचहरी तो अभी बैठी भी नहीं है। रो क्यों रहे हो ?

टेटन बूढ़ा आँसू पोंछ कर कहता है—यों ही। विचार हुआ कि सबसे हिल-मिल कर पाँवलागी कर लिया जाय। कहा-सुना माफ़…।

—तुम कोई तीरथ करने जा रहे हो ?

—नहीं। यों ही मन में हुआ कि जरा…।

लुत्तो कड़क कर कहता है—ऐ टेटन। सट्टप ! काहे रोते हो ?

इन्हीं लोगोंके चलते लुत्तो को खवास टोली में रहने का मन नहीं करता। जाकर, सभी जात के लोगों को पाँवलागी कर रहा था ? पागल !

टेटन का बेटा भेटन बोला, समझा कर—मत कहिये कुछ। जबसे हवेली से गीत सुनकर आया है, इसकी मतिगति एकदम बदल गई है।

—लो, मजा !

—जयदेव बाबू भी आये हैं। मकबूल भी ?

इस सर्वे में सोशलिस्ट पार्टी वाले मात खा गए।…प्रस्ताव पास कर दिया कि पाँच सौ एकड़ तक जमीन वाले किसानों की जमीन पर किसी किस्म का दावा नही किया जाय। गाँव में पाँच सौ एकड़ वाले किसान बबुआन टोली में भी इने-गिने ही हैं। सो, हलवाहा—चरवाहा भी बहुत मुश्किल से रख सके हैं, जयदेव बाबू। कुल पन्द्रह मेम्बरों में पाँच रामनिहोरा के साथ निकले या निकाले गये। बाकी दस मेम्बरों के घरवालों ने एक दूसरे मेम्बर की जमीन पर तनाज़े दिये हैं, दावे किये हैं।…पार्टी में घरेलू झगड़ा होने लगे तो हुआ ! जयदेव बाबू हमेशा खुश रहते हैं लेकिन।

—एमेले-टिकट के लिए लैनकिलियर हो गया जयदेव बाबू का। बेखटक टिकट मिल जायगा पार्टी का। रामनिहोराको निकाल कर निष्कंटक हो गए।

—कहाँ-आँ-आँ बरकत मियाँ! जितेन्दरनाथ मिसरा जमींदार हा-आ-आ-जिर है-य।

—लो, पहले मुसलमान टोली से ही शुरू किया?

—बिसमिल्लाह?

—कितनी जमीन पर दावा किया था?

—पाँच एकड़, तीन डिसमिल।

—जाओ। जमीन तुमको हुई।

—या अल्ला। या अल्ला…

चपरासी ने बरकत मियाँ को बाहर करते हुए कहा—अल्ला-खुदा मसजिद में जाकर करो। भीड़ मत लगाओ!

—चपरासी। पुकारो, मुसम्मात राजो!

—राजो का बेटा आया है, हजुर!

एक दस-ग्यारह साल का लड़का कठघरे में जाकर खड़ा हो जाता है। हाकिम ने पूछा—कितनी जमीन पर तनाजा दिया था तुम्हारी माँ ने? लड़के ने रटे हुए तोते की तरह कहा—एक पर्चा, तीन एकड़। दूसरा, दो एकड़।

—जाओ! जमीन मिली।

—ईमान से? लड़के ने पूछा। सभी हँस पड़े!

हाकिम साहब नाराज हुए—चपरासी, भीड़ हटाओ। जल्दी-जल्दी पुकारो!

सर्वे कचहरी में ऐसी लहर कभी नहीं आयी ! तीन साल तक रंग-बिरंगे आशाओं के गुब्बारे, रेशमी डोरियों में बँधे, हवा में फूले-फूले उड़ते रहे। आज रह-रहकर गुब्बारे फटते हैं, फट्टाक् !—आछीं-इ-क् ।

—कहाँ सुचितलाल मड़र ?

—हाँजिर हैं, हाँजिर हैं ।

हाकिम ने कहा—सुनोजी सुचितलाल । मैंने जोड़ कर देखा है, तुमने पूरे तीन सौ एकड़ जमीन पर तनाजा दिया है । तुम्हें अपनी जमीन भी दो सौ एकड़ है ।···गाँव के सभी जमींदारों की आधीदारी करते हो ?

सुचितलाल को छींक लग गई ! हाकिम ने फैसला सुनाया—दुलारीदाय जमा के दोनो कुडों पर तुम्हारा दावा गलत साबित हुआ ।···डिसमिस !

बैलून की हवा निकली, मानो—सिस-सिस। सुचितलाल सुसुआने लगा—इस्स ! ···अँपील कँरेंगाँ !

—चपरासी ! जिसका फैसला हो जाय, तुरत उसको निकालो उस दरवाजे से । पुकारो, मीर समसुद्दीन ।

—हाजिर हैं, हुजूर ! किस जमा का···?

—नड़हा बाँध जमा वाली नत्थी । जमीन हुई आपको ।

—मार दिया !···नहीं, नहीं । नड़हा बाँध जमा वाली जमीन समसुद्दीन की अपनी है। घर की मुर्गी दाल बराबर । दुलारीदाय वाली जमा का क्या होता है ?

—दुलारी दाय जमा की नत्थी ? पेशकार साहब ने समसुद्दीन की ओर इस तरह देखा मानो किसी पुरानी बात की याद दिलाकर कह रहे हैं—देखा ?

—हाँ, हुजुर ।

—दावा गलत साबित हुआ !

—या खुदा !

एक गुब्बारा फिर फटा—फट्टाक् !

—कहाँ खुदाबक्स मियाँ !

—जमीन मिली ।

—कहाँ धथुरी हजरा ?

—जमीन मिली ।

—कहाँ अघोरी मंडल ।

—जमीन मिली ।

—कहाँ फगुनी महतो ।

—दावा गलत साबित हुआ ।

—फट्टाक् !

फगुनी महतो ने छाती पर मुक्का मार कर कहा—हाय रे बाप !

—कहाँ··· ?

रात में दो बजे तक कचहरी में पुकार होती रही !

तीन साल से अविराम बजता हुआ नगाड़ा अचानक रुक गया। नगाड़े के ताल पर बजती हुई अजानी रागिनी बन्द हो गई।···नाचता हुआ लट्टू निष्प्राण होकर लुढ़क गया। लुढ़क कर थिर हुए लट्टू जैसा गाँव ! आखिरी फैसला सुनाने के बाद ही हाकिमों ने कैम्प तोड़ दिया !

अब जिनको लड़ना हो, अपील करनी हो—जाय पुरनियाँ कचहरी। लड़े दीवानी !

नहीं, इस लट्टू पर फिर से डोरी लपेटने वाले लोग हैं !

—अभी क्या हुआ है ? ग्राम पंचायत का चुनाव बढ़िया हो जाय। देखो, फिर न जाना पड़ेगा पुरनियाँ, न दीवानी करने की जरूरत होगी। पंचायत का मुखिया यदि अपनी पार्टी के आदमी को चुनोगे तो, समझो कि गयी हुई जमीन फिर मिल कर रहेगी।···ग्राम-पंचायत चुनाव की तैयारी करो !

समसुद्दीन मीर कहता है—सभी मुसलमानों के दस्तखत और अँगूठे का टीप लेकर कलक्टर साहब के पास जायेंगे। साफ कहेंगे, यदि हिन्दुस्तान में नहीं रहने देना है तो साफ-साफ जवाब दे दीजिये। हमलोग पाकिस्तान चले जायेंगे।···एस० ओ० ने मुँहदेखी करके मुकदमा डिसमिस कर दिया!

—लेकिन, उन कुंडों पर तो कभी आपका कब्जा नहीं था। आपने तो जबरन ही दावा किया था !

—इससे क्या ? कितने लोग हैं जिसने सोलहो आने सही दावा किया था ? नहीं था कब्जा तो क्या हुआ ? आप लोग हजार घर हैं, हम लोग तो बस एक ही टोले में हैं। बात यह है कि···।

लुत्तो कहता है—ठीक है। यह तो पौलटीस है। जरूर दीजिये दर्खास्त। साफ-साफ कहिये कलक्टर साहब से। आपने ठीक ही सोचा है। कहिये कि हम लोग पाकिस्तान भागने के लिए मजबूर हैं। जरूर फत्तेह होगा, आपका।

—जानें खुदा !

—खुदा जो करता है, अच्छा ही करता है। बीरभद्दर बाबू ने लुत्तो को समझा कर कहा—समझे लुत्तो बाबू ! समसुदिया को एक भी कुंड नहीं मिला। चलो, यह भी अच्छा हुआ।

लुत्तो ने कहा—भला, मैंने अपना काम पहले ही बना लिया था। तीन

बीघा जमीन अपने नाम से रजिस्ट्री करवाने के बाद मैंने पैरवी शुरू की थी !···डर है कि कहीं ग्राम-पंचायत के चुनाव में समसुद्दीन कुछ गड़बड़ न करे। चलिए, गड़बड़ करेगा तो सभापति जी से कह कर कांग्रेस से इस-पेल्ट करवा देंगे।

—देखो लुत्तो ! बहुत सोच विचार कर, बहुत माइंड खर्च करने के बाद एक जोजना तैयार किया है मैंने। एजेन्ट भी मिल गया है। यदि सिड्डुल से काम किया जाय तो समझो कि एक ही बार में चार शिकार !

लुत्तो दाँत निपोर कर देखता रहा। ···वीरभद्दर बाबू हर बार इसी तरह पहले चुटकी बजा कर कहते हैं—मिल गया ! छक्का हाथ मार दिया !! लेकिन, कोई भी तीर निशाने पर नहीं लगता।—कौन एजण्ट, जरा नाम भी सुनें ?

—मनका की माय, सामवत्ती !

—हाँ, ठीक ! लुत्तो ने मन-ही-मन मान लिया, बड़ी जाति वालों का मैंड सचमुच में थोड़ा तेज होता है। आज तक उसके दिमाग में यह बात नहीं आई। लुत्तो अब उछलने लगा। दौड़कर सामवत्ती पीसी के यहाँ पँहुचने के लिए उसका पैर चुलचुलाने लगा।

श्री कुबेरसिंह ने पटने से पत्र दिया है, अपने दोस्त-भाई वीरभद्दर को। ···'हुआ सवेरा' का पूरा एक पेज रिजर्व है, तुम लोगों के लिए। और भी तेज खबर भेजो। तुम लोग सिर्फ फैक्ट लिखकर भेजो। स्टोरी यहाँ बना ली जायगी। और एक काम जरूरी है। तुम्हारे गाँव में नट्टिन टोली है। उनमें से किसी एक की नंगी फोटो नहीं खिंचवा सकते ? तुम्हारे गाँव में एक हरिजन लड़की पढ़ी-लिखी है। उससे यह नहीं लिखवा सकते कि उसके साथ··· ?

दोनों काम कठिन हैं। लेकिन, करना ही होगा। फोटोवाला काम पीछे, पहले मलारी का सिड्डुल बना लिया जाय !

वीरभद्दर बाबू कांग्रेस कमिटी के लेटर-पैड पर सिडुल बनाने लगे। आज-कल शिवा, न जाने क्यों, कांग्रेसियों और कांग्रेस के खिलाफ बोलने लगा है। वीरभद्दर बाबू अपने छोटे भाई शिवभद्दर की मूर्खता पर दुखित रहते हैं। महामूर्ख है! इसलिए, अपने कमरे में भी फुसफुसा कर बोलना-बति-याना पड़ता है।

—लुत्तो! क्या बतलावें? हमारा शिवा इतना डोल्ट है कि क्या बतावें। विभीषण है। कल से क्या बोल रहा है, जानते हो? कहता है, जित्तन भैया बहुत भला आदमी है। नेनू की तरह मन है, उनका। दूध की तरह दिल सादा है। आप लोग उससे पार नहीं पा सकते। ···सुनो भला!

लुत्तो ने आँखें नचा कर चेतावनी दी—उस पर आँख रखिये। बड़ा डंजरस बात है यह!

वीरभद्दर ने पैड पर सिडुल बनाना शुरू किया! = चिह्न लगा कर जय हिन्द, फिर = चिह्न। नीचे—दूसरे काम का सिडूल। नम्बर एक को गोल घेरे में डाल कर बोला—क्या लिखा जाय?

—सबसे पहले, जाना सामबत्ती के पास। सुनाना उसको देश-दुनिया, जात-धरम वगैरह का हाल-चाल। फुसलाना सामबत्ती को एक सौ रुपया देकर। भेजना उसको मलारी के पास, रोज एक बार या दो बार। जब जैसी जरूरत पड़े। फुसलाना सामबत्ती का मलारी को, दिखलाना लोभ स्कूल की हेड मिस्ट्रेसी का। दिखलाना लोभ, कांगरेस की लीडरानी बनने का···।

बिना सिडूल किये काम का क्या भरोसा? इस बार देखना है!

काम जल्दी हो, इसका भी उपाय है। डबल फीस! जब कचहरी में डबल फीस दाखिल करने से एक ही दिन में दस्तावेज निकास होता है तो सामबत्ती की क्या बात?

लुत्तो के उठने की देरी है। काम हुआ जाता है, अभी!

कवैयावाली जगी हुई है। सपना देख कर जग पड़ी है।

—आप लोग हवेली के देवर के पीछे क्यों लगे हैं? सर्वे तो खतम हुआ। अपने आँगन के कमरेमें प्रवेश करते ही बीरभद्दर बाबू की मिडल पास स्त्री ने पूछा—क्या जरूरत?

बीरभद्दर बाबू अवाक् होकर कुछ देर तक अपनी स्त्री की ओर देखते रहे। फिर बोले—देवर के लिए दिल में बड़ा दर्द है!…देखो, सभी काम में तुम लोग इण्टरफियर मत करो।

—आज नहीं लाये वह किताब? नुनुदाय यानी बीरभद्दर बाबू की आसन्न-प्रसवा स्त्री कवैया वाली ने पूछा।

आज कल, बीरभद्दर बाबू एक अंग्रेजी सचित्र मासिक पत्रिका ले आते हैं, रात में। डिक्शनरी की मदद लेकर, चित्रों की सहायता से अपनी स्त्री को समझाते हैं—प्रायमी केस माने पहिलौंटी अवस्था में क्या-क्या नियम कानून पालना चाहिये।…दही खाने में हर्ज नहीं। विलायती बैगन खूब खाये…।

बीरभद्दर बाबू चौकी पर बैठ कर बोले—क्यों, कुछ खाने का मन डोला है?

नुनुदाय को अपने पति की कांग्रेसी किस्म की रसिकता पसन्द नहीं। वह चिढ़ जाती है। वह, अपनी माँ की ही नहीं, चाचियों की सभी बेटियों से भी छोटी है अपने मैके में। मैके का नाम लेते ही बीरभद्दर बाबू चिढ़ कर अंग्रेजी में गाली देने लगते हैं, उसके भाई-बाप के नाम! जेठानी को अपने आठ नौ बच्चे-बच्चियों से छुट्टी नहीं मिलती। उसके पति बीरभद्दर बाबू को तो खुद सोचना चाहिये कि…। नुनुदाय आजकल डर के मारे सो नहीं सकती। आए हैं, बड़ा प्रेम से पूछने—कुछ खाने को मन डोला है?

—मन डोले भी तो क्या! फारबिसगंज के गाजीराम की दुकान से उधार लिया हुआ बासी गाजा खाने के लिए मन का हाल नहीं सुनाती किसी को।

वीरभद्र बाबू अपनी बात को वजनी बनाने के लिए अंग्रेजी शब्द ढूँढ़ने लगे। बोले—तुम मेरी एक छोटी-सी दिल्लगी से भी टेम्पर लूज़ कर देती हो। आजादी देवी···।

—मुझे आजादी मत कहे, कोई। मेरा अपना नाम है।

—तुनुदाय नाम भी कोई नाम है ? और, कवैया वाली कह कर देहातियों की तरह पुकारना तुमको अच्छा लगता है ? कैसी बातें करती हो, आजादी देवी नाम में क्या बुराई है !

—मुझे पसन्द नहीं। आजादी देवी, जैहिन्दी देवी ! अपनी झोली में रखिये ऐसे नाम।

—क्यों ?

शादी के पहले ही, सौ नामों में से एक नाम चुन कर डायरी में नोट करके रखनेवाले वीरभद्र बाबू को ठेस लगती है—तुम देख रही हो, गाँव में तीन आजाद हैं। परानपुर कोई छोटा गाँव नहीं, तुम्हारी नैहर कवैया की तरह। एक आजाद तो घर के बगल में ही है, सोशलिस्ट, सीताराम आजाद ! दूसरा केयट टोली का, राष्ट्रीय गीत गवैया, अजबलाल आजाद। तीसरा, वंगटप्रसाद आजाद। लेकिन, बता तो दो। एक भी लड़की नाम आजादी देवी है ? ढूढ़ कर देखो ?

—मैं पूछती हूँ कि रोज रात में खराब सपना देखने से क्या करना चाहिये ? यह उस किताब में नहीं लिखा हुआ है ?

—क्यों ?

—मैं रोज रोज एक ही सपना देखती हूँ। बड़ा डर लगता है।

—क्या ? वीरभद्र बाबू आतंकित हुए।

—एक बूढ़ी औरत रोज आँखें तरेर कर डराती है !

—सपने में ?

—हाँ, इसीलिए कहती हूँ कि तुम लोग हवेली के देवर के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़े हुए हो !

वीरभद्र बाबू चिढ़ कर बोले—क्यों। इसमें पीछे लगने की क्या बात है ?···रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्रान जाँहि बरु बचनो न जाँहि। वर्ड का मैल होना चाहिये, इन्सान का। तुम नहीं जानती ? उसकी माँ ने, बाबूजी को किस तरह बेइज्जत करके, नंगाझारी करके, चोरी का चार्ज लगा कर बदनाम किया ! तीन-तीन झूठे मुकदमें किये।

—जिसका जमा बुड़ावेगा कोई, उस पर मोकदमा नहीं होगा ? नुनुदाय ने बात गड़ाई, अपने पति की देह में। वह जानती है, सब कुछ !

वीरभद्र बाबू के मन में आया कि एक फुलपावर का थप्पड़ मुँह पर लगा कर मुँह लाल कर दे। लेकिन कुछ सोच कर गम खा गये—देखो, एक तो अपनी फैमिली में कहाँ से एक डोल्ट डम्फास विभीषण पैदा हुआ है। अब तुम भी ऐसी बात करती हो ? अपने फादरइनलौ के नाम पर झूठा तोहमत लगाती हो ? कौन कहता है ? किसका जमा बुड़ाया ?

—बच्चा-बच्चा जानता है, बोलता है।

—बोलने दो !

अब वीरभद्र बाबू ने मौन-सत्याग्रह की तैयारी की। कुछ नहीं बोल सकते, ऐसी जाहिल औरत से !

सुचितलाल मड़र अपनी जाति का मड़र है। गाँव वाले माने या नहीं माने, वह मड़री करने में नहीं चूकता कभी। कोई भी बात हो, उसे पंच की

दृष्टि से देखता है सुचितलाल । वह भी सोलकन्ह है, लेकिन सोलकन्हों ने ही उसके साथ दगाबाजी की ।

—हाँ-हाँ । जँदिं उँत्तों नें थोंड़ीं भीं मँदद दीं हों, साँबित कँर दें कोंई !

—तो, तुम कांग्रेस का मेम्बर काहे नहीं बने ? जिस दिन चौअन्नियाँ रसीद वही लेकर आये लुत्तो बाबू , तुमने लम्बे बाँस से ठेल दिया । हम सभी पार्टी का मेम्बर हैं ।

—सोशलिस्ट लोगों के साथ में रहने का फल भोगो ! तुमने तो अपना दावा अपनी मड़री के शान में खो दिया । यह मैं हजार बार कहूँगा ।

—सोंसलिंस ? सोंसलिंस क्याँ, अँब हँम कोंमलिंस कें साँथ रँहेंगे ओंर कुंडा दँखल कँरकें दिंखलाँ देंगे ।

—अच्छी बात !

—अँच्छीं बाँत नँहीं तो बुँरीं बाँत ? अँब हँम भी झँन्डाँ लेंकें खिलाँफँत कँरेंगे ।

—देखो, सुचितलाल । मकबूल समझा रहा है सुचितलाल को—यदि तुम कुण्ड दखल करने के लिए पार्टी का मेम्बर होना चाहते हो तो, घर बैठो । समझे ? पार्टी की मेम्बरी मामूली चीज नहीं है ।

सुचितलाल मड़र ने बार-बार ईमान-धरम खाकर कहा—धँमोंस्तीं, मेंरें मँन में कुँण्ड काँ कोंई लोंभ नहीं ।

मकबूल ने बात टालते हुए कहा—हठात् तुमको पार्टी की मेम्बरी का धुन क्यों सवार हुआ ? इस सवाल पर हम कल की बैठक में एकजुट होकर गौर करेंगे । मकबूल के साथ चालाकी ?...द्वन्दात्मक भौतिकवाद जिसने नहीं पढ़ा है, सुचितलाल उसको चकमा देकर ठग ले । मकबूल और मकबूल के साथी सभी समस्या और सवालों को काट-पीट कर परखते हैं । ऊपर से टटोल कर अटकल नहीं लगाते ! प्रश्न है : सुचितलाल मड़र हठात् कम्युनिस्ट

पार्टी का सदस्य क्यों होना चाहता है ?

बैठक से एक दिन पूर्व ही, बजरिए गश्ती-चिट्ठी के, मकबूल ने इस प्रश्न को चारो-पाँचों कौमरेडों के सामने पेश किया। बैठक के दिन सभी इस महत्वपूर्ण सवाल पर सोच कर गौर करेंगे !

—मुझे तो इस बात में हृदय परिवर्तन के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते हैं। और, यदि मेरा अध्ययन और अनुमान सच हो, तो सुचितलाल मड़र को पार्टी प्लेज देना हमारे उसूलों के खिलाफ होगा। रंगलाल गुरुजी ने बैठक में अपनी राय जाहिर की। रंगलाल गुरुजी ने पन्द्रह साल तक विभिन्न खानगी प्रायमरी स्कूलों में गुरुवाई की है। उसको गौरव है—फलाने बाबू, चिलाने सिंह और अमुक वकील ने उसके चटसार में ही खल्ली पकड़ कर 'ओना-मासिधं' लिखा था!···उसके चेहरे को देखते ही लोगों के समझ में आ जाती है, यह आदमी गरीबी से बजाप्ता लड़ता रहा है, ढाल तलवार लेकर। ढाल उसकी ईमानदारी, तलवार, उसकी खरी-खोटी बोली। तीन साल पहले उसने पार्टी की मेम्बरी ग्रहण कर ली। किन्तु, अपने हथियार को नहीं छोड़ा है अब तक।···दो पैसा का वाउचर बनवाने के लिए, जगिया ग्वालिन का पैर तक पकड़ लिया रंगलाल गुरुजीने—जगिया दाय ! पार्टी के काम में दही खर्चा हुआ है, वौचर तो देना ही होगा !

रंगलाल की बात सुन कर बाकी कौमरेडों ने एक दूसरे की ओर देखा। मकबूल ने दूसरे सदस्य से पूछा। मिडल फेल लड़के ने पिछले साल पार्टी में प्रवेश किया है। वह रंगलाल गुरुजी की तरह बात में छोआ गुड़ लपेटना नहीं जानता—सुचितलाल अपनी जाति का मड़र है। उसके कब्जे में कम-से-कम पचास-साठ घर हैं। इतने घर सिम्पथाइजर हो जायेंगे, तुरत !···

तीसरा सदस्य, शहर से आकर गाँव में बसे हुए, लोहार का लड़का है। मकबूल के बाद खाँटी साम्यवादी रहन-सहन, चाल-चलन बस उसी के व्यक्तित्व में पाया जाता है। विस्वकर्मा ने कहा—गाड़ीवान टोली में कितने सिम्पथाइजर थे ? कहाँ हैं वे ! इसीलिए तो हमलोगों की पार्टी ने यह फैसला

किया है। भेड़ियाधसान मेम्बरी नहीं। एक-एक सदस्य का पोस्माटम करके, ठोक-बजा कर मेम्बर बनाना होगा।

चौथे सदस्य ने वैधानिक दर-सवाल उपस्थित किया। काँग्रेस से आया हुआ उत्तिमचन्द कहता है—सिर्फ, कनफर्म मेम्बरों की बैठक नहीं। जरनल मीटिंग करके, पन्द्रहों-बीसों कौमरेडों को मिल कर तय करना चाहिये। और, जल्दी ही।

मकबूल ने बारी-बारी से सबकी बात सुन ली। बात सुनने के समय वह बीच में टोक-टाक नहीं करता है। चुपचाप अपनी दाढ़ी को चुटकी से नुकीला बनाता रहता है। बात, मीटिंग के बीच हो या किसी सदस्य से, पेश करना जानता है, मकबूल। किसी बात को धीरे-धीरे भूमिका बाँध कर समझाने को वह धूर्तता समझता है। बात को धमाके के साथ धड़-धड़ा कर पेश करता है वह—साथियो! मैंने इस बात के हर पहलू पर .जुदा-.जुदा नुक्तेनिगाह से ग़ौर क़िया है। अभी हमारे एक़ क़ॉमरेड ने रिमार्क़ क़िया कि ग़ाड़ीवान् टोली में क़ितने सिम्पथाइजर थे! मैं क़बूल क़रता हूँ, यह हमारी और खास क़र मेरी क़रारी हार क़ा एक़ मजार है। क़िन्तु, हर बात क़े अन्दर समाजवादी सत्यक़ा क़ुछ मिक़दार होता है। उस चीज क़ो हमने पक़ड़ना सीखा है, अपनी हारों से।...सुचितलाल मड़र क़े पार्टी-प्रेम क़ो परखने में हम गलती कर सकते हैं, यह बात नहीं। मेरा मक़सद है कि पार्टी के प्रति उसक़ी सदिच्छा के समाजवादी सत्य क़ो हमें ग्रहण क़रना चाहिए।

सुचितलाल ने बीच मीटिंग में दही-चुड़ा और माल-भोग केला का भार भेज दिया। उसके नौकर ने कहा—मड़र बोले, बीच मीटिंग में जलपान पहुँचा दो जाकर। जलपान करने के पहले ही यह तय रहा कि सुचितलाल के समाजवादी सत्य को ग्रहण कर लिया जाय!

विश्वकर्मा खूब समझता है! मकबूल उसकी बात को काट कर हथौड़े की चोट दे रहा है। इसका कारण है। जनयुग में फारबिसगंज की गन्दी

सड़कों के बारे में और हरिजन क्वार्टर में जलकष्ट पर सम्पादक के नाम पत्र विश्वकर्मा ने अपने नाम से प्रकाशित करवाया है। तभी से मकबूल मन ही मन विश्वकर्मा से असन्तुष्ट रहता है। बात-बात में, बात को काटता है मकबूल, विश्वकर्मा की बात को, बस एक ही धार से—तुम शहर के नुक्तेनिगाह से देखते हो। ···शहरी मजदूरों की समस्या नहीं, खेतिहर मजदूर की समस्या है। तुम्हारा अध्ययन ऊपरी है, इत्यादि।

शाम को सुचितलाल मड़र पुस्तकालय के पठनागार में गनगना आया—सुँचितलॉल मँड़र नँहीं। आँज सें कॉमरैंड सुँचितलॉल। जिंन सॉलो नें अँमीन कीं बँहीं में पोंपीं लिंखायाँ हैं—सुँन लें। आँज सें सँपफासँफ्फी कॉमरैंड।

भिम्मल मामा ने कहा—लो! अरुणोदय हो गया साँझ ही, मुर्गे ने बाँग दी!

मकबूल जानता है, और बातें बाद में हो, कोई हर्ज नहीं। किन्तु, पार्टी के संगठन के लिए, गाँव में जनबल आवश्यक है। सुचितलाल के हाथ में जनबल है। और, यही है सुचितलाल का समाजवादी सत्य! मान लिया जाय, सुचितलाल कुण्ड दखल करने के लिए ही हमारी पार्टी में आ रहा है। तो, क्या हर्ज है? सामाजिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह हमारे साथ आ मिला है।···

नहीं, वह कुण्ड के लोभ में पड़ कर नहीं आया है। फिर भी, मकबूल का फर्ज है, उसके लिए पैरवी करके कुण्ड हासिल करवा देना!

—वॉख! वॉख!! मीत ने मकबूल की नुकीली दाढ़ीवाली सूरत देखकर भूंकना शुरू किया।

—अन्दर आइए।

—जय जनता! मकबूल के मुट्ठी-अभिवादन का उत्तर जित्तन बाबू ने हाथ जोड़ कर दिया—नमस्कार।

मकबूल की निगाह सामने खड़ी पत्थर की औरत पर गई। पत्थर की मूर्ति

के अंग-अंग से जिन्दगी टपक रही है, मानो। किन्तु, इसका समाजवादी सत्य···?

—क्या मँगाऊँ आपके लिए? चाय या कॉफी?

—काफ़ी मुझको सूट नहीं करता। नींद मर जाती है।

जित्तन बाबू के सिगरेट केस से सिगरेट लेकर सुलगाते हुए, मक़बूल ने पूछा—
—आपने अभी तक पार्टी प्लेज क्यों नहीं लिया है?

—पार्टी प्लेज? क्या करूँगा पार्टी प्लेज लेकर?

—करना क्या है? आप प्लेज लेकर घर में इसी तरह बैठे रहिये, कोई बात नहीं। आपको फील्डवर्क करने नहीं कहूँगा।

जित्तन बाबू मुस्कुराये।

—ख़ैर! प्लेज, जब आपके जी में आवे लीजियेगा। मैं आज एक महत्वपूर्ण काम से आया हूँ।

—कहिये।

—सुचितलाल मड़र को जानते हैं न? बड़ा कनसस किसान है।

—जी।

—कम-अज़-कम कनसस किसानों के लिए कनसेसन करना आपका कर्तव्य है। कुण्ड का तस्फिया कर दीजिये।

—समसुद्दीन से क्यों नाराज हैं, आप? वह भी काफी चैतन्य किसान है। उसके बारे में भी कहिये। कम से कम मुसलमान के नाते भी··· ।

मकबूल ने जित्तनबाबू की बात काट दी—मैं मुसलमान नहीं हूँ। आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं पीताम्बर झा, तख़ल्लुस मक़बूल!··· मैं नीलाम्बर झा का छोटा भाई। जितेन्द्रनाथ मुँह फाड़ कर देखते रहे, मकबूल को— पीत्तू?···तुम्हारे स्वास्थ्य में काफी परिवर्तन हुआ है। वर्जिश भी करते हो?···एण्ड हू शेव्स सच क्यूबिस्ट? गाँव के नाई फ्रेंचकट बनाना

जानते हैं क्या ?

जित्तनबाबू के उत्साह को देख कर मकबूल जरा चिंता में पड़ गया। ··· शायद दाढ़ी अच्छी नहीं कटी। कौन बनावेगा गाँव में ऐसी दाढ़ी ? मकबूल खुद कैंची और रेजर से तराशता है, लेनिन की फोटो सामने रख कर, उससे एकदम मिलाकर। फिर भी खोंट ?

फिर, असल बात की ओर मुड़ने की चेष्टा की मकबूल ने—आप जनयुग में लेख क्यों नहीं लिखते ? प्रोविंसियल पार्टी के अछैवट कामरेड कह रहे थे कि जित्तनबाबू का अध्ययन ···।

—आप···माफ करना, तुम शायरी उर्दू में करते हो या हिन्दी में ?

—मैं हिन्दी में कभी-कभी तुक मिलाकर कुछ सुनाता जरूर हूँ। उर्दू पढ़ना जानता हूँ। लिख नहीं सकता। जहाँ तक लिखने की बात है···।

—बाय-द-वे, तुम अँग्रेजी क्यू से तो अपनी पार्टी का नाम नहीं लिखते ?

—नहीं। मकबूल अचानक भड़का। ·· क्या समझ रहे हैं जित्तनबाबू ? ग्रेजुएट नहीं हूँ तो क्या हुआ, मैट्रिक पास करके 'आइए' में पढ़नेवाला भला क्यू से लिखेगा—भला क्यू से कौन लिखेगा ? मकबूल अप्रतिभ हो कर मिनमिनाया। जित्तनबाबू ने अति अचरज भरी मुद्रा में पूछा—क्या ? क्यूक्लक्सक्लान ?

—क्यू से कौन लिखेगा। इस बार मकबूल ने अपनी बात को जरा रुखाई से पेश किया।

जित्तनबाबू ने अपने को धिक्कारा मन-ही-मन। इतनी-सी आत्मीयता बर्दाश्त नहीं कर सके जो उसको सबसे पहले चाय की प्याली देनी चाहिए। जित्तन-बाबू भूल ही गए। हटात्, उठ खड़ा हुए—चाय के लिए कह दूँ।

बात उलझी।

मकबूल भी इसी बात का ताना-बाना जोड़ रहा है, जित्तनबाबू हमेशा ऐसी ही उखड़ी-उखड़ी बातें करते हैं, सबसे शायद ? सचमुच पागल हैं ?

लेकिन, अछैबट कॉमरेड ने कहा था कि काम का आदमी है ! काम की बात तो हुई ही नहीं अभी, कोई। नहीं, वह बात को उखड़ने नहीं देगा। जित्तनबाबू हवेली के अन्दर से लौट आए—पाँच मिनट प्रतीक्षा का कष्ट सह्य हो।

—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। आप बैठिये।

—तो, सुचितलाल मड़र कनसस किसान को मैं आपके द्वारा संवाद दे रहा हूँ। वे दोनों कुण्ड ताजमनी के हैं। मैं लेने-देनेवाला कौन होता हूँ ?

—ज़मींदारी झाँई मत दीजिए। यह सब कचहरी में बोलने-बतियाने के लिए रखिये। सीधी बात, कुण्ड दीजिएगा सुचितलाल को या नहीं ? हाँ-नहीं में जवाब दे दीजिए—छुट्टी ! मकबूल ने मौका पाकर चोट बैठाई-बातों पर-तड़ातड़ !!

जरा भी नहीं तिलमिलाये जितेन्द्रनाथ।

मक़बूल ने देखा, यह आदमी पोलिटिकली काफी पोला है।

मुस्कुरा कर बोले जितेन्द्रनाथ—नहीं !

मकबूल आश्चर्यित हुआ। उसकी नुकीली दाढ़ी के केश खड़े हो गए, मानो। उसने पुनः एक संक्षिप्त प्रश्न किया—आप कम्युनिस्ट पार्टी के सिम्पथाइज़र हैं या नहीं ?

—नहीं।

—आप जनयुग पढ़ते हैं या नहीं ?

—हाँ। *माफ कीजियेगा—मैं 'हुआ सवेरा'* भी पढ़ता हूँ।

—'हुआ सवेरा' ने सब ठीक ही लिखा है, आपके बारे में ?

—हाँ।

—एँ ? हाँ ? मैं आपको चुनौती देता हूँ, आप पीछे पछताइएगा। सुचित-लाल तो कुण्ड दखल करके छोड़ेगा।

ताजमनी के अंग-अंग में गुदगुदी लगी ! मालकिन माँ मुस्कुराती कहती—ताजू ! आज एक आदमी फलाहार करेगा । सुबह से गुस्सा खा-पीकर बैठा है । कुपित पित्त में फलाहार···!

ताजमनी पर्दे के उस पार से हँट गई ! मीत उसके पीछे-पीछे भागा ।

सुरपति राय टेप रेकर्डर बजाकर गीतका आखर लिख रहा है !

पंचरात्रि !

पाँच रातों तक अहोरात्रि गीत कथा गाकर असाध्य रोग अर्धांग से मुक्ति नहीं मिले, नहीं चाहिये अस्सी वर्ष के रघू रामायनी को अब गई हुई देह ।···गुरु के ऋण से उऋण हुआ है, वह । उसका जन्म अकारथ नहीं गया ।

चार रातें, सुनने वाले ही कह सकते हैं, कैसी धड़कती हुई रातें थीं ! किन्तु पाँचवीं रात तो कथा का सुर ही बदल गया । यह क्या हुआ ?

सुन्दरि नैका का भी दिल डोल गया—दन्ता राकस पर ? खुद फँस गई प्रेम के फंद में !···महाबलशाली दन्ता, किसी देवता से क्या कम है ? देवता तो रात-दिन सेवा करवायेंगे । और, यहाँ दन्ता कहता है कि रोज पैर पखारेगा सुन्दरि नैका का ! जिसकी हिरन्नि रानी रने-वने रो रही है । जिसका प्यारा बच्चा आस लगाकर बैठा है । हाय, हाय ! सुन्दरि नैका दिल की बात कहने चली दन्ता से । लेकिन, सुन्दर नायक भी भारी गुनी आदमी । सब चलित्तर देख रहा था अपनी बहन का । अस्सी मन लोहे को बेड़ी-बाँध में जकड़ कर बाँध दिया सुन्दरि को !

सुन्दरि नैका का व्याह देवपुत्र से ही हुआ !

किन्तु ऐसा श्रापभ्रष्ट देवपुत्र, जो एक ही रात धरती पर सुख भोगने के लिए आया था।'''पुरइन फूल से भरे कुण्ड में, दूसरे दिन देवपुत्र का निष्प्राण शरीर फूल कर तैरता रहा !

सुन्दरि नैका इस संसार में रह कर क्या करे ?'''ओ रे मीता दन्ता ! मैं आ रही हूँ। दन्ता कुण्ड में एक बड़ी मछली कूदी—छपाक् !!

दन्ता के मरने के बाद कुण्ड के पास पहुँची हिरन्नि रानी। उसके कुछ ही क्षण पहले विधवा सुन्दरि नैका डूब मरी थी कुण्ड में। किनारे पर रख गई थी, सोने की एक कटोरी, खीर से भरी हुई ! दन्ता के बेटे के लिए।

औरत के दिल की बात, औरत नहीं परखेगी ? कलेजा कूट कर गिर पड़ी हिरन्नि रानी :

> दन्ता रे दन्ता, तोरा बिना धरती पे कछुओ ना सूझे
> मोरा लेखे कठिन जीवनियाँ रे, सुनु दन्ता !
> दन्ता रे दन्ता, कूल के निशनियाँ तोरा बेटवा नदनवाँ,
> सेहो, छोड़ि केकरा पे जायब रे, सुनु दन्ता !

'''मानुस छोरी मइया भी चली गई तेरी, ओ रे मेरे लाल !'''रच्घू इससे आगे नहीं गा सका ! कथा के अन्त में, सभी बाल-बच्चे वाली माताओं से रच्घू ने प्रार्थना की। उसकी सफेद दाढ़ी से झर झर कर आँसू गिर रहे थे—कल रात घर-घर से खीर से भरी कटोरी उत्तर की ओर से दूसरे कुण्ड में दन्ता के टूअर बेटे के नाम चढ़ाइये। बाल-बच्चों का कल्याण होगा !

'''छोटा-सा भोला-भाला राकस का बालक ! हाथी के बच्चे जैसा, हुलसता हुआ कटोरों से खीर लेकर खाता हुआ। न जाने कब का भूखा-प्यासा टूअर बच्चा ! बच्चा आदमी का हो या राकस का !'''ओ री मानुसछोरी मइया-या-या !!

—जैकिट कहो या जमाहिर कोट, एक ही बात है। लुत्तो ने सामबत्ती पीसी को बात समझाते हुए तुलनात्मक उदाहरण दिया—चाहे दो सौ रुपया नकद लो या दो सौ रुपये का धान तौला लो। एक ही बात है। वीरभद्दर बाबू बादशाह आदमी हैं। लुत्तो अपने साथ जितवापन्हेड़ी की दुकान से पिपरमेंट वाला पान ले आया है। सामबत्ती पीसी पान मुँह में लेकर बोली—अच्छा! इसका जवाब, मन में बूझ विचार कर कल दूँगी। लेकिन, मेरी एक बात का जवाब दो पहले। आखिर, जित्तन के पीछे तुम लोग क्यों लगे हुए हो? सर्वे अब खतम हुआ, झगड़ा-झंझट भी खतम करो! और, जिसको तुम सिकन्नर-शा-बादशा समझते हो उसको मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ।···आ रे गरुड़ा-आ-आ तू तू!!

सामबत्ती पीसी जब अपने कुत्ते को पुकारे तो समझो कि आस-पास कहीं गरुड़ झा की बोली उसने सुनी है।

गरुड़धुज झा चौबटिया पर खड़ा होकर किसी से पूछ रहा है—इधर लुत्तो आया है? लुत्तो पर नजर पड़ी है किसी की?

लुत्तो को गरुड़धुज झा पर जरा भी विश्वास नहीं। लेकिन उसका संग करना पड़ा है। मजबूरी है!

लुत्तो ने सामबत्ती पीसी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। बोला—तुम सोलकन्ह टोली की सबसे चान्सवाली हो, इसीलिए तुम्हारे पास आया। मैं अभी चलता हूँ। सोच-समझ कर जवाब देना।···खूब पॉलिसी देना मलारी को!

—ई-पी-ही-ही-ही! ई-पी-ही-ही-ही!!

इसको मैथिलाम ठहाका कहते हैं। मैथिलों की खास पहचान! कण्ठ से कटाई हुई हँसी के साथ निकलता है यह ठहाका!

गरुड़धुज झा ठहाका लगा कर सूचना देता है लुत्तो को—बड़ा अकबाली

आदमी हो, तुम लुत्तो बाबू ! मालूम है ? मकबूल भी अब बिलकुल उलट गया है। अभी कह रहा था, लुत्तो ठीक कर रहा है। जित्तन नरक का कीड़ा है। उसको गाँव से भगाना होगा, नहीं तो सारा गाँव नरक के कीड़ों से भर जायगा !

—ठीक पहचाना है मकबूल ने। देर से ही सही, लेकिन पहचाना है।··· नरक के कीड़े तो बढ़ रहे हैं गाँव में !

—हाँ, कल देखा। कौलेजिया लड़कों का एक गिरोह हवेली की ओर से खूब खुशी-खुशी आ रहा था। पता लगाना चाहिये।

—कौन-कौन था ?

—भूमिहार टोले का सुवंशलाल, कमलानन्द, प्रयागचन्द, नितिया। मैथिल टोले का अनरूध, शशभूखन, किरता। और···सोलकन्ह टोली का रधवा, सत्रूघन, मोहना। कमेसरा भी था !

—हूँ-ऊँ-ऊँ ? लुत्तो ने दाँत से ओठों को चबाते हुए कहा—देखियेगा, सभापति जी से कह कर सबको कौलेज से इसपेल्ट करवाते हैं या नहीं !

गरुड़धुज ने मुँह में खैनी तम्बाकू लेते हुए थुकथुकाया—थूः, अरे इससे क्या होता है ? जाने दो लोगों को। एक मकबूल अकेला ही काफी है। कौलेज के लड़कों की लड़कभुड़भुड़ी चार दिन भी नहीं चलेगी। मकबूल के दिमाग में काफी फौर्सिंग है। फुफुआ रहा था गेहुअन साँप की तरह ! उससे मिल कर बात करोगे तो, समझोगे !···अच्छा, मैं अभी चलता हूँ। रोशनबिस्वाँ का बेटा जरा पगला गया है। बाप से लड़ाई-झगड़ा करके अलग खाना-पीना कर रहा है।

लुत्तो सिड्यूल से बाहर की बात सुन कर इतना प्रसन्न हुआ कि राह चलते नौटंगी की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा—किस गफलत की नींद में रहे पलंग पर सोय, अजी अब तो मजा सब मालूम होय। अजी, हाँ-हाँ-जी ! मालूम होय !!

के बीच कोई काम होना मुश्किल है।

खाली बोतलों की तरह लोगों के दिमाग, इसमें जो कुछ भी भर दो समा जायगा ! प्रेमकुमार दीवाना ने कहा—कितना काम करूँ, अकेला ? देखो, अभी भी डाक से चिट्ठी आयी है—चार कविता, दस कहानी और करीब बारह नाटक की माँग पटने से आई है। लोहारपुर मुहल्ला से।···पटना की क्या बात ? वहाँ जब मैं गया तो स्टेशन पर एक हजार पबलिक मुझे सिर्फ देखने के लिए जमा हो गई थी।

—इस्स ! एक हजार ?

—तो, हो न तैयार ? तुम लोग सहायता दोगे न ? शुरू करें लिखना, प्यार का बाजार ?

—हाँ, हाँ, तैयार ही तैयार हैं सब ? अब तो सर्वे का भी झंझट नहीं। जरा, एक चोटिलवा पाट हमारे लिए भी लिखिएगा।

—जोकड़ का पाठ हमको दीजिएगा।···अहा-हा, सुचितलाल हम लोगों के दल से निकल गया। नहीं तो, प्यार का बाजार में वह भी कमाल दिखला देता। बिदेसिया नाच में वह जब बटोहिया बनकर आता था और—तोंहँरों बँलेंमूजीं कें चिन्हियों नां जाँनियों—गाने लगता था तो सारंगी भी उसके मोकाबले में मात खा जाय।

प्रेमकुमार दीवाना ने दलित नाटक मंडली की कच्ची-बही पर नाम दर्ज करना शुरु किया। दीवाना कहता है—कलकत्ता, बम्बै के थेटर के असली भेद का पता लगाकर आया हूँ। सब एलिक्ट्रिक की चालाकी सीख आया हूँ। देखना, प्यार का बाजार कैसा जमता है !

—दीमाना जी···।

—गलत नाम मत बोलो, दीवाना जी नहीं बोल सकते ?

—दीनावाँ···नहीं-नहीं, दीवानाम···।

मलारी सोच रही है, इस दीवाना जी को क्या कहा जाय ?···

उस रात में तुम दवा कर भागे और आज फिर स्कूल से लौटते समय दीवाना को एक जरूरी बात पूछने की जरूरत हो गई। बड़ा आया है, मलारी का भला-बुरा सोचने वाला ! मलारी अपना भला-बुरा खुद सोचती है। दीवाना की आँखों में हमेशा शैतान हँसता रहता है ! मलारी का यह दुःख नया नहीं। सात वर्ष की उम्र से ही वह दुनिया के लोगों की जहरीली निगाहों को पहचानने लगी है। मलारी सच-सच बयान कर कभी लिखे तो···तो, न जाने क्या हो जाय !···

मलारी अपने बाप को दोष नहीं देती। चिड़चिड़ा है, मद्की है। लेकिन गाँव के बहुत भले लोगों से अच्छा है उसका बाप। मलारी का बाप ही क्यों, गाँव की किसी लड़की का बाप ऐसा ही मद्की और चिड़चिड़ा हो जायगा, हमेशा आदमी को हाँकते-हाँकते !···पिछली चार-पाँच रात से चौबे जी पर भूत सवार हुआ है। रोज रात में चौबे जी की बछेड़ी खो जाती है। दोपहर रात में मलारी के बाप को जगा कर पूछने आते हैं–महीचन मेरी बछेड़ी को देखा है ? कल रात मलारी के जी में आया कि पण्डित सरबजीत चौबे जी से पूछे···। क्या समझ लिया है चौबे जी ने ? उस दिन ठाकुर बाड़ी गई थी मलारी, रामलला का दर्शन करने—दूरसे चौबे जी ने कहा—तुम मन्दिर की सीढ़ी पर या बरामदे पर से दर्शन कर सकती हो, मलारी ! कोई हर्ज नहीं। तुम्हारा संस्कार बदल गया है। इसके बाद चौबे जी ने इधर-उधर देखकर हाथ के इशारे से बुलाया—पगली ऐसा मौका कभी नहीं हाथ लगेगा। कहीं, कोई नहीं ! आकर चुपके से रामलला का चरण छू ले। आ ! आजा !! डरती है काहे ?···

रामलला और रामलला के पुजारी पण्डित सरदजीत चौबे को दूर से ही नमस्कार करती है, मलारी। लेकिन, भँगनीसिंह···प्रेमकुमार दीवाना की क्या दवा की जाय ? अभी-अभी डाक से एक गुमनाम चिट्ठी मिली है, मलारी को। दोहा, चौपाई वाली चिट्ठी !···

—मैं किसी के प्रेम में पागल हुआ हूँ, वर्ष भर से रात में जागल हुआ हूँ। मेरी जान, मलारी ! तुम पर कुर्बान-यह प्राण। आओ, चलो ! इस भेदभाव की दुनिया से दूर, बहुत दूर चल चलें हम। जहाँ मैं रहूँ, तुम रहो और कोई न रहे।…तुम सुवंशलाल से हँस-हँस कर बात करती हो और मुझको दुतकारती हो। खैर, मेरी किस्मत में यही है। मैं रस चूस कर उड़ जाने वाला भौरा नहीं हूँ। कलात्मक-प्रेम किसे कहते हैं, यह क्या जाने सुवंशलाल ? कलात्मक प्रेम करने वाला मधुकर रस चूस कर उड़ नहीं जाता। वह गुन-गुन मुन-मुन कर फूल के अधर पल्लव पर…।

शैतान ! बदमाश !!

न जाने क्यों, जब से सुवंशलाल और मलारी की चायवाली कहानी उड़ी है गाँव में, मलारी को रोज पाँच-सात बार सुवंशलाल की याद आ जाती है।…सुवंशबाबू ? ऐसा आदमी आजकल कहाँ मिलेगा ? कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन कह नहीं सकते हैं ? कई दिनों से देख रही है, मलारी। सभी नौजवानों को जानती पहचानती है।…

अररिया कोठ जाने की बदनामी ? मलारी अपनी या सुवंश की सफाई देने के लिए, दाल-भात की तरह कसम पर कसम नहीं खायगी। जिसको परतीत न हो, उसकी खुशामद तो नहीं करने जायगी, मलारी ? हाँ, इतनी-सी बात वह जरूर कहेगी कि पाँच छै घंटा साथ रहने पर भी, सुवंशबाबू ने कोई बेकाम की बात नहीं कही। घोड़ा गाड़ी पर, एक बार सुवंश बाबू की गोद में गिर पड़ी वह। अररिया कोठ की सड़क तो अपने गाँव की सड़क से भी गई गुजरी है। घुटने भर गड्ढों में घोड़ागाड़ी हिचकोले खाती।…सुवंशबाबू का मुँह लाल हो गया था। वे सरक कर अगली गद्दी पर बैठ गए थे।

मलारी चाहती है, सुवंशलाल के नाम के साथ उसकी बदनामी फैले। खूब जोर से ! वह, अब किसी से नहीं डरती। सुवंशबाबू क्या कहना चाहते हैं ? कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ? बोलो न सुवंशबाबू, मंगनीसिंह की क्या दवा की जाय ? कायर ने अपना नाम नहीं लिखा है। नाम के बदले दोहा

—ढाई आखर शब्द का मैं हूँ बेचलर ब्याय, चिन्हन वाले कहत हैं, है मजनू का भाय !···

—सुबो रे, सुबो ! सुवंशलाल की बूढ़ी माँ अपनी पुतोहुओं के मुँह से सुनी हुई बात का विश्वास क्यों करे ? सुवंश उसका कोरपच्छू लड़का है। कोरपच्छू, सब से आखिरी संतान ! माँ से कुछ नहीं छिपावेगा उसका सुबो।

—सुबो ?

—क्या है माँ ? सुवंशलाल को माँ के मन की बात की झलक मिल गई, मानो। वह अपनी माँ से आँखें नहीं मिला सका।

—तुम्हारी भाभियाँ क्या कह रही हैं···।

—भाभियों का नाम क्यों लेती है मइयाँ ? मझली भाभी ओसारे के नीचे से बोली—आँगन छोड़ कर कहीं जाती हूँ तो बस एक ही बात सुनाती हैं, सभी। कोई ताना मार कर कहती है—नई देवरानी के लिए कोठरी बनवाओ, मँझली ! कोई कूट करती है—घर की भौजी रस वाली बात नहीं करे तो आदमी क्या करे ? जिस टोली में, जिस आँगन में रस मिलेगा जायँगे।··· आज भी मैं लड़ आई हूँ छत्री टोली की संतोखीसिंह की बेटी से !

बड़ी भाभी बोली—जिस दिन से अखबार में फोटो छापी हुआ है, गाँव के लहँगटे लड़कों ने मलारी को बाभनी समझ लिया है।···मकबूल, मनमोहन और दीनदेलवा ने तो मुसलमान हाड़ी-काछी-मोची को पहले से ही माथे पर उठा लिया था। ···अब लोग घर में चाह नहीं पीकर मलारी के हाथ का परसाद पीने जाते हैं।

—सांती के बाबू कह रहे थे कि इस बार फागुन चढ़ने के पहले ही, अगहन में काशा गनेसपुर वाले शादी करने को तैयार हैं।

सुवंशलाल चुपचाप सामने पड़ी हुई बीमा-पुस्तिका को उलटता रहा। उसकी माँ ने अपने सुबो का मुँह देख कर न जाने क्या समझा कि फूट-

फूट कर रोने लगी—बेटा रे !

—माँ ! क्यों रो रही हो ?···सब झूठी बात है। जीवन बीमा के काम में चार पैसा कमा लेता हूँ घर बैठे। यह भी लोगों को बर्दाश्त नहीं होता !

—तॅ, चाह की बात झूठ है ? मँझली ने पूछा।

—हाँ, झूठ है। सरासर झूठ !

—लेकिन, मलरिया ने तो अपने मुँह से कबूल किया है। बड़ी भाभी बोली।

मँझली ने बात में जोड़ा-पट्टी लगाई—इतना ही नहीं ! कहती थी कि रकसागाड़ी में एक आदमी की जगह में दो आदमी बैठ कर कैसे जाते ? इसलिए, सुवंशबाबू कोरियाये हुए ले गये।

सुवंश के मँझले भाई यदुवंशलाल ने आँगन में प्रवेश किया—सांती की माय ! मैं कह देता हूँ–मेरी थाली, मेरा लोटा, गिलास वगैरह अलग रखो। सभी लोटे-थालियों के साथ क्यों रखती है ? पीठ की खाल खींच लूँगा।··· आग में जलाओ कटोरी को !

गुस्से से पैर पटकता हुआ बैठक की ओर चला गया यदुबंस। बड़ा भाई रघुवंश बहुत शांत प्रकृति का आदमी है। मँझले भाई की बोली सुन कर पिछवाड़े की बगिया से आया—मइयाँ, क्या बात है ? आग में थाली-लोटा क्यों झोंकने कहता है यद्दू ?

बूढ़ी ने आँखों को पोंछते हुए कहा—जमराज दुस्मन को मेरे ही साथ दुस्मनी है। उठा नहीं ले जाता !

रघुवंश बाबू ने अपनी स्त्री से पूछा—क्यों मोरंगवाली ? क्या बात है ?

मोरंगवाली, बड़ी भौजी ने घूँघट के नीचे से जवाब दिया—जद्दूबाबू बैस्नव हैं। माँस मछली उनकी थाली में कोई क्यों परोसती है ?

—आज कहाँ से मछली आई ?

सुवंश की माँ बात पर राख डालना नहीं चाहती—मछली नहीं, मलारी !

—मलारी ?

—हाँ ! सुवो ने जीवनबीम्मा किया है उसका । इसलिए, जद्दू अपनी थाली में नहीं खाने देगा, सुवो को ।

रघुवंश बाबू ने सरलता से कहा—उसका माथा खराब है ।

—मेरा माथा खराब है ? जाकर पूछिये गरुड़ झा से, छत्री टोला के मंगना से, तेतर टोली की सामबत्ती से । क्या कहते हैं, लोग ? आप तो दिन भर गाँव में रहते नहीं, खेत में क्या सुनियेगा ? यदुवंश ने बैठक की खिड़की से आँगन की ओर जवाब दिया ।

—क्या कहते हैं लोग ? क्या है रे सुवो ?

सुवंशलाल ने कहा—मुझे क्या मालूम ? भैया को ही पूछिये ।

—काम करो तुम और पूछा जाय भैया से ? यदुवंश आँगन में आ गया। बोलो, क्या चाहते हो तुम ? काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखें ?

—काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखने की क्या बात है ? सुवंश ने साहस से काम लिया ।

शांति स्कूल से आई और हाथ की किताब सुवंश काका को देती, बोली—मलारी मास्टरनी ने दिया है । बोली कि आज पुस्तकालय बंद है । किताब लेती जा, काका को दे देना !

सुवंशलाल की अन्यमनस्कता से किताब गिर पड़ी और किताब के अन्दर का लिफाफा छिटक कर बाहर आ गया!…सुवंश बाबू को मिले । जरूरी, बहुत जरूरी, लाल स्याही से रेखांकित !

रघुवंश बाबू ने कहा—कम्पनी की चिट्ठी-पत्री, हर-हिसाब इधर-उधर न हो ! तुम्हारे जैसा भुलक्कड़ आदमी कहीं नहीं देखा ।…गड़बड़ होने पर बूझना ! पोस्टमास्टर का क्या हवाल हुआ था ? चार आने पैसे के हिसाब की गड़-बड़ी में, चार सौ रुपये दण्ड । कम्पनी का कारबार है !

सुवंश ने लिफाफे को पाकेट में रख लिया । मँझली बहू ने घड़ी की ओर देखा ।

दोनों भाई जब दरवाजे पर चले गये तो मँझली ने अपनी लड़की को डाँटते हुए कहा—तू स्कूल में पढ़ने जाती है या डाकपेन का काम सीखने ?

शान्ति को मलारी मास्टरनी कितना प्यार करती है ! बेटी कहती है ।—शांति बेटी, भूख लगी है ? जाओ घर, छुट्टी ।

सुवंशलाल ने अपने कमरे से निकलते हुए कहा—जिस स्कूल की मास्टरनी रैदास की बेटी है, उसमें पढ़ने के लिए भेजती ही क्यों हो अपनी बेटी को ?

बड़ी ने मँझली की ओर देखा—बात सच है !

मँझली तुनक कर बोली—कोई कुछ करे, हमको क्या ?...जीवनबीम्मा का सब रुपैया मलारीके पेट में जायगा । देखना, दीदी ।

—सुबो का क्या कसूर ? वह छौड़िया ही ऐसी है । जब तक छौड़ी न दे आस, तो छौड़ा क्यों जाये पास ?

सुवंश सीधे हवेली की ओर जा रहा है, अपने आँगन से निकल कर । यदुवंश ने पुकार कर कहा—दरवाजे पर मच्छड़ काटता है तुमको, क्यों ? कहाँ जा रहे हो ? गुरुमंतर लेने ?

रघुवंश बाबू ने बछिया को घास देते हुए कहा—तुम तो बेकार उसके पीछे पड़े हुए हो ?

—बेकार ? देखियेगा, एक दिन सभी चमार मिलकर सिर तोड़ेंगे, इसका । आपकी ढिलाई से ही···।

—क्या किया है सुवंश ने ? किसका घी का घड़ा उलटाया है ?

—मलारी से फँस गया है ! यदुवंश ने खोल कर कहा—अब समझे ?

—फँस गया है ?

—और यह बात छिपी रहेगी ? काझा-गनेशपुर वालों को यदि मालूम हो जाय कि चमार की बेटी से फँसा है लड़का, तुरत भड़क जायेंगे ।···रघुवंश बाबू चुपचाप सोचने लगे ।

प्यार का बाजार!

एक गाँव-समाज का सामाजिक नाटक!

लेखक : श्री प्रेमकुमार 'दीवाना'।

भूमिका!

नाटक लिखने के पहले ही मंगनीसिंह नाटक की भूमिका लिख रहा है!

···प्रेम सरोवर स्नान करि, धर नटवर को ध्यान,

दीवाना रचता अहो, नाटक एक महान!

संसार में प्रेम के नाम पर, प्यार की दुहाई देकर आजतक घनेरों नाटककारों ने अपनी लेखनी को कलंकित किया है। कलात्मक प्रेम उठ गया है, समाज से।···

कला पर प्रेम की कलई कलम मेरी चढ़ावेगी,

कलात्मक प्रेम का झंडा जगत भर में उड़ावेगी! इति शुभम्। निवेदक—दीवाना।

पात्र-परिचय :

१—पागल प्रेमी—प्रेम तत्व को ढूँढ़नेवाला एक युवक।

२—जागल प्रेमी—प्रेम में वर्षों से जगा हुआ प्रेमी। अधेड़।

३—अभागल प्रेमी—जिसकी प्रेमिका की शादी दूसरे से हो गई।

४—मूक प्रेमी }
५—हूक प्रेमी } —एक ही प्रेमिका को प्यार करनेवाले दो प्रेमी।

···पैंतीस पात्र हैं। पात्री?

दीवाना ने सबसे पहले, मलारी को पत्र लिखना आवश्यक समझा।··· मनमोहन बाबू की बहन लीला पटने में नाटक करती है। गाँव में भी स्टेज पर उतरेगी। लेकिन, दलित-नाटक-मंडली को उससे क्या लेना-देना? यदि

मलारी तैयार हो जाय तो नाटक में एक पात्री का भी समावेश कर सकता है, दीवाना।···

—प्यार का बाजार हो या नहीं हो। इस बार शामा-चकेवा तो जरूर होगा। इसी पूर्णमासी की रात को शामा-चकेवा है। तैयारी करो! मलारी कहती है लड़कियों से। अपनी उम्र की लड़कियों और सखी सहेलियों को उत्साहित कर रही है—कौन कहता है कि यह गँवार पर्व है?···इसे मानने वाली लड़की फॉरवर्ड लड़की नहीं समझी जायगी? रहने दो वह सब फॉर-वार्डी, शहर में।

—लेकिन लीलिया भी कह रही थी कि शामा-चकेवा की याद आयी थी पिछले साल पटने में। सो, सुना कि गाँव में भी दो-तीन साल से शामा-चकेवा बन्द ही कर दिया है। जयवन्ती बोली।

मलारी विहँस कर बोली—कहती थी लिलिया?

लीला पढ़ चुकी है मलारी और जयवन्ती के साथ। जयवन्ती ने तो बहुत पहले ही पढ़ना छोड़ दिया। मलारी और लीला ने एक साथ मिडल पास किया है। मलारी का तीन वर्ष मुफ्त में ही खराब हुआ। लीला कौलेज में पढ़ रही है। मलारी के जी में आया कि दौड़ कर लीला के पास जाय। लेकिन तीन-चार साल से तो भेंट-मुलाकात हुई नहीं। तिस पर, कौलेज में पढ़ती है।—सुनती हूँ कि लिलिया लड़कों की तरह केश छँटा कर आई है?

—नहीं, नहीं। जयवंती बोली, मैं अभी देख कर आ रही हूँ।···असल में जिस साल गई पटना, उसी साल शादी की बात होने लगी। वह भी कौलेज

में चक्कर लगा आया हूँ। सारे गाँव का बच्चा-बच्चा जग गया है। गाँव में पेनिक पनपना गया है मिस्टर कथा-कलक्टर! हर दरवाजे के पास कुछ मर्दों का झुंड, हर पिछवाड़े में खड़ी औरतों का गोल। सारंगी की बोली तो···।

—ओ ? तुमने ढकनकल भी लगा दिया है ? धुनफीताबन्दी हो रही है ?

सुरपति ने मुस्कुरा कर कहा—जिद्दा! मामा हर पोर्टेबल मशीन के लिए ढकनकल शब्द दे रहे हैं और टेप रेकॉर्डर के लिए—धुनफीताबन्द!

बाहर, भीड़ से किसी ने कहा—बाबू। अभी खतम मत करवाइये। हर टोले का लोग दौड़ा आ रहा है।

दूसरे ने हिम्मत करके कहा—बन्द मत करवाइये।

औरतों की टोली से सामबत्ती पीसी ने कहा—एको कुंड तो खोदाइये!

रामपखारनसिंघ को सर्दारी करने का मौका मिला—चुप! फिलिंग रिकाट में बोली चल जाई···।

ट्रिप-टि-रि-रि-रि···।

'कि पहुँचे सभी राकस! दुलारीदाय के बरदिया घाट के पास—सुन्दरि नैका ने पाँच जगह दीप जला कर पहले ही रख दिया था! इधर, धरती डोलती रही, आकाश में चाँद चाँदीके थाल जैसा नाचता रहा। उसी ताल पर, सुन्दरि नैका हवेली के पिछले दरवाजे से नाचती हुई आयी और अपनी एक झलक दिखा दी, सभी राकसों को! किलकिला उठे खुशी से एक सहस्र राकस—मानुसछोरी मोहनियाँ रे-ए-ए! आँख मारे-ए-ए!!··· खुशी से जयडम्फ बजाकर नाचने लगे एक सहस्र राकस। ताल पर एक-साथ एक सहस्त्र राकस धरती पर दाँत मारते—खचाक्। पातालपुरी में कच्छप भगवान की पीटपर दाँत बजते—खट्टक्! पानी को ऊपर आना ही होगा :

ढाक् ढक्कर-ढाक् ढक्कर···

कोड़ भैर्रा-र्रा-आ-ह ! फोड़ भैर्रा-आ-ह !!
भरी राति में खोदाय, पनियाँ छह-छह छहाय
नदिया देवो बहाय-य-य !
भोर में फेर देखबो सुन्नरि कन्ना—
हे-य-आँख मारे !
होय दाँत मार-रे-ए-ए···खचाक् !
खट्टक् !! ढाक्-ढकर, ढाक्-ढकर··
कुँह कुँकों, कुँह कुँकों !!

—कृपया पूर्णविराम ! बटन ऑफ कीजिये कथा-कलक्टर-साहब । उधर देखिये क्या हुआ ?

—कोई बेहोश हुई, शायद ।

एक औरत चिल्लाकर बोलने लगी—बाबू ! बन्द करिये । दु-तीन कम कलेजा वाली लड़की के कलेजे में डर समा गया है । बोलती है, हवेली के चारो ओर दैत्त दौड़ रहा है किलबिला कर ! इन लोगों को बरंडा पर जगह कर दीजिए !

भूमिहार टोली की एक औरत ने कहा—केयट टोली की दो-तीन छँहकबाज छौंड़ी और रैदास टोली की मलारी ! जहाँ जायँगी सब, एक-न-एक ढंग पसारेगी ही ।

—कितना बढ़िया गा रहा था ! हर जगह ढंग देख कर देह जलने लगती है ।

—बरंडा पर काहे, अराम कुर्सी पर जाकर बैठो न !

औरतों की मंडली में लड़ाई शुरू हुई । केयट टोली की बेघी फुआ और गंगोला टोली की पनबतिया ने एक ही साथ जवाब दिया—छँहकबाज छौंड़ी हर टोले में है । टोला-टोली मत करो नहीं तो आज उधार कर रख देंगे !

ब्राह्मण टोली की आनन्दीदाय बोली—काँय-काँय क्यों करती है ?

भिम्मलमामा साष्टांग दण्डवत कर धरती पर लेट गये, औरतों की टोलियों के सामने वाले बारामदे पर। हाथ जोड़े उठ खड़े हुए—हे देवियो ! दुर्गाओ ! कालियो ! करालियो। कराँतियो ! शान्तियो, कृपया शान्त हों !

—हि-हि-हि ! हा-हा-हा-हा !! दुर्, भिम्मलमामा तो हर जगह भगल पसा-रते हैं। अटर-पटर बोलते हैं। चुप चुप, नहीं तो ऐसा नाम चुनकर रख देंगे कि गाँव में मशहूर हो जाओगी। किसी को नहीं छोड़ेंगे, किसी भी टोले का क्यों न हो। चुप मलारी ! सेमियाँ !

—सुनो, शुरू हो गया। चुप। फिलिंग···!

'रातभर खोदते रहे दन्ता सर्दार के राकस ! कोड़ भैर्रा-र्रा-आ ह !

'भोर में नाचती आयी सुन्दरि नैका। देखा, एक कुंड-पानी से लाबेलाब है। कुंड के पानी में पूरनिमाँ का चाँद, सोने-चाँदी को एक साथ घोलने के लिए रुक गया थोड़ी देर—उस ताड़ की फुनगी के पास ! नाची सुन्दरि नैका—छम्म-छम्माँ-आँ ! रात भर के थके राकसों को मानो महुए के रस में मधु घोल कर पिला दिया गया ! झूम उठे—छम्म-छम्माँ !

करिके सोलहो सिंगार
गले मोतियन के हार
केशिया धरती लोटाय
चुनरी मोती बरसाय
चुन्नी-पन्नाँ बिखराय-य, छम्म-छम्माँ नाचे सुन्दरि नैका !
आँख मारे !···रे भैर्रा-आ-ह-दाँत मा रो-ओ !

'कुलबुला कर पानी के सोते परती पर दौड़े—कलकल-कलकल ! कुलकुल-कुलकुल !!···सारंगी पर एक महीन कारीगरी की रघु रामायनी ने, पानी की कुलबुलाहट को स्वर मिला। झनक तार पर लहरें आईं !

'कि देस-विदेस के किसिम-किसिम के, रंग-बिरंग के पुरइन सूरज की किरनों

के परस से खिल उठे। कुंड में सोने की मछलियाँ छहकने लगीं। जल बिनु तड़पते लोगों ने कुंड में नहा-नहा कर जलपान किया। तृप्त होकर आशीर्वाद दिया जेवार भर के पंचों ने—तोहर सब दोख माफ। देवकुमर दुलहा मिले सुन्दरि नैका को!

···रघू रामायनी की सारंगी स्पष्ट आखर बोलती है! राकसों का गीत गाते समय उसके चेहरे की ओर गौर से देखा था? लगता था, उसके पोपले मुँह में दो बड़े-बड़े दाँत उग आये हैं! अधांग से अधमरी उँगलियों की कारीगरी! 'दाँत मार रे' कहने के बाद खच्चाक्, फिर खट् की आवाज? सारंगी के काठ पर उँगली मार कर ध्वनि पैदा करता था।···पातालपुरी में कच्छप महराज की पीठ पर दाँत बजते—खट्! सारंगी के तारों पर नौ सौ घुँघरू झनकते थे—सुन्दरि नैका के नाच के साथ!!

—दाँत मारे? उसकी याद मत दिलावे कोई। देह सिहर उठती है।

—भोर में फेर देखिबो सुन्नरि कन्ना! राकसों को भी सुन्दर चीज सुन्दर ही लगती है। अहा-हा! कितनी लालसा? मानुसछोरी सुन्नरि कन्ना उनकी सर्दारिन होकर जायँगी!

—एम्माँ-आँ-आँ! तूत गाछ तले कौन खड़ा है?

—तू हमेशा ढंग पसारती है मलारी। अपने भी डरती है, दूसरों को भी डराती है। कहाँ है कोई?

—मलारी को भी कोई दन्ता राकस लुका-चोरी खेलने के लिये बुला रहा है, शायद!

—अब, कल से तुम भी पाँच कुंडा खोदाओ मलारी!

सेविया दीदी जब बोलती है तो साफ बात—यह मलारी छोंड़ी जहाँ जायगी वहाँ आगे-पीछे ऐसे ही भूत-पिशाच, देव-दानव चक्कर मारेंगे। तूत तले तो सचमुच कोई है!

—मुझे क्यों दोख देती है सेवियादी। मैं खुद डर से मरी जा रही हूँ। देखो न···।

तूत तले खड़े व्यक्ति ने टार्च जलाया।

—ए! कौन भलमानुस है? छौंड़ी सब की आँख पर लैट मार कर चक-चौंधी लगाता है?

एक लड़की ने दबी आवाज में कहा—जरूर बाबू टोली का कोई कलेजवा बाबू होगा।

—मामा ने ठीक नाम रखा है, कलेजवा बाबू!

तूत तले खड़ा आदमी बोला—इस झुंड में मलारी भी है?

—वही देखो!

—कौन है? मलारी बोली।···आवाज सुवंश की तो नहीं!

—मैं प्रेमकुमार दीवाना! बात यह है कि···।

—जो बात है सो दिन में नहीं हो सकती?

—तुम भी···याने पढ़ी लिखी होकर भी तुम थर्डक्लास गीत, महराय सुनने जाती हो?

—अकेले मैं ही पढ़ी-लिखी हूँ गाँव में? आप लोगों के मारे अब···।

सेविया दीदी ने कहा—क्या कहता है सो सुन ले पहले। रात में रास्ता रोक के जब कहने आया है तो जरूर कोई जरूरी बात होगी।

मलारी हनहनाती हुई, पगडंडी पर बढ़ गई—कल ही मैं इन्साफ करवाती हूँ, पाँच पञ्च में। क्या समझ लिया है लोगों ने?

दो कदम आगे बढ़कर, बगीचे से बाहर जाकर मलारी ने आवाज दी—

—बप्पा-आ-आ-हो!···बप्पा!

सभी औरतें खिलखिला कर हँस पड़ीं—प्रेम कुमार दीवाना तो तुरत अँधेरेमें बिला गया।—ही-ही ही! हा-हा-हा! नाम भी खूब रखा है अपना—

—परेमकु-मार दीमाना !

—ए, मलारी-ई, घोड़पाड़ा भागा। चुप रह।

—मंगनी सिंघ दीमाना रात भर सपना देखेगा—आँख मारे !

सुरपति की डायरी में कई पृष्ठों पर लाल रोशनाई से लिखी हुई पंक्तियाँ :

—आज परानपुर की पुरानी परती पर डेढ़ सौ पौधे, रोपे गये पहली बार !···अमलतास, जोजनगंधा, गुलमुहर, छोटानागपुर ग्लोरी, सेमल, आसन। तरह-तरह के पौधे !

एक पृष्ट पर कटी हुई पंक्तियाँ : आज पहली बार ताजमनीदि से बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !

लिखा गया है : पवित्र सुन्दरता की प्रतिमा का मधुर मायामय स्वर सुना !
अन्तिम पृष्ट पर रंघू रामायनी और सुन्दरि नैका गीत-कथा से सम्बन्धित बातें।···ताजमनीदि को कितना धन्यवाद दूँ बहुमूल्य प्राप्ति के लिए ?

लुत्तो हैरान है !···

···साला, क्या कहते हैं कि छोटे लोगों की बुद्धि भी छोटी। उस दिन महावीरजी का धुजा छूकर कसम खाई सबने। और, रंघू बूढ़े ने सारंगी पर रिंव-रिंव-रें-रें किया कि सब जाकर हाजिर हो गये, बालबच्चा सहित !
लुत्तो ने लक्ष्य किया है, जित्तन को एकबार नजदीक से देख लेने के बाद लोगों को न जाने क्या हो जाता है। आज सुबह से ही वह गाँव में घूम-घूम कर सुन आया है—चुपचाप।···'अहा-हा, हूअर हो गए हैं जित्तन बाबू।

हाय-हाय कैसा सुन्नर सरीर था, अब कैसा हो गये हैं ?

लुत्तो मन-ही मन कहता है—होगा क्या ? रोज, साला मुर्गा का अंडा खाता है। मछली की मूड़ी चाभता है। ब्राण्डील भी ढालता होगा। तब न ऐश करता है तजमनियाँ को हवेली में बुलाकर ! साला···।

गाँव के टोलियों में, खासकर सोलकन्ह टोली में फिर से राजनीतिक लंगी लगाने की बात सोच रहा है लुत्तो—साला ! लाज-लिहाज धोकर पी गया। दिन-दिहाड़े तजमनियाँ को हवेली में रखने लगा, अब तो !

···सारे परानपुर के लोग हहा कर उसकी हवेली पर टूटते नहीं क्यों ? हवेली के चारों ओर लुत्तो की 'जंता' हाथ में लोहा-लक्कड़, ईंट-पत्थर, आसा-सोटा लेकर चिल्ला रही है। लुत्तो हुकुम देता है—पकड़ लाओ साले जित्तन को। हम लाल दगनी से दागेगा।···दागेगा !!

—रे बंगटा ! अभी हवेलीवाला सिपाही पकड़कर पीठ दागेगा। भैंस कहाँ है तेरी ? परती पर बगिया लगाया है कि आफत है ? जल्दी दौड़ के जा, नहीं तो पीठ दागेगा ! लुत्तो की स्त्री अपने बंगटा को पुकार कर कह रही है, अवेर में।

लुत्तो आज पहली बार दिन में सो गया, अलसा कर। कितना बढ़िया सपना था !

लुत्तो ने पुकार कर कहा—ए, बिटैलीवाली। तुम्हारी यह आदत बहुत बुरी है। पीठ दागेगा लवेज कहाँ से सीखी है ? कौन साला दाग सकता है ? ···रे बँगटा ! आज से तू भैंस खुल्ला रख। देखें तो कौन क्या कर लेता है ?

बिटैलीवाली आजकल अपने पति लुत्तो से दूर-दूर रहती है। छोटी छोटी बात पर तमक कर–माँ-बाप लगाकर गाली देता है ! ···कौन ठिकाना ? रोशन बिस्वाँ और गरुड़झा के साथ नट्टिन टोली जाने लगा है। कल, दिन में पेट दर्द का बहाना बनाकर रूठी सोई पड़ी रही बिटैलीवाली। लुत्तो पूछने भी न गया ! रात में, आँखें तरेर कर कहा लुत्तो ने—तुम क्या जानो कि मैं किस लिए नट्टिन टोली जाता हूँ ? राजनेति की बात तुम क्या जानो ?

खबरदार ! मैं कहाँ जाता हूँ, नहीं जाता हूँ, क्या करता हूँ, यह सब पूछना है तो सीधे नैहर का रास्ता नापो।…तुम्हारे मगज में भगवान ने उतनी बुद्धि नहीं दी है। हाँ-हाँ, चली जाओ। बड़ा नैहर का गुमान दिखाती है, तो चली जा। लेकिन, याद रखो। यदि किसी दिन हम मिनिस्टर हुए, और भाई-बापको लेकर कभी आओगी तो हमारा चपरासी तुमको अन्दर आने ही नहीं देगा !

बिठैलीवाली डर से चुप हो गई।

लुत्तो को अब किसी पर विश्वास नहीं।…बीरभद्दर भी सुथनी आदमी है ! किसी से कुछ नहीं होगा। लुत्तो अकेला ही सब कुछ करेगा। ग्राम-पंचायत का चुनाव सामने है। यदि यही हालत रही तो जित्तन मुखिया हो जायगा, दिन-दिखाड़े। नहीं, इस तरह काम नहीं चलेगा।…

—जै हिन्द।

—कौन ? बालगोबिन ! आओ। मैं अभी तुम्हारे घर की ओर जा रहा था। …क्या लीडरी करते हो जी ? अपनी जाति की औरतों पर भी तुम्हारा कोई परभाव नहीं। कोई परवाह ही नहीं करती है ? कोई भैलू नहीं तुम्हारा ? एक साथ परभाव, परवाह और भैलू वाली बात ने बालगोबिन के मुँह का थूक सुखा दिया। मुँह चटपटाकर वह बोला—सब टोले का यही हाल है।

—लेकिन, तुम्हारे टोल की मलारी तो जित्तन पर फिदा है। जित्तन पर ही क्यों, बाभन, रजपूत और भूमिहार टोली के लड़कों से जाकर पूछो ! सबको लेटर पर लेटर लिखती है। उसको सँभालो पहले। प्रेमकुमार दीवाना जी से पूछो जरा…।

बालगोबिन को लुत्तो की बात बुरी लगती है। कोई भी बात हो, औरतों पर बात फेंक देता है। पहले अपने टोले की लड़कियों को छान-पगहा लगावे। बालगोबिन बोला—उसके बाप को कहिये।

—तब, कर चुके तुम लीडरी। बाप की बात बड़ी या लीडर की ? बोलो ? जवाब दो, किसकी बात का ज्यादे पोजीशन है ? इसीलिए जब कुछ कहते

हैं तो कहते हो कि लुत्तो बाबू कूट करते हैं हमेशा !

बालगोबिन को कबूल करना पड़ा—लीडर की बात बड़ी !

हर टोले के लीडर को बुलाया है लुत्तो ने।···अरजंटी मिटिंग है।

केयट टोली का इञ्चार्ज गोधनलाल ने कुर्ता खोलकर उतारते हुए कहा—ले लीजिये इन्चारजी। नहीं करेंगे इन्चारजी।···किसको समझावें। बड़े बूढ़े तो और भी बेकूफी करते हैं। रात में रोकता रह गया कि मत जाओ कोई ! लेकिन···।

—आज, अभी से सब रसोई-पानी बनाकर तैयार हैं। घर घर। फिर जायेंगे सभी। गंगोला टोली का कार्यकर्ता बोला।

—सभी कहते हैं, नाच-तमाशा, गीत-भजन सुनने जाने में क्या हरज है ?

लुत्तो ने वीरभद्र की ओर देखा—देखिये, कितना कठिन काम है सोल-कन्ह लोगों का संगटन करना ! गैर-सोलकन्ह टोली के तीन चार व्यक्ति विशेष निमंत्रण पर उपस्थित हैं—अरजंटी मिटिंग में। वीरभद्र बाबू, रोशन बिस्वाँ, गरुड़धुज झा और प्रेमकुमार दीवाना ! दीवाना बोला—जब तक सोलकन्ह-नाटक-मंडली नहीं बनाते, लोगोंको समझाना मुश्किल है।

लुत्तो ने दीवाना की उलझाई बात को मानो सुलझाते हुए कहा—सब कोई जरा गौर से सुनिये। बात यह है कि ग्राम पंचायत का चुनाव होनेवाला है। बबुआन टोलीवाले तो हम लोगों से ज्यादा नहीं हैं, मैजरौटी में। ग्राम पंचायत की मुखियागिरी, सोलकन्ह लोगों की रखी हुई है। यहाँ बबुआन टोली के भी कई बाबू बैठे हैं, किसी से छिपा कर नहीं कहता कोई बात ! इनके मुँह पर कहता हूँ कि हम लोग अब इन लोगों को रास पकड़ कर चलावेंगे।···

गरुड़धुज झा ने खैनी थूकते हुए, पत्थर का दाँत चमकाया—बात तो ठीक कहते हो, लुत्तो बाबू। लेकिन, मुखियागिरी करेंगे बबुआन टोलीवाले ही।

—हरगिज नहीं।

—तुम देख लेना ! रात में ही तो देखा, रघू बूढ़े की सारंगी की बोली पर लोग इस तरह टूटे मानो परसाद बँट रहा है। दुश्मनी साधने के लिये आदमी सब कुछ कर सकता है। यदि वह थाना में पकड़ कर चालान कर देता कि चोरी या डकैती किया है, तब मालूम होता गीत सुनने का मजा !

—रघू बूढ़े को बैकाट किया जाय पहले ! एक सोलकन्ह लीडर ने उत्तेजित होकर कहा—सोलकन्ह होकर वह हमारी बन्दिश से बाहर कैसे जा सकता है ? लुत्तो अपनी मिटिंग में किसी दूसरे को बोलने का मौका नहीं देना चाहता, कभी। लेकिन, गरुड़धुज झा को उसने कहा—और जो कुछ बोलना है, बोल लीजिये आप पहले।

—बोलना क्या है ? आज फिर देख लेना। दो घंटे के बाद ही। ज्यों ही सारंगी कुँकवाई कि···।

—हरगिज नहीं। हरगिज नहीं !! लुत्तो ताव में आ गया—झाजी ! देख लीजियेगा आप भी आज रात, बीच चौबटिया पर खड़ा होकर। एक चेंगड़ा भी नहीं जायगा। लुत्तो ने अपनी सोलकन्ह समिति के सदस्यों की ओर मुड़ कर कहा—क्यों जी ? बोलते क्यों नहीं तुम लोग ?···जायगा एक चेंगड़ा भी ?

समिति में सन्नाटा छा गया। तब, लुत्तो ने फिर समझाना शुरू किया—सर्वे के समय इस संगठन का मीठा फल हम चख चुके हैं और चखनेवाले हैं। इस संगठन में जिन लोगों ने थोड़ा भी लामकाफ किया, कांग्रेस छोड़ कर सोसलिस्ट में गये, मिली जमीन उन्हें ? देखा ?

बालगोबिन ने कहा—जरा हमको फुर्सत दीजिये सभी पंच। हमारे टोले में न जाने क्यों बड़ा जोरावर झगड़ा शुरू हुआ है। सुनिये···।

सभी ने कान लगाकर सुना—हाँ। रैदास टोली में ही है यह झगड़ा !

—मलारी की आवाज है !

दीवाना ने कहा—लड़की बर्बाद हो गई। थी खूब चान्सवाली, लेकिन !

बालगोबिन की स्त्री, मलारी के पड़ोस की सुखनी मौसी के यहाँ कड़ाही माँगने गई—सुन्नरि नैका सुनने के लिये जाती हो क्या ? अब तो अपने टोले में ही सुन्नरि नैका की लीला होगी। देखना।

बालगोबिन की स्त्री से चमार टोली की सभी औरतें डरती हैं। बिना गंदी बात निकाले वह कुछ बोल ही नहीं सकती। सुखनी मौसी बोली—लीला कहाँ होगी, तुम्हारे मचान के पास ?

—मेरे मचान के पास क्यों ! तुम्हारे पड़ोस में ही होगी लीला। तुमको नहीं मालूम ? अरे ! बगल में ही चुह-चुह कर हिन्नूचागरमागरम पीते हैं लोग। तुमको एक भी कुलफी नहीं मिली क्या ?

सुखनी मौसी ने कुछ नहीं समझा। बालगोबिन की स्त्री अभी-अभी कामेसर की दुकान गई थी, नून लाने के लिये। दुकान में गरमागरम चाह की बात चल रही थी,···गरमागरम !

मलारी ने बालगोबिन की स्त्री की धारवाली बोली को परख लिया। वह मन-ही-मन कछमछा कर रह गई। मलारी की माँ अब कैसे चुप रहे ? सुखनी मौसी के बगल में, पड़ोस में तो उसी की झोपड़ी है !—बगल में कौन चाह की दुकान है, यहाँ ? क्या बकती है ?

कड़ाही लेकर सुखनी मौसी के आँगन से निकलती हुई बोली बालगोबिन की बहू—खाली चाह नहीं, हिन्नूचागरमागरम !

मलारी की माँ को बालगोबिन की बहू की बात में मांस की गन्ध लगी, मानो। इस टोली में वही सबसे गई गुजरी है, क्या ? उसकी बेटी को कल ही पचास रुपये मिले हैं, मुमहरा के। बालगोबिन को जब कोई कांगरेसी बात समझ में नहीं आती है तो वह भी दौड़ कर मलारी के पास आता है—कागज पढ़वाने। और उसकी बहू कमर में साड़ी लपेट कर झगड़ा का बहाना ढूँढ़ती है ? आँगन से निकल कर बोली मलारी की माँ—ए !

बालगोबिन नहीं है घर में क्या ?

—नहीं है घर में। मिटिन में गया है। बालगोबिन की स्त्री अपनी झोपड़ी की ओर जाती हुई बोली—मैं बकती हूँ तो अपनी मास्टरनी बेटी से कहो न, हाथ में बेंत लेकर आयगी मारने।···अब तो शहर की हवा खा आई है।

मलारी की माँ के समझ में नहीं आई बात। बात की छोर पकड़ने के लिये उसने मलारी से कहा—क्या है री मलरिया ? क्या कहती है बालगोबिन की बहू, जरा बूझ तो ! मलारी इङ्गलिश-टीचर खोलकर 'वह मेमना मेरा है' रट रही थी। बोली—मैया ! उस दिन मैं एक टैन से शहर अररिया-कोठ गई थी। जीवन बीमा करवाई हूँ न ! सुवंश बाबू बीमा कम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोठ अस्पताल की डाक्टरनी से जाँच करवा कर तब जीवन बीमा होगा। इसलिए······।

मलारी की माँ ने पूछा—किसके साथ गई थी ?

मलारी का बाप महीचन दारू पीकर लौटा—साला ! कलाली में हिन्नू चा गरमागरम सुनते-सुनते मिजाज गरम हो गया। कहाँ, मलारी की माँ ? कहाँ है मलारी ?

मलारी का मुँह पीला पड़ गया ! अब, तीन दिन वह क्या पढ़ाने जा सकेगी ? हल्दी और चूना गरम करके तैयार रखे। मलारी थर-थर काँपने लगी !···बप्पाका हाथ तो ढोल बजाया हुआ हाथ है।

मलारी की माँ, तब तक एक चाँटा जड़ चुकी थी मलारी के गाल पर—मैं बूढ़ी हो गई, लेकिन आज तक टीशन के बाजार पर भी बिना किसी को संग लिये नहीं गई। और तू मास्टरनी होते ही उड़ने लगी ?···बाप को जवाब दो जाकर !

—कहाँ रमदेवा ? कहाँ है तुम्हारी माँ ? बुलाओ सभी को। इधर चोट पर लाओ, अभी।

मलारी की माँ को हठात् अपनी बेटी पर दया उमड़ आई, गला दाब कर बोली—बोल, अब क्या जवाब दोगी बाप को ?

—क्या कहते हो मलारी की माँ को ? क्या हुआ ?

—झोपड़ी के अन्दर से पूछती है कि क्या हुआ ? बाहर निकल जरा, दोनों को अभी हिन्नूचा पिलाता हूँ, गरमागरम।

मलारी की माँ झोपड़ीसे बाहर निकल कर बोली—तुम बड़ा अबूझ हो। बे-बात की बात…।

—बे-बात की बात ? लगाऊँगा अभी ऐसा लात कि… !

—धीरे-धीरे बोल नहीं सकते ?

—क्यों गई थी अररिया कोठ ? पूछ, अपनी बेटी से। किसके हुकुम से गई थी ? किसके साथ गई थी, पूछ !

—सरकारी काम से गई थी। सरकारी नौकरी करती है, सरकारी हुकुम नहीं मानेगी ? गाँव के लोगों का कलेजा जलता है। बे-बात की बात नहीं बोलेंगे, तो कलेजा ठंडा कैसे होगा ?

बालगोबिन अरजन्टी मिटिंग छोड़ कर दौड़ा आया है—क्या है महीचन ? मलारी की माँ ! तुम लोगों के चलते मेरी मेम्बरी मारी जायगी, देखता हूँ।

महीचन ने, नशे में मलारी की माँ की आँख के इशारे का कोई मतलब नहीं समझा। मलारी की माँ चुप रहने को कह रही थी। लेकिन, महीचन ने चिल्लाना शुरू किया—ए ! बालगोबिन। बड़ा जात का लीडर बने हो ! दूसरी जात के लोग इज्जत खराब कर रहे हैं…।

—दूसरी जाति के लोगों को दोख मत दो ! बालगोबिन आज साफ-साफ कह देगा—कहाँ है मलारी ? सामने आकर सवाल का जवाब दो !

टोले के लोग महीचन के आँगन में आकर जमा होने लगे। बजाप्ता पंचा-यत बैठ गई तुरत।…हाँ, हाँ। मार पीट, हल्ला-गुल्ला नहीं। जब मलारी

अपने माँ-बाप के कस-कब्जा में नहीं, तो जात की पंचायत को अब सोचना चाहिये उसके बारे में! महीचन बेचारे का क्या दोख ? उसने तो साफ कह दिया कि उसकी बेटी अब उसकी बात में नहीं ! पंचायत का सर्दार झलू मोची है। लेकिन वह क्या बोले, बालगोबिन के सामने ? उसने बालगोबिन पर बात फेंक दी, कंगरेसी झमेला है, यह तुम्हीं बूझो। बालगोबिन ने एक ही साथ कई सवाल किया—पहला सवाल यह है कि मलारी क्यों गई अररिया कोठ, अकेली ? दूसरी बात, गई तो गई—सुवंशलाल के साथ क्यों गई ? हिन्नूचागरमागरम क्यों पी ? दो जवाब !

मलारी की माँ ने अपनी बेटी की ओर देखा। मलारी बहुत देर से चुपचाप खड़ी, लोगों की बात सुन रही थी। ओसारे से नीचे, आँगन में गयी। पंचायत के सामने खड़ी हो गयी। क्यों डरे वह ?—मैंने जीवन बीमा करवाया है। सुवंशबाबू बीमाकम्पनी के एजेंट हैं। अररिया कोठ की डाक्टरनी के यहाँ तंदुरुस्ती की जाँच कराने गयी थी। सुवंशबाबू ने मेरा जीवन बीमा किया है···।

—क्या-क्या बोल रही है, तुम्हीं बूझो बालगोबिन। जीवन बीमा की तंदुरसती क्या है ?

—हाँ-हाँ। पहले बोलने दो क्या-क्या जवाब देती है।

—सुनोगे और क्या ? हम लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं तो क्या एकदम जानवर हैं ? इतनी-सी बात नहीं बूझेंगे ? साफ-साफ कह रही है कि सुवंसलाल ने उसका बीमा उठा लिया है जैसे तजमनियाँ का बीमा जित्तन···।

—चुप रहो ! सभी कोई लीडरी मत करो। सवाल उससे किया है, जवाब देते हो तुम लोग।···अच्छी बात। तुमने सुवंशलाल को जिन्गी का बीमा क्यों दिया ? इस बात का जवाब दो।

—पहले, अपने सभापति से जाकर जीवन बीमा का मतलब समझ आओ। सुवंशलाल ने गाँव में बहुत लोगों का बीमा किया है। स्कूल की सभी मास्ट-

—लुत्तो बाबू कह रहे थे कि लेटरबक्स में सबके नाम चिट्ठी डालती है। ऐसे में सरकारी नौकरी नहीं रहेगी, सो जान लो ! हाँ !

जातिवालों ने एक स्वर से कहा—मलारी की माँ जोर बात बोलती है।

मलारी की माँ अब सचमुच में जोर-जोर से बोलने लगी—मेरी बेटी पर अकलंग लगाने के पहले अपना-अपना मुँह देख लो। क्योंकि, बात जब उकट रहे हो तो मैं भी जानती हूँ उकटना !···पहले बालगोबिन यह जवाब दे कि जब बालगोबिन घर में नहीं रहता है तो लुत्तो आकर उसके आँगन में, कभी झोपड़ी के अन्दर, घंटा-पर-घंटा क्यों बैठा रहता है ? उस समय जब कोई उसके आँगन में जाता है तो उसकी बहू क्यों झगड़ा करने पर उतारू हो जाती है ? और···।

—ए, ए ! मलारी की माँ ! चुप रहो। चुप रहती है या लगाऊँ लात ?

महीचन ने नशे में झूमते हुए कहा—कहाँ रमदेवा ?

···कुँहुँ-ऊँ ! हवेली की ओर से सारंगी की आवाज आई ! मलारी का ध्यान भंग हुआ। वह झोपड़ी के अन्दर जाने लगी। बालगोबिन ने मलारी को रोका—सुन लो मलारी ! सभी औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे—सुन लें। आज हवेली में नैका की कथा सुनने कोई नहीं जायगा। सुन लो। मिटिंग में पास हुआ है, अभी !

मलारी झोपड़ी के अन्दर चली गई। मिटिंग में पास हुई बात सुनकर सभी सोच में पड़ गये।···यह क्यों पास हुआ रे दैव ? बालगोबिन ने समझाने के लिए भूमिका तैयार की। मलारी झोपड़ी से निकली—हाथ में डंटा लेकर। उसने साड़ी के खूँट को कमर में बाँध लिया था। बाहर आकर बोली—गाँव में अठारह पार्टी है और रोज अठारह किसिम का प्रस्ताव पास होता है। हमारे स्कूल में भी प्रस्ताव पास हुआ है। आज हेडमिस्ट्रेस ने नोटिस दिया है, गर्ल गाइड की लड़कियाँ, रात में हवेली में तैनात रहेंगी। मैं कैसे न जाऊँ ? वही सुनो, सीटी बजा रही है। मेरी ड्युटी है !

—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !

मलारी ने कमर में खोंसी सीटी निकाल कर जवाब दिया—टु-टु-टू-ऊ-ऊ !!

रैदास टोली के नर-नारियों ने हाथ में लाठी लेकर सीटी फूँकते देखा मलारी को तो उन्हें दुलारीदाय की याद आ गई।···चेहरे की तमतमाहट देखते हो ? मुँह कैसा बदल गया !

मलारी ने आँगन से निकलने के पहले कहा—रात में गाँव के कुछ बाबुओं ने हर टोले में कुछ हरकत की है। आज गर्लगाइड की ड्यूटी रहेगी। न झगड़ा, न हल्ला-गुल्ला और न रास्ते में भूत का डर ! बालगोविन अवाक होकर देखता रहा ! उसकी स्त्री ने उठते हुए कहा—सीट्टीबाजी सुन लिया न, सबने अपने-अपने कान से ?···मैं कहती थी न, कोई सीटी बजाता है रोज।···जौवन बीमावाली जो-जो न सुनावे !

मलारी की मा अपनी बेटी को अकेले कैसे जाने देगी ? वह भी चल देती है।

'···ओ-ओ-ओ-मानुस छोरी मोहनियाँ-आँ-आँ पीरीतियो जनि तोड़-ए-ए ! रघ्घू रामायनी के गीत की कड़ी मड़राने लगी। टूटी, अधूरी, पूरी कड़ी—···मोहनियाँ ! पीरीतियो···!!

बालगोविन ने देखा, उसकी बहू भी जाने को तैयार है। कह रही है, जो कानून पास होगा, सभी के लिये। नहीं तो, किसी के लिये भी नहीं। दो जनि जा रही हैं तो हम लोग क्यों नहीं जायँ !

बालगोविन ने कहा—इस तरह सीट्टीबाजी करने से नौकरी नहीं रहेगी। सुन लो महीचन ! गाँव की बंदिश, जाति की बंदिश पहले तुम्हारे घर से ही टूट रही है।···महीचन का कुत्ता अचानक भूँकने लगता है।

रात में बोलकन्ह टोले की हर टोली में, सीटी की आवाज सुनकर ड्युटी पर दौड़ने वाली लड़कियों ने जाति की बन्दिश को तोड़ा ! केयट टोली, गंगोला

टोली और खवास टोली की लड़कियों का नाम दर्ज कर लिया है, लुत्तो ने! लुत्तो गर्ल स्कूल की मास्टरनियों को भी राजनैतिक लगी लगायगा क्या ?

छित्तन बाबू के गुहाल में कभी इतना मवेशी भी नहीं जमा हुआ होगा। आज सर्वे कचहरी में ज्यादा भीड़ है। दुलारीदाय जमावाली नत्थी में जित्तन बाबू बयान देने आ रहे हैं। तीन कुंड का दावेदार समसुद्दीन मियाँ खरैहिया के जमील बाबू मुख्तार से मिसिल बनवा कर ले आया है। दो कुंड पर केयट टोली के सुच्चितलाल ने दावा किया है। नकवजना सूचितलाल! ...सारे परानपुर में पाँच सुच्चितलाल हैं। केयट टोली का नकवजना सुच्चितलाल अपने को सौ कानूनची का एक कानूनची समझता है। लल्लू बाबू या अनिल बाबू वकीलों से क्या पूछने जायगा, वह। उसने जिरह करने के लिये ऐसा-ऐसा चुनिन्दा सवाल—सँमझें! ऐंसाँ चुनिन्दाँ जिँरह।

आज कचहरी की भीड़ में रह-रह कर सुचितलाल की पतली आवाज कूक उठती है। पान की दुकान पर, चाय वाले के मचान पर—हर जगह, हर किस्म के लोगों से सुचित लाल अपनी कानूनी बुद्धि की बात सुनाता है—अँभीं देंख लींजियेंगाँ!

—आ गया! जेंटुलमैन साहब आ गया। गरुड़धुज झा ने चाय की दुकान पर बैठे लोगों की ओर देखकर कहा—आज तो जमीन वालों से तमाशबीनों की ही जमात बड़ी है!

रोशन बिस्वाँ ने जीभ से ओठ चाटते हुए कहा—देखो-देखो लुत्तो। गिरगिट को! कचहरी में एकदम सुदेशी डिजैन में आया है, धोती, कुर्ता,

चादर पहन-ओढ़कर।

लुत्तो ने कहा—टहलने के समय जो ट्रेटमार्क पोशाक पहन कर निकलता है, उसमें आता तो आज कचहरीमें मजा आ जाता !

पेड़ों के नीचे बैठे लोग उठकर कचहरी घर की ओर जाने लगे—जित्तन बाबू आ गये ! मीर समसुद्दीन और सुचितलाल ने माचिश की एक ही काठी में बीड़ी सुलगा कर बारी-बारी से धुँआँ फेका—सुचितलाल मड़र ! पेशकार को पान-सुपाड़ी खाने के लिये कुछ देकर, पहले तुम अपनी नत्थी ही ऊपर करवाओ।

सुचितलाल पुराना कचहरिया नहीं, लेकिन पुराने मुकदमाबाजोंऔर माम-लतगीरों के साथ वह रह चुका है। उसकी बोली महीन है तो क्या हुआ ? गरुड़धुज झा भी तो लम्बा है। रोशन बिस्वाँ काला है। सुचितलाल आज कचहरी में तमाशा लगा देगा। देखने-सुननेवाले भी याद रखेंगे कि गाँव में कभी सर्वे की कचहरी लगी थी। उसने इशारे से मीर समसुद्दीन को कहा—वह काम हो चुका है। पतली आवाज को मद्धिम करने पर भी उसकी बोली गनगनाई—तँमाँशाँ लँगाँ देंगें। जराँ फुँकाँर तों होंने दींजियें।

गरुड़धुज झा ने हँसते हुए दूर से बात फेंकी—अरे सुचितलाल मड़र, भोज में कुंड की मछली एक मन ऊपर करवाओगे तो ?

—अँकबाँल आँप लोंगों कां। साँलाँ एँक मँन क्याँ, एँकदँम फिरिं-ईं-ईं। जितनी मंछलीं चाहें···।

—कहाँ-आ-आ-रूदल साह बनियाँ-आँ-आँ ! रूदल साह बनियाँ, हा-जि-र-हैय !

—हाजिर है, हाजिर है। जरा सबुर करिये, लघुसंका करने गया है।

—कहाँ सुचितलाल मड़र दावेदार, जितेन्द्रनाथ···।

वटवृक्ष के नीचे, पीपल के पेड़ोंके पास जमी हुई चौकड़ियाँ टूटीं। लोग बिखरे। कचहरी घर की ओर चले।

आज हाकिम का रुख एकदम बदला हुआ है !

—चपरासी ! बेकार लोगों को अन्दर से निकालो। मछलीहट्टा बना देता है। हाकिम साहब का दम घुट रहा है, मानो। रह-रह कर जित्तन बाबू की ओर नजर फेंक कर देख लेते हैं, हाकिम साहब।

पेशकार साहब कागज पर लिखते हुए पूछ रहे हैं—नाम? बाप का नाम? उम्र ?

कचहरी-घर शान्त है।

लुत्तो फिसफिसा कर समसुद्दीन के कान में कुछ कह रहा है। भिम्मल मामा चुपचाप खड़े हैं। मुन्शी जलधारीलाल दास, बस्ता के कागजों को निकाल कर छाँट रहा है। जित्तन बाबू के ओठों पर फैली मुस्कुराहट न घटती है, न बढ़ती है। हाकिम साहब बार-बार नजर फेंक कर देख लेते हैं, जितेन्द्रनाथ मिश्र को।···इस आदमी को कहीं देखा है ?

कहाँ ?···कहीं देखा जरूर है। ओ ? प्रोफेसर हालदार के बँगले पर। पटने में।···ठीक !

हाकिम ने मामलेकी सुनवाई शुरू की—दुलारीदाय के पाँच जलकरों में से तीन पर मीर समसुद्दीन का दावा है। और बाकी दो पर ?

—हँजूँर-मैंरौं-आँ आँ ! सुचितलाल की बोली कचहरी-घर में गनगना उठी।

—क्या नाम है तुम्हारा ?

—हँजूँर, बाँवूँ सुँचित्तँर लाँल मँड़ँर ! पँसँर बाँवूँ बिँचित्तँर···।

लगता है, सुचितलाल की बोली कण्ठ के बदले नाक से निकल रही है। बबुआन टोली के लड़के जापानी-पोंपी कहते हैं उसको। अमीन साहब ने पर्चे पर लिखा है—सुचितलाल मड़र। ब्रेकेट में–पोंपी।···पाँच-सात सुचित लाल हैं गाँव में।

—तुम्हारा एक नाम पोंपी भी है ? हाकिम ने पूछा ।

—जीँ नँहीं !···हँजूँर उँसमें पोंपी लिखाँ हुआँ हैं ? एं ?

भीड़ में से किसी ने कहा—अब क्या ? अब तो नाम सर्वे के पाँच-पाँच रेकट में दर्ज हो गया । अब तो पोंपी ही···।

हाकिम ने जित्तन बाबू से पूछा—पाँचो जलकरों के मामले को एक साथ टेक अप करें ?

जित्तन बाबू ने गर्दन हिला कर सम्मति दी !

सुचितलाल मड़र को भारी धक्का लगा है।···पोंपी नाम सर्वेके रिकाट में चढ़ गया ? जरूर यह काम मुन्शी जलधारी ने करवाया है। सुचितलाल बार-बार जलधारीलाल दास को देखता है । जलधारीलाल दास की मुस्कुराहट ? निर्विकार मुस्कुराहट ! जिसका अर्थ सुचितलाल ने ठीक लगाया—कलम की मार है, पोंपी !···लुत्तो के कान में मीर समसुद्दीन कहता है—लुत्तो बाबू ! मामला बड़ा गड़बड़ लौक रहा है। हाकिम इतना मोलायमियत से क्यों बतिया रहे हैं जित्तन से ?

—आपका बयान !···लिखकर दीजियेगा ?

—नहीं महोदय ! मुझे विशेष कुछ नहीं अर्ज करना है ।

जितेन्द्रनाथने बयान शुरू किया—दुलारीदाय के पाँचों कुंडोंके अलग-अलग कागज हैं।···पहले, बाबू सुचितलाल मड़र ने जिन कुंडों पर तनाजा दिया है, मैं उन्हीं के बारे में बताऊँ । राज पारबंगा के मालिक ने किसी यज्ञ के उपलक्ष में मेरे पितामह को दान में दिया था । इन दोनों कुंडों में, मेरे पितामह ने लगातार दो महीने तक सहस्रों कमल की पँखुड़ियों पर रक्त-चन्दन से नवग्रह शान्ति यन्त्र लिखकर प्रवाहित किया था ! महाराजा पारबंगा ने दक्षिणा में दोनों कुंड दे दिया । कागज पेश कर दिया गया है । और मेरे पिता ने इन दोनों कुंडों का पट्टा कबूलियत मोसम्मात राजमनी के नाम बना दिया । इन दोनों कुंडों की मालकिन मोसम्मात

राजमनी की बेटी ताजमनी है ।

—हँजूँर । हँमाँरी अँरजीं सुँनियें । सँब खिलाँफ बाँत !

जित्तन बाबू रुक गए। हाकिम ने सुचितलाल मड़र को समझाया—देखोजी, सुचितलाल मड़र ! आज की तारीख सिर्फ जितेन्द्रनाथ के बयान के लिये रखी गयी है। तुम लोगों को जो कहना था, लिख कर दे चुके हो। बयान भी हो चुके हैं। फिर···

—हुँजूँर । एँक जिँरह कँरने दीजिएँ। ···हँजूँर जिरह कँरने दियां जाँय । जित्तन बाबू ने कहा—बाबू सुचितलाल मड़र को जिरह करने का मौका दिया जाय ।

—मैं पहले आपका बयान ले लूँगा, इसके बाद जिरह !

—हँजूँर । बँस एँक सँवाल शुँरू में···।

—पूछो, क्या पूछना है ?

सुचितलाल मड़र ने कठघरे में खड़े जितेन्द्रनाथ की ओर मुखातिब होकर पूछा—ताँजमँनीं आँपकीं कौंन लँगतीं हैं–एँ ?

—ताजमनी की माँ के नाम रैयती हक लिखा है, इसलिए उसकी बेटी हमारी रैयत···।

—रैंयत वाँलाँ-आँ रिश्ता नँहीं-ईं-ईं ।

···बड़ा कस कर पकड़ा है नकबजना सुचितलाल ने ! मुँह पर हवाई उड़ने लगी जितेन्द्रनाथ की। वाह रे, सुचितलाल मड़र ! एक ही सवाल में पोंपी बन्द कर दिया जित्तन का ? लुत्तो और रोशन बिस्वाँ की मुस्कुराती हुई आँखें मिलीं। बिस्वाँ ने जीभ से बार-बार ओठ चाटे।

—वीरभद्र बाबू कचहरी नहीं आये हैं। नहीं तो, देखते आज !

हाकिम साहब कागजों में उलझे हैं—मुसम्मात राजमनी गंध-र गंधर्व ?

—जी हाँ ।

लुत्तो ने मुस्कुराते हुए कहा, हाकिम से—हुजूर ! गंधरव-उंधरव कुछ नहीं, राजमनी नट्टिन को हमलोग जानते हैं।

जितेन्द्रनाथ की मुस्कुराहट कायम रही, ओठों पर—ताजमनी मेरी रक्षिता है।

—और राजमनी ?

—मेरे पिताजी के गुरुभाई की रक्षिता थी।

…एं ? क्या ? क्या कहा जित्तन ने। रच्छिता का क्या मतलब ? रच्छिता माने रखेली ?

—आँपनें ताँजमँनी काँ नँथियाँ उँताराँ थाँ-आँ-आँ ??

—हाँ-आँ ! तीसरा सवाल हाकिमको लिखा दीजिए !

मुचितलाल मड़र अचरज से मुँह फाड़ कर देखता है, देखता ही रह जाता है।…उसने बस इसी नोक्स के भरोसे दोनों कुंडों पर दावा किया था। जित्तन को ताजमनी के बारे में, बस एक ही सवाल पूछ कर चुप कर देगा। बोली ही बन्द हो जायगी जित्तन की। जवाब क्या देगा ? सो, दाल-भात की तरह कबूल कर लिया जित्तन ने ! अब वह क्या पूछेगा ?

जित्तन बाबू ने कहा—बाकी तीन कुंड हमारे कब्जे में है। गीतवास कोठी की मालकिन ने मेरे अन्नप्राशन में मुँहदिखाई दी थी, तीन जलकर, एक फलकर, एक बाँसबन, एक गोचर।

—कोठी की मालकिन आप की कौन… ? इस बार लुत्तो ने पूछा। अब समसुद्दीन के मामले की ओर बात आ रही है, लुत्तो को पूछने का हक है। वह पैरवीकार है…।

—वह मेरी माँ थी।

हाकिम ने चौंक कर देखा—माँ ? कैसी माँ ?

—महोदय। श्रोत्रिय मैथिल ब्राह्मणों में बहु-विवाह की प्रथा थी। मेरे पिता-मह को पन्द्रह उप-पत्नियाँ थीं। पिता जी ने सिर्फ दो…।

—मिसेस रोजउड आपकी सौतेली माँ थीं ?

—हाँ। श्रीमती गीता मिश्रा।

—नहीं हुजूर ! वह मेम, रखेलिन थी।

जितेन्द्रनाथ के मुखड़े पर मानो किसी ने अबीर मल दिया। आँखों के लाल डोरे स्पष्ट हो गये। किन्तु, मुस्कुराहट बनी रही ओठों पर ! हाकिम की ओर देख कर बोले—पेश किये गये कागजों में विवाह-पत्र भी है। दोनों के हस्ताक्षर से स्वीकृत दलील !···

हाकिम ने कल ही रख दी फैसले की तारीख।···सभी मुकदमों की आखिरी तारीख !!

आजकी सुबह का सूरज जरा देर करके उगा, शायद ! ···गाँव के लोग, तीन बजे रात से ही उठ कर प्रतीक्षा करते रहे। आज सर्वेकचहरी में फैसला सुनाया जायगा !

सुचितलाल के लड़के ने बहुत रोका। लेकिन, नाक की नोक पर आई छींक भला रुके—आँछी-ई !

—बँड़ाँ हँड़ाशंख हैं साँलां ! सुचितलाल ने अपने हड़ाशंख और अभागे लड़के की ठीक नाक पर थप्पड़ मारी ! लड़का चीख-चीख कर रोने लगा और सुचितलाल की घरवाली आँगन से दौड़ती आई—हाय रे दैव ! बेटा को तो मारकर बेदम कर दिया। हैत्तेरे हाथ में···मारने की और कोई जगह नहीं मिली देह में ? नाक में मार कर मेरे बेटे को भी नकबजना बनाना चाहता है !

बढ़ गया। साथ में रोशन बिस्वाँ भी है—टिड़िंग-टिड़िंग !

—यात्रा पर महाजन का मुँह देख लो। सब काम पक्का ! गरुड़धुज झा ने बात फेंकी।

बस, अब तीन चार दिनों का मेला है। सब चलाचली की बेला है। फारबिस-गंज शहर से आये हुए चाय और पानवाले अपने नौकरों को हिदायत दे रहे हैं—बकाया हिसाब की बही सामने रख देना !···चाय माँगे तो पहले मेरी ओर देखना। कुछ लोगों की नियत अच्छी नहीं। रोशन बिस्वाँ को कल हिसाब देखने दिया तो गुम हो गया। फिर, बाद में बोला—गरुड़ झा से पूछेंगे। ···पैंतीस रुपैया पानी में गया समझो !

चपरासीजी आज जयहिन्द लेते-लेते परीशान हो गये हैं। पान खाते-खाते ओठ काले पड़ गये हैं। हाकिम के मन की बात थोड़ा चपरासी भी जानता होगा ! उसके मुँह पर ही लोग तारीफ कर रहे हैं—बड़ा भला आदमी हैं चपरासीजी। वैसे तो बहुत-से चपरासी आये। लेकिन, सुभाव ? इतना अच्छा किसी चपरासी का नहीं।···भला-बुरा तो हर जगह होता है।

पेशकार साहब निकले !

पेशकार साहब परानपुर के सभी टोलों के लोगों को पहचानते हैं, अलग-अलग, नाम बनाम। आदमी को चरा कर खाने का पेशा किया है। आदमी को नहीं पहचानेंगे पेशकार साहब। बरामदे पर खड़े लोगों को झिड़की देते हैं—भीड़ क्यों लगा रहे हो, अभी से ?

—तो, इसका मतलब हुआ कि हाकिम आज देर से कचहरी में आवेंगे। मुन्शी जलधारीलाल दास आज रेशमी कुर्ता पहन कर आया है ! राम-पखारनसिंघ ने पुरानी पगड़ी पर नया रंग चढ़ाया है।

—अच्छा। और लोगों को जमीन मिलेगी। खुशी से नाचेंगे। नहीं मिलेगी तो रोयेंगे। लेकिन मुन्शीजी और सिंघको क्या मिलेगा ? तिसपर भी देखो,

खवास टोले के टेटन बूढ़े को क्या हो गया है ? लोगों की भीड़ के पास जाकर, बारी-बारी से सबको हाथ जोड़कर पाँवलागी कर रहा है । दो शब्द बोलते-बोलते आँखों से आँसू झरने लगते हैं। अजीब आदमी है, यह टेटन !

—ए ! टेटन । कहाँ से सुन आये तुम अपनी राय ? कचहरी तो अभी बैठी भी नहीं है । रो क्यों रहे हो ?

टेटन बूढ़ा आँसू पोंछ कर कहता है—यों ही। विचार हुआ कि सबसे हिल-मिल कर पाँवलागी कर लिया जाय । कहा-सुना माफ…।

—तुम कोई तीरथ करने जा रहे हो ?

—नहीं । यों ही मन में हुआ कि जरा…।

लुत्तो कड़क कर कहता है—ऐ टेटन । सट्टप ! काहे रोते हो ?

इन्हीं लोगोंके चलते लुत्तो को खवास टोली में रहने का मन नहीं करता । जाकर, सभी जात के लोगों को पाँवलागी कर रहा था ? पागल !

टेटन का बेटा भेटन बोला, समझा कर—मत कहिये कुछ । जबसे हवेली से गीत सुनकर आया है, इसकी मतिगति एकदम बदल गई है ।

—लो, मजा !

—जयदेव बाबू भी आये हैं । मकबूल भी ?

इस सर्वे में सोशलिस्ट पार्टी वाले मात खा गए ।…प्रस्ताव पास कर दिया कि पाँच सौ एकड़ तक जमीन वाले किसानों की जमीन पर किसी किस्म का दावा नही किया जाय । गाँव में पाँच सौ एकड़ वाले किसान बबुआन टोली में भी इने-गिने ही हैं। सो, हलवाहा–चरवाहा भी बहुत मुश्किल से रख सके हैं, जयदेव बाबू । कुल पन्द्रह मेम्बरों में पाँच रामनिहोरा के साथ निकले या निकाले गये । बाकी दस मेम्बरों के घरवालों ने एक दूसरे मेम्बर की जमीन पर तनाजे दिये हैं, दावे किये हैं ।…पार्टी में घरेलू झगड़ा होने लगे तो हुआ ! जयदेव बाबू हमेशा खुश रहते हैं लेकिन ।

—एमेले-टिकट के लिए लैनकिलियर हो गया जयदेव बाबू का। बेखटक टिकट मिल जायगा पार्टी का। रामनिहोराको निकाल कर निष्कंटक हो गए।

—कहाँ-आँ-आँ बरकत मियाँ! जितेन्दरनाथ मिसरा जमींदार हा-आ-आ-जिर है-य।

—लो, पहले मुसलमान टोली से ही शुरू किया?

—बिसमिल्लाह?

—कितनी जमीन पर दावा किया था?

—पाँच एकड़, तीन डिसमिल।

—जाओ। जमीन तुमको हुई।

—या अल्ला। या अल्ला...

चपरासी ने बरकत मियाँ को बाहर करते हुए कहा—अल्ला-खुदा मसजिद में जाकर करो। भीड़ मत लगाओ!

—चपरासी। पुकारो, मुसम्मात राजो!

—राजो का बेटा आया है, हजुर!

एक दस-ग्यारह साल का लड़का कटघरे में जाकर खड़ा हो जाता है। हाकिम ने पूछा—कितनी जमीन पर तनाजा दिया था तुम्हारी माँ ने? लड़के ने रटे हुए तोते की तरह कहा—एक पर्चा, तीन एकड़। दूसरा, दो एकड़।

—जाओ! जमीन मिली।

—ईमान से? लड़के ने पूछा। सभी हँस पड़े!

हाकिम साहब नाराज हुए—चपरासी, भीड़ हटाओ। जल्दी-जल्दी पुकारो!

सर्वे कचहरी में ऐसी लहर कभी नहीं आयी ! तीन साल तक रंग-विरंगे आशाओं के गुब्बारे, रेशमी डोरियों में बँधे, हवा में फूले-फूले उड़ते रहे। आज रह-रहकर गुब्बारे फटते हैं, फट्टाक् !—आछीं-इ-क् ।

—कहाँ सुचितलाल मड़र ?

—हाँजिर हैं, हाँजिर हैं ।

हाकिम ने कहा—सुनोजी सुचितलाल। मैंने जोड़ कर देखा है, तुमने पूरे तीन सौ एकड़ जमीन पर तनाजा दिया है। तुम्हें अपनी जमीन भी दो सौ एकड़ है।...गाँव के सभी जमींदारों की आधीदारी करते हो ?

सुचितलाल को छींक लग गई ! हाकिम ने फैसला सुनाया—दुलारीदाय जमा के दोनो कुंडों पर तुम्हारा दावा गलत साबित हुआ ।...डिसमिस !

बैलून की हवा निकली, मानो—सिस-सिस। सुचितलाल सुसुआने लगा—इस्स ! ...अँपील कँरेंगाँ !

—चपरासी ! जिसका फैसला हो जाय, तुरत उसको निकालो उस दरवाजे से । पुकारो, मीर समसुद्दीन ।

—हाजिर हैं, हुजूर ! किस जमा का...?

—नड़हा बाँध जमा वाली नत्थी । जमीन हुई आपको ।

—मार दिया !...नहीं, नहीं । नड़हा बाँध जमा वाली जमीन समसुद्दीन की अपनी है। घर की मुर्गी दाल बराबर । दुलारीदाय वाली जमा का क्या होता है ?

—दुलारी दाय जमा की नत्थी ? पेशकार साहब ने समसुद्दीन की ओर इस तरह देखा मानो किसी पुरानी बात की याद दिलाकर कह रहे हैं—देखा ?

—हाँ, हुजुर।

—दावा गलत साबित हुआ !

—या खुदा !

एक गुब्बारा फिर फटा—फट्टाक् !

—कहाँ खुदाबक्स मियाँ !

—जमीन मिली ।

—कहाँ चथुरी हजरा ?

—जमीन मिली ।

—कहाँ अघोरी मंडल ।

—जमीन मिली ।

—कहाँ फगुनी महतो ।

—दावा गलत साबित हुआ ।

—फट्टाक् !

फगुनी महतो ने छाती पर मुक्का मार कर कहा—हाय रे बाप !

—कहाँ··· ?

रात में दो बजे तक कचहरी में पुकार होती रही !

तीन साल से अविराम बजता हुआ नगाड़ा अचानक रुक गया । नगाड़े के ताल पर बजती हुई अजानी रागिनी बन्द हो गई ।···नाचता हुआ लट्टू निष्प्राण होकर लुढ़क गया । लुढ़क कर थिर हुए लट्टू जैसा गाँव ! आखिरी फैसला सुनाने के बाद ही हाकिमों ने कैम्प तोड़ दिया !

अब जिनको लड़ना हो, अपील करनी हो—जाय पुरनियाँ कचहरी । लड़े दीवानी !

नहीं, इस लट्टू पर फिर से डोरी लपेटने वाले लोग हैं !

—अभी क्या हुआ है ? ग्राम पंचायत का चुनाव बढ़िया हो जाय। देखो, फिर न जाना पड़ेगा पुरनियाँ, न दीवानी करने की जरूरत होगी। पंचायत का मुखिया यदि अपनी पार्टी के आदमी को चुनोगे तो, समझो कि गयी हुई जमीन फिर मिल कर रहेगी।···ग्राम-पंचायत चुनाव की तैयारी करो !

समसुद्दीन मीर कहता है—सभी मुसलमानों के दस्तखत और अँगूठे का टीप लेकर कलक्टर साहब के पास जायेंगे। साफ कहेंगे, यदि हिन्दुस्तान में नहीं रहने देना है तो साफ-साफ जवाब दे दीजिये। हमलोग पाकिस्तान चले जायेंगे।···एस० ओ० ने मुँहदेखी करके मुकदमा डिसमिस कर दिया!

—लेकिन, उन कुंडों पर तो कभी आपका कब्जा नहीं था। आपने तो जबरन ही दावा किया था !

—इससे क्या ? कितने लोग हैं जिसने सोलहो आने सही दावा किया था ? नहीं था कब्जा तो क्या हुआ ? आप लोग हजार घर हैं, हम लोग तो बस एक ही टोले में हैं। बात यह है कि···।

लुत्तो कहता है—ठीक है। यह तो पौलटीस है। जरूर दीजिये दरखास्त। साफ-साफ कहिये कलक्टर साहेब से। आपने ठीक ही सोचा है। कहिये कि हम लोग पाकिस्तान भागने के लिए मजबूर हैं। जरूर फत्तेह होगा, आपका।

—जानें खुदा !

—खुदा जो करता है, अच्छा ही करता है। बीरभद्र बाबू ने लुत्तो को समझा कर कहा—समझे लुत्तो बाबू ! समसुदिया को एक भी कुंड नहीं मिला। चलो, यह भी अच्छा हुआ।

लुत्तो ने कहा—भला, मैंने अपना काम पहले ही बना लिया था। तीन

बीघा जमीन अपने नाम से रजिस्ट्री करवाने के बाद मैंने पैरवी शुरू की थी !···डर है कि कहीं ग्राम-पंचायत के चुनाव में समसुद्दीन कुछ गड़बड़ न करे। चलिए, गड़बड़ करेगा तो सभापति जी से कह कर कांग्रेस से इस-पेल्ट करवा देंगे।

—देखो लुत्तो ! बहुत सोच विचार कर, बहुत माइंड खर्च करने के बाद एक जोजना तैयार किया है मैंने। एजेन्ट भी मिल गया है। यदि सिडुल से काम किया जाय तो समझो कि एक ही बार में चार शिकार !

लुत्तो दाँत निपोर कर देखता रहा। ···वीरभद्र बाबू हर बार इसी तरह पहले चुटकी बजा कर कहते हैं—मिल गया ! छका हाथ मार दिया !! लेकिन, कोई भी तीर निशाने पर नहीं लगता।—कौन एजण्ट, जरा नाम भी सुनें ?

—मनका की माय, सामबत्ती !

—हाँ, ठीक ! लुत्तो ने मन-ही-मन मान लिया, बड़ी जाति वालों का मैंड सचमुच में थोड़ा तेज होता है। आज तक उसके दिमाग में यह बात नहीं आई। लुत्तो अब उछलने लगा। दौड़कर सामबत्ती पीसी के यहाँ पँहुचने के लिए उसका पैर चुलचुलाने लगा।

श्री कुबेरसिंह ने पटने से पत्र दिया है, अपने दोस्त-भाई वीरभद्र को। ···'हुआ सवेरा' का पूरा एक पेज रिजर्व है, तुम लोगों के लिए। और भी तेज खबर भेजो। तुम लोग सिर्फ फैक्ट लिखकर भेजो। स्टोरी यहाँ बना ली जायगी। और एक काम जरूरी है। तुम्हारे गाँव में नट्टिन टोली है। उनमें से किसी एक की नंगी फोटो नहीं खिंचवा सकते ? तुम्हारे गाँव में एक हरिजन लड़की पढ़ी-लिखी है। उससे यह नहीं लिखवा सकते कि उसके साथ··· ?

दोनों काम कठिन हैं। लेकिन, करना ही होगा। फोटोवाला काम पीछे, पहले मलारी का सिट्टूल बना लिया जाय !

वीरभद्दर बाबू कांग्रेस कमिटी के लेटर-पैड पर सिड्डुल बनाने लगे। आज-कल शिवा, न जाने क्यों, कांग्रेसियों और कांग्रेस के खिलाफ बोलने लगा है। वीरभद्दर बाबू अपने छोटे भाई शिवभद्दर की मूर्खता पर दुखित रहते हैं। महामूर्ख है! इसलिए, अपने कमरे में भी फुसफुसा कर बोलना-बति-याना पड़ता है।

—लुत्तो! क्या बतलावें? हमारा शिवा इतना डोल्ट है कि क्या बतावें। विभीषण है। कल से क्या बोल रहा है, जानते हो? कहता है, जित्तन भैया बहुत भला आदमी है। नेनू की तरह मन है, उनका। दूध की तरह दिल सादा है। आप लोग उससे पार नहीं पा सकते। ···सुनो भला!

लुत्तो ने आँखें नचा कर चेतावनी दी—उस पर आँख रखिये। बड़ा डेंजरस बात है यह!

वीरभद्दर ने पैड पर सिड्डुल बनाना शुरू किया! = चिह्न लगा कर जय हिन्द, फिर = चिह्न। नीचे—दूसरे काम का सिड्डूल। नम्बर एक को गोल घेरे में डाल कर बोला—क्या लिखा जाय?

—सबसे पहले, जाना सामबत्ती के पास। सुनाना उसको देश-दुनिया, जात-धरम वगैरह का हाल-चाल। फुसलाना सामबत्ती को एक सौ रुपया देकर। भेजना उसको मलारी के पास, रोज एक बार या दो बार। जब जैसी जरूरत पड़े। फुसलाना सामबत्ती का मलारी को, दिखलाना लोभ स्कूल की हेड मिस्ट्रेसी का। दिखलाना लोभ, कांगरेस की लीडरानी बनने का···।

बिना सिड्डूल किये काम का क्या भरोसा? इस बार देखना है!

काम जल्दी हो, इसका भी उपाय है। डबल फीस! जब कचहरी में डबल फीस दाखिल करने से एक ही दिन में दस्तावेज निकास होता है तो सामबत्ती की क्या बात?

लुत्तो के उठने की देरी है। काम हुआ जाता है, अभी!

कवैयावाली जगी हुई है। सपना देख कर जग पड़ी है।

—आप लोग हवेली के देवर के पीछे क्यों लगे हैं ? सर्वे तो खतम हुआ। अपने आँगन के कमरेमें प्रवेश करते ही वीरभद्दर बाबू की मिडल पास स्त्री ने पूछा—क्या जरूरत ?

वीरभद्दर बाबू अवाक् होकर कुछ देर तक अपनी स्त्री की ओर देखते रहे। फिर बोले—देवर के लिए दिल में बड़ा दर्द है !···देखो, सभी काम में तुम लोग इण्टरफियर मत करो।

—आज नहीं लाये वह किताब ? नुनुदाय यानी वीरभद्दर बाबू की आसन्न-प्रसवा स्त्री कवैया वाली ने पूछा।

आज कल, वीरभद्दर बाबू एक अंग्रेजी सचित्र मासिक पत्रिका ले आते हैं, रात में। डिक्शनरी की मदद लेकर, चित्रों की सहायता से अपनी स्त्री को समझाते हैं—प्रायमी केस माने पहिलौंटी अवस्था में क्या-क्या नियम कानून पालना चाहिये।···दही खाने में हर्ज नहीं। विलायती बैगन खूब खाये···।

वीरभद्दर बाबू चौकी पर बैठ कर बोले—क्यों, कुछ खाने का मन डोला है ?

नुनुदाय को अपने पति की कांग्रेसी किस्म की रसिकता पसन्द नहीं। वह चिढ़ जाती है। वह, अपनी माँ की ही नहीं, चाचियों की सभी बेटियों से भी छोटी है अपने मैके में। मैके का नाम लेते ही वीरभद्दर बाबू चिढ़ कर अंग्रेजी में गाली देने लगते हैं, उसके भाई-बाप के नाम ! जेठानी को अपने आठ नौ बच्चे-बच्चियों से छुट्टी नहीं मिलती। उसके पति वीरभद्दर बाबू को तो खुद सोचना चाहिये कि ···। नुनुदाय आजकल डर के मारे सो नहीं सकती। आए हैं, बड़ा प्रेम से पूछने—कुछ खाने को मन डोला है ?

—मन डोले भी तो क्या ! फारबिसगंज के गाजीराम की दुकान से उधार लिया हुआ बासी गाजा खाने के लिए मन का हाल नहीं सुनाती किसी को।

वीरभद्दर बाबू अपनी बात को वजनी बनाने के लिए अंग्रेजी शब्द ढूँढ़ने लगे। बोले—तुम मेरी एक छोटी-सी दिल्लगी से भी टेम्पर लूज़ कर देती हो। आजादी देवी···।

—मुझे आजादी मत कहे, कोई। मेरा अपना नाम है।

—नुनुदाय नाम भी कोई नाम है ? और, कवैया वाली कह कर देहातियों की तरह पुकारना तुमको अच्छा लगता है ? कैसी बातें करती हो, आजादी देवी नाम में क्या बुराई है !

—मुझे पसन्द नहीं। आजादी देवी, जैहिन्दी देवी ! अपनी झोली में रखिये ऐसे नाम।

—क्यों ?

शादी के पहले ही, सौ नामों में से एक नाम चुन कर डायरी में नोट करके रखनेवाले बीरभद्दर बाबू को ठेस लगती है—तुम देख रही हो, गाँव में तीन आजाद हैं। परानपुर कोई छोटा गाँव नहीं, तुम्हारी नैहर कवैया की तरह। एक आजाद तो घर के बगल में ही है, सोशलिस्ट, सीताराम आजाद ! दूसरा केयट टोली का, राष्ट्रीय गीत गवैया, अजबलाल आजाद। तीसरा, बंगटप्रसाद आजाद। लेकिन, बता तो दो। एक भी लड़की नाम आजादी देवी है ? ढूढ़ कर देखो ?

—मैं पूछती हूँ कि रोज रात में खराब सपना देखने से क्या करना चाहिये ? यह उस किताब में नहीं लिखा हुआ है ?

—क्यों ?

—मैं रोज रोज एक ही सपना देखती हूँ। बड़ा डर लगता है।

—क्या ? वीरभद्दर बाबू आतंकित हुए।

—एक बूढ़ी औरत रोज आँखें तरेर कर डराती है !

—सपने में ?

—हाँ, इसीलिए कहती हूँ कि तुम लोग हवेली के देवर के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़े हुए हो ?

वीरभद्र बाबू चिढ़ कर बोले—क्यों। इसमें पीछे लगने की क्या बात है ?…रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्रान जाँहि बरु बचनो न जाँहि। वर्ड का भैलू होना चाहिये, इन्सान का। तुम नहीं जानती ? उसकी माँ ने, बाबूजी को किस तरह बेइज्जत करके, नंगाझारी करके, चोरी का चार्ज लगा कर बदनाम किया ? तीन-तीन झूठे मुकदमें किये।

—जिसका जमा बुड़ावेगा कोई, उस पर मोकदमा नहीं होगा ? नुनुदाय ने बात गड़ाई, अपने पति की देह में। वह जानती है, सब कुछ !

वीरभद्र बाबू के मन में आया कि एक फुलपावर का थप्पड़ मुँह पर लगा कर मुँह लाल कर दे। लेकिन कुछ सोच कर गम खा गये—देखो, एक तो अपनी फैमिली में कहाँ से एक डोल्ट डम्फास विभीषण पैदा हुआ है। अब तुम भी ऐसी बात करती हो ? अपने फादरइनलौ के नाम पर झूठा तोहमत लगाती हो ? कौन कहता है ? किसका जमा बुड़ाया ?

—बच्चा-बच्चा जानता है, बोलता है।

—बोलने दो !

अब वीरभद्र बाबू ने मौन-सत्याग्रह की तैयारी की। कुछ नहीं बोल सकते, ऐसी जाहिल औरत से !

सुचितलाल मड़र अपनी जाति का मड़र है। गाँव वाले माने या नहीं माने, वह मड़री करने में नहीं चूकता कभी। कोई भी बात हो, उसे पंच की

दृष्टि से देखता है सुचितलाल। वह भी सोलकन्ह है, लेकिन सोलकन्हों ने ही उसके साथ दगाबाजी की।

—हाँ-हाँ। जँदि लुँत्तों नें थोंड़ीं भीं मँदद दीं हों, साँवित कँर दें कोंई!

—तो, तुम कांग्रेस का मेम्बर काहे नहीं बने? जिस दिन चौअन्नियाँ रसीद वही लेकर आये लुत्तो बाबू, तुमने लम्बे बाँस से ठेल दिया। हम सभी पार्टी का मेम्बर हैं।

—सोशलिस्ट लोगों के साथ में रहने का फल भोगो! तुमने तो अपना दावा अपनी मड़री के शान में खो दिया। यह मैं हजार बार कहूँगा।

—सोंसलिंस? सोंसलिंस क्यों, अँब हँम कौंमलिंस कें साँथ रँहेंगे ओंर कुंडा दँखल कँरकें दिंखलाँ देंगे।

—अच्छी बात!

—अँच्छीं बाँत नँहीं तो बुँरीं बाँत? अँब हँम भी झँन्डाँ लेंकें खिलाँफँत कँरेंगे।

—देखो, सुचितलाल। मकबूल समझा रहा है सुचितलाल को—यदि तुम कुण्ड दखल करने के लिए पार्टी का मेम्बर होना चाहते हो तो, घर बैठो। समझे? पार्टी की मेम्बरी मामूली चीज नहीं है।

सुचितलाल मड़र ने बार-बार ईमान-धरम खाकर कहा—धँमोंस्तीं, मेरें मँन में कुँण्ड काँ कोंई लोंभ नहीं।

मकबूल ने बात टालते हुए कहा—हठात् तुमको पार्टी की मेम्बरी का धुन क्यों सवार हुआ? इस सवाल पर हम कल की बैठक में एकजूट होकर गौर करेंगे। मकबूल के साथ चालाकी?…द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जिसने नहीं पढ़ा है, सुचितलाल उसको चकमा देकर ठग ले। मकबूल और मकबूल के साथी सभी समस्या और सवालों को काट-पीट कर परखते हैं। ऊपर से टटोल कर अटकल नहीं लगाते! प्रश्न है : सुचितलाल मड़र हठात् कम्युनिस्ट

पार्टी का सदस्य क्यों होना चाहता है ?

बैठक से एक दिन पूर्व ही, बजरिए गश्ती-चिट्ठी के, मकबूल ने इस प्रश्न को चारो-पाँचों कौमरेडों के सामने पेश किया। बैठक के दिन सभी इस महत्वपूर्ण सवाल पर सोच कर गौर करेंगे !

—मुझे तो इस बात में हृदय परिवर्तन के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते हैं। और, यदि मेरा अध्ययन और अनुमान सच हो, तो सुचितलाल मड़र को पार्टी प्लेज देना हमारे उसूलों के खिलाफ होगा। रंगलाल गुरुजी ने बैठक में अपनी राय जाहिर की। रंगलाल गुरुजी ने पन्द्रह साल तक विभिन्न खानगी प्रायमरी स्कूलों में गुरुवाई की है। उसको गौरव है—फलाने बाबू, चिलाने सिंह और अमुक वकील ने उसके चटसार में ही खल्ली पकड़ कर 'ओना-मासिधं' लिखा था!···उसके चेहरे को देखते ही लोगों के समझ में आ जाती है, यह आदमी गरीबी से बजाप्ता लड़ता रहा है, ढाल तलवार लेकर। ढाल उसकी ईमानदारी, तलवार, उसकी खरी-खोटी बोली। तीन साल पहले उसने पार्टी की मेम्बरी ग्रहण कर ली। किन्तु, अपने हथियार को नहीं छोड़ा है अब तक।···दो पैसा का वाउचर बनवाने के लिए, जगिया ग्वालिन का पैर तक पकड़ लिया रंगलाल गुरुजी ने—जगिया दाय ! पार्टी के काम में दही खर्चा हुआ है, वौचर तो देना ही होगा !

रंगलाल की बात सुन कर बाकी कौमरेडों ने एक दूसरे की ओर देखा। मकबूल ने दूसरे सदस्य से पूछा। मिडल फेल लड़के ने पिछले साल पार्टी में प्रवेश किया है। वह रंगलाल गुरुजी की तरह बात में छोआ गुड़ लपेटना नहीं जानता—सुचितलाल अपनी जाति का मड़र है। उसके कब्जे में कम-से-कम पचास-साठ घर हैं। इतने घर सिम्पथाइजर हो जायेंगे, तुरत !···

तीसरा सदस्य, शहर से आकर गाँव में बसे हुए, लोहार का लड़का है। मकबूल के बाद खाँटी साम्यवादी रहन-सहन, चाल-चलन बस उसी के व्यक्तित्व में पाया जाता है। विश्वकर्मा ने कहा—गाड़ीवान टोली में कितने सिम्पथाइजर थे ? कहाँ हैं वे ? इसीलिए तो हमलोगों की पार्टी ने यह फैसला

किया है। भेड़ियाधसान मेम्बरी नहीं। एक-एक सदस्य का पोस्माटम करके, ठोक-बजा कर मेम्बर बनाना होगा।

चौथे सदस्य ने वैधानिक दर-सवाल उपस्थित किया। काँग्रेस से आया हुआ उत्तिमचन्द कहता है—सिर्फ, कनफर्म मेम्बरों की बैठक नहीं। जरनल मीटिंग करके, पन्द्रहों-बीसों कौमरेडों को मिल कर तय करना चाहिये। और, जल्दी ही।

मकबूल ने बारी-बारी से सबकी बात सुन ली। बात सुनने के समय वह बीच में टोक-टाक नहीं करता है। चुपचाप अपनी दाढ़ी को चुटकी से नुकीला बनाता रहता है। बात, मीटिंग के बीच हो या किसी सदस्य से, पेश करना जानता है, मकबूल। किसी बात को धीरे-धीरे भूमिका बाँध कर समझाने को वह धूर्तता समझता है। बात को धमाके के साथ धड़-धड़ा कर पेश करता है वह—साथियो! मैंने इस बात ़के हर पहलू पर ़जुदा-़जुदा नुक्तेनिगाह से गौर क़िया है। अभी हमारे एक़ कॉमरेड ने रिमार्क क़िया क़ि गाड़ीवान् टोली में क़ितने सिम्पथाइजर थे! मैं क़बूल क़रता हूँ, यह हमारी और खास क़र मेरी क़रारी हार क़ा एक़ मजार है। क़िन्तु, हर बात क़े अन्दर समाजवादी सत्यक़ा क़ुछ मिक़दार होता है। उस चीज क़ो हमने पक़ड़ना सीखा है, अपनी हारों से।···सुचितलाल मड़र क़े पार्टी-प्रेम क़ो परखने में हम गलती कर सकते हैं, यह बात नहीं। मेरा मक़सद है कि पार्टी के प्रति उसक़ी सदिच्छा के समाजवादी सत्य क़ो हमें ग्रहण क़रना चाहिए।

सुचितलाल ने बीच मीटिंग में दही-चुड़ा और माल-भोग केला का भार भेज दिया। उसके नौकर ने कहा—मड़र बोले, बीच मीटिंग में जलपान पहुँचा दो जाकर। जलपान करने के पहले ही यह तय रहा कि सुचितलाल के समाजवादी सत्य को ग्रहण कर लिया जाय!

विश्वकर्मा खूब समझता है! मकबूल उसकी बात को काट कर हथौड़े की चोट दे रहा है। इसका कारण है। जनयुग में फारबिसगंज की गन्दी

सड़कों के बारे में और हरिजन क्वार्टर में जलकष्ट पर सम्पादक के नाम पत्र विश्वकर्मा ने अपने नाम से प्रकाशित करवाया है। तभी से मकबूल मन ही मन विश्वकर्मा से असन्तुष्ट रहता है। बात-बात में, बात को काटता है मकबूल, विश्वकर्मा की बात को, बस एक ही धार से—तुम शहर के नुक्तेनिगाह से देखते हो। ···शहरी मजदूरों की समस्या नहीं, खेतिहर मजदूर की समस्या है। तुम्हारा अध्ययन ऊपरी है, इत्यादि।

शाम को सुचितलाल मड़र पुस्तकालय के पठनागार में गनगना आया—सुँचितलॉल मँड़र नँहीं। आँज सें कॉमरैंड सुँचितलॉल। जिन सॉलों नें अँमीन कीं बँहीं में पॉपीं लिखायाँ हैं—सुँन लें। आँज सें सँपफासँपफी कॉमरैंड।

भिम्मल मामा ने कहा—लो! अरुणोदय हो गया साँझ ही, मुर्गे ने बाँग दी!

मकबूल जानता है, और बातें बाद में हों, कोई हर्ज नहीं। किन्तु, पार्टी के संगठन के लिए, गाँव में जनबल आवश्यक है। सुचितलाल के हाथ में जनबल है। और, यही है सुचितलाल का समाजवादी सत्य! मान लिया जाय, सुचितलाल कुण्ड दखल करने के लिए ही हमारी पार्टी में आ रहा है। तो, क्या हर्ज है? सामाजिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह हमारे साथ आ मिला है।···

नहीं, वह कुण्ड के लोभ में पड़ कर नहीं आया है। फिर भी, मकबूल का फर्ज है, उसके लिए पैरवी करके कुण्ड हासिल करवा देना!

—वॉख! वॉख!! मीत ने मकबूल की नुकीली दाढ़ीवाली सूरत देखकर भूँकना शुरू किया।

—अन्दर आइए।

—जय जनता! मकबूल के मुट्ठी-अभिवादन का उत्तर जित्तन बाबू ने हाथ जोड़ कर दिया—नमस्कार।

मकबूल की निगाह सामने खड़ी पत्थर की औरत पर गई। पत्थर की मूर्ति

के अंग-अंग से जिन्दगी टपक रही है, मानो। किन्तु, इसका समाजवादी सत्य···?

—क्या मँगाऊँ आपके लिए? चाय या कॉफी?

—काफ़ी मुझको सूट नहीं करता। नींद मर जाती है।

जित्तन बाबू के सिगरेट केस से सिगरेट लेकर सुलगाते हुए, मक़बूल ने पूछा—
—आपने अभी तक पार्टी प्लेज क्यों नहीं लिया है?

—पार्टी प्लेज? क्या करूँगा पार्टी प्लेज लेकर?

—करना क्या है? आप प्लेज लेकर घर में इसी तरह बैठे रहिये, कोई बात नहीं। आपको फील्डवर्क करने नहीं कहूँगा।

जित्तन बाबू मुस्कुराये।

—ख़ैर! प्लेज, जब आपके जी में आवे लीजियेगा। मैं आज एक महत्वपूर्ण काम से आया हूँ।

—कहिये।

—सुचितलाल मड़र को जानते हैं न? बड़ा कनसस किसान है।

—जी।

—कम-अज़-कम कनसस किसानों के लिए कनसेसन करना आपका कर्तव्य है। कुण्ड का तस्फिया कर दीजिये।

—समसुद्दीन से क्यों नाराज हैं, आप? वह भी काफी चैतन्य किसान है। उसके बारे में भी कहिये। कम से कम मुसलमान के नाते भी··· ।

मकबूल ने जित्तनबाबू की बात काट दी—मैं मुसलमान नहीं हूँ। आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं पीताम्बर झा, तख़ल्लुस मक़बूल!··· मैं नीलाम्बर झा का छोटा भाई। जितेन्द्रनाथ मुँह फाड़ कर देखते रहे, मकबूल को—पीत्तू?···तुम्हारे स्वास्थ्य में काफी परिवर्तन हुआ है। वर्जिश भी करते हो?···एण्ड हू शेब्स सच क्यूबिस्ट? गाँव के नाई फ्रेंचकट बनाना

जानते हैं क्या ?

जित्तनबाबू के उत्साह को देख कर मकबूल जरा चिंता में पड़ गया। ··· शायद दाढ़ी अच्छी नहीं कटी। कौन बनावेगा गाँव में ऐसी दाढ़ी ? मकबूल खुद कैंची और रेजर से तराशता है, लेनिन की फोटो सामने रख कर, उससे एकदम मिलाकर। फिर भी खोट ?

फिर, असल बात की ओर मुड़ने की चेष्टा की मकबूल ने—आप जनयुग में लेख क्यों नहीं लिखते ? प्रोविंसियल पार्टी के अछैवट कामरेड कह रहे थे कि जित्तनबाबू का अध्ययन···।

—आप···माफ करना, तुम शायरी उर्दू में करते हो या हिन्दी में ?

—मैं हिन्दी में कभी-कभी तुक मिलाकर कुछ सुनाता जरूर हूँ। उर्दू पढ़ना जानता हूँ। लिख नहीं सकता। जहाँ तक लिखने की बात है···।

—बाय-द-वे, तुम अँग्रेजी क्यू से तो अपनी पार्टी का नाम नहीं लिखते ?

—नहीं। मकबूल अचानक भड़का। ·· क्या समझ रहे हैं जित्तनबाबू ? ग्रेजुएट नहीं हूँ तो क्या हुआ, मैट्रिक पास करके 'आइए' में पढ़नेवाला भला क्यू से लिखेगा—भला क्यू से कौन लिखेगा ? मकबूल अप्रतिभ हो कर मिनमिनाया। जित्तनबाबू ने अति अचरज भरी मुद्रा में पूछा—क्या ? क्यूक्लसक्लान ?

—क्यू से कौन लिखेगा। इस बार मकबूल ने अपनी बात को जरा रुखाई से पेश किया।

जित्तनबाबू ने अपने को धिक्कारा मन-ही-मन। इतनी-सी आत्मीयता बर्दाश्त नहीं कर सके जो उसको सबसे पहले चाय की प्याली देनी चाहिए। जित्तन-बाबू भूल ही गए। हठात्, उठ खड़ा हुए—चाय के लिए कह दूँ।

बात उखड़ी।

मकबूल भी इसी बात का ताना-बाना जोड़ रहा है, जित्तनबाबू हमेशा ऐसी ही उखड़ी-उखड़ी बातें करते हैं, सबसे शायद ? सचमुच पागल हैं ?

लेकिन, अछैवट कॉमरेड ने कहा था कि काम का आदमी है ! काम की बात तो हुई ही नहीं अभी, कोई । नहीं, वह बात को उखड़ने नहीं देगा।

जित्तनबाबू हवेली के अन्दर से लौट आए—पाँच मिनट प्रतीक्षा का कष्ट सह्य हो ।

—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं । आप बैठिये ।

—तो, सुचितलाल मड़र कनसस किसान को मैं आपके द्वारा संवाद दे रहा हूँ । वे दोनों कुण्ड ताजमनी के हैं । मैं लेने-देनेवाला कौन होता हूँ ?

—जमींदारी झाँई मत दीजिए । यह सब कचहरी में बोलने-बतियाने के लिए रखिये । सीधी बात, कुण्ड दीजिएगा सुचितलाल को या नहीं ? हाँ-नहीं में जवाब दे दीजिए—छुट्टी ! मकबूल ने मौका पाकर चोट बैठाई-बातों पर-तड़ातड़ !!

जरा भी नहीं तिलमिलाये जितेन्द्रनाथ ।

मक़बूल ने देखा, यह आदमी पोलिटिकली काफी पोला है ।

मुस्कुरा कर बोले जितेन्द्रनाथ—नहीं !

मकबूल आश्चर्यित हुआ । उसकी नुकीली दाढ़ी के केश खड़े हो गए, मानो । उसने पुनः एक संक्षिप्त प्रश्न किया—आप कम्युनिस्ट पार्टी के सिम्पथाइजर हैं या नहीं ?

—नहीं ।

—आप जनयुग पढ़ते हैं या नहीं ?

—हाँ । माफ कीजियेगा—मैं 'हुआ सवेरा' भी पढ़ता हूँ ।

—'हुआ सवेरा' ने तब ठीक ही लिखा है, आपके बारे में ?

—हाँ ।

—ऐं ? हाँ ? मैं आपको चुनौती देता हूँ, आप पीछे पछताइएगा । सुचित-लाल तो कुण्ड दखल करके छोड़ेगा ।

—चुनौती मुझे दीजिए झाजी ! ताजमनी ने पर्दे के उस पार से कहा।

मक़बूल चौंका, यह तो एकदम बजाप्ता घर बसा कर रह रहे हैं, दोनों !

गोविन्दो ट्रे में जलपान और चाय ले आया। जित्तनबाबू ने प्यालियों में चाय ढालते हुए उत्तेजित मक़बूल से पूछा—चाय में चीनी ज्यादा डालूँ या कम ?

—मैं चाय नहीं पीता। क्या आप समझते हैं कि नाश्ता और चाय और सिगरेट पर आइडोलौजी बेचनेवालों के दल का है मक़बूल ?

मक़बूल उठ खड़ा हुआ, वह ऐसे विलासी वातावरण में रह कर अपनी द्वन्दात्मक भौतिकवादी बुद्धि को कुण्ठित नहीं करना चाहता।···संगमर्मर की औरत की बेहयाई बर्दाश्त के बाहर बढ़ गयी।

—और चूँकि आपने समाजविरोधी काम किया है, इसलिए भी आपके अन्न-जल से हमें परहेज़ करना चाहिए।

—समाजविरोधी ? जित्तनबाबू अपनी प्याली में चीनी मिलाते हुए मुस्कुराये।

—नहीं तो और क्या ? 'हुआ सवेरा' के पृष्ठ बोलते हैं, सुर्खियाँ बोलती हैं। ···आपकी यह हवेली बोलती है। आपकी नवेली···

हवेली के पुराने कमरे प्रतिध्वनित हुए—क्या खूब ! क्या खूब !!

—बॉख ! बॉख !!

—मीत !···इसको अन्दर बुला लो ताजू !

मक़बूल कमरे से बाहर चला गया···लुत्तो ठीक करता है, ठीक कर रहा है। लेकिन, मक़बूल की दुश्मनी बुरी साबित होगी। याद करेंगे !

—घर बैठे आपकी लड़ाई कैसे हो जाती है, लोगों से ? ताजमनी ने पर्दे के उस पार से ही कहा—क्या जरूरत ? कुण्ड से क्या आता है अब ?

—आज मैं फलाहार करूँगा !

ताजमनी के अंग-अंग में गुदगुदी लगी ! मालकिन माँ मुस्कुराती कहती—ताजू ! आज एक आदमी फलाहार करेगा । सुबह से गुस्सा खा-पीकर बैठा है । कुपित पित्त में फलाहार…!

ताजमनी पर्दे के उस पार से हट गई ! मीत उसके पीछे-पीछे भागा ।

सुरपति राय टेप रेकर्डर बजाकर गीतका आखर लिख रहा है !

पंचरात्रि !

पाँच रातों तक अहोरात्रि गीत कथा गाकर असाध्य रोग अधांग से मुक्ति नहीं मिले, नहीं चाहिये अस्सी वर्ष के रघू रामायनी को अब गई हुई देह ।…गुरु के ऋण से उऋण हुआ है, वह । उसका जन्म अकारथ नहीं गया ।

चार रातें, सुनने वाले ही कह सकते हैं, कैसी धड़कती हुई रातें थीं ! किन्तु पाँचवीं रात तो कथा का सुर ही बदल गया । यह क्या हुआ ?

सुन्दरि नैका का भी दिल डोल गया—दन्ता राकस पर ? खुद फँस गई प्रेम के फंद में !…महाबलशाली दन्ता, किसी देवता से क्या कम है ! देवता तो रात-दिन सेवा करवायेंगे । और, यहाँ दन्ता कहता है कि रोज पैर पखारेगा सुन्दरि नैका का ! जिसकी हिरन्नि रानी रने-वने रो रही है । जिसका प्यारा बच्चा आस लगाकर बैठा है । हाय, हाय ! सुन्दरि नैका दिल की बात कहने चली दन्ता से । लेकिन, सुन्दर नायक भी भारी गुनी आदमी । सब चलित्तर देख रहा था अपनी बहन का । अस्सी मन लोहे को बेड़ी-बाँध में जकड़ कर बाँध दिया सुन्दरि को !

सुन्दर नायक ने जाकर देखा, पाँचवाँ कुण्ड भी तैयार है। बोला—छठवाँ कुण्ड तैयार करो। शर्त में छः कुण्ड खोदने की बात है। सुन्दरि कह रही है।···एक झलक भी नहीं। जब तक छठवाँ कुण्ड नहीं तैयार करते, सुन्दरि की एक उँगली भी देखने को नहीं मिलेगी !

मोहनबान से घायल दन्ता भूल गया कि कितनी रात बाकी है। राकसों की टोली को हुक्म दिया—कोड़ भैर्रा ! राकसों ने कुण्ड की गोलाई का चिन्ह दिया ही था कि मुर्गे ने बाँग दे दी। भोर का तारा आखिरी बार झिलमिला कर लुप्त हो गया !

तब, सुन्दर नायक ने अगिया बान मार कर सभी राकसों को जला दिया। ···कुण्ड की गोलाई में खड़े एक सहस्र राकस हाथ उठाकर किलकिला उटे—ऐ-रे भैर्रा-आ-आ ! रे सर्दार–हा-हाय !!

उधर लोहाबासा घर से, बेड़ीबाँध में जकड़ी सुन्दरि नैका रो-रोकर पुकारती रही :

> एक पहर बीतल जे दुई पहरे, जे तेसरो पहर हो-ओ-
> रात कटे सुन्दरि छाती कुटे दैवा आँगन में।
> भागहु-भागहु मीता दन्ता रे, सुन् दन्ता-रे-ए,
> तोहरो हिरन्नि रानी रोई मरी बिरनाबन में।
> बेटवा तोहार रोज हुलसि रहे, बप्पा आवता रे-
> मैया लावता रे-ए, मानुसछोरी मइया के आस लगावल सुगना रे-ए !

उधर, एक सहस्र राकस हाथ उटाये अगियाबान से झुलस गए।···सेमल-बनी के सेमल के पेड़, राकसों की ही कटाई हुई कायायें हैं। हाथ उटाये, ऊपर की ओर। लाल लाल फूल, आग की लपट !

दन्ता राकस अपनी देह की आग बुझाने के लिए दुलारीदाय के कुण्ड में कूद पड़ा। भोर-भोर तक वह पुकार कर मर गया—अरी ओ-ओ-ओ मानुस-छोरी मोहनियाँ-याँ-याँ ! पीरितियो जनि तोड़े-ए-ए, हम्हूँ मरिजायबा !

सुन्दरि नैका का व्याह देवपुत्र से ही हुआ !

किन्तु ऐसा श्रापभ्रष्ट देवपुत्र, जो एक ही रात धरती पर सुख भोगने के लिए आया था।···पुरइन फूल से भरे कुण्ड में, दूसरे दिन देवपुत्र का निष्प्राण शरीर फूल कर तैरता रहा !

सुन्दरि नैका इस संसार में रह कर क्या करे ?···ओ रे मीता दन्ता ! मैं आ रही हूँ। दन्ता कुण्ड में एक वड़ी मछली कूदी—छपाक् !!

दन्ता के मरने के वाद कुण्ड के पास पहुँची हिरन्नि रानी। उसके कुछ ही क्षण पहले विधवा सुन्दरि नैका डूब मरी थी कुण्ड में। किनारे पर रख गई थी, सोने की एक कटोरी, खीर से भरी हुई ! दन्ता के वेटे के लिए।

औरत के दिल की वात, औरत नहीं परखेगी ? कलेजा कूट कर गिर पड़ी हिरन्नि रानी :

दन्ता रे दन्ता, तोरा विना धरती पे कछुओ ना सूझे
मोरा लेखे कठिन जीवनियाँ रे, सुनु दन्ता !
दन्ता रे दन्ता, कुल के निशनियाँ तोरा वेटवा नदनवाँ,
सेहो, छोड़ि केकरा पे जायब रे, सुनु दन्ता !

···मानुस छोरी मइया भी चली गई तेरी, ओ रे मेरे लाल !···रब्बू इससे आगे नहीं गा सका ! कथा के अन्त में, सभी वाल-वच्चे वाली माताओं से रब्बू ने प्रार्थना की। उसकी सफेद दाढ़ी से झर झर कर आँसू गिर रहे थे—कल रात घर-घर से खीर से भरी कटोरी उत्तर की ओर से दूसरे कुण्ड में दन्ता के टूअर वेटे के नाम चढ़ाइये। वाल-वच्चों का कल्याण होगा !

···छोटा-सा भोला-भाला राकस का वालक ! हाथी के वच्चे जैसा, हुलसता हुआ कटोरों से खीर लेकर खाता हुआ। न जाने कव का भूखा-प्यासा टूअर वच्चा ! वच्चा आदमी का हो या राकस का !···ओ री मानुसछोरी मइया-या-या !!

—जैकिट कहो या जमाहिर कोट, एक ही बात है। लुत्तो ने सामबत्ती पीसी को बात समझाते हुए तुलनात्मक उदाहरण दिया—चाहे दो सौ रुपया नकद लो या दो सौ रुपये का धान तौला लो। एक ही बात है। वीरभद्दर बाबू बादशाह आदमी हैं। लुत्तो अपने साथ जितबापन्हेड़ी की दुकान से पिपरमेंट वाला पान ले आया है। सामबत्ती पीसी पान मुँह में लेकर बोली—अच्छा! इसका जवाब, मन में बूझ विचार कर कल दूँगी। लेकिन, मेरी एक बात का जवाब दो पहले। आखिर, जित्तन के पीछे तुम लोग क्यों लगे हुए हो? सर्वे अब खतम हुआ, झगड़ा-झंझट भी खतम करो! और, जिसको तुम सिकन्नर-शा-बादशा समझते हो उसको मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ।…आ रे गरुड़ा-आ-आ तू तू!!

सामबत्ती पीसी जब अपने कुत्ते को पुकारे तो समझो कि आस-पास कहीं गरुड़ झा की बोली उसने सुनी है।

गरुड़धुज झा चौबटिया पर खड़ा होकर किसी से पूछ रहा है—इधर लुत्तो आया है? लुत्तो पर नजर पड़ी है किसी की?

लुत्तो को गरुड़धुज झा पर जरा भी विश्वास नहीं। लेकिन उसका संग करना पड़ा है। मजबूरी है!

लुत्तो ने सामबत्ती पीसी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। बोला—तुम सोलकन्ह टोली की सबसे चान्सवाली हो, इसीलिए तुम्हारे पास आया। मैं अभी चलता हूँ। सोच-समझ कर जवाब देना।…खूब पौलिसी देना मलारी को!

—ई-पी-ही-ही-ही! ई-पी-ही-ही-ही!!

इसको मैथिलाम ठहाका कहते हैं। मैथिलों की खास पहचान! कण्ठ से फटाई हुई हँसी के साथ निकलता है यह ठहाका!

गरुड़धुज झा ठहाका लगा कर सूचना देता है लुत्तो को—बड़ा अकबाली

आदमी हो, तुम लुत्तो बाबू ! मालूम है ? मकबूल भी अब बिल्कुल उलट गया है। अभी कह रहा था, लुत्तो ठीक कर रहा है। जित्तन नरक का कीड़ा है। उसको गाँव से भगाना होगा, नहीं तो सारा गाँव नरक के कीड़ों से भर जायगा !

—ठीक पहचाना है मकबूल ने। देर से ही सही, लेकिन पहचाना है।... नरक के कीड़े तो बढ़ रहे हैं गाँव में !

—हाँ, कल देखा। कौलेजिया लड़कों का एक गिरोह हवेली की ओर से खूब खुशी-खुशी आ रहा था। पता लगाना चाहिये।

—कौन-कौन था ?

—भूमिहार टोले का सुवंशलाल, कमलानन्द, प्रयागचन्द, नितिया। मैथिल टोले का अनरूध, शशभूखन, किरता। और...सोलकन्ह टोली का रधवा, सत्रूघन, मोहना। कमेसरा भी था !

—हूँ-ऊँ-ऊँ ? लुत्तो ने दाँत से ओठों को चबाते हुए कहा—देखियेगा, सभापति जी से कह कर सबको कौलेज से इसपेल्ट करवाते हैं या नहीं !

गरुड़धुज ने मुँह में खैनी तम्बाकू लेते हुए थुकथुकाया—थूः, अरे इससे क्या होता है ? जाने दो लोगों को। एक मकबूल अकेला ही काफी है। कौलेज के लड़कों की लड़कभुड़भुड़ी चार दिन भी नहीं चलेगी। मकबूल के दिमाग में काफी फौर्सिंग है। फुफुआ रहा था गेहुअन साँप की तरह ! उससे मिल कर बात करोगे तो, समझोगे !...अच्छा, मैं अभी चलता हूँ। रोशनबिस्वाँ का बेटा जरा पगला गया है। बाप से लड़ाई-झगड़ा करके अलग खाना-पीना कर रहा है।

लुत्तो सिट्टल से बाहर की बात सुन कर इतना प्रसन्न हुआ कि राह चलते नौटंगी की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा—किस गफलत की नींद में रहे पलंग पर सोय, अजी अब तो मजा सब मालूम होय। अजी, हाँ-हाँ-जी ! मालूम होय !!

सर्वे के मारे हुए, हारे हुए लोग ! उन्हें कोई नहीं पूछता, अब । सर्वे की बात कोई नहीं करते । आजकल, सिर्फ ग्राम-पंचायत की बात होती है, गाँव में ।

कहते हैं, गुड़ के गाछ ऊख को सभी मिठाइयों का बाप समझा जाता है । उसी तरह ग्राम-पंचायत भी सभी सुखों की मां है । इस पर कब्जा करो तो फिर कौन पूछता है, जमीन ? कितनी जमीन लोगे ?

दीवाना ने बिखरे टूटे और हारे हुए लोगों को सँभालने का बीड़ा उठाया है । क्योंकि लुत्तो के पास इतना समय नहीं कि वह लोगों का रोना सुनते फिरे । प्रेम की बात करे । लुत्तो और बीरभद्दर ने मिल कर दीवाना से कहा है, सोलकन्ह नाटक मण्डली तैयार करो । जल्दी !

—प्यार का बाजार ! हाँ, प्यार का बाजार का खेला होगा । सिर्फ सोलकन्ह लोगों के लिए, सोलकन्ह नौजवानों के द्वारा यह नाटक खेला जायगा ।
—अच्छा, दीमाना जी ! आपका एक नाटक तो बम्बै में भी खेला होता है, सुना । कहाँ-कहाँ गये थे आप ?

—मैं ? मैं बहुत जगह गया भाई । कलकत्ता से लेकर दिल्ली, दिल्ली से बम्बै । समझो कि अखिल भारत । सब जगह लोगों ने कहा—दीवाना जी, आप हमलोगों के देश में रह जाइये । यहीं प्यार का बाजार कराइये । लेकिन, मैंने कहा—हर्गिज नहीं । मैं गाँव का रहनेवाला आदमी हूँ । अपने गाँव में ही रहूँगा और वहीं प्यार का बाजार खेला होगा । बम्बै में पिलिम-सिनेमा वाले इतना रोकने लगे, जिद्द करने लगे ! यहाँ तक कि झोली भी मेरी छिपा कर रख दी एक हिरोइन ने । मगर भाई, दीवाना ऐसा नहीं···।

—ठीक किया आपने । अपना गाँव फिर अपना ही गाँव है । है कि नहीं ?

—अच्छा किया । आप चले आये ।···आखिर, झोली दिया या नहीं ?

—अब, गाँव में प्यार का बाजार होने दे तब तो ? बारह बखेड़िया लोगों

के बीच कोई काम होना मुश्किल है।

खाली बोतलों की तरह लोगों के दिमाग, इसमें जो कुछ भी भर दो समा जायगा ! प्रेमकुमार दीवाना ने कहा—कितना काम करूँ, अकेला ? देखो, अभी भी डाक से चिट्ठी आयी है—चार कविता, दस कहानी और करीब बारह नाटक की माँग पटने से आई है। लोहारपुर मुहल्ला से।···पटना की क्या बात ? वहाँ जब मैं गया तो स्टेशन पर एक हजार पबलिक मुझे सिर्फ देखने के लिए जमा हो गई थी।

—इस्स ! एक हजार ?

—तो, हो न तैयार ? तुम लोग सहायता दोगे न ? शुरू करें लिखना, प्यार का बाजार ?

—हाँ, हाँ, तैयार ही तैयार हैं सब ? अब तो सर्वे का भी झंझट नहीं। जरा, एक चोटिलवा पाट हमारे लिए भी लिखिएगा।

—जोकड़ का पाठ हमको दीजिएगा।···अहा-हा, सुचितलाल हम लोगों के दल से निकल गया। नहीं तो, प्यार का बाजार में वह भी कमाल दिखला देता। बिदेसिया नाच में वह जब बटोहिया बनकर आता था और—तोंहरों बँलेंमूजीं कें चिन्हियों नां जाँनियों—गाने लगता था तो सारंगी भी उसके मोकाबले में मात खा जाय।

प्रेमकुमार दीवाना ने दलित नाटक मंडली की कच्ची-बही पर नाम दर्ज करना शुरु किया। दीवाना कहता है—कलकत्ता, बम्बै के थेटर के असली भेद का पता लगाकर आया हूँ। सब एलिक्ट्रिक की चालाकी सीख आया हूँ। देखना, प्यार का बाजार कैसा जमता है !

—दीमाना जी···।

—गलत नाम मत बोलो, दीवाना जी नहीं बोल सकते ?

—दीनावाँ···नहीं-नहीं, दीवानाम···।

मलारी सोच रही है, इस दीवाना जी को क्या कहा जाय ?···

उस रात में तुम दबा कर भागे और आज फिर स्कूल से लौटते समय दीवाना को एक जरूरी बात पूछने की जरूरत हो गई। बड़ा आया है, मलारी का भला-बुरा सोचने वाला ! मलारी अपना भला-बुरा खुद सोचती है। दीवाना की आँखों में हमेशा शैतान हँसता रहता है ! मलारी का यह दुःख नया नहीं। सात वर्ष की उम्र से ही वह दुनिया के लोगों की जहरीली निगाहों को पहचानने लगी है। मलारी सच-सच बयान कर कभी लिखे तो···तो, न जाने क्या हो जाय !···

मलारी अपने बाप को दोष नहीं देती। चिड़चिड़ा है, मदकी है। लेकिन गाँव के बहुत भले लोगों से अच्छा है उसका बाप। मलारी का बाप ही क्यों, गाँव की किसी लड़की का बाप ऐसा ही मदकी और चिड़चिड़ा हो जायगा, हमेशा आदमी को हाँकते-हाँकते !···पिछली चार-पाँच रात से चौबे जी पर भूत सवार हुआ है। रोज रात में चौबे जी की बछेड़ी खो जाती है। दोपहर रात में मलारी के बाप को जगा कर पूछने आते हैं–महीचन मेरी बछेड़ी को देखा है ? कल रात मलारी के जी में आया कि पण्डित सरबजीत चौबे जी से पूछे···। क्या समझ लिया है चौबे जी ने ? उस दिन ठाकुर बाड़ी गई थी मलारी, रामलला का दर्शन करने—दूर से चौबे जी ने कहा—तुम मन्दिर की सीढ़ी पर या बरामदे पर से दर्शन कर सकती हो, मलारी ! कोई हर्ज नहीं। तुम्हारा संस्कार बदल गया है। इसके बाद चौबे जी ने इधर-उधर देखकर हाथ के इशारे से बुलाया—पगली ऐसा मौका कभी नहीं हाथ लगेगा। कहीं, कोई नहीं ! आकर चुपके से रामलला का चरण छू ले। आ ! आजा !! डरती है काहे ?···

रामलला और रामलला के पुजारी पण्डित सरबजीत चौबे को दूर से ही नमस्कार करती है, मलारी। लेकिन, मँगनीसिंह···प्रेमकुमार दीवाना की क्या दवा की जाय ? अभी-अभी डाक से एक गुमनाम चिट्ठी मिली है, मलारी को। दोहा, चौपाई वाली चिट्ठी !···

—मैं किसी के प्रेम में पागल हुआ हूँ, वर्ष भर से रात में जागल हुआ हूँ। मेरी जान, मलारी! तुम पर कुर्बान-यह प्राण। आओ, चलो! इस भेदभाव की दुनिया से दूर, बहुत दूर चल चलें हम। जहाँ मैं रहूँ, तुम रहो और कोई न रहे।···तुम सुवंशलाल से हँस-हँस कर बात करती हो और मुझको दुतकारती हो। खैर, मेरी किस्मत में यही है। मैं रस चूस कर उड़ जाने वाला भौंरा नहीं हूँ। कलात्मक-प्रेम किसे कहते हैं, यह क्या जाने सुवंशलाल? कलात्मक प्रेम करने वाला मधुकर रस चूस कर उड़ नहीं जाता। वह गुन-गुन मुन-मुन कर फूल के अधर पल्लव पर···।

शैतान! बदमाश!!

न जाने क्यों, जब से सुवंशलाल और मलारी की चायवाली कहानी उड़ी है गाँव में, मलारी को रोज पाँच-सात बार सुवंशलाल की याद आ जाती है।···सुवंशबाबू? ऐसा आदमी आजकल कहाँ मिलेगा? कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन कह नहीं सकते हैं? कई दिनों से देख रही है, मलारी। सभी नौजवानों को जानती पहचानती है।···

अररिया कोठ जाने की बदनामी? मलारी अपनी या सुवंश की सफाई देने के लिए, दाल-भात की तरह कसम पर कसम नहीं खायगी। जिसको परतीत न हो, उसकी खुशामद तो नहीं करने जायगी, मलारी? हाँ, इतनी-सी बात वह जरूर कहेगी कि पाँच छै घंटा साथ रहने पर भी, सुवंशबाबू ने कोई बेकाम की बात नहीं कही। घोड़ा गाड़ी पर, एक बार सुवंश बाबू की गोद में गिर पड़ी वह। अररिया कोठ की सड़क तो अपने गाँव की सड़क से भी गई गुजरी है। घुटने भर गड्ढों में घोड़ागाड़ी हिचकोले खाती।···सुवंशबाबू का मुँह लाल हो गया था। वे सरक कर अगली गद्दी पर बैठ गए थे।

मलारी चाहती है, सुवंशलाल के नाम के साथ उसकी बदनामी फैले। खूब जोर से! वह, अब किसी से नहीं डरती। सुवंशबाबू क्या कहना चाहते हैं? कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं? बोलो न सुवंशबाबू, मंगनीसिंह की क्या दवा की जाय? कायर ने अपना नाम नहीं लिखा है। नाम के बदले दोहा

—ढाई आखर शब्द का मैं हूँ बेचलर ब्याय, चिन्हन वाले कहत हैं, है मजनू का भाय !···

—सुव्रो रे, सुव्रो ! सुवंशलाल की बूढ़ी माँ अपनी पुतोहुओं के मुँह से सुनी हुई बात का विश्वास क्यों करे ? सुवंश उसका कोरपच्छू लड़का है। कोरपच्छू, सब से आखिरी संतान ! माँ से कुछ नहीं छिपावेगा उसका सुव्रो।

—सुव्रो ?

—क्या है माँ ? सुवंशलाल को माँ के मन की बात की झलक मिल गई, मानो। वह अपनी माँ से आँखें नहीं मिला सका।

—तुम्हारी भाभियाँ क्या कह रही है···।

—भाभियों का नाम क्यों लेती हैं मइयाँ ? मझली भाभी ओसारे के नीचे से बोली—आँगन छोड़ कर कहीं जाती हूँ तो बस एक ही बात सुनाती हैं, सभी। कोई ताना मार कर कहती है—नई देवरानी के लिए कोठरी बनवाओ, मँझली ! कोई कूट करती है—घर की भौजी रस वाली बात नहीं करे तो आदमी क्या करे ? जिस टोली में, जिस आँगन में रस मिलेगा जायेंगे।··· आज भी मैं लड़ आई हूँ छत्री टोली की संतोखीसिंह की बेटी से !

बड़ी भाभी बोली—जिस दिन से अखबार में फोटो छापी हुआ है, गाँव के लहंगड़े लड़कों ने मलारी को बाभनी समझ लिया है।···मकबूल, मनमोहन और दीनदेलवा ने तो मुसलमान हाड़ी-काछी-मोची को पहले से ही माथे पर उठा लिया था। ···अब लोग घर में चाह नहीं पीकर मलारी के हाथ का परसाद पीने जाते हैं।

—सांती के बाबू कह रहे थे कि इस बार फागुन चढ़ने के पहले ही, अगहन में फाक्षा गनेसपुर वाले शादी करने को तैयार हैं।

सुवंशलाल चुपचाप सामने पड़ी हुई बीमा-पुस्तिका को उलटता रहा। उसकी माँ ने अपने सुव्रो का मुँह देख कर न जाने क्या समझा कि फूट-

फूट कर रोने लगी—बेटा रे !

—माँ ! क्यों रो रही हो ?···सब झूठी बात है। जीवन बीमा के काम में चार पैसा कमा लेता हूँ घर बैठे। यह भी लोगों को बर्दाश्त नहीं होता !

—तँ, चाह की बात झूठ है ? मँझली ने पूछा।

—हाँ, झूठ है। सरासर झूठ !

—लेकिन, मलरिया ने तो अपने मुँह से कबूल किया है। बड़ी भाभी बोली।

मँझली ने बात में जोड़ा-पट्टी लगाई—इतना ही नहीं ! कहती थी कि रकसागाड़ी में एक आदमी की जगह में दो आदमी बैठ कर कैसे जाते ? इसलिए, सुवंशबाबू कोरियाये हुए ले गये।

सुवंश के मँझले भाई यदुवंशलाल ने आँगन में प्रवेश किया—ताँती की माय ! मैं कह देता हूँ–मेरी थाली, मेरा लोटा, गिलास वगैरह अलग रखो। सभी लोटे-थालियों के साथ क्यों रखती है ? पीठ की खाल खींच लूँगा।··· आग में जलाओ कटोरी को !

गुस्से से पैर पटकता हुआ बैठक की ओर चला गया यदुवंश। बड़ा भाई रघुवंश बहुत शांत प्रकृति का आदमी है। मँझले भाई की बोली सुन कर पिछवाड़े की बगिया से आया—मइयाँ, क्या बात है ? आग में थाली-लोटा क्यों झोंकने कहता है यद्दू ?

बूढ़ी ने आँखों को पोंछते हुए कहा—जमराज दुश्मन को मेरे ही साथ दुश्मनी है। उठा नहीं ले जाता !

रघुवंश बाबू ने अपनी स्त्री से पूछा—क्यों मोरंगवाली ? क्या बात है ?

मोरंगवाली, बड़ी भौजी ने घूँघट के नीचे से जवाब दिया—जद्दूबाबू वैस्नव हैं। माँस मछली उनकी थाली में कोई क्यों परोसती है ?

—आज कहाँ से मछली आई ?

सुवंश की माँ बात पर राख डालना नहीं चाहती—मछली नहीं, मलारी !

—मलारी ?

—हाँ ! सुबो ने जीवनबीम्मा किया है उसका। इसलिए, जद्दू अपनी थाली में नहीं खाने देगा, सुबो को।

रघुवंश बाबू ने सरलता से कहा—उसका माथा खराब है।

—मेरा माथा खराब है ? जाकर पूछिये गरुड़ झा से, छत्री टोला के मंगना से, तेतर टोली की सामबत्ती से। क्या कहते हैं, लोग ? आप तो दिन भर गाँव में रहते नहीं, खेत में क्या सुनियेगा ? यदुवंश ने बैठक की खिड़की से आँगन की ओर जवाब दिया।

—क्या कहते हैं लोग ? क्या है रे सुबो ?

सुवंशलाल ने कहा—मुझे क्या मालूम ? भैया को ही पूछिये।

—काम करो तुम और पूछा जाय भैया से ? यदुवंश आँगन में आ गया। बोलो, क्या चाहते हो तुम ? काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखें ?

—काझा गनेशपुरवालों को चिट्ठी लिखने की क्या बात है ? सुवंश ने साहस से काम लिया।

शांति स्कूल से आई और हाथ की किताब सुवंश काका को देती, बोली—मलारी मास्टरनी ने दिया है। बोली कि आज पुस्तकालय बंद है। किताब लेती जा, काका को दे देना !

सुवंशलाल की अन्यमनस्कता से किताब गिर पड़ी और किताब के अन्दर का लिफाफा छिटक कर बाहर आ गया !···सुवंश बाबू को मिले। जरूरी, बहुत जरूरी, लाल स्याही से रेखांकित !

रघुवंश बाबू ने कहा—कम्पनी की चिट्ठी-पत्री, हर-हिसाब इधर-उधर न हो ! तुम्हारे जैसा भुलक्कड़ आदमी कहीं नहीं देखा।···गड़बड़ होने पर बूझना ! पोस्टमास्टर का क्या हवाल हुआ था ! चार आने पैसे के हिसाब की गड़-बड़ी में, चार सौ रुपये दण्ड। कम्पनी का कारबार है !

सुवंश ने लिफाफे को पाकेट में रख लिया। मँझली बहू ने बड़ी की ओर देखा।

दोनों भाई जब दरवाजे पर चले गये तो मँझली ने अपनी लड़की को डाँटते हुए कहा—तू स्कूल में पढ़ने जाती है या डाकपेन का काम सीखने ?

शांन्ति को मलारी मास्टरनी कितना प्यार करती है ! बेटी कहती है।—शांति बेटी, भूख लगी है ? जाओ घर, छुट्टी।

सुवंशलाल ने अपने कमरे से निकलते हुए कहा—जिस स्कूल की मास्टरनी रैदास की बेटी है, उसमें पढ़ने के लिए भेजती ही क्यों हो अपनी बेटी को ?

बड़ी ने मँझली की ओर देखा—बात सच है !

मँझली तुनक कर बोली—कोई कुछ करे, हमको क्या ?...जीवनबीम्मा का सब रुपैया मलारीके पेट में जायगा। देखना, दीदी।

—सुबो का क्या कसूर ! वह छौड़िया ही ऐसी है। जब तक छौड़ी न दे आस, तो छौड़ा क्यों जाये पास ?

सुवंश सीधे हवेली की ओर जा रहा है, अपने आँगन से निकल कर। यदुवंश ने पुकार कर कहा—दरवाजे पर मच्छड़ काटता है तुमको, क्यों ? कहाँ जा रहे हो ? गुरुमंतर लेने ?

रघुवंश बाबू ने बछिया को घास देते हुए कहा—तुम तो बेकार उसके पीछे पड़े हुए हो ?

—बेकार ? देखियेगा, एक दिन सभी चमार मिलकर सिर तोड़ेंगे, इसका। आपकी ढिलाई से ही...।

—क्या किया है सुवंश ने ? किसका घी का घड़ा उलटाया है ?

—मलारी से फँस गया है ! यदुवंश ने खोल कर कहा—अब समझे ?

—फँस गया है ?

—और यह बात छिपी रहेगी ? काझा-गनेशपुर वालों को यदि मालूम हो जाय कि चमार की बेटी से फँसा है लड़का, तुरत भड़क जायेंगे।...रघुवंश बाबू चुपचाप सोचने लगे।

एक गाँव-समाज का सामाजिक नाटक !

लेखक : श्री प्रेमकुमार 'दीवाना'।

भूमिका !

नाटक लिखने के पहले ही मंगनीसिंह नाटक की भूमिका लिख रहा है !

···प्रेम सरोवर स्नान करि, धर नटवर को ध्यान,
दीवाना रचता अहो, नाटक एक महान !
संसार में प्रेम के नाम पर, प्यार की दुहाई देकर आजतक घनेरों नाटककारों ने अपनी लेखनी को कलंकित किया है। कलात्मक प्रेम उठ गया है, समाज से।···

कला पर प्रेम की कलई कलम मेरी चढ़ावेगी,
कलात्मक प्रेम का झंडा जगत भर में उड़ावेगी ! इति शुभम्। निवेदक—दीवाना।

पात्र-परिचय :

१—पागल प्रेमी—प्रेम तत्व को ढूँढ़नेवाला एक युवक।
२—जागल प्रेमी—प्रेम में वर्षों से जगा हुआ प्रेमी। अधेड़।
३—अभागल प्रेमी—जिसकी प्रेमिका की शादी दूसरे से हो गई।
४—मूक प्रेमी }
५—हूक प्रेमी } —एक ही प्रेमिका को प्यार करनेवाले दो प्रेमी।

···पैंतीस पात्र हैं। पात्री ?

दीवाना ने सबसे पहले, मलारी को पत्र लिखना आवश्यक समझा।··· मनमोहन बाबू की बहन लीला पटने में नाटक करती है। गाँव में भी स्टेज पर उतरेगी। लेकिन, दलित-नाटक-मंडली को उससे क्या लेना-देना ? यदि

मलारी तैयार हो जाय तो नाटक में एक पात्री का भी समावेश कर सकता है, दीवाना।···

—प्यार का बाजार हो या नहीं हो। इस बार शामा-चकेवा तो जरूर होगा। इसी पूर्णमासी की रात को शामा-चकेवा है। तैयारी करो! मलारी कहती है लड़कियों से। अपनी उम्र की लड़कियों और सखी सहेलियों को उत्साहित कर रही है—कौन कहता है कि यह गँवार पर्व है?···इसे मानने वाली लड़की फॉरवर्ड लड़की नहीं समझी जायगी? रहने दो वह सब फॉरवार्डी, शहर में।

—लेकिन लीलिया भी कह रही थी कि शामा-चकेवा की याद आयी थी पिछले साल पटने में। सो, सुना कि गाँव में भी दो-तीन साल से शामा-चकेवा बन्द ही कर दिया है। जयवन्ती बोली।

मलारी विहँस कर बोली—कहती थी लिलिया?

लीला पढ़ चुकी है मलारी और जयवन्ती के साथ। जयवन्ती ने तो बहुत पहले ही पढ़ना छोड़ दिया। मलारी और लीला ने एक साथ मिडल पास किया है। मलारी का तीन वर्ष मुफ्त में ही खराब हुआ। लीला कौलेज में पढ़ रही है। मलारी के जी में आया कि दौड़ कर लीला के पास जाय। लेकिन तीन-चार साल से तो भेंट-मुलाकात हुई नहीं। तिस पर, कौलेज में पढ़ती है।—सुनती हूँ कि लिलिया लड़कों की तरह केश छँटा कर आई है?

—नहीं, नहीं। जयवंती बोली, मैं अभी देख कर आ रही हूँ।···असल में जिस साल गई पटना, उसी साल शादी की बात होने लगी। वह भी कौलेज

मलारी बोली—आज शाम को जाओगी जयवंती, फिर ?

—चलेगी ?

—हूँ !

—चल। लिलिया बदली नहीं है। एकदम, सब आदत वैसी ही।

सेमिया भी चलेगी !

केंक्-केंक् ! क्रें-एं, क्रें-एं—क्रेंक्। केंक्-केंक् !!

शामा-चकेवा की बोली दुलारी दाय के किनारे सुनाई पड़ती है—आ गई, आ गई शामा-चकेवा की जोड़ी ! देखो, कहा था न ? शामा-चकेवा से ठीक एक दिन पहले ही आ जाती है शामा-चकेवा की जोड़ी। कोई पर्व मनावे या न मनावे !

शामा-चकेवा ही नहीं। सैकड़ों किस्म की चिड़िया उतरी हैं हिमालय से, दल बाँधकर ! खंजन-पंखी सबसे पहले ही सन्देश लेकर आ गई थी—टिंउ-टिंउ, ट्रिटाँ ! खंजन को देखते ही कुमारी लड़कियाँ ओरियावन शुरू कर देती हैं !

नये नौजवानों की नजर में इस तरह के पर्व-त्योहार रूढ़िग्रस्त समाज की बेवकूफी के उदाहरणमात्र हैं। शामा-चकेवा, करमा-धरमा, हाक-डाक इत्यादि पर्वों को बन्द करना होगा।

बूढ़े भी कहेंगे—मुफ्त में चावल, केला, गुड़, मिठाई और दूध में पैसे लगते हैं। फिजुलखर्ची ! चिड़िया-पंछी का भी पर्व होता है, भला ? सो भी इस जमाने में ?

फिर भी हर साल लड़कियाँ खेलती ही आ रही थीं। जिस साल सर्वे शुरू हुआ, उस साल से एकदम बन्द। गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने कहा—कहाँ खेलेगी शामा-चकेवा ? कोई भी अपनी जमीन में खेलने नहीं देगा।...

फुटबॉल खेलने का मैदान स्कूल वाला दर्ज हो गया है। कबड्डी खेल हो या फुटबॉल चाहे शामा-चकेवा। सर्वे के पर्चे में दर्ज हो ही जायगा। इसीलिए, जमीन वालों ने कहा—नहीं, मेरी जमीन में नहीं। एक पर्व मना कर मुफ्त में जमीन नहीं छिनवानी है। दर्ज हो जायगा कि यह शामा-चकेवा खेलने का मैदान है।

इस साल, हर टोले की लड़कियाँ धूमधाम से शामा-चकेवा मनाने की तैयारी कर रही हैं! कहने को सिर्फ कुमारी लड़कियों का त्योहार है। साथ रहती हैं, सभी। ब्याही, बेटा-बेटी वाली, अधेड़, बूढ़ी सब मिल कर गाती हैं।

मिट्टी का शामा, मिट्टी का चकेवा। छोटे-छोटे दर्जनों किस्म के पंछियों के पुतले। अन्दी धान के चावल का पिठार घोलती है। पोतती है प्रत्येक पुतले को। इसके बाद लिपे-पुते सफेद पुतलों पर, पुतलों के पाँखों पर, आँखों पर तरह-तरह के रंग-टीप, फूल-लत्ती। लाल, हरे, नीले, पीले, बैंगनी, सुगापंखी, नीलकण्ठी। पुतले, ब्याही बहनें बना देती! बूढ़ियाँ रङ्ग-टीपकारी आदि कर देती हैं।

—कौन कहता है गँवई पर्व है? लीला बोली—मैंने दैनिक आर्यभूमि और इण्डियन-नेशनल-टाइम्स में लेख पढ़ा है, इस पर्व पर। समझी मलारी? मलारी ने कहा—और मैंने भी पढ़ा है। परिजात की पुरानी कॉपी उलटा रही थी। देखा, शामा-चकेवा पर भी लेख है। लिखा है, नैपाल की तराई से सटे, उत्तर बिहार के जिलों में होता है, यह पर्व।

—ए, मलारी। तू अपना हाथ काट के मुझे देगी? कितना सुन्दर बनाती है तू! शहर की लड़कियों को भी मात कर देगी तुम्हारी चित्रकारी।

—दुत्त!

—आँख की कसम कहती हूँ...।

—अरी, लिलिया ? तू अभी तक आँख की कसम खाती है। शहर में भी ?
लीला बोली—सच कहती हूँ, आजकल ऐसी ही चित्रकारी को पसन्द करते हैं लोग। हाथ में सीकी की बनी डोलची लेकर घूमती हैं, लड़कियाँ। सो भी कितनी भद्दी ! यदि महीन कारीगरी तुम्हारी देखें, वे ! तू चल मलारी पटने…।

—दुत्त।

—तू नहीं जायगी तो हाथ काट के दे अपना। मैं तो सब भूल गई !

—मैं हाथ काटकर दूँगी ! लेकिन, तुम एक चीज दोगी ?

—क्या ?

जयवंती, सेमियाँ, रतनी और मलारी एक ही साथ हँस पड़ीं। सबसे पहले जयवंती बोली—उँहुक्। वह देनेवाली चीज नहीं !…खबरदार, लिलिया !

—क्या माँगती है ? भोली लीला ने पूछा।

—माँगती है तुम्हारा दुलहा-आ !

—हा-हा-हा-हा !…

मनमोहन बाबू ने अपनी माँ से कहा—माँ ! जरा इधर सुनो !

—क्या है ?

—देखो, यह मलारी बड़ी करप्टेड है।

—क्या है ?

—माने, बदनाम है न ! लीला को उसके साथ ज्यादे मिलने-जुलने देना अच्छी बात नहीं।

मनमोहन की विधवा माँ घर की मालकिन है। मनमोहन बाबू से नारा रहती है। बहू की बात पर उठने-बैठने वाले बेटे को फूटी निगाह से न देख सकती, वह। बोली—चार साल के बाद चार दिन के लिए गाँव आ है, बेचारी। उस पर मैं हुकुम नहीं चला सकती। तुम्हीं कहो।

—बिनराबन बनाई है या नहीं ? जरा देखने दे, मलारी दैया !

मलारी हँसकर कहती है—बिनराबन मत बोल। वृं-दा-व-न ! रटो पाँच बार ! मलारी के आँगन में खड़ी लड़कियों ने दुहराने की चेष्टा की—बिन-बिर-बिंद-बिंदराबन। अब दिखा दो।

—बेकार वृन्दावन क्यों बनाऊँ ? मलारी बोली—जित्तन बाबू ने तो दो हजार गाछ रोप कर असली वृन्दावन लगा ही दिया है। मैंने इस बार ऐसा चुगला बनाया है कि देखोगी तो देखती ही रह जाओगी।

पूर्णिमा से दो रात पहले से शामा-चराई की रात शुरू होती है। घर-घर से डालियाँ लेकर आती हैं लड़कियाँ। डालियों में चावल, फल, फूल, पान-सुपारी के साथ पंछियों के पुतले। लंबी पूँछवाली खंजन, पूँछ पर सिंदूरी रंग का टीका वाला पंछी, ललमुनियां। बिनरा···वृन्दावन ! जहाँ, शामा चकेवा की जोड़ी चरेगी। छोटे-छोटे कीड़े पतंगे, बरसात के जन्मे। असली कीड़े पतंगे नहीं, मिट्टी के ही। वृन्दावन में चुगला आग लगा देगा। जली-अधजली चिड़िया वृन्दावन की आग को अपने छोटे-छोटे डैने से बुझावेगी। धान, दही, दूब और मिट्टी के ढेले खिला कर, लड़कियाँ बिदा करेंगी शामा चकेवा को—जहाँ का पंछी तहाँ उड़ि जा, अगले साल फिर से आ। चुगला की चोटी में और मुँह में आग लगाकर लड़कियाँ ताली बजाकर गावेंगी—तोरे करनवाँ रे चुगला, तोरे करनवाँ ना ! रोये परानपुर की बेटिया रे, तोरे करनवाँ ना !

—मैं नहीं देख सकूँगी मलारीदी का चुगला। महती पेट पकड़ कर बोली देख, जिसकी शामाँ कंक-कंक करके अब उड़ी। ऐसा लगता है, जिसके खंजन को छूते ही टिंउ-टिंउ-ट्रिटें करके सरसरा कर दौड़ पड़ेगी।···उसका चुगला कैसा होगा, हे राम !

—एक बार सब मिलकर ताली बजाओ।

फट-फट-फट-थप-थप-ढन-ढन-ढन···।

—ए, रमदेवा। फटी ढोलकी मत बजा !

मलारी धीरे-धीरे चँगेरी की झाँपी उघार कर चुगला निकालती है—हाँ, मेरा चुगला ऐसा-वैसा नहीं। दु-मुँहा चुगला है ! एक मुँह पक्का काला, दूसरा सादा···।

—ह-ह-ह-ह-ह ! हा-हा-हा-हा ! ही-ही-ही···बन्द करो, बन्द करो। मर गई। पेट में दर्द होने लगा। बन्द करो, मलारी दैया !

डेढ़ हाथ का मिट्टी का पुतला। एक शरीर, दो मुँह। एक मुँह काला, आँखें उजली और ओठ पर थोड़ी जीभ निकली हुई। दूसरा मुँह सफेद, दोनों आँखें, काली। दंतपंक्ति में एक दाँत सादा, बाकी सरीफा के बीज की तरह काले !

—हाय रे। रूप देख कर जी जुड़ा गया। लगता है, मुँह चिढ़ा कर कुछ बोलेगा और बोल कर आँख मटकावेगा। चुटिया देखो, छुछुँदरराम की ! इसका नाम चुगलैंट साहेब रखो मलारी !

बाहर से किसी ने आवाज दी—महीचनदास ! मलारी की माँ !

—कौन है ? ए ! चुप-चुप !···के है ?

मलारी की माँ घूँघट जरा-सा सिर पर सरका कर आँगन से बाहर आई।

—क्या है ? कौन है ?

—मैं सुवंशलाल। एक किताब···मासिक पत्रिका···मलारी से पूछो।

मलारी की माँ सब कुछ समझती है। लेकिन, जोर-जोर से कुछ कैसे बोले, वह ? बूढ़ा जग जायगा तो आफत लेकर उठेगा। वह धीमी आवाज में, हाथ नचा-नचा कर कहती है—बाबू साहेब। उ सब बात पूछना था तो उस दिन डागडरनी के मार्फत ही काहे न पुछवाये ? सरकारी बात है तो क्या किसी का लाज-धरम भी ले लेंगे ? बोलिए तो, भतलौकी टेन आने

की वेला में आए हैं पूछने कि···। जरा-सा भी मुँह में लगाम नहीं ?

सुवंशलाल अवाक् होकर मलारी की माँ की बातों को समझने की चेष्टा करने लगा—क्या हुआ ?

आँगन से निकल आई मलारी—एक मासिक पत्रिका पुरानी और एक हाल की। सो, अभी रात में किसको जरूरत पड़ी ?

मलारी मन्दमन्द मुस्काती है ! मलारी की माँ घूँघट के नीचे से दाँत कटकटा कर कहती है—हरजाई, लाज-सरम तो घोल कर पी गई। क्या खराब खराब बात बोलती है !

—सुरपति बाबू शामा-चकेवा पर लेख पढ़ना चाहते हैं।

—एक मासिक पत्र में तालाबी पंछी पर पद है।

मलारी की माँ अपनी बेटी को डाँटती है—मलारी ! बाप जगेगा तो···।

—जगेगा तो क्या होगा ?

सुवंश के रोम-रोम बज रहे हैं। एक झलक के भूखे सुवंश को और कुछ नहीं चाहिये।

मलारी ने कहा—अच्छा, तो प्रणाम !

सुवंशलाल के जाने के बाद दहलीज में गुमसुम खड़ी मलारी को टुनका मारते हुए बोली, उसकी माँ—फिर मार खाने को मन हुआ है तेरा ? मर्दों से खराब-खराब बातें बोलते तुम्हारी जीभ नहीं लड़खड़ाती ?

—तू बेकार खराब बात खराब बात रट के मरी जा रही है। मासिक पत्रिका किताब को कहते हैं।···देखती हूँ, अब जल्दी ही ट्रेनिंग के लिए भेजा जायगा हमको।

इधर मलारी ने एक नया तरीका निकाला है। समय-समय पर कहती है—ट्रेनिंग करने के लिए जाऊँगी, मुजफ्फरपुर ! सुनते ही उसकी माँ चुप हो जाती है।

शामा चरावे गेली हम-आँ जित्तन बाबू'क बगिया हे-ए,
सोहि रे बगिया,
शामा मोरा हेराइल हे-ए,
सोहि रे बागिया…।

गाँव से सटी, गोवर के खाद से पटाई हुई जमीन। तम्बाकू रोपने के लिए तैयार की गई जमीन में लड़कियाँ जमा हुई हैं, बबुआन टोली की।

—ऐं ? बबुआन टोली की लड़कियाँ मुकाबला करेंगी ? मजा आयगा।

—लीला आई है। उसी ने उकसाया है सबको।

—अँग्रेजी में गायेगी शामा का गीत ?

—अँग्रेजी में नहीं, फारसी में ! मलारी कहती है, मुकाबला की बात तो करती हो। सकोगी लीला से ? गीत वह भूली नहीं है।

लीला कहती है—देख, सोलकन्ह टोली वाली सब गाली-वाली भी दें तो तुम लोग गाली मत निकालना। समझी ?

—सब से पहले किसकी बगिया से ?

—हमेशा, पहले हवेली की बगिया से शुरू होता है।

गोड़ तोरा लागों भइया, पखारनसिंघ सिपैहिया-या' कि पैयाँ पड़ो ना !
काहे शामा मोर छिपावला
'कि छोड़ि देहु ना, मोरा शामाँ रे चकेवा राम,
खोलि देहु ना !

—तब ? इसके बाद ?…नाचेगी नहीं तो गीत कैसे जमेगा ? एक ही पद गाकर हाँफने लगी ? उधर सुन, बुर्ज के उस पार से मलारी के गले की आवाज, कैसी सुरीली सुनाई पड़ रही है !

—तू भी लिलिया, रिकार्ट से कम नहीं गाती है। सामवत्ती पीसी कहती है। सामवत्ती पीसी के लिए दोनों दल बराबर हैं। बबुआन टोली की मंडली में आई है। गीत नहीं जमेगा, पान-पत्ता का इन्तजाम ठीक नहीं होगा तो सोलकन्ह टोली की मण्डली में चली जायगी। पान जर्दा खाने से गला खराब हो जाता है, किसने कहा ? गाने दो सामवत्ती पीसी को। पीसी नाचना भी जानती है।

—ले। कमर कस के पकड़। बाल खोल ले। पद गाकर झूमना पड़ेगा।

—हाँ, पखारनसिंघ बिना गाली सुने, शामा नहीं छोड़ेगा।

सामवत्ती पीसी शुरू करती है :

> आ-रे, लाज तोरा नाँहि भड़वे, पखारनसिंघ सिपैहिया-या कि सरमो नाँहि रे।
> तोरा देहि में धरमवाँ, एको रत्ति ना···।

सोलकन्ह टोली की करीब पाँच सौ औरतों की मूलगैन है, मलारी। सुर देने का काम करती है घेघी फुआ।

—ऐ। घेघी फुआ को कौन चिढा रही है ? बेन बाजा कहती है तो कहो। बेगपैप क्यों कहती हो मलारी ? घेघी फुआ सुर छोड़ देगी तो तू तुरत हाँफ जाओगी।

—बेनबाजा की तरह, भाथी में हवा भर कर छोड़ भी दो, फिर भी, रें-एं-ऍं-ऍं !!

—कमर कस के पकड़, मुट्ठी बाँध। जयवन्ती, कुलमन्ती, धनवन्ती, सनमन्ती चारो बहिनियाँ ! मलारी को बीच मे रखो। दो-दो जनि दोनो बगल में। हाँ !

—लिलिया आई है पटना शहर से मुकाबिला करने ! देखना है।

—नहीं, नहीं। मोकबला-मोकबली की बात लिलिया नहीं करती। बेचारी

कह रही थी कि एक साथ शामा-चकेवा क्यों नहीं खेलतीं ?

—जब पहले ही नहीं हुआ कभी तो अब क्या होगा ? बाभन-छतरी की बेटी-पुतोहू को तो हम लोगों की देह की मँहक लगती है।

—मलारी ऐसी शामा चकेवा खेलनेवाली लड़की नहीं कि शामा चराने के लिए आते ही खो बैठेगी सामां!···अरे, अभी बाग देख बगैंचा देख, पुरइन के गलैंचा देख। बृन्दावन में घूमेगी नहीं, मस्ती में झूमेगी नहीं तो शामा को कैसे भूलेगी ?—चल ! जरा फैल के गिर्दाव बाँध। ताल मत तोड़ना। नवसिखू छौंड़ियों से कह दो। बेकार गला न भाँजे ! नहीं तो, मेरा मन खराब हो जायेगा।

सभी मलारी की बात मानते हैं। मूलगैन है, मलारी। गला क्या पाया है छिनाल ने !···हमउम्र लड़कियाँ अपनी सखी सहेलियों को प्यार से भी छिनाल कहती हैं, गाँव में। मीठी हो जाती है यह गाली, तब !

बाहों में बाँह डालकर कड़ी जोड़ती है मूलगैन के साथ की लड़कियाँ। हाँ, मूलगैन की कड़ी में जुड़कर गीत गाना खेल नहीं। बेताली की हिम्मत नहीं होती कि उस कड़ी में जुड़ जाँय।···मूलगैन की पाँति चली !

मलारी बनहाँसिन की तरह चलती है। पहाड़ से तुरत आकर धरती पर बैठी हुई बनहाँसिन ! तकमका कर इधर उधर देखती है, अचरज से :

देखे में जे आवे सखिया, बाग रे बगैंचवा कि पोखरी-मंडलिब,
रम्मां ऊँची रे हवेलिया, देखु-देखु ना !
कहाँ बाग रखवारवा से पूछि लेहुना, हमारा शामा के पीरितिया
से नेति देहुना !

बाग के रखवाले को पान-सुपारी से नेति दो, निमंत्रित करके कहो—शामा तेरे बाग में चरेगी। बस, पान-सुपारी से फाजिल कुछ माँगे या कुछ इधर-उधर बतियावे तो सुना दो :

परानपुर के सोलकन्ह टोला, नामि रे लटेलवा

'कि जानि लेहुना, हम्मरो बप्पा के पगड़िया कि भैया के रुपइया,
हम जाइब कचहरिया'''।

शामा चराई की पहली रात बीत गई !

सुबह को मर्दों ने आपसमें बातें करते हुए कहा—रात में बहुत हल्ला मचा रही थीं लड़कियाँ सब !'''लड़कियाँ ही नहीं, बूढ़ियाँ भी गला खोलकर चिल्ला रही थीं ! तीन साल के थके हुए, सर्वे की दौड़धूप से चूर लोगों को इधर कई रात से गहरी नींद आ जाती है। जमीन जीतनेवाले, मुकदमा हारनेवाले, सभी सोते हैं। अघोर निद्रा में बेसुध ! उनके स्वप्नों में कभी-कभी सर्वे के अमीनों की जरीब की कड़ियाँ खनखनाती हैं—खन-खन, खन-खन ! हाकिम गुस्सासे गरजते हैं—ए ! औप ! चपरासी पुकारता है—कहाँ-आँ-आँ !...

दूसरी रात के बाद, तीसरी रात। विसर्जन की रात।

आज की रात, किसकी जीत और किसकी हार होती है, देखना है ! पहली रात के बाद ही मुकाबले की चुनौतियाँ दी गई हैं, दोनों ओर से। आज दिन भर दोनों दलों की प्रमुख लड़कियों ने देह मालिश करवाया है। दूध, मिसरी के साथ गोलमिर्च की बुकनी खाकर गला साफ किया है।

लीला तो पगली हो गई है, मानो। उसका दल कैसे जीते ? मूलगैन ही नहीं !

—एक मूलगैन ऐसी है कि यदि वह आ जाय तो सोलकन्ह टोली की बोली बन्द कर दे। लेकिन, उसमें एक लेकिन लगा हुआ है !

—कौन ? क्या लेकिन ? कौन लगाता है लेकिन ? मैं नहीं लगाने दूँगी किसी को कोई लेकिन। बोलो, कौन मूलगैन ?

सुवंश की बड़ी भाभी बोली—ताजमनी ! अब बोलो ? है न लेकिन लगा हुआ ?

—क्या लेकिन लगा है ? ···दस साल पहले वह तुम लोगों के साथ शामा चकेवा और झूमर खेल चुकी है। अब क्यों न खेलेगी ? जित्तन मामा ने मना किया है क्या ?

—मना किसी ने नहीं किया है। अपनी माँ से पूछ कर देखो। तुमको तजमनियाँ के साथ खेलने देगी ?

—क्यों, क्या हुआ ?

—तुम जैसे कुछ नहीं जानती !

—मैं सब कुछ जानती हूँ। ताजमनी तुम लोगों के दल की मूलगैनी कर चुकी है, वर्षों।···हवेली की नानी के राज में खेलती थी, अब क्यों नहीं ? बिना मूलगैन के आज की रात भी फजीहत होगी। मलारी से मुकाबला करना आसान नहीं। मैं जा रही हूँ ताजमनी को बुलाने।

सुवंश की बड़ी भाभी खुश है। वह चाहती है कि मलारी की छँहकबाजी छुड़ा दे कोई। कल रात पद जोड़-जोड़कर ताना दे रही थी मलरिया—बाभिन भौजी हे, भूमिहारिन भौजी हे—गावलो गीत जनि गाउ···!

—अरे ! लीला सायकिल पर चढ़कर आ रही है। देखो-देखो मर्दों का कान काटती है सायकिल चलाने में। घंटी भी बजाती है ? टिड़िंग-टिड़िंग !!

—किसी को एतराज हो तो, अभी बोलो ! टिडिंग-टिडिंग !!

—ठीक है, बुला लाओ। वह तो हमलोगों की पुरानी मूलगैन है।

—तजमनियाँ अब नट्टिन थोड़ो रही ? नट्टिन वे हैं जो कल जा रही हैं तम्बू लेकर, मेले में।

—काली बाड़ी में कीर्तन गाती थी तजमनियाँ। देवी के आगे !···शामा चकेवा साथ खेलने में क्या है ?

···टिड़िंग-टिड़िंग !!

—काकी ! तुम क्या कहती हो ?

—ठीक है।

ववुआन टोली के हर टोले की औरतों ने, अपने मर्दों से बिना कुछ पूछे या सलाह लिये ही स्वीकृति दे दी—मर्दों से क्या पूछना है इसमें ?

—अरी, नट्टिन टोली नहीं जा रही है लिलिया। ताजमनी आज कल हवेली में ही रहती है। नहीं जानती ?

शरद की चाँदनी में, पहाड़ से उतरनेवाले पंछियों की पहली पाँति को स्वागत !

शामा-चकेवा, अधिंगा, चाहा, बनहाँस, मुर्गाबी, पनकौआ, पनचिरीं, झिल्ला, जलमुर्गा, लालसर, सिल्ली की अलग-अलग पंक्तियाँ आकाश में भाँवरे लेती हैं।

···उतरो, उतरो ! धरती पर पैर रखो। हाँ, यही है परानपुर गाँव। दुलारी-दाय के कुंडों में मखाने, सिंघाड़े, कमलगट्टे, पानीफल खूब फले हैं।··· वही तलैये, वही पोखरे, पुरानी चौर और धान के खेत। डरो मत, आज की रात बंदूक का निशाना साधे धरती पर कोई नहीं बैठा है। आओ ! गाँव की कुमारियाँ अपने सफेद आँचलों को हिलाकर बुला रही हैं—शामा-चकेवा अइहऽहे···।

—कंक-कंक ! क्रेंगा-आ ! क्रेंगा-आ ! कंक-कंक !!

हहास ! हहास !! एक के बाद दूसरी पाँति धरती पर उतरती है—हहास !

फेकनी की माय कहती है—आकि देखो ! कल से ही मैं समझा रही थी लड़कियों को कि गला फाड़-फाड़ कर मत गा। उधर बाभन छत्री की बेटी पुतोहुओं को देखो आकि, सलीमा टेटर की तरह डानस कर रही है। आकि देखो···!

—मलारी के साथ आज गा रही है सेमियाँ !

—उधर, सामवत्ती पीसी है तो इधर फेकनी की माय। उधर भूमिहार टोली की फूहादी है तो इधर सेवियादी। उधर चौकी बेवा और इधर बेबी फुआ।

—सुनती है ? तजमनियाँ को बुलाया है उन लोगों ने ! अब ?

—अब क्या ? मलारी किस बात में कम है, उससे ? कलेजा मत छोटा करो कोई ?

—क्या गावेगी तजमनियाँ, अब ? ढलती बैस में जवानी का गला कहाँ से पावेगी ?

मलारी कहती है—ऐसा मत कहो। सधा हुआ गला है उसका।

ताजमनी ने जब गीत शुरू किया तो मुँह में घुलती हुई पेप्स की गोली चबा कर निगल गई, लीला।···क्या गला दिया है भगवान ने ताजमनी को !

लीला के साथ दूसरी लड़कियों ने भी ताजमनी के गीत का आखर पकड़ा। मुँह ऊपर ! चाँद की ओर देखकर यह गीत गाना चाहिए।

—ले ! कोई जानती थी यह गीत ?

—मिसराइन की सिखाई-पढ़ाई कोयलिया है, तजिया।

—गलबल मत करो। सुनो !

> आँ-रे, मानसा-सरो-ओ-वरा के झलमल पनियाँ-याँ-याँ,
> खचमच मोतिया भं-डा-आ-र—
> काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए मिरतू भवनियाँ-याँ-याँ,
> बिनराबन करि पा-आ-आ र !
> आँ-रे, गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ-याँ-याँ,
> काहे छाड़ि आयला हंसा रे-ए-ए···हमरो अभागल गाँव।
> बाबा मोरा आ-रे-हंसा-आ-आ, पोखरी खोदाई गइले

पोखरी में फूले पुरइन फूल-आ-रे-हंसा हमरो पोखरिया-या,
पोखरी भरायब दूध !···

···दूधसे पोखरा भरवा देंगी कुमारियाँ—उतरो ! आओ-ओ हंसा चकेवा !

ताजमनी जब गा रही थी, पेड़ का एक पत्ता भी न हिला। सब, चुप होकर सुन रहे थे !

मलारी चुप होकर सुनती है। सभी चुप हैं—ताजमनी गा रही है।···सुन ! —मन का बहुत पुराना विरोग गीत में घोल कर धीरे-धीरे ढाल रही है काँच के वर्तनों में। मेरी देह देखो, रोयें खड़े हो गए हैं।

—ले, बलैया ! बेघी फुआ रो रही है। लो, बेनवाजा कौन बजायगा ? क्यों रो रही है ? ताजमनी का गीत सुन कर ?

—तैयार हो जा। ताजमनी के रुकते ही तुम शुरू कर देना मलारी ! कहाँ, सेविया ? तैयार रह जयवन्ती !

उधर ताजमनी रुकी। इधर, मलारी ने शुरू किया। फेकनी की माय गुड़ और काली मिर्च की बुकनी खिला रही है पच्छक लड़कियों को—गला साफ होगा।

गैहरी-ई-ई नदिया-या-या अगम बहे धारा-आ कि रामरे,
हंसा मोरा डूबियो नि जाये
रोई-रोई मरली-ई-ई चकेवा-वा, कि रामरे,
आ रे हंसा लौटी के आव··· ।

पुराने गीत पर मलारी ने नया तर्ज दिया है !

ताजमनी मुस्कुरा कर कहती है—मलारी के कलेजा में बहुत दम है। इतना ऊपर खींचती है। वाह !!

लीला बोली—अब, एक गीत पनकौआवाला शुरू करो।

हाँ, रे पन-कउवा…
सावन-भादव केर उमड़ल नदिया
भाँसि गेल भैया केर बेड़वा रे, पन-कउवा !
हाँ रे, पनकउवा, मचिया बैसली मैया मने-मने गुनैछे,
भैया गइले बहिनी बुलावेले रे, पनकउवा…।

पूर्णिमा का चाँद हवेली के बागों के ऊपर उठ आया और धरती को ठिठक कर देखता ही रह गया !

बुर्ज की मीनार पर जलता हुआ पेट्रोमेक्स भुकभुका कर बुझ गया, अचानक ! नींद में विभोर सोए हैं गाँव के मर्द, थके-मारे, हारे-जीते, भरे-रीते !

गीतों के पंख पर उड़ता हुआ गाँव ! गीत-गंगा में नहाती औरतें !

गाँव में सब मिला कर मात्र आठ-दस प्राणी जगे हुए हैं।

मीत भी जगा हुआ है। रह-रह कर उत्कर्ण होकर सुनता है और बाहर भागना चाहता है। जित्तन बाबू डाँटते हैं।

सुवंशलाल की आँखों में नींद अँगड़ाई लेती है। मलारी की सुरीली आवाज उसे एक घूँट कुछ पिला जाती है, वह ऊँघते-ऊंघते जग पड़ता है।… अजीब हाल है। न सो सकता है और न जगने में ही कल ! बेकल है सुवंश लाल। यह कैसी बेकली है ? मलारी के बिना वह कुछ नहीं। मलारी का जन्म सुवंश के लिए ही हुआ है। और, अब तो मलारी उसकी आँख की भाषा को पढ़ कर आँख से जवाब भी देती है ! मासिक पत्रिका वापस करते समय उसने जान-बूझ कर ही सुवंश की उँगलियों को छू दिया था। …क्या लेगी ? किताब ? कितनी किताबें हैं, देख। रवीन्द्र, शरद, प्रेम-चन्द, यह ले, वह ले !! ऍं ? पुस्तकों में पंख लग गए हैं ? पुस्तकें उड़ीं

हैं पाँखें पसार कर ! फड़फड़ा कर रवीन्द्र ग्रन्थावली उड़ी, अपार पारद के पर फड़का कर ! मलारी पकड़ती क्यों नहीं ? मलारी, दुलारी, हारी···!!

गाँव के लोगों के सिरहाने सपने मड़राते हैं—दुलारीदाय की धारा में बाढ़ आई है।···चाँदी के रुपयों जैसी पोठी मछलियाँ, परती पर झिरझिर पानी में छटपटा रही हैं—चित्-पट, चित्-पट, छट-पट, छट-पट !!···धान के खेतों में दौड़ने से धान के फूल झरते हैं, दूधिया गंध फैल रही है। ···खेत का धान काट कर ले जा रहे हैं जमींदार के लठैत ? घेरो, घेरो ! ···मुखिया का चुनाव हो रहा है। गाँववाले मुखिया बना रहे हैं, उसी को। दफा तीन में हारी हुई जमीन फिर हासिल हो गई है। ···गेंदाबाई गाली देती है। ···मलारी हवेली घर में रो रही है ? क्यों रो रही है ? लिखा कर दस्तखत करा लो उससे ? ···पोंपीं ? कौन सॉलां हँमकों पोंपीं कँहतां ?··· मकबूल की दाढ़ी !!

चाँद को भी नहीं मालूम, लड़कियों की दोनों जमात कब नाचते-नाचते एक गिरोह में घुलमिल गईं !

पचीस बीघे जमीन लाँघ कर, दो लहराती हुई धारायें मिलकर एक हो गईं। हवेली से पच्छिम, बुर्जसे उत्तर ! संगम !!

किलक पड़ीं एक साथ सैकड़ों चिड़ियाँ—हा-हा-हा ! कैंक-कैंक ! अरी, तजिया, ताजूदी, ताजमनी ? कैंक-कैंक ! मलारी, दुलारी ? लिलिया, लीला, हाय रे मेरी लीली बिस्कुट रे ! क्रैंगा-क्रैंगा ! बेंघी फुआ ? बैंगपैंप, बेनबाजा ? टिऊँ-टिऊँ-टिहुँक ! मौसी, मामी, काकी ? ए, बूढ़ी नानी ! मैंक-मैंक-मेकां !! जयवंती ? सेमिया ? हा-हा-हा-हा ! ओ-हो सामबत्ती पीसी···।

भवेश तैयार हो गया !

···ऐसा अवसर नहीं मिले बार-बार, किलकती रूपहले ··· चि

हजार—फ्लैश ! क्लिक !! छटक-छटक !

—देखो। बिजली छटकी ?···देखो बदमाशी। फोटो छाप रहा है !

—फ्लैश ! छटक-छटक !!

पाँच सात लड़कियों के साथ लीला ने छापा मार कर छापी लेनेवाले को गिरफ्तार किया—कहिए महाशयजी ! क्या हो रहा है ? चलिए औरतों की कचहरी में। कुछ नहीं सुनी जायगी। लो, जयवन्ती, पकड़ो !

औरतों के बीच भवेश की सूरत ? लीला देख कर मन-ही-मन मुस्कुराती है—चेहरे पर बारह बज गए ?···एक बल्ब दीजिए तो !

भवेश की तुतलाहट बढ़ गई—इसमें बल्ब बदलने की ज ज-ज-रू···।

—फ्लैश !—चलो उतर गई तस्वीर, छापी लेनेवाली की भी। दूर से बड़ा तीर मार रहे थे। इनकी तस्वीर कौन लेगा ?

लीला ने दिखलाया—हजारों पुतले पंछियों के ! रंग-बिरंगे ! चुगले, चुगलैंट। बृन्दावन। इनकी तस्वीर···!

मलारी बोली—मेरे चुगले की तस्वीर सचित्र साप्ताहिक के सबसे ऊपर वाले पन्ने पर नहीं छपेगी ?···यदि आपके साथ इसका फोटो लिया जाय, तो भी नहीं ?

—हा-हा-हा-हा।—छोड़ दो, छोड़ दो। बेचारे का फोटो बिगड़ रहा है।

—अब लगाओ चुगलैंट साहेब की चुटिया में आग। फिर, मुँह में। मलारी ने अपने चुगले की चुटिया में आग लगाई। सभी लड़कियों ने अपने चुगलों को अन्तिम बार देखा :

तोरे करनवाँ ना रे चुगला, तोरे करनवाँ ना—
जरल हमरो बिनराबनवाँ रे तोरे करनवाँ ना।
तोरे करनवाँ ना रे चुगला···।

लड़कियाँ हँस-हँस कर गा रही हैं, तालियाँ बजा कर।

फ़्रेश !…दोमुँहा चुगला का क्लोज़-अप !

धूसर, वीरान, अंतहीन प्रांतर !

सफ़ेद वालुचर। यही है चिरपरिचित दुलारीदाय। पाँचों कुंड में, पाँच चाँद ! पंछी की पहली पाँति का वृद्ध पखेरू आकाश में भाँवरे मार कर अपने दल को वैठाना चाहता है। पहले धरती पर, तव पानी में।

—क्रेंगा-आ ! क्रेंगा-आ !! नये पंखवालों से कहो। ज्यादा चुलबुल न करें। इस वार लक्षण अच्छे नहीं दीखते। इस परती पर पौधे कैसे लगे हैं ? एं ? खतरे की कोई वात तो नहीं ? खबरदार ! केंक-केंक !!

द्वितीय परिवर्त

स्थिर-निबद्ध, तीव्रदृष्टि !

विनिद्र सुरपतिराय ने शरद पूर्णिमा के चाँद को देखा, हवेली के पोखरे में। सहस्र कमल दल पर शशिकला !

सुरपतिराय की आँखों में स्नेहसिंचित लावनी की झलक !···दूध की सुगन्ध चारों ओर ! प्रकृति के अंग वात्सल्य गन्ध से सराबोर। सरोवर में दूध ही दूध !

सुरपतिराय कई दिनों से दूसरी ही दुनिया में है। बहुमूल्य प्राप्ति के नशे में झूमती कटी हैं रातें, उसकी !

गीतवास हाट के पास रजौड़ गाँव में, एक गरीब ताँती परिवार में कुछ पुरानी पाण्डुलिपियों जैसी चीजें प्राप्त हुई थीं। नेपाली, बँसहा कागज के पचास-साठ पृष्ठ बहुत बुरी दशा में मिले। अस्पष्ट लिखावट और दीमकभुक्त दशा को देख कर सुरपति ने जिन्हें एक ओर रख दिया था, निराश होकर। ···यत्र-तत्र स्पष्ट पंक्तियों को पढ़ कर, एक दिन विस्मित हुआ। भवेश ने कहा—इन्फ्रा-रेड फोटोग्राफी ही बस एकमात्र उपाय है।

उस दिन, भवेश लौटा है ७० प्रेट्स प्रिंट करवा कर। मोती जैसी जगमगाती, 'श्रीमती-लिखावट' ! टूटी लड़ियों के लटके जैसे दीमकभुक्त स्थान।

दो रात जग कर पढ़ गया है। तीसरी रात, वह हिन्दी अनुवाद करने बैठा। शामाँ-चकेवा विसर्जन की रात। शरद पूर्णमासी की गीत भरी रात की गोद में बैठ कर उसने देखा, स्थिर-निबद्ध, तीव्र दृष्टि से !

दूधभरे पोखरे में चाँद ! अदृश्य अचंचल अंचल से दूध झरते देखा। माँ-

परती : परिकथा—२७६

माँ की मृदुगन्ध से उसका आँगन मँहक उठा !

माँगलिक अनुष्ठान भरा वातावरण ! पंछियों की पातियाँ उड़ रहीं दूधिया आकाश में। पोखरे में पुरइन के पात, महार पर स्थलपद्म की शीत में नहाई पँखुड़ियाँ ! पंछियों के बीच हठात् राजहंसिनी पर दृष्टि पड़ी उसकी। स्निग्ध-धवल पंख पसार कर पोखरे में उतरी।···उसका जोड़ा कहाँ है ? राजहंस ? किसी ने पुकारा ? नारीकंठ ? लॅली ! लॅली !! बेटा लॅली !

सुरपति ने पहचाना—द्रोणी-पुष्प-रंग के वस्त्र में आवृता : मिसिस रोजऊड। गीता मिश्रा। श्रीमती गीता !

···लली, डेडी आयगा ?

···आय, आय !

···लॅली, डेडी आयगा ?

···आय, आय !!

[प्रथम तीन अर्धभुक्त पृष्ठों से प्राप्त वाक्यांश !

इसके बाद ?]

···माइ लास्ट एंड लॅास्ट लव !

मेरा अंतिम प्यार, जो खो गया !

माँ मरियम के पवित्र चरणों पर जवा फूल चढ़ाना अपराध है ? क्या अपराध है और क्या नहीं, माँ मरियम मुझे बता जाती है। इसलिए, धर्म के संकुचित···!

······!!

और मेरा अपराध ?

मैं कन्वर्ट होकर हिन्दू हो गई हूँ। इसीलिए तो ? किन्तु, प्यार की परिभाषा मैंने अपने पवित्र धर्मग्रंथों से ही सीखी है।

जिसे, जो जी में आवे कहे। किन्तु, दुहाई! मेरे प्यार को कभी भला बुरा न कहे कोई !

एक हिन्दू को मैंने अपने गुरु, स्वामी अथवा पति के रूप में प्राप्त किया। प्यार की मारी मैं, इसी पुरुष की खोज में जन्म-जन्मान्तर भटकी फिरी, और इस जन्म में, यहाँ आकर मैंने जिसे प्राप्त किया। सन १९१० ···में। अपना सर्वस्व समर्पित कर मैंने उसे प्राप्त किया। मेरा सौभाग्य !

···नहीं मालूम मुझे !

पूरब-पगली बचपन से ही मैं थी। पड़ोस की सहेली के पिता पूरब से लौटे थे। भारत से लौटे थे, महाभारत का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे। ···मैंने बाद में पढ़ा। सूर्य-पुत्र-गण ! ···कृष्ण ! कृष्ण नहीं, मैं पहले कहती—क्रिश्चना !

बाद में ऐसी लगने लगी कि मैं एबनार्मल हो गई। लिटल-लॉर्ड क्रिस्ना को पढ़ते-पढ़ते मैं एकान्त में आतुर होकर पुकारती—गोपाला ! ओ, नन्दलाला !!

···एक रात तो मक्खन की पूरी टिकिया लेकर बैठी रही—आओ! बटरथीफ़ !

[इसके बाद, पाँच पृष्ठोंसे प्राप्त शब्दोंको झरे हरसिंगार के फूलों की तरह बटोरा है सुरपति ने !]

···हिम मंडित ! तुषार मुकुट ! इन्द्रधनुषी देश ! गंगाजल ! देवपुत्र ! आर्यपुत्र ! स्वामी !

स्वामी के रूप में मैंने उसे स्वीकार किया।

डिसेप्सियासे अधमरे वृद्ध अंग्रेज व्यापारी को मैंने बात दे दी। उसे एक ऐसी सहधर्मिणी की आवश्यकता थी जो क्वाँरी हो, सुन्दर और स्वस्थ हो। रबर स्टेट के कारोबार को समझ कर व्यापार में उसका हाथ बँटा सके। मलय प्रदेश, पूरब जाने की शर्त अनिवार्य थी!

ब्याह और मलय के लिए प्रस्थान। उसके दोनों कदम कब्र की ओर!

वह पूरब जा रहा था। भारत के निकट। भारत में भी रह आया है वह। बनारस में पाँच दिन रह चुका था। पुण्यवान था वह!

उस पुण्यवान को मैंने सबल, स्वस्थ और सुन्दर नौजवान पति की तरह स्वीकार किया। वह पूरब जो जा रहा था!

मेरी मम्मी जीवन में पहली बार नाराज हुई—क्या पागलपन है? जरा, फिर से सोच कर देखो तो!

फिर से सोचने को समय कहाँ था? वह अगले सप्ताह ही सेल कर रहा था!

शादी के बाद, मेरी एक शोख सहेली ने चुटकीली ठिठोली की थी, धीरे-धीरे, कान के पास—उसकी पसलियों का ख्याल करना।…टेक केयर ऑफ हिज रिब्स!

जहाज समुद्र में है।…कोई अदृश्य शक्ति मुझे खींच रही है अपनी ओर!

एडवर्ड, मेरा स्वामी बीमार है। वह समुद्रमें कभी स्वस्थ नहीं रहता : वह कहता है…।

[बीच के कुछ पृष्ठ खो गये हैं!]

मलय की सिर्फ सात चाँदनी रातों से हमारा परिचय करवा कर, मेरे पति-देव ने सदा के लिए आँखें मूँद लीं।…एडवर्ड कहा करता, मुझे मलय का अपना बँगला बुला रहा है!

जलव के जंगल में, अपने बँगले में ही एडवर्ड को चिरशान्ति मिली।

मेरे पति के साझेदार मित्र ने हमारी बड़ी मदद की। रोज रात में मम्मी भय खाकर उठ बैठती—एडवर्ड नाराज है!

मेरे पति के साझेदार मित्र ने सभी हिस्से बिकवा दिये। पूरे दो महीने के बाद हमने भारत की ओर प्रस्थान किया।···टु केलकटा!

सारी घटनाएँ कुछ इस तरह घटीं, जिन्हें मैं अदृश्य शक्ति की कृपा के सिवा और कुछ नहीं मानती।

कलकत्ते में, दूसरे ही दिन ग्रंटी से भेंट हो गई—रेसकोर्स में। ग्रंटी भी पूरब-पगली थी। पिछले साल, एक राजा की रानी होकर भारत आयी है।

ग्रंटी और उसके राजा साहब ने हमें सूचना दी, उसके जिले में एक अंग्रेज-कोठीवाला प्लाण्टर अपना स्टेट बेचना चाहता है, मिस्टर ब्लेकस्टोन। कल कलकत्ते आया है। वह आधी कीमत पर बेचने को तैयार हैं।···गोईंग डेराडून!

एक दिन मम्मी बोली—ग्रंटी ने अच्छा किया है। उसका राजा सुन्दर है। भला आदमी है। सुपुरुष है।

मिस्टर ब्लेकस्टोन ने बताया—डेरीफार्म के लिए बहुत उपयुक्त स्थान है। कोठी के पास ही छोटी-सी अकेली नदी है। पास में विस्तृत चारागाह!

मिस्टर ब्लेकस्टोन अपने बैग में जमींदारी के अन्य दस्तावेजों के साथ मैक-मिलन एण्ड कम्पनी का एक बालकोपयोगी भूगोल भी हमेशा रखता। किताब खोलकर रेखांकित पंक्तियों की ओर दिखा कर बोला—पूर्णियाँ जिला। थाना—रानीगंज!

जिले के नक्शे पर, उत्तर कोने में नेपाल की सीमा के पास एक लाल बिंदी डाल दी थी उसने—यहीं है वह जगह। यही है वह नदी—डोलरेडेय!

ग्रंटी और उसके पति राजा महिपालसिंह की सहायता से हमने जमींदारी की कीमत तय करवायी।

राजा महिपालसिंह मुझे बहुत भद्र जँचे। लापरवाह, हँसमुख, हास्यप्रिय और चतुर। किन्तु, उनको भारतीय मानने को मन तैयार नहीं होता। रूपरंग, पहरावा-पोशाक, बोलचाल और खानपान, सब इंगलिस्तानी। …मेरे, कल्पनालोक के पूर्वपुरुष से कोई मेल नहीं। मुखाकृति भी नहीं मिलती।

हमने जमींदारी खरीद ली।

तीन महीने कलकत्ते में रहकर, हम मिस्टर ब्लेकस्टोन के साथ पूर्णियाँ आये। माँ के विशेष आग्रह पर मिस्टर ब्लेकस्टोन ने हमारे साथ एक सप्ताह रहना मंजूर कर लिया।…इलाके से परिचय कराते समय उसने बार-बार चेतावनी दी हमें… ।

—परानपुर स्टेट के पत्तनीदार मिसरा से होशियार। माइण्ड यू…।

सन १८५६ ई० में इस कोठी की नींव डाली गयी है।

हीरा दरबान का कहना है—सात साहबों ने इस कोठी में वास किया है। चार ने इलाके पर राज किया है। ब्लेकस्टोन साहब चार साल भी नहीं चला सके, जमींदारी!…बंगले की सजावट में कहीं कोई कमी नहीं हुई थी। कोठी की फुलवारी में, विदेशी पेड़-पल्लवों के बीच स्थानीय फूलों के कुंज! बूढ़ा माली उत्तिमलाल आदमी से ज्यादा फूलों की भक्ति करता है।

पुटुस फूल! यहाँ का जंगली फूल है। बाँसवन के घने अन्धकार में खिली फूली झाड़ियाँ! छोटे-छोटे स्टार जैसे फूल, घोर लाल, गुलाबी, सफेद, बैंगनी।

इस उपेक्षित फूल को फुलवारी में लगाने के प्रस्ताव को सुन कर उत्तिम-लाल बहुत उत्साहित हुआ। हीरा दरबान के मार्फत उसने हमें समझाया, पिछले आठ दस वर्षों से वह, इस फूल की झाड़ी को फुलवारी में लगाने

चाहता है। किन्तु'''। बाद में मालूम हुआ, पुटुस को फुलवारी में लाने का विरोध, कोठी के मालिक ने नहीं, कोठी के दरबान हीरा मंडल ने विशेष रूप से किया था। इस बार भी देखा, जंगली फूल के इस सम्मान को देख कर हीरा खुश नहीं। बूढ़ा हीरा दरबान गत बीस वर्षों से इस कोठी में दरबानी करता है। वह समय-असमय मुझसे अपनी टूटी अंग्रेजी में बातें करता। आसपास के गाँव और गाँव के लोगों के बारे में—थिक विलेज, ग्रेट विलेज, खास रैयाट, भेरी ब्रैड मैनी एण्ड भेरी गूड मैन नन!

डेरी फार्म खोलने के विरोध में हीरा ने कहा—नॉट गूड। एवरीबडी से यू विलायती ग्वालन!

सुनते ही मैं समझ गई, सभी मुझे ग्वालिन समझेंगे। समझेंगे ग्वालिन? अहोभाग्य! मैं ग्वालिन। मैं गोरस का कारबार करूँगी! अवश्य!

जापानी डॉल! ताजमनी का पहरावा देख कर जितेन्द्रनाथ को जापानी गुड़िया की याद आई। माथे पर सीकी की डाली—रंग-बिरंगे फूलोंवाली डाली! ओठों पर सरल मुस्कराहट! जितेन्द्रनाथ प्रसन्न हुआ। '''वक्र मुस्कराहट नहीं?

गोविन्दोने जितेन्द्रनाथ की गुनगुनाहट को सुनकर समझ लिया, मन का फूल खिला है! '''भॅन का फूल ही नैंहि फूटता है दादाबाबू का! फिर कैसे कॅर के क्या होगा?

—क्यों गोविन्दो? रसोईघर में अड़हुल फूल से किस देवता की पूजा हो रही है? गोविन्दो ऐसी बातों का मतलब बहुत शीघ्र समझता है। नुकीले ओठों पर हँसी को स्थिर करके बोला—ही-ही-ही। श्यामा पूजा माने माँ

काली का पूजा नजीक आ गिया कि नेंहि, इसी वास्ते। ताजनदि बोला···। दादाबाबू, आप नेंहि मॅत कॅरिये। पूजा को हुकुम जॅरूर दीजिये। माँ श्यॅमा···।

—गोविन्दो। अपने चूल्हे की आँच देखो जाकर। श्यामा पूजा के लिए हुकुम लेने की जरूरत नहीं। हुकुम लेकर पूजा होगी ?

जापानी गुड़िया को एकान्त में खिलनेवाले दो फूलों की मॅंहक लग गई। ·· गोविन्दो अपने दादाबाबू के हृदय के कोने-कोने में घूम चुका है। बचपन से ही !

ताजमनी को देखते ही गोविन्दो ने जितेन्द्रनाथ को आँख के इशारे से सूचित किया। पुरानी आदत ! जितेन्द्रनाथ को हँसी आई ! गोविन्दो हाथ में खाली प्याली लेकर रसोईघर की ओर भागा। मीत ने धमकी दी—इसमें दौड़ने की क्या बात है ? बॉख !

जितेन्द्र और ताजमनी की उम्र एक साथ ही बीस वर्ष घट गई, मानो। दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। मीत ने उत्कर्ण होकर दोनों की ओर देखा। ···इन्हें भी एक धमकी दे दें ? बॉख !

—जानते हैं ? जोर-जोर से हँसने पर मीत नाराज होता है। मीत ने अपना नाम उच्चारण करनेवाले प्राणी के घुटने पर अपने दोनों पैरों को रखकर प्यार प्राप्त किया। दूसरे ने उसके लम्बे कान को पकड़ कर जरा तान दिया। ···आर्ऊं ! बॉख !!

ताजमनी ने दीवार पर लटकती हुई तस्वीरों की ओर देखा। ···तस्वीरों के आसपास मकड़ी के जाले हैं या ये भी तस्वीर हैं ?

—मन्दिर और हवेली घर के कमरों की सफाई के लिए मुंशीजी को मजदूर नहीं मिलते हैं। और दुनिया जहान के फरेबी कामों के लिए उन्हें आदमी ढूँढ़ते फिरते हैं ! ···आज यदि मालकिन-माँ होती ! ताजमनी धूप-बत्ती जलाने लगी।

—मुंशी जलधारीलाल ने चालीस साल पहले ही फरेब कर्म की ट्रेनिंग ली है। नया फरेबी नहीं, वह। जितेन्द्रनाथ को अचरज हुआ, ताजमनी की मुस्कराहट जरा भी टेढ़ी नहीं हुई ? नागफनी के डंठल जैसे होल्डर में धूप की बत्तियाँ सजाती हुई बोली—लेकिन, ऐसा कुकर्म न मालकिन-माँ के समय में हुआ और न उनसे पहले !

•

जितेन्द्रनाथ हठात् गम्भीर हो गया। ताजमनी मन-ही-मन मुस्कराई··· मुझे चिढ़ाने चले थे ! धूपबत्तीके नागफनीनुमा होल्डर को सामने के ताख पर रख कर ताजमनी बोली—नकली नागफनी में असली काँटे लगाने की क्या जरूरत ? उँगली के अगले पोर को टीप कर रक्त की नन्हीं-सी बिन्दी निकाली और सिर में लगाकर बोली। जितेन्द्रनाथ ने पूछना चाहा—यह क्या हुआ ? खून का टीका···! किन्तु, कँटीली बात उसे चुभ गई थी। बोला—क्या किया है मुंशी जलधारीलाल ने ? किसी की पीठ पर लाल दगनी से फिर कुछ लिखा है क्या ?

—पीठ पर नहीं। कलेजे पर दगनी दाग रहे हैं मुन्शीजी।

—मुन्शीजी का क्या कसूर ?

—कसूर जिसका भी हो। लेकिन, जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है, वह आपके जोग नही। जिद्दा, आप नहीं जानते !

—क्या ?

ताजमनी हँसी। वह अच्छी तरह जानती थी, जिद्दा को कुछ नहीं मालूम। बोली—इस्टेट से मामले मुकदमे करनेवाले रैयतों, या इस्टेट के वरखिलाफ होनेवाले किसानों की लहलहाती हुई फसल रातों रात चौपट कभी नहीं करवायी गयी। गाय-भैंस और बैलों की चोरी नहीं करवायी गयी। किसी के घर में आग लगाने के लिए··· ।

—वाज़ ?

—सन्तोखीसिंह की बीस बीघे की खेती, एक ही रात में शेप हो गई।

उस रात में मुन्शी जलधारी ने अपने 'गणों' को बुलाया था, हुज़ूर से भेंट कराने के लिए। चलो ! तुम लोगों की किस्मत खुल गई !

बहुत देर तक जितेन्द्रनाथ बकला की बनावट को देखता रहा। लम्बे तरबूज की तरह सिर। कपाल सामने की ओर निकला हुआ। देह से दूध की गन्ध ! जो कितनी भी पवित्र क्यों न हो, किसी-किसी के लिए दुर्गन्ध अवश्य है। घुड़कती हुई आँखें !···बकला की मुस्कराहट ! उसकी बोली भी अजीब !

—हें-हें-हें। हुजू-उ-उ-र। आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभीं नहीं पकड़ा गया। बीस रस्सी दूर के आदमी के पैर की आहट को परेख लेती है मेरी भैंस ! फिर मेरा खूनियाँ भैंसा ! उसके तीन नवतुरिया जवान पाँड़ा की जोड़ी ! बारी-बारी से चौकन्ना होकर देखने लगते हैं। ···मैं ? हुजू-उ-उ-र, मैं तो अपनी मोरंगनी भैंस की पीठ पर नींद में फोंक-फोंफ् ! उधर खेत साफ !!

बकला का फोंफ-फोंफ सुन कर, पहले से ही आतंकित, और जंजीर में बँधे मीत ने तीन बार बॉख किया ! ···एक-एक व्यक्तिको प्रवेश करते समय मीत ने डाँट बताई—बॉख-बॉख-बॉख !! बकला ने मीत की ओर सशंक दृष्टि से देखते हुए कहा—हुजू-उ-उ-र। मटरकाट भी हमारी भागती हुई हाँज[1] का मुकाबला नहीं कर सकती। एक बार रानीगंज थाना के दारोगा ने इलाके के नामी पहाड़ी घोड़े पर चढ़ कर पीछा किया ! कहाँ मेरी मोरंगनी भैंस के छूए-पूए और कहाँ मँगनी का माल, पहड़िया घोड़ा। मेले के रेस में बाजी मारनेवाला पहाड़ी घोड़ा का पेशाब अटक गया और चार चितंग-हें-हें-हें !!

बकला अपने हुनर में माहिर है। उसकी भैंसों को देखने की इच्छा हुई जितेन्द्रनाथ की। क्योंकि बकला ने बताया—मेरी हाँज की भैंस सिर्फ चरती

---

१. भैंसों का झुण्ड।

ही नहीं ! कल ही, तो चौरीटोलेवाले का दस बीघा सकरकन्द और पटनिया आलू उखाड़ कर कचर गई ! ···हाँ, चारों खुरों से खोदती है मेरी भैंस !···हें-हें-हें । चेले चपाटी भी साथ रहते हैं । हें-हें-हें !!

ननकू नट ! मुन्शी जलधारी का दूसरा दस्तादार ।—वॉख ! वॉख ! वॉख ! वॉख !!

जितेन्द्रनाथ को मांस की गन्ध लगी । मांस की नहीं, शहर के बूचड़खाने की बगलवाली गली में ऐसी ही गन्ध लगती है । ननकू नट की बावड़ी ! खाल से सटा कर कटी हुई पट्टी ! मिस्सी मलकर काले किए दाँत !··· जितेन्द्रनाथ ने सुना—यह ननकू नट मवेशी चुरानेवालों का मेंठ है, इलाके का ! राह के हर गाँव में जिसका एक शागिर्द सतर्क होकर रात में सोता है । डाक के दौड़ाहे की जैसी ड्यूटी ! डाक में आये हुए मवेशी को तुरत दूसरे अड्डे तक पहुँचाने का काम आसान नहीं । सुबह को अपने घर से आँखें मलते हुए उठ कर गाँव में चक्कर मारना होगा ! इसके अलावा ननकू नट का जेबी बूचड़खाना भी चलता है ! हाथ की झोली में जितना सामान है, उसी से वह आध दर्जन मवेशी के मांस का कारबार कर लेता है गुपचुप । जितेन्द्रनाथ ने ननकू नट को मात्र पाँच मिनट अटकाया । मीत रह रह कर गुर्रा उठता था !

खन्तर गुलाबछड़ीवाला ! ···गुलाबछड़ी कड़कड़ बोले, लड़िकन सब के मनुआँ डोले । घण्टी बजाता हुआ खन्तर गुलाबछड़ी वाले को देखते ही गाँव के लड़के धान, चावल या पैसे लेकर दौड़ते । उन लड़कों के पीछे-पीछे उनकी माँ, दादी या चाची ! खन्तर गुलाबछड़ीवाला वैद्य भी है, ओझा भी ! इसलिए, दूसरे गुलाबछड़ी वालों से चौगुना सौदा देने पर भी खन्तर घाटे में नहीं रहता ! गुलाबछड़ी की कड़कड़ी मिटाइयों में, लड़कों की बलि लेने वाले तरह-तरह के जहर लपेट कर खन्तर घण्टी बजाता है । मौत की ओर दौड़ते हुए लड़के ! ···बनहल्दी की एक कच्ची गोली की कीमत दो रुपया ! और झाड़ फूँक में जैसा घर, जैसी बीमारी देखा वैसा हिसाब ।

—भाइयो !

—साला, थेथर है । चमार के हाथ की मार खाकर भी भाइयो-भाइयो करता है । मारो गाल में थप्पड़ !

···चटाक ! पटाक-चटाक !!

—भाइयो ! सुन लें···।

—अच्छा, सुन लो । साला चमगादड़ का बच्चा क्या कहता है !···एं ! बाजा बन्द करो ।

—भाइयो ! किसी बात को सोचे-विचारे बिना···।

—हमलोगों ने खूब सोच-विचार लिया है । हम लोगों को भी बुद्धि दिया है भगवान् ने !

—मैं मानता हूँ, गलती आपकी नहीं !···पुरानी नौकरशाही अब भी काम कर रही है !

—सुनो, सुनो । क्या कहता है ।···उसकी जमीन भी तो डूबेगी ।

—दुलारीदाय में, जहाँ तक मेरा ख्याल है, सब से ज्यादे मेरी जमीन ही पड़ती है ।···यदि आपको इस योजना के पहले सारी बातें बता दी जातीं तो मेरा विश्वास है, आप आज खुशियाँ मनाते ।···

—मारो साले को !···फोटो लेता है, लेने दो । छोड़ दो, छोड़ दो !!

—हाँ, खुशियाँ मनाने की बात है ।

—साला, पगलैटी करता है !···मारो !···छोड़ो !···आगे बढ़ो !

जित्तन के कपाल पर एक रोड़ा आकर लगा ! उसका सफेद कुर्त्ता खून से तरबतर हो गया । ओठों पर जमते हुए लहू को पोंछकर उसने हाथ उठाया —आप मेरी बात सुन लीजिए, पहले ! इसके बाद ढेले, रोड़े और लाठियों ने जवाब देना चाहें, दें ।···आपने जिस अफसर को कुछ देर पहले मारा है, वह मरते समय भी आपकी भलाई की बात सोचकर मरेगा ।···

भिम्मल मामा के साथ इरावती भी आ गई। दौड़ती, हाँफती !···आज के पत्रों में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ है। जितेन्द्र के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। समाचार-पत्र खोल कर वह जोर-जोर से पढ़ कर सुनाता है—परानपुर की परती पर इसी साल जूट, और धान की खेती···इसमें जूट धान, दलहन, तिलहन, मकई, ज्वार आदि की उपज होगी, जब कि दुलारीदाय में सिर्फ जूट और धान की ही खेती होती थी। ···दुलारीदाय में कुल उपजाऊ जमीन, ढाई हजार एकड़, जब कि परती पर सात-आठ हजार एकड़ जमीन अगले वर्षों में तैयार हो जायगी !···दुलारीदाय के पाँचो कुंड में बारहो महीने पानी भरा रहेगा। गीतवास के पास एक छोटा बाँध तैयार होगा।···परती की सिंचाई।···गंगा के किनारे तक दुलारीदाय के कछार पर फैली ऊसर धरती, खेती के लायक हो जायगी।···दुलारीदाय के किसानों को परती पर जमीन दी जायगी। इसके साथ बेजमीन लोगों को भी···। फसल की कीमत के साथ नकद क्षतिपूर्ति !···तीन साल तक सरकारी सहायता मिलेगी, नई खेती करनेवालों को ! दुलारीदाय नहर और गीतवास-बाँध-निर्माण में गाँव के लोगों को काम···।

—सब झूट। ठगने वाली बात। परती पर कुछ नहीं होगा।··· फुसला रहा है ! इस साले को जरूर सरकार की ओर से पैसा मिलता है।···नारा लगाओ।···भाइयो ! जिस अफसर को आपने आज घेर कर मारा है, उसने आप के लिए नई किस्म का एक पाट पैदा किया है। चन्नी पाट से भी बढ़िया !···चक बीज में एक ही पौधा उगेगा, लेकिन बारह इंच के बाद ही उसमें पांच से लेकर सात डंठल निकल आयेंगे। जहाँ एक मन पाट होता है, वहाँ चार मन तो अवश्य होगा। साल में दो बार पाट उपजेगा। सॉब झूट बात !!

—दोष हमारे विशेषज्ञों का नहीं। हमारी सरकार के पुराने कल-पुर्जे ही इसके लिए जिम्मेवार हैं। वरना, जैसा कि मैंने बतलाया, आप आज

तोड़ने-फोड़ने के बदले गढ़ने का सपना देखते !···इतना बड़ा काम हो रहा है किन्तु आप इससे नावाकिफ़ हैं कि क्या हो रहा है, किसके लिए हो रहा है !···मुझे ऐसा भी लगता है कि जानबूझ कर ही आपको अन्धकार में रखा जाता है ! क्योंकि, आपकी दिलचस्पी से उन्हें खतरा है।··· इन कामों से आपका लगाव होते ही नौकरशाहों की मनमानी नहीं चलेगी ! एक कप चाय पीने के लिए तीन गैलन तेल जला कर वे शहर नहीं जा सकेंगे ! सीमेंट की चोर-बाजारी नहीं कर सकेंगे ! एक दिन में होने वाले काम में एक महीने की देरी नहीं लगा सकेंगे !···नदियों पर बिना पुल बनाये ही कागज पर पुल बना कर बाद में बाढ़ से पुल के बह जाने की रिपोर्ट वे नहीं दे सकेंगे !···और इस जुलूस के राजनीतिक संगठन कर्त्ताओं से एक अर्ज़···।

मकबूल ने कहा—मैं क़बूल करता हूँ, हमने गलत क़दम उठाया था।

रंगलाल गुरुजी का चिर-संकुचित चेहरा आज पहली बार खिला है !

जयदेव बाबू, डी० डी० टी० और रामनिहोरा ने एक ही साथ कहा—सोशलिस्ट लोगों का इसमें कोई हाथ नहीं।

सरवन बाबू के भाई लालचन ने कहा—परानपुर वालो ! आप लोग पैर पीछे मत कीजिए। आगे बढ़िए !···लुत्तो बाबू ! नारा लगाइए !

—नहर का फैसला !

······· ·· !!

भिम्मल मामा अब तक चुपचाप खड़े थे। बोले—सुबुद्धि की जय !!

···चलो, चलो। वापस चलो। झूठमूठ परेशान किया। अन्याय बात ! छीः, छीः ! औरत को घेर कर मारा ! हाय-हाय !···चलो, चलो, वापस चलो। अपने-अपने गाँव में उत्सव करो। सर्वे में भी जो बेजमीन रहे, उसको भी जमीन मिलेगी !

ऑपरेशन पार्टी के बुलडोजर की गड़गड़ाहट सारे प्रांतर पर फैल रही है।

नाखा के हवलदार साहब तार देकर लौटे स्टेशन से तो अवाक् हो गए—कहाँ चले गए सब ? लो मजा ! दारोगा साहब को क्या जवाब देंगे ? झूठमूठ···!

—आओ, जित्तू ! तुम्हारी ही राह देख रहा है मीत··· ।

ताजमनी बिलख-बिलख कर रो रही है—जित्तू !

—क्या हुआ ?···रोओ मत। मुझे कुछ नहीं हुआ है। छोटे से कंकड़ की चोट है।···हवेली की आँगन में औरतों और छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की भीड़ लगी हुई है। तुलसी चौरा के पास, खाट पर मीत को लिटा दिया गया है। खून से लथपथ शरीर !

फेकनी की माय जंगली जड़ी-बूटी पीस रही है—हाय, हाय ! बेचारे की गर्दन ही तोड़ दी है। फूहा गरम पानी से घाव धो रही है। रामरत्ती पीसो और जयवंती दूध की कटोरी लेकर मीत को दूध पिलाने की कोशिश कर रही हैं !···दिल बहादुर उत्तेजित होकर कहता है—लो नुधना लान म

काटछूँ !

—किसने मारा ?

सामबत्ती पीसी बोली—न जाने किस गाँव के कुत्ते थे ! हः हः, मेरे यहाँ कम्फू की बीबी, मैं कैसे छोड़कर जाती कहीं ? उसके जाने के बाद जैसे ही मैं जयवंती के घर के पास आई…।

जयवंती और सेमियाँ एक ही साथ बोली—यदि सुधना ने कुत्तों को नहीं बुलाया होता तो कुछ नहीं होता। …सुधना की बदमाशी है।

—सरबन बाबू का बेटा भी था।…परसदवा भी था। जंगलू का बेटा भी।…चार-चार कुत्तों ने दाँत से पकड़ कर झकझोरा है !

—जुलूस की ओर जा रहा था मीत !

जितेन्द्र ने खाट के पास जाकर पुकारा—मीत !…ताजू ! रोती क्यों है ? मीत रह-रह कर कराहता—उँ-उँ-ऊँ !…मीत ?

मीत ने आँखें खोलीं। शराबी की आँखों जैसी झपकती हुई आँखें।—मीत ! मीत इस बार अपनी बची-खुची ताकत को बटोर कर उठ बैठा। कान झाड़े। खून के छींटे चारों ओर छरछरा कर पड़े। ऑ-ऊँ !! और, वह जित्तन की गोदी में गिर पड़ा। देह काठ की तरह कड़ी हो गई। मुँह से, थोड़ी-सी जीभ अर्धचन्द्राकार बाहर की ओर निकली हुई…!

पछाड़ खाकर गिर पड़ी ताजमनी—ओ माँ तारा ! यह क्या किया ! मीत रे-ए-ए ! गोविंदो की आँखें बरस पड़ीं। रामपखारन सिंह अवाक् है !…आज सुबह से उसकी अक्ल गुम है। इतनी बड़ी बात पर तो वह क्या न कर देता ! लेकिन, बौआजी का हुकुम—हवेली छोड़कर कहीं मत जाना।

गाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी रो पड़े।…हवेली का आँगन सिहर उठा ! मुंशी जलधारीलाल दास पूछता है जितेन्द्र से—कलमबाग की जमीन में ही तो…? जितेन्द्र ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और अपने कमरे में चला गया।

चार-पाँच दिनों तक गाँव में डर समाया रहा। कोसी कैम्प और ऑपरेशन-पार्टी की रक्षा के लिए हथियारबन्द पुलीस का एक जत्था आया। सब-डिवीजनल पुलीस इन्सपेक्टर दल-बल के साथ गाँव में आए।

···कम्फू के साहब को धक्कम-धुक्की किया है ! कम्फू की बीबी पर हाथ दिया है !! जित्तन का सिर फूटा है ! बड़ा भारी केस चलेगा। सेशन ?···रेलवे-लाइन के मुकदमे में कालेपानी और फाँसी तक की सजा होती है !

—क्या ? केस नहीं करेगी, पुलीस ? कैसे मालूम हुआ ?

—कोसी कम्फू की बीबी ने दारोगा-निसपिट्टर से कहा—कुछ नहीं हुआ है ! हवलदार साहब कह रहे थे अभी, जित्तनबाबू ने सरकार को ही दोखी साबित कर दिया। कोसी के बंगालीसाहब ने भी कहा—कोई बात नहीं हुआ।

—जै काली माय !

घर-घर में छिपे हुए लोग चार-पाँच दिनों के बाद निकले। गरुड़धुज झा अचरज से मुँह फाड़कर सोचता है—मुकदमा नहीं करने का क्या तुक ? ऐसे मार-केस को भी भला मटिया देते हैं लोग ? भूदानियों ने तो अनसन की धमकी दी थी। इन लोगों ने वह भी नहीं···!!

हर जगह जितेन्द्र के मीत की मृत्यु की चर्चा हुई—च : च : !! कितना प्यारा कुत्ता था।···बोली कितना समझता था। हाय, हाय !!

रोशन बिस्वाँ की साइकिल का भेढ़क-हार्न बोला, कई दिनों के बाद—पें-एं-एँ-ग ! सुनिए, झा जी ! मैंने आपके और छत्तो के नाम के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन बारह किस्म की बातें कर के नामंजूर कर दिया लोगों ने !

कलेजे में रह-रह कर कचोट उठती है।···वह बेचारा तो, अबोला जानवर था।···आदमी को घेरकर दाँत से झकझोर कर मार डालना चाहता है, आदमी का गिरोह! तुम्हारा मुरझाया हुआ मुँह देखकर मैं हताश हो जाता हूँ। चलो, अमहरा के बाजा बजानेवाले चमारों का दल आया है। उन लोगों की पिपही-शहनाई बड़ी मीठी होती है। है न? मैंने बुलाया है। कौन गीत बजाने को कहें?···ताजू रानी। मैं मीत की पत्थर की मूर्ति बनवा कर मँगवा दूँगा। भवेश ने मूवी से उसके बहुत एक्शन-फिल्म लिए हैं! बोलो, कौन गीत? सावित्री-नाच का?

जितेन्द्र के मन में उसकी मेम-माँ की बातें प्रतिध्वनित होती हैं, बार-बार। ···इन कुण्डों के पास बैठकर एक-एक पद्म को अंकित करेगा, तू। पंछियों का गीत सुनेगा। भौंरों की गुंजन से अपना तानपूरा मिलावेगा। तू गायेगा। नाचेगा।···नाचगान में इन कुण्डों को बेचकर फूक भी दे तो कोई हर्ज नहीं।

मीत के विछोह से मुरझाई ताजमनी हँसकर उसके बालों को सहला देती है, वह तरोताजा हो जाता है! इरावती, इस जाड़े के मौसम में भी पसीना पोंछती हुई आती है, भागती है, प्रेरणा दे जाती है। प्रेमजीत अपने सपने में भी लोकमंच की बातें ही देखता है। परमा, शिवमंगल, प्रयागचन्द··· और, समाजशास्त्री शैलेन्दर!

—क्यों, इरावती! भवेश की प्रयोगशाला से कोई आशाजनक सूचना मिली है? छायानाट्य···शैडो-प्ले के बिना···। उम्मीद दिलाता है? गुड! इस जिले के कई इलाकों में, चम्पानगर के शारदाबाबू की जात्रा-पार्टी से प्रेरित होकर नौजवानों ने जात्रा-दल बनाये थे। जात्रा-दल असफल रहे। किन्तु, क्लारनेट और बेहाला का उपयोग कीर्तन-पार्टियों में करके काफी नाम कमाया, उन लोगों ने। केयट टोली में, कसबा और धरमपुर से कुछ नये बाशिंदे आकर बसे हैं। उनमें से एक के पास क्लारनेट है। हालाँकि उसका क्लारनेट अध-गूँगा है, फिर भी कीर्तन का सुर अच्छा निकाल लेता

है।···प्रेमजीत उसको बुलाने गया है, प्रेम से !

प्रेमजीत को एक लफ़्ज़ बोलने की आदत लग गई है। हर बात के अंत में वह जोड़ देता है—प्रेम से !

ठक्के-ठक्के-ठक्का ! ठक्ठ-ठकट्ठा !! ठक्के-ठक्के···।

···लकड़ी का ढोलक। भिम्मलीय नाम, कठम ! चमड़े को पूरे नहीं, लकड़ी के ही पूरे हैं। लकड़ी के हथौड़े से बजाया जाता है। बड़ा खटाखट ताल लगाता है, भाई ! हद है, जित्तन बाबू भी। लकड़ी का ढोलक'!!

···परमानंद, पेट से माटी की नई हाँड़ी सटा कर बजाने का रियाज कर रहा है—घटम-घटम-घुट, टिड़िकट-टिड़िकट !! हँसी से दम फूलने लगता है, उसको हाँड़ी बजाते देख कर। ढुँग-ढुँग, ढुँग-ढुँग, ढुँगा-आ-आ !! घड़ीघंट-घड़ियाल टँगे हुए हैं, दो सुर के।···छम्मक-खट्छक, छम्मक-खट्छक ! चारजोड़े करताल।

एक माइल पूरब की ओर, परती पर ऑपरेशन पार्टी का ट्रैक्टर भटभटा रहा है। भटभटाहट के तालपर, नैका सुन्नरि का एक पद गुनगुना कर मिलाता है, जितेन्द्रनाथ—नम्मा, नैका सुन्नरि सुनले मोर बचनियाँ रे नाम्। भट-भट, भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट, भट-भट-भट-भट-भट्ट !···कुँहाँ-कुँक्का ! कुँहाँ-कुकाँ !! वायलिन पर रघ्घू रामायनी की सारंगी का विशेष-सुर बजता है !

मलारी आयी है ?

—अँय ! आई है मलारी ? सुवंश भी ? आँख शपथ ?

—सामबत्ती पीसी और सेविया अभी आई है, देख कर।···हवेली में !

—चली जायगी, देखने ! मलारी की माँ गई है या नहीं, बेटी को देखने ? और सुवंश की माँ भी नहीं ?

—सामबत्ती पीसी कहती है : आई है ठेठर में पाठ करने। लिलिया को भी चिट्ठी गई है, मनमोहन बाबू की। वह भी आ रही है।···छौंड़ा-छौंड़ी मिलकर नाटक करेंगे ? सच ? हँ-हँ-हँ !!

—अरी, मलारी की माँ, बेटी को देखने नहीं गई है ?

महीचन चिल्ला-चिल्लाकर पड़ोस की औरतों को गाली देता है—कौन साली लेती है, मलारी का नाम ? मन में खुजली होती है तो गाली सुनने···।

महीचन की बोली बन्द हो गई !···यह दोनों कौन आ रही हैं ? कम्फू की मेम साहब और···मलारी ? ऍं !

···हाँ, मलारी ही है ! हे, घोतना की माय ! सुखनी मौसी ! ढोलबज्जावाली ! दौड़ के आ ! देख-देख ! कौन आ रही है !···कोई कहेगा कि चमार की बेटी है ? रमपतिया !!

मलारी की माँ आँगन से निकल आई। मलारी के पहुँचने के पहले ही घूँघट से मुँह ढँककर, सुर से रोने लगी—आ-गे बेटी-ई-ई !! तोरा खातिर सब दिन बोली-ठोली सहली-ई-ई-ई, पर-जे-परोसनी के ठोना-जे-ठिठोली-ई-ई, हमरा छोड़ि कहाँ चलि गेली गे-ए-ए, बे-ए-ए-टी !!

इरावती पूछती है—गीत गा रही या रो रही है ?

मलारी भरे गले और भरी आँखों से बोली—मेरी माँ !···रोती है !! रमदेवा ने रोना शुरू किया। अपने दुलारे भाई को प्यार से चुमकार कर चुप करती है और खुद रोती है—भैया रे-ए !···रोती हुई बाप के पास गई, पैर छूकर पाँवलागी की। महीचन भी आँख में अँगोछा लगाकर रोने लगा। घिघिया कर बोला—बेटी ! काहे आई ? तुम्हारे लिए तो हम लोग मर गए।

इरावती, चुपचाप इस मिलन-रुदन को देखती-सुनती रही। उसका दिल भी रह-रह कर भर आता। माँ-बेटी, बाप-भाई···!!

मलारी की माँ का आँगन खचाखच भर गया। मलारी रेवड़ी बाँट रही है।

किसी के मन में अभी मैल नहीं। सभी उसके मुँह की ओर देखते हैं। चेहरा-मोहरा, पहरावा-ओढ़ावा !! कम्फू की बीबी भी उसके सामने मलिन लगती है। शहर जाकर चेहरे पर कैसी चमचमाहट आ गई है !···गले की सोने की सिकरी देह के अंगोठ से मिल गई है। देह की गढ़न भी बदल गई है !

बालगोविन की बहू धीरे से पूछती है—सुवंशलाल अपने घर गया है या नहीं ?

मलारी ने कोई जवाब नहीं दिया।···बात समझ में आ गई, सबकी।

परमा ने पुस्तकालय के पटनागार में गरुड़धुज की अभद्र दिल्लगी का जिक्र करते हुए कहा—बहुत भद्दी-भद्दी बातें करता है। भगताइन कह रही थी, इरावती बहन को नैनी मछली कहता है। सुनोगे भला ? इरावती बहन की साड़ी का पल्ला खींचने का इशारा भी उसी ने दिया था ! इस पाँच हाथ लम्बे लुच्चे को क्या किया जाय ? अभी मुझसे दिल्लगी की उसने, तुम लोगों की फिलिम कम्पनी कब से स्टाट हो रही है ? खूब फूलेगी-फलेगी तुम लोगों की कम्पनी ! देशी-बिदेशी दोनों किस्म का माल···। मैंने चेतावनी दे दी है।···हसने की बात नहीं, परानपुर की प्रतिष्ठा का प्रश्न है प्यारे भाइयो !

—अरे, हटाओ उन लोगों की बातों को।

—हटाओ क्या ? अब कभी उसने ऐसी दिल्लगी की तो दिखला दूँगा। उसके नंटाइज्म को बर्दास्त नहीं कर सकता ! भिम्मल मामा पटनागार

के कोने से बोले—उसकी काष्ठहँसी की ध्वनि से लाभ उठाया जा सकता है।

परमा ने जोर से ठहाका लगाकर गरुड़धुज की अविकल नकल की—ई-पी-ही-ही-ही। ई-पी-ही-ही-ही !!

—कौन ड्रामा होगा ? मालूम हुआ नाम ? मँगनीसिंह दीवाना का प्यार का बाजार तो नहीं ?

प्रेमजीत पठनागार में प्रवेश करता हुआ बोला—मँगनीसिंह दीवाना नहीं ! प्रेमजीत।···लोकमंच के सदस्यों की बैठक है, कल सुबह। इरावती बहन कह रही है, जितने लोग पार्ट चाहेंगे, दूँगी। देखा, मैंने कहा था न ! गाँव में, गाँव के लिए, गाँव के द्वारा···। हाँ, हाँ ! जो लोग बाजा-गाजा बजाना जानते हैं, उनको भी मौका दिया जायगा। अभी, फेनाइल···नहीं-नहीं··· डी० डी० टी० बाँसुरी बजाकर आ रहा है। बँगला भठियाली गीत के रेकर्ड का धुन बजाकर सुना दिया। जित्तन भैया खुश हो गए !

परमा ने कहा—महीने में पाँच नाम बदलते हो, ठीक है। मलारी और सुवंश के प्रति तुम्हारा विचार···। प्रेमजीत हँसकर कहता है—तुम इरावती बहन के सामने ऐसी-ऐसी दिल्लगी मत करना, परमा भाई ! कल मैं लाज से गड़ गया !

निगरानी कमिटी के प्रस्ताव पर बहुत जल्दी ध्यान दिया है, अधिकारियों ने। आश्चर्य···! लिखकर जवाब दिया है—अगस्त तक कुण्डों के तट की बँधाई समाप्त करने के लिए यह आवश्यक समझा गया है कि इसी महीने से काम शुरू कर दिया जाय।···निगरानी कमिटी के सहयोग के लिए धन्यवाद !

···सेटलमेंट-ऑफिसर होकर आ रहे हैं, खुद कलक्टर साहब ! इस बार सर्वे-सेटलमेंट की तरह गड़बड़ी नहीं होगी।···गाँव के बैलगाड़ीवालों की

लिस्ट तैयार हो गई ? पाँच सौ बैलगाड़ियाँ रोज चाहिए !

…लुत्तो से पुलीस इन्स्पेक्टर साहेब ने मुचलका लिया है !…काँग्रेस का पाँच सौ रुपैया चन्दा वसूल कर गपतगोल कर गया है ! ईंट बनवा रहा है, देखते हो नहीं !

सुबह से शाम तक ऑपरेशनपार्टी की अनवरत भटभटाहट वातावरण में गति का संचार करती है । …पहिए घूमते हैं !

सुचितलाल मड़र ने निगरानी कमिटी में अर्जी दी है—इस बार उसके नाम में सुधार करवा दिया जाय ।…पोंपी नहीं । कमिटी के मेम्बरों को वह दही-चूड़ा और केला खिलावेगा ।…हा-हा-हा !!

दुलारीदाय योजना से सम्बन्धित छोटे-बड़े समाचार को गाँव के हर औरत-मर्द तक पहुँचाने के लिए पुस्तकालय के मन्त्री प्रयागचन्द ने एक योजना बनाई है ।…पुस्तकालय के सदस्यों से छित्तन बाबू ने माफी माँग कर बची-खुची किताबें वापस दे दी हैं । बिकूबाबू ने रेडियो की कीमत देने का वचन दिया है ! पुस्तकालय को जित्तन बाबू की हवेली का हॉल मिल गया है, अगले महीने में स्थान-परिवर्तन किया जायगा ।

'पंच-चक्र' !…लोकमंच पर 'पंच-चक्र' गीति-नाट्य पाँच दृश्यों में, परान-पुर के सवा सौ कलाकारों के सक्रिय सहयोग से प्रस्तुत किया जायगा ! प्रेमजीत, प्रचारवाणी प्रसारित करके लोगों के उत्साह को बढ़ाता है—कटिहार, पूर्णियाँ, फारबिसगंज से भी दर्शक आवेंगे ! 'पंच-चक्र' !!

दुलारीदाय के तट को बाँधनेवाली पार्टी आ गई ! बरदिया घाट के पास कैम्प के खूँटे गड़ रहे हैं । गाँव के मजदूरों के पहले जत्थे को काम मिल गया । गाड़ीवानों का इंचार्ज मकबूल ही है । गीतवास के पास से चिकनी मिट्टी लाने के लिए एक सौ गाड़ीवानों को पुर्जा दिया गया है ।…उधर, परती-ऑपरेशनपार्टी में भी अब लोगों की आवश्यकता हुई है ।

गाड़ीवानों का आखिरी जत्था चिकनी मिट्टी लेकर लौट रहा है। बैलगाड़ी की कतार ! चर्रर-चूँ चूँ करती हुई। गाड़ी की धीमी गति की तरह गाया जाने वाला गाड़ीवानों का गीत, मोरंग-बनिजरवा अलाप रहा है कोई सरस गाड़ीवान—जो तेंहू जइबे पियरवा-आ-आ-आ कि मोरंग बनि-इ-इ-इ-जरवा रे-ए-ए-ए रा-आ-म, हम धनि जऽइ-इ-बे नै-ए-हर-वा कि हमरा-आ-आ-जनि छा-आ-आ-ड़ी जा-आ-रे-ए-ए-ए निर-मो-ओ-ओ-हि-यो-ओ-ओ !! ···चल भैया, आखिरी खेप। मोरंग जाने की जरूरत नहीं ! चर्रर-चूँ-ऊँ-उ !!

अब लोगों के कलेजे नहीं धड़कते !

देहाती कच्ची सड़क के गड्ढे, खाई और आँक-बाँक को समतल बनाती हुई बड़ी-बड़ी मशीनें आई हैं। गाँववालों के चेहरों पर अब आतंक के चिन्ह नहीं अंकित होते !

औरत-मर्दों के झुण्ड बरदिया घाट पर मेला लगाए खड़े हैं।···डी० डी० टी० कहता है—ओवरसियर साहब ! इन ट्रैक्टरों और मशीनों के बारे में समझाने वाला कोई आदमी दीजिये, कृपा कर। लोग जानना चाहते हैं···।

—ठीक है। आइए, मैं आपको बतला दूँ। आप उन्हें अपनी बोली में समझा दें। यह है, ट्रैक्टर शोवेल्स। रोड़े, सुर्खी, मिट्टी वगैरह को ढोने के काम आता है। इसकी विशेषता है कि खुद ट्रेलर में लदाई-बोझाई करता है और खुद खाली करता है। यह, एक्सकेवेटर क्रेन है, बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों को नीचे-ऊपर ले आयगा, ले जायगा। और यह ट्रैक्टर लौगर्स ! लकड़ी की मोटी-मोटी सिल्लियों को हाथी की तरह उठा कर···!

अचरज भरी मुस्कराहट हर मुखड़े पर छाई हुई है ! पत्थर के बड़े-बड़े चिप्स, हिप्पो-ट्रैक्टर में लद कर आ रहे हैं।···गाँव के काम करने वालों के दूसरे जत्थे के लोगों को काम मिल गया। पार्टी के साथ आये हुए बाहरी मजदूर उन्हें सिखाते हैं, बिना बोल मिलाये काम नहीं होता ! लजाने की क्या बात? आवाज देना—मार जवानों, हइयो ! पत्थर तोड़,

हइयो···!! गाँव के बच्चे भी गली-कूचे में खेलते समय ताल पर हइयो कहना सीख गए हैं।

सुधना को बुलाकर प्यार से समझा रही है, ताजमनी—सुधो भैया ! जाओ, जिद्दा बुला रहे हैं। कुछ नहीं कहेंगे। जा। बाबू··· ।

—दिदिया, मीत···! सुधना आत्मग्लानि और पश्चाताप से घुल रहा है, अब। बुरे-बुरे सपने आते हैं। वह हिचकियाँ लेकर रोने लगा। जितेन्द्र ने कहा—सुधीन बाबू ! इरावती दिदिया बुला रही है। जाओ ! इरावती, गाँव के एक-डेढ़ दर्जन बच्चों को बटोर कर बात कर रही है, घुल-मिलकर। सबकी बोली-वाणी और मुख-मुद्रा को ध्यान से देखती है।···सचमुच, सुधीन के चेहरे में एक विशेषता है। भोलाभाला भाव !

—अब, तुम्हारी बारी है ताजू ! तुमने वचन दिया था।···निश्चय ही, माँ तारा ने आज्ञा दे दी है।

ताजमनी हँसी—सभी नाटक ही करेंगे तो देखेंगे कौन ?

—उसकी फिक्र तुम मत करो।···आज से रिहर्सल शुरू हो रहा है। तुम मेरे साथ रहोगी। हाँ, मुझे हमेशा तुम्हारी जरूरत होती है। सचमुच, अमहरावालों की पिपही-शहनाई ने हमारे वाद्यवृन्द में नया रंग डाल दिया है।

जितेन्द्र के उत्साह को देखकर ताजमनी का मन उत्फुल्ल हो जाता है। किन्तु, तुरत मीत की याद !

—ताजू ! क्या कहती हो ?···

···अब बच्चों की तरह मनुहार कर रहे हैं, जिद्दा। ताजमनी बोली—रिहर्सल में जाने के पहले तारा मन्दिर जाइएगा तो ?

—जाऊँगा !

···अब और क्या ? ताजमनी ने पूछा—'कारन' ?

—नहीं। अब 'कारन' नहीं।...मधु!

जितेन्द्र को याद आई, यह बात उसकी अपनी नहीं!

परानपुर की पुरानी रीत है, नैन देने के पहले देवी की मिट्टी की प्रतिमा नहीं देखने जाते, बड़े-बूढ़े। और नाटक के रिहर्सल में कोई बेकार आदमी नहीं जाते, भीड़ लगाने के लिए। देवी की प्रतिमा की आँखों में मणि दी मूर्तिकार ने, पुजारी ने प्राण-प्रतिष्ठा की। तब, भक्ति भरे मन से देवी का रूप देखते हैं जाकर।...रिहर्सल देखने के बाद नाटक में क्या रस मिलेगा?

किन्तु, इस बार रिहर्सल में ही भीड़ है। डेढ़ सौ कलाकार आ गए हैं। प्रेमजीत कहता है—एक बार आखिरी एलान कर आऊँ फिर, प्रेम से?

—हाँ! जितेन्द्रनाथ ने सिर हिला कर कहा। डी० डी० टी० ने विरक्त मुद्रा में कहा—अब कितने लोगों को बुला रहे हैं?...सो, कितना बड़ा नाटक है?

मकबूल रिहर्सल में नहीं आया है। लेकिन, रास्ते में उसने डी० डी० टी० से धीरे से जो बात कह दी, वह डी० डी० टी० के मन में कचक रही है—कहीं कोई गहरा मजाक़ तो नहीं कर रहा है!

जितेन्द्रनाथ ने कहा—इसमें सभी किस्म के कलाकार हैं। गायक, वादक, अभिनेता के अलावा कला-सलाहकार और मंचकार!

मलारी और सुवंश आए।...सुवंशलाल अपनी माँ से मिलने गया था। मुँह लटकाकर लौटा है। मँझली भाभी ने नहीं, भाई ने ठेस लगाई होगी! ...यदुवंश के मुँह में लस नहीं है! जितेन्द्रनाथ ने कलाकारों से निवेदन किया—आप लोग मुझे क्षमा करें! बिना पार्ट का बँटवारा किये ही मैं रिहर्सल शुरू कर रहा हूँ। असफल होऊँगा तो पार्ट बाँट कर काम करूँगा!

सभी ने एक दूसरे की ओर देखा! जितेन्द्र ने कहा—मलारी और ताजमनी

की कल्पना तुम कर सकती हो, मुझे विश्वास है ! अध-गूँगा क्लारनेट बजाने वाले को लोग मेहमान कहकर पुकारते हैं। जितेन्द्र ने कहा—मेहमानजी ! आप तैयार रहिए !···कोशका मैया गौर में दीप जलाकर भागी जा रही है नैहर, वहीं से शुरू करो शिवा !···खँजड़ी तैयार रखो, कामा ! और, उस बाजे का क्या नाम है बालाजी महाराज, गिड़िंग बाजा ?···लकड़ी की कटिया में एक ओर चमड़े से छाया हुआ, बीच में ताँत लगाया हुआ। काँख से कटिया को दबाकर बालाजी तैयार हैं। शिवभद्र ने कान पर हाथ रखकर शुरू किया।

थर-थर काँपे धरती मैया, रोये जी आकासः
घड़ी-घड़ी में मूर्छा लागे, डेग-डेग पियासः

—खँजनी !···गिड़िंग बाजा, बालाजी !···मेहमानजी, बस उतना ही !!···

घाट न सूझे बाट न सूझे सूझ'न अप्पन हाथः

—कठम, काठ की ढोलकी।···करताल। चलाए चलो शिवा !

चटक-चटक-डिम, चटक-चटक-डिम !···उँक्क-उँक्का, उँक्क-उँक्का !!···पिट-पें पिट-पें !!···ठक्के-टक्का, ठक्के-ठक्का। छम्मक-छट्छक !!

मलारी सिर्फ घुँघरू की बोली मन-ही-मन भर रही है इस द्रुत स्वर-तरंग में। छुम्म-छुम्मक···! मूसलधार वृष्टि में, विशाल परती पर भागती कोशका-मैया ! उनके पाँव की झनकती पैजनी !!

माघ मास की लम्बी रात, न जाने किधर से कट गई !

रिहर्सल से लौटते समय, मन में पवित्र प्रातकी फूट रही थी सबके !

मन की परती टूट गई···!

माघ मास कब गया, फागुन किस दिन आया, परानपुर गाँव को नहीं मालूम। कोयल की मधु लिपटी बोली सुनकर एक-एक प्राणी ने अपने मन के मधु-कोष में देखा—टटके मधु का एक बूँद संचित हो गया है!

दुलारीदाय के पूर्वी महार पर पत्थर के टुकड़ों के अम्बार लग गए हैं। एक्सकेवटर-क्रेन पत्थरों के टुकड़ों को ऊपर उठाता है, फिर नीचे दुलारीदाय के वलवाही कगार पर उझिल देता है। काम में मगन लोगों को लगन लगी है—वर्षा के पहले तटबन्ध तैयार हो जाय!···और भी जोर से!! मार जवानों, हइयो। परवत तोड़, हइयो। पत्थर तोड़, हइयो!!

जितेन्द्रनाथ के नये बाग के पेड़ और भी एक हाथ बढ़े!···ऑपरेशन पार्टी द्वारा तोड़ी हुई परती पर श्रीपंचमी के दिन नई जाति के पाट की बोवाई होगी। वर्ष में दो बार पाट की खेती होगी, इस नई जाति के पाट की।···भिम्मलमामा ने इस नये पाट का नाम दिया है—क्रांति पाट। सोना पाट, चानी पाट नहीं!

'पंचचक्र' के पाँच दृश्यों के ताल-तरंग लोकमंच के कलाकारों के प्राण में समा गये हैं! सहज सुर में बँधे हुए लोग एक विशेष ताल पर चलते हैं!

पनघट पर नुक्त हँसी की हिलोर उठती है! गाँव की गलियों में हीरे-मोती बिछ जाते हैं। आज श्रीपंचमी है। लोकमंच के कलाकार वीणा-पुस्तक धारिणी माँ शारदा के चरण में नत हैं—जय माँ शारदे!

कृषि विशारदों ने तोड़ी हुई परती की तैयार मिट्टी में बीज वपन किया—

परती : परिकथा–५२६

ओ ! धरती माता···!

सूरज डूबने के पहले ही परानपुर नाट्यशाला की नई अँगनाई भर गई। हाई स्कूल के बालचर और कन्या पाठशाला की स्वयंसेविकाओं के अलावा गाँव के बड़े-बूढ़े लोग भी लोगों को बैठा रहे हैं। भीड़ बढ़ती ही जाती है। ···कोसी कैम्प के लोग गाँववालों को नाम-बनाम जानने लगे हैं—ए ! सुचितलाल मड़र ! इधर एक दरी बिछा दीजिये ! कोलाहल ! कलरव !! औत्सुक्य ! चांचल्य ! रोशनी, मुखड़े अनेक ! सब पर हँसी, एक ! यांत्रिक करतल-ध्वनि नहीं। सरल, सहज, मुखर मानव !···

'पंचचक्र' ! निवेदक लोकमंच, परानपुर···। पर्दा खुला। भनभनाहट भी बन्द हो गई। मंच पर अन्धकार !! सन्नाटा। एक सिसकी भी नहीं ! निःशब्द मंच के पिछले पर्दे पर एक पंछी की छाया उभरी···क्षीण आलोक। पंछी ने पंख फड़काये। छवि स्पष्ट हो गई, पंडुकी ! ध्वनि—तुर-तु-तू, तू-ऊ-तू-तू ! उठ जित्तू चाउर पुरे-पुरे-पुरे !···चाउर-पुरे ! चाउर-पुरे !! रे-ए-म-रे-ए-ए-म। तानपूरे की झंकार के साथ मंच पर प्रकाश बढ़ता जाता है, क्रमशः ! तानपूरे की झंकार विलीन हुई। सारंगी के झनक-तारों पर सुन्दर सुभूमि की रागिनी उतरी, हौले-हौले ! सुकण्ठ से सुरीले गीत की सुनहरी धारा फूटी। वाद्यवृन्द और पार्श्वगीत को भेदकर उद्घोषक का नम्र स्वर, ध्वनि-विस्तारक यन्त्र पर प्रतिध्वनित होता है—पूर्णियाँ के जन-जीवन में जिनकी स्मृति आज भी गुनगुना रही है—बटोहिया गीत के अमर गायक स्वर्गीय रघुवीरनारायण को निवेदित। ···गंगा रे जमुनवाँ के निरमल पनियाँ से-ए।···ताँग-खेरे-खेरे-खेरे, ताँग खेरे। टिन्नक-किनकाँ-टिन्नक। खोल, मंदिरा बाँसुरी, बटम, शंख, घड़ियाल, झाँझ, करताल !! प्राण का प्रथम रंग उभरा मंच पर !

दर्शकों की आँखों में तरल तरंग ! आनन्दोल्लास ! हे-ए-ए ! कोशका महरानी ! कौन ? ताजमनी ?···रेशमी पटोर मैया फाड़ि के फेंकाउली, सोना के गहनवाँ मैया गाँव में बँटाउली, आँरे रूपा के जे।···छम्म, छम्माँ !···थर-

थर काँपे धरती मैया।···खँजनी, गिड़िंग बाजा।···मंच पर लहराता प्रकाश, जलछवि-सा ! मूसलाधार वृष्टि में विशाल परती पर भागती कोशका मैया ! ···बड़े-बड़े ढोलों की हल्की गड़गड़ाहट, अन्धकार।···वायलिन की दर्द भरी सिहरन ! एक दीप टिमटिमा उठा ! उजाला हुआ !···दुलारीदाय ? है-ए-ए-ए ! मलारीदाय ?···दोनों रे बहिनियाँ रामा गला जोड़ी बिलखय। ···युग-युग के बाद, एक-एक प्राणी पाप से मुक्त होगा।···प्राणों के नये-नये रंग उभरेंगे ! अल्पविरामकालीन कलरव।

दूसरा चक्र : नैका सुन्नरि गीत कथा।···नैका सुन्नरि, मलारी ? नाचती है मलारी ? है-है ! सुन्नर नैका, भिम्मल मामा। कुँका-कुँहा !···दन्ता राकस का दाँत देखो। पहचानो कौन है ! परमा के गले की आवाज है···ई-पी-ही-ही-ही ! गरुड़ झा की तरह हँसता है ?···सुन्नरि नैका रे, जोड़ लो पीरित जनि तोड़े रे-ए !···दन्ता का बेटा, सुधना !

तीसरा चक्र : शैडो-प्ले और १६ मिलीमीटर का चलचित्र ! छाया-नाट्य··· कंकालों की टोली, बेघरबार लोगों की छाया। वाद्यवृन्द के बीच करुण पुकार भरते हुए लोगों की टोली —आह-रे-ए-ए-ए-हे ! कोशी की बाढ़ से पीड़ित इलाकों की तस्वीर, पर्दे पर उभरी···डूबे हुए गाँव, बहती हुई लाशें, गिद्धों की टोली मँड़राती आसमान में ! आह रे-ए-ए-ए-हे !···चारों ओर निराशा का अन्धकार।···दर्शकों के मुखड़े पर भय की काली छाया !!

चौथा चक्र : सामयिक प्रहसन। भिम्मल मामा, परमा। एक, दूध में पानी मिलाकर बेचनेवाला ग्वाला। दूसरा, दवा में मिलावट करनेवाला डाक्टर। ···वनस्पतिया नौजवान ! लिलिया ? मेम साहेब बनी है—कैसा गिटिम-पिटम बोलती है। हो हो हो। हा-हा-हा !! वनस्पतिया नौजवान मँगनी-सिंह, नहीं-नहीं, प्रेमजीत ! हा-हा-हा। मुँह देखो जरा !

पाँचवाँ चक्र : उद्घोषक की आवाज—निराश, हताश, कोसी-कवलित मानवों की टोली में जनजागरण ने विद्रोह मन्त्र फूँका—धु-तु-तु-तु-तु···!! लड़ाई के नगारे बजते हैं। कोसी बह रही है, लहरें नाच रही हैं। अर्धनग्न

जनता का विशाल दल ! पर्वत तोड़, हइयो । पत्थर जोड़, हइयो । इस कोसी को साधेंगे ।···बच्चे मर गये, हाय रे । बीबी मर गई, हाय रे । उजड़ी दुनिया, हाय रे ।···हम मजबूर, हो गये । घर से दूर, हो गये । वर्ष महीना, एक कर । खून पसीना, एक कर । बिखरी ताकत, जोड़कर । पर्वत पत्थर, तोड़कर । इस डायन को, साधेंगे । उजड़े को, बसाना है··· ठकम-ठकम, ठक-ठक ! घटम-घटम, घट-टिड़िक-टिड़िक !···ट्रैक्टरों और बुलडोजरों की गड़गड़ाहट !···लहरें पछाड़ खाती हैं । अट्टहास !! मंच रह-रहकर हिलता है ।···दर्शकों के मुँह अचरज से खुले हुए हैं । कौन जीतता है—मार जवानो, हइयो ! एक डैम की प्रतिच्छाया-पर्दे पर ! गड़-गड़ गुड़गुड़ गर्र-र्र-र्र-र्र-र्र !!···

धीरे-धीरे ध्वनियाँ विलीन हुईं । मंच पर अन्धकार छाया रहता है । ···डी० डी० टी० की बाँसुरी भटियाली धुन छेड़ती है, अकेली···नदीर धारेर काछे-पासे···! पर्दे पर धीरे-धीरे बादामी छाया छा जाती है । वीरान धरती का रंग बदल रहा है धीरे-धीरे···हरा, लाल, पीला, बैंगनी ।···हरे भरे खेत ! परती पर रंग की लहरें !···बँधुआ सेथाय थाके मोर, बँधुआ सेथाय थाके-ए-ए ! डी० डी० टी० की बाँसुरी रंगों को सुर प्रदान कर रही है । अमृत हास्य परती पर अंकित हो रहा ।···पाँच चक्र नाच रहे हैं । घन घन, घन घन !!···पंडुकी का जित्तू उठ गया । पंडुकी नाच नाच कर पुकार रही है—तुतु-तुत्त, तुरा तुत्त !! ···पिपही-शहनाई ब[illegible] लगी ।

खेल समाप्त हो गया । जनता बैठी है ।···और भी होगा ? पर्दा उठाइए ! कोलाहल ! कलरव !!···दुलारीदाय ? कोशका महारानी ! खोलो-ओ-ओ !··· पर्दा उठा । लोकमंच के कलाकार, मंच पर खड़े होकर जनता को नमस्कार करते हैं ।···डाक्टर रायचौधुरी की मुद्रा—तुमी पारबे !

हर्षोन्मत्त जन-मन···!

सेमलबनी के आकाश में अबीर-गुलाल उड़ रहा है !

आसन्नप्रसवा परती हँसकर करवट लेती है !

परती : परिकथा—२८६

उस रात में मुन्शी जलधारी ने अपने 'गणों' को बुलाया था, हुजूर से भेंट कराने के लिए। चलो! तुम लोगों की किस्मत खुल गई!

बहुत देर तक जितेन्द्रनाथ बकला की बनावट को देखता रहा। लम्बे तरबूज की तरह सिर। कपाल सामने की ओर निकला हुआ। देह से दूध की गन्ध! जो कितनी भी पवित्र क्यों न हो, किसी-किसी के लिए दुर्गन्ध अवश्य है। घुड़कती हुई आँखें!···बकला की मुस्कराहट! उसकी बोली भी अजीब!

—हें-हें-हें। हुजू-उ-उ-र। आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभीं नहीं पकड़ा गया। बीस रस्सी दूर के आदमी के पैर की आहट को परेख लेती है मेरी भैंस! फिर मेरा खूनियाँ भैंसा! उसके तीन नवतुरिया जवान पाँड़ा की जोड़ी! बारी-बारी से चौकन्ना होकर देखने लगते हैं। ···मैं? हुजू-उ-उ-र, मैं तो अपनी मोरंगनी भैंस की पीठ पर नींद में फोंफ-फोंफ्! उधर खेत साफ!!

बकला का फोंफ-फोंफ सुन कर, पहले से ही आतंकित, और जंजीर में बँधे मीत ने तीन बार बॉख किया! ···एक-एक व्यक्तिको प्रवेश करते समय मीत ने डाँट बताई—बॉख-बॉख-बॉख!! बकला ने मीत की ओर सशंक दृष्टि से देखते हुए कहा—हुजू-उ-उ-र। मटरकाट भी हमारी भागती हुई हाँज[1] का मुकाबला नहीं कर सकती। एक बार रानीगंज थाना के दारोगा ने इलाके के नामी पहाड़ी घोड़े पर चढ़ कर पीछा किया! कहाँ मेरी मोरंगनी भैंस के छूए-पूए और कहाँ मँगनी का माल, पहड़िया घोड़ा। मेले के रेस में बाजी मारनेवाला पहाड़ी घोड़ा का पेशाब अटक गया और चार चितंग-हें-हें-हें!!

बकला अपने हुनर में माहिर है। उसकी भैंसों को देखने की इच्छा हुई जितेन्द्रनाथ की। क्योंकि बकला ने बताया—मेरी हाँज की भैंस सिर्फ चरती

---

१. भैंसों का झुण्ड।

ही नहीं ! कल ही, तो चौरीटोलेवाले का दस बीघा सकरकन्द और पटनिया आलू उखाड़ कर कचर गई ! ···हाँ, चारों खुरों से खोदती है मेरी भैंस !···हें-हें-हें । चेले चपाटी भी साथ रहते हैं । हें-हें-हें !!

ननकू नट ! मुन्शी जलधारी का दूसरा दस्तादार ।—वॉख ! वॉख ! वॉख ! वॉख !!

जितेन्द्रनाथ को मांस की गन्ध लगी । मांस की नहीं, शहर के बूचड़खाने की बगलवाली गली में ऐसी ही गन्ध लगती है । ननकू नट की बावड़ी ! खाल से सटा कर कटी हुई पट्टी ! मिस्सी मलकर काले किए दाँत !··· जितेन्द्रनाथ ने सुना—यह ननकू नट मवेशी चुरानेवालों का मेंठ है, इलाके का ! राह के हर गाँव में जिसका एक शागिर्द सतर्क होकर रात में सोता है । डाक के दौड़ाहे की जैसी ड्यूटी ! डाक में आये हुए मवेशी को तुरत दूसरे अड्डे तक पहुँचाने का काम आसान नहीं । सुबह को अपने घर से आँखें मलते हुए उठ कर गाँव में चक्कर मारना होगा ! इसके अलावा ननकू नट का जेबी बूचड़खाना भी चलता है ! हाथ की झोली में जितना सामान है, उसी से वह आध दर्जन मवेशी के मांस का कारबार कर लेता है गुपचुप । जितेन्द्रनाथ ने ननकू नट को मात्र पाँच मिनट अटकाया । भीत रह रह कर गुर्रा उठता था !

खन्तर गुलाबछड़ीवाला ! ···गुलाबछड़ी कड़कड़ बोले, लड़िकन सब के मनुआँ डोले । घण्टी बजाता हुआ खन्तर गुलाबछड़ी वाले को देखते ही गाँव के लड़के धान, चावल या पैसे लेकर दौड़ते । उन लड़कों के पीछे-पीछे उनकी माँ, दादी या चाची ! खन्तर गुलाबछड़ीवाला वैद्य भी है, ओझा भी ! इसलिए, दूसरे गुलाबछड़ी वालों से चौगुना सौदा देने पर भी खन्तर घाटे में नहीं रहता ! गुलाबछड़ी की कड़कड़ी मिठाइयों में, लड़कों की बलि लेने वाले तरह-तरह के जहर लपेट कर खन्तर घण्टी बजाता है । मौत की ओर दौड़ते हुए लड़के ! ···बनहल्दी की एक कच्ची गोली की कीमत दो रुपया ! और झाड़ फूँक में जैसा घर, जैसी बीमारी देखा वैसा हिसाब ।

परती : परिकथा–२८८

हर दो महीने के बाद विभिन्न पोस्ट आफिसों से सैकड़ों रुपये भेजता है, दवा, जन्तर और जड़ी-बूटी के नाम पर! खन्तर गुलाबछड़ीवाला किसी रात को अपने घर में नहीं सोता। किसी-न-किसी गृहस्थ के घर में चक्कर पूज कर, कबूतर का भूना हुआ मांस और तीस नम्बर दारू का तीन बोतल पीकर, बैठा मन्तर पढ़ता रहता है। चक्कर के पास पीड़ित बच्चा अपनी माँ या दादी की गोद में ऐंठता हुआ। रह-रह कर चिल्लाता— बप्पा रे! मैया रे! ···बॉख-बॉख-बॉख-बॉख!!

खन्तर गुलाबछड़ीवाला बड़ी मीठी बोलनेवाला। बात बोलनेके पहले प्रत्येक बार नाक से एक विचित्र आवाज निकालता है ···खँक्! बाबू साहेब! बात यह है कि जानबूझकर जान लेना अच्छी बात नहीं। इसलिए, खँक्, ज्यादा तेज खुराक नहीं मिलाता हूँ। नारियल के पानी और कोहड़े के सेंक से पेट का दर्द आराम कर पचीस-पचास मिल जाते हैं। कभी-कभी अन्दाज से फाजिल खुराक पड़ जाने पर जान चली जाती है, एकाध की।··· फरमायशी काम में हजार-पाँच सौ से कम नहीं लेता। अब तक सिर्फ तीन फरमायशी गुलाबछड़ी बना कर खिलाया है। बहुत बड़े खान्दानवाले हैं, नाम क्यों लें? खँक्! तीनों फैनल केस! खँक् शब्द के अलावा प्रत्येक पंक्ति के बाद हाथ जोड़ कर गर्दन झुकाने की आदत है, खन्तर की! फैनल केस माने जान लेने का काम! खन्तर को पूरा विश्वास है, पाँच सात हजार का काम जरूर मिलेगा। मुन्शीजी ने कहा है, तीन केस तो जरूर समझो!

जितेन्द्रनाथ का सिर चकराने लगा। किन्तु, उसने अपने को सँभाला! टेबल की आड़ में, पर्दे के पीछे टेप रेकर्डर की करकराती हुई आवाज! बीच-बीच में पर्दे के उस पार से या इस पार से एक बिजली छटकती! जितेन्द्रनाथ हँस कर कहता—तेजी पावरवाला टॉर्च है। घबराने की बात नहीं।

तीन बजे रात तक इन्टरव्यू का कार्यक्रम चला!···

आतंक से जितेन्द्रनाथ का मुँह विकृत हो गया है। साँप बिच्छुओं से भी ज्यादे जहरीले प्राणियों से मिलकर वह भयभीत हुआ है। किन्तु ताजमनी नित्य प्रसन्नवदना होती जा रही है। मुस्कराहट की वक्रता मिट गई है। अन्दर हवेली की उजड़ी क्यारियों में हरियाली जाग रही है, धीरे-धीरे। तुलसी-चौरे पर तुलसी का बिरवा सदा फूला-फूला रहता है। ...जिद्दा! माँ आ रही है! आनन्दमयी, प्राणमयी माँ !!

—पूजा की सामग्री? ताजू, मुझे माफ करो। मैं सब कुछ भूल गया हूँ। किस देव-देवी की पूजा में कौन फूल वर्जित है, मुझे याद नहीं।

—मैं फर्दी लिख कर ले आई हूँ। आप सु-मन से खरीद कर ला दीजिए। फूल नहीं लाना है आपको! फिर वक्र मुस्कराहट लौट आई ओठों पर? ...नहीं, नहीं। ऐसा न करो ताजू!

जितेन्द्रनाथ ने पूजा सामग्री की फेहरिस्त लेकर देखा, ताजमनी की लिखावट में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। और, इस पत्रे को खो देना अन्याय होगा।...माँ की वेदी का एक स्केच, हल्के गेरुए रंग में अंकित! मिथिला-क्षर, देवनागरी और बंगला लिपि से प्रभावित, पवित्र किस्म के अक्षर। उप-शीर्षक की पंक्तियाँ, जवाफूल की कलियों की छोटी-छोटी मालायें। जादू सीखने की बात झूठ नहीं! पत्रे को यत्न पूर्वक जेब में रखते हुए जितेन्द्रनाथ ने ताजमनी की उँगलियों की ओर देखा—स्वर्णचम्पा की कलियाँ! इन उँगलियों को सूँघने की इच्छा हुई। चूमने का मन ...!

सु-मन से ही नहीं, भक्ति भरे मन से पूजा की सामग्री ला दी है जितेन्द्रनाथ ने!

...सिन्दूर, अगरु, तिल, हर्रे, पंचगव्य, पंचशस्य, पंचरत्न, पंचपल्लव, पटाच्छादन का वस्त्र, माँ के लिए साड़ी, महाकाल के लिए धोती भोगद्रव्यादि कर्पूर, ताम्बूल, धूप-दीप, दूर्वादल, पुष्प, तुलसी, नैवेद्य, चाँदमाला, पुष्पमाला, आरती !!

श्यामा पूजा के दिन माँ की देह से मनोहारी गन्ध निकलती! रह-रह कर तीव्र हो उठती।...मतवारा करे, आत्महारा मोरे—तोहरऽवदनऽसुरभि माँ-गो! जितेन्द्रनाथ हठात अपनी माँ का आँचल पकड़ कर हठ करता—थोड़ी देर आँचल सूँघने दो अपना। माँ!

—चल। बड़ा तंग करता है कभी-कभी तू! सारा काज पड़ा है। आँचल में क्या है?

जिद्दा की जिद्द! क्यों, पीसी की तरह तुम भी क्यों नहीं सिंगार करती? बलभद्दू भैया कह रहे थे, तुम्हारी माँ सिन्दूर का टीका नहीं लगा सकती। क्यों नहीं लगा सकती? बस, आज ही, एक दिन के लिए सिन्दूर लगा लो माँ! देखूँ।

पूजा उपकरण खरीदते समय जितेन्द्र को याद आई। माँ ने समझा कर कहा था—सिन्दूर श्यामा माँ को दे चुकी हूँ। मैं सिन्दूर नहीं देती तो अड़हुल के फूल लाल कैसे होते?...माँ की माँग के सिन्दूर से ही जवाफूल में लाली भरती है।

जितेन्द्रनाथ को प्रत्येक पूजा की याद आती है, बारी-बारी से। लगता है, माँ हवेली के किसी कमरे में छिपी बैठी है!...एकबार लुत्तो ने मुँह चिढ़ाकर अपने साथियों से कहा था—इतना बड़ा हो गया है और उस रात को अपनी माँ का दूध पी रहा था घट-घट कर। आँचर की ओट में। छिः, छिः!! लुत्तो को देखकर बचपन से ही, डकरते हुए पाँड़ा की याद आई है जित्तन को। भैंस का पाँड़ा। मौका पाते ही सींग चलाना नहीं भूलता। जित्तन ने एकबार पूजा के अवसर पर धमकी दी थी—काली के नाम चढ़ाऊँगा। भोग दूँगा! हो-ही-ही! ताली पीट कर लुत्तो भागा था—लड़कियों की गाली बकता है रे! छौंड़ीमुँहा लड़के को देखो रे!...

जितेन्द्रनाथ मन-ही-मन हँसा, पाँड़ाबलि को उसने कभी बर्बरता नहीं समझा! किन्तु लुत्तो की बलि? नहीं-नहीं। लुत्तो को देखकर उसको अपना बचपन याद आता है। ठीक ही कहा था लुत्तो ने। लड़कियों की गाली

ही थी।

लुत्तो के एक वर्ष के बेटे को गुलाबछड़ी खिलाकर बलि देना चाहता था मुन्शी जलधारीलाल। उसकी भैंसको सींगफोड़ जहर खिला कर मारना चाहता था। किन्तु, लुत्तो के मन के घाव की पीड़ा को समझता है सिर्फ जितेन्द्रनाथ, अकेला !···नैवेद्य, पुष्पमाला, आरती ! कल्याणी माँ के सामने भेद-भाव, डाह-द्वेष ? सत मुझे दे, असत तू ले। विष तेरा, अमृत मेरा। नहीं-नहीं, अमृत भी तेरा !

—इस बार श्यामा संकीर्तन करूँगी ! ताजमनी ने अपने मन की लालसा खोल दी।

—सच ? जितेन्द्रनाथ उत्साहित हुआ। ताजमनी की उँगलियों को पकड़ कर उसने चूम लिया।

—जित्ता ! ताजमनी की उँगलियाँ मानो आग में झुलस गईं।

—ताजू !

ताजमनी बेसुध पड़ी रही जितेन्द्रनाथ की भुजाओं में !

···अमीन, तहसीलदार, पटवारी, सिपाही, गोड़ाइत और बराहिलों को लेकर मम्मी कचहरी-बंगला में जमींदारी का जंजाल सँभालने लगी। मैं अपने गुहाल बंगला में (मेरी दाई पुतली गोशाले को गुहाल-बंगला कहती !) गाय, भैंस, बाछे, बछियाँ, भैंसवार, चरवाहे और पुतली के साथ गोधन की सेवा करती। पुतली मेरी सहेली जैसी हो गई। साँवली, सलोनी, स्वस्थ पुतली सदा मुस्कराती रहती, मीठी मुस्कराहट !

परती : परिकथा—२९२

वह मुझे स्थानीय बोली में आदमी और जानवरों को पुकारना सिखलाती : भैंसवार को, रे मेथिया-या-या ! चरवाहे को, रे बोल्टा-आ-आ ! दरबान को, हिरवा-वा-वा ! काली गाय को पुकारती—हि बो-ओ-ओ-हि, और गाय दौड़ी आती। अरनी भैंस को बुलाने के लिए—उ-ड़-हा-हा-हा-हा !

मैं रोज रात को अपना रीडर लेकर बैठती। किन्तु, बिना शिक्षक के कोई भाषा सीखी भी जा सकती है ?···मुझे तुलसीकृत रामायण पढ़ने की आतुरता थी। पुतली से मालूम हुआ, रामसेवक मड़र नाम का एक बूढ़ा रामायण गाने में बेजोड़ है। अर्थ न समझूँ, कोई बात नहीं। ध्वनि का कोई महत्त्व नहीं ? मैंने हीरा दरबान से कहा तो उसकी आँखें गोल हो गईं। मुझे समझाने के लिए वह शब्द ही नहीं पा रहा था। आँखों को नचा कर उसने कहा : नो ब्लैक मैन से-ए मेम, औल से-ए बंगाली ! मेम नौट साड़ी, नौट रामायन, नौट लाफ टौक टु ब्लैक मैन !

आश्चर्य ! हीरू की इस खिचड़ी भाषा का अर्थ मुझसे पहले मम्मी समझने लगी—आपको कोई अंग्रेज स्त्री नहीं समझेंगे। बंगालिन कहेंगे। अंग्रेज स्त्री को साड़ी नहीं पहननो चाहिये। रामायण नहीं सुनती अंग्रेज स्त्री। काले लोगों से हेलमेल ठीक नहीं !

मम्मी ने हीरा दरबान के हाँ-में-हाँ मिला दिया। हीरा दरबान ऐसे मौकों पर, भेद भरी निगाह से मेरी ओर देखता !

प्रथम बार ! ग्रामगीत सुना मैंने उस रात, पहली बार !

नींद नहीं आ रही थी। हठात् कोठी के पूरबवाले गाँव से, करुण-रागिणी में लिपटी गीत की एक कड़ी लहरों पर तैरती आई। ···मैं लालटेन तेज कर बिछावन झाड़ने लगी। वातावरण में साँप-ही-साँप का भय होने लगा।

सुबह को पुतली से पूछा : कैसा गीत था वह ? रेशमी केंचुल जैसा चमकता, वक्र, तिर्यक, चमचम !!

मेरे हाथ के इशारे से नहीं ! पुतली जब समझती है बात को तो, हीरा दरबान से ज्यादा समझती। सदा अपने घर की बोली में बोलती। मैं समझूँ या न समझूँ। जब कभी वह चार अंग्रेजी शब्द जोड़कर बोलती, हीरा से अच्छा ही बोलती। पुतली से मालूम हुआ, उस रात सचमुच साँपों के ही गीत गाये जा रहे थे। नागों की बड़ी देवी, विषहरी मैया के गीत ! मनसा-मंगल के गीत कहते हैं, इसको। पुतली कन्वर्ट क्रिश्चियन थी। किन्तु, विषहरी मैया का नाम लेते समय श्रद्धा से या भय से, दोनों हाथों को जोड़कर शून्य में एक प्रणाम करती !

दूसरी रात को छोटी ढोलकी के ताल पर जो गीत गाये जा रहे थे। ढोलकी के ताल और गीत के लय को सुनकर कोई भी कह सकता था, वे नाच रहे हैं। मिलजुल कर।...झुम्म-झुम्मर !! सुबह को मैं अपने कमरे में धुन गुन-गुनाती टहल रही थी, अन्यमनस्क। पुतली न जाने कब से अचरज से मुँह फाड़कर, खड़ी देख रही थी। मुझसे नजर मिली तो तलहथी से अपनी हँसी को ढँक फिर खिलखिला कर हँसती हुई बोली : झुमर। झुमर !! हाउ यू सिंग झुमर छोटी मेम ?...वेरी गुड।

—हा-हा, हा-ह, हा-ह-हा ! ला-रा, ला-रा, ला-र-ला।...लामि-लामि बेनियाँ, सिर-गंगाजी के पनियाँ, दरभंगा-वालि कनियाँ। पुतली ने ताल पर शब्दों को दुहराया। यस, छोटी मेम। आपने झुमर का लय ठीक ही पकड़ा है !

बीच-बीच में मुझे मम्मी की झिड़कियाँ सुननी पड़ती : भगवान् जाने, तुम क्या होती जा रही हो ! और आश्चर्य ! उसी समय, बरामदे पर हीरा दरबान भी कुछ न कुछ अवश्य बोल बैठता !

डेढ़ दो महीने की मेरी वह जिन्दगी ! मैं भूल सकूँगी कभी ? मेरे इस कमरे को ही मालूम है ! अजाने, अदेखे, कल्पनाप्रसूत पूर्वा [illegible] में, मैंने कितनी रातें छटपटाकर काटी हैं। मेरी दुर्द[illegible]रा गई थी !...इसी बीच, हमें पूर्णियाँ स्पोर्ट्स क्लब के [illegible] होने का निमन्त्रण मिला। पूर्णियाँ-ऐ !!

परती : परिकथा–२९४

अप्रेल की वह सुबह। चिरस्मरणीय दिवस। १० अप्रेल १९१० !

[पांडुलिपि में यहाँ कई माँगलिक अनुष्ठान के चिह्न अंकित हैं, उपर्युक्त पंक्ति के आस-पास ! ऊपर क्युपिड का सुन्दर स्केच। पंखवाला छै-सात साल का धनुषधारी बालक। तलहथी पर ठुड्डी रखकर तालाब में कमल को देख रहा है !]

१६ अप्रेल से प्लाँटर्स क्लब में पूर्णियाँ-डे का समारोह शुरू हो रहा था। चार दिनों तक भूरिभोज, अहोरात्रि नृत्यपान, काकटेल, जलविहार, पिकनिक और पोलो !

१५ अप्रेल को सुबह साढ़े सात बजे ही अपनी सम्पनी गाड़ी से बारह माइल पूरब अररिया स्टेशन के लिए प्रस्थान कर देने का प्रोग्राम हमने बनाया !···

भला, उन घड़ियों की एक झाँकी देखे बिना मैं कैसे जी सकूँगी ? आँखों के आगे स्पष्ट तस्वीर उतर आती है।···मम्मी अन्दर के कमरों में, जाने की तैयारी में व्यस्त हैं, पुतली के साथ। मैं अपने सब से उत्तरवाले कमरे की उत्तरवाली खिड़की से (जिस खिड़की का नाम बाद में उत्तरा पड़ा !) हिमालय की तुषारमण्डित चोटियों पर छाया सिंदूरी समाँ देख रही हूँ। दुलारीदाय के कछार पर पुल के उस पार घने जंगलों में परिंदे प्रार्थनागीत गा रहे···देवी पार्वती के पिता, जगदम्बा के जनक, नमामि देव ! इस झरोखे से मैं नित्य पर्वतश्रेष्ठ को प्रणाम करती !

झरोखे के पास ही है, कदम्ब का पेड़। कल से, एक मतवाला कोकिल कदम्ब की डाल पर बैठकर कूक कूक जाता है !

सुबह को आकर चिढ़ा गया—कु-क्कु-कू-कू ! उठ-कर-देखो !! पहाड़ी कोकिल को पुतली ने गोशाले से जवाब दिया—जल्दी-भागो ! कु-क्कु-कू-कू !

पूरब, यानी कोठी के सदर फाटकपर हीरू के गले की आवाज सुनाई पड़ती है।···हीरू की आवाज एक अजनबी स्वर में खो जाती है। घोड़े की एक तेज हिनहिनाहट से सारा प्रान्तर मुखरित हो उठता है—ई-हिं-हिं-हिं-हिं-हिं !!

हीरू भागा हुआ आ रहा है। घबड़ाया हुआ। मम्मी भी इस गुलगपाड़े को सुनकर बाहर आ गई हैं।···मिस-मिस-मिसरा ! मिसरा कहने के बाद मुँह बा दिया उसने। मम्मी शीघ्र ही समझ लेती है : दैट सिवेन्ड़ा मिस्सा ? मिस्टर ब्लेकस्टोन की चेतावनी प्रतिध्वनित हुई—मोस्ट बॅडमास ब्राह्मीन-नोटोरियस। दि ब्राह्मीन क्रिमिनल ही'ज़···।

हीरू के मुँह में बोली वापस आई : भेरी भेरी वैड मैन। ओल्ड इस्टेट दुश्मन। कम। कम हेयर अन्दर कोठी ही वान्ट।

मम्मी बोली : हि वान्टस टु सी अस। सी द फ़न। क्रिमिनल !

फाटक पर घोड़ा पुनः पुनः हिनहिना उठता है। ···पूरब आसमान की लाली जरा हल्की हो गई। झाऊ की नील-नुकीली लम्बी झाड़ी और घने पुटुस के झुरमुटों के उस पार घोड़े की गर्दन दिखाई पड़ती है। अच्छे नस्ल का घोड़ा। सिल्क ब्लैक ! मेरी पुतली का मुँह पीला पड़ गया है। सभी जानते हैं, उसे। घोड़े ने हिनहिना कर कोठी के निवासियों को बुलाया। मैं मम्मी से कहती हूँ—वह हमसे मिलने आया है। स्टेट का पुराना दुश्मन है तो क्या ? वह मिस्टर ब्लेकस्टोन का दुश्मन हो सकता है। हमें मिस्टर ब्लेकस्टोन की बुद्धि से दोस्त-दुश्मन नहीं बनना है मम्मी !

मम्मी पर मेरे कथन का प्रभाव पड़ता है। आश्चर्य ! इतना शीघ्र, इतनी बड़ी बात का समर्थन मम्मी ने कैसे किया, यह मेरे लिए आज तक एक रहस्य की बात है। मम्मी कहती है हीरू से—बुला लाए ! अनिच्छापूर्वक, मुँह लटकाकर ड्राइंगरूम का दरवाजा खोलते समय बड़बड़ाता है, हीरू। अन्तिम चेष्टा करता है—नो ब्लैकमैन कम इन कोठी-कम्पौंड। हाट रूम ? पुतली की सिखाई हुई झिड़की मैंने दी—ही-र-वा-वा-दा ! ई-हिं-हिं-हिं-हि !! बाहर, घोड़े की हिनहिनाहट और तीव्र हो उठी !

मैं अपने कमरे में आकर पूरबवाले झरोखे की झिलमिली से देख रही हूँ, झाऊ की झाड़ियों के पार्श्व से प्रकट होते हुए व्यक्ति को। इसे मैंने कहीं देखा है ? किन्तु कहाँ ? झरोखे की झिलमिली से एक लहर आकर मेरी

रोमावली पर छा जाती है। परिचित पुरुष ? मेरे सपने का पूर्वपुरुष ? सूर्यपुत्र ? देवपुरुष ?···कलेजे की धड़कन इतनी तेज क्यों हो गई ?

हीरू की पुकार पर जरा सँभल जाती हूँ—मेम साहेब !

मैं अपने कमरे में, रीडर खोलकर भारतीय अभिवादन 'नमस्कार' का उच्चारण ठीक करने लगी। आरसी में अपने प्रतिबिम्ब को मुस्करा कर नमस्कार करती हूँ : नमस्का···!!

ड्राइंगरूम का पर्दा हटा कर, मैंने कैसे नमस्कार किया—मुझे याद नहीं ! जन्म-जन्मान्तर के बाद, ऐसी मिलन की घड़ी में होश रहता भी है ?

होश में लाती है, उसकी गुरु गम्भीर वाणी। भद्रतापूर्वक खड़ा हो, प्रति-नमस्कार किया उसने—आइ एम पण्डित शिवेन्द्र मिश्र···पत्तनीदार ऑफ परानपुर स्टेट। वरी क्लोज टु योर जमींदारी लैंड !

मम्मी आकर आराम कुर्सी पर बैठ जाती है, उसके नमस्कार को नजर-अन्दाज कर। मुझे खुशी हुई—पूरब का यह पुरुष अंग्रेजी तो थोड़ी बोल लेता है !

मम्मी अपने काम की बात छेड़ देती है : मिस्टर मिस्सा ! ···हमारी जमींदारी से आपको क्या शिकायत है ? वी 'व हर्ड··· ।

—येस मेम ! दैट इज ए वरी-लांग लिटिगेशन !—एक तौजी के पोजेशन को लेकर झगड़ा है।···अभी तक, वह तौजी मेरे अधिकार में है। किन्तु, यह भी सच है कि उस तौजी पर कानूनी हक आपका है। मैं वही तो कहने आया हूँ। मैं आप लोगों से-यानी-मातृजाति से नहीं लड़ना चाहता !

बात समझ में आई ! अमीन, पटवारी और सिपाहियोंने अपने-अपने ढंग से इस तौजी के बारे में सुनाया था। मि० ब्लेकस्टोन ने नक्शे में, दुलारीदाय धारा में तीन लाल घेरा डालकर, दिखलाया था, पाँच में से दक्खिनवाले तीनों कुंड—फुल ऑफ फिशिज एण्ड···। कारकुनों ने यह भी कबूल किया—आज तक कभी कब्जा नहीं हुआ। ···मिस्टर ब्लेकस्टोन की बात क्या,

किसी साहब को एक मछली नसीब नहीं हुई और न एक धूर जमीन। जमीन धनहर है कुंड के आस पास।

मम्मी को विश्वास नहीं हुआ ?···पूछती है : सचमुच आप उस तौजी के झगड़े को निबटाना चाहते हैं ?

—आप मुझसे लिखवा लें मेम।

और इससे लोग डरते हैं ? बाघ की तरह भय खाते हैं ? किन्तु, हमारे ड्राईंगरूम में बैठा हुआ शिवेन्द्र तो माखन जैसा मनवाला है ! रक्तचंपा की तरह शरीर का रंग, लाल ओंठ ! छोटी-छोटी किन्तु, सँवारी हुई मूछें। गाढ़े लाल रंग की धोती, केसरिया रेशमी मिर्जई, ढाकाई झीनी चदरी जिसकी कोर-छोर पर सुनहले तारों की कारीगरी। उँगलियों में रत्नजटित अँगूठियाँ !···सामने बैठे इस नररत्न की ज्योति !···मैं इस क्षण को सपना समझती हूँ। भ्रम समझती हूँ।···शायद उसी रातकी तरह कोई गीत कहीं गाया जा रहा है ! अथवा कोकिल !!···कुर्सी छूकर देखती हूँ। अपने शरीर को स्पर्श करती हूँ और चिकोटी काटती हूँ नाखूनों से···सपना नहीं ! यह आदमी अपना है, वही···।

मम्मी चुपचाप कुछ सोच रही है ? क्या सोच रही है, क्यों सोच रही है ? मैं समझती हूँ, मम्मी ने जानबूझ कर धन्यवादज्ञापन नहीं किया।···मुझे यह झूठा तनाव पसन्द नहीं। अपनी अभद्रता के लिए मम्मी से माफी माँग कर, मैं कहती हूँ : थैंक यू वेरी मच। इट्स सो काइन्ड 'फ यू। रियली आइ 'म ग्लैड-टु सी यु···। यु' र—सो···।

मम्मी मेरी ओर कटमटा कर क्यों देखती है ?···मैंने कुछ बुरा तो नहीं किया !

उस दिव्य पुरुष की बुद्धि की बलिहारी !

पलक मारते ही सब कुछ समझ लेता है। उसकी आँखें अपने आस-पास

शक्तिकी लहरें फैलाती हैं !···उसके कामदार लाल मखमली नागरे की नोक पर अपनी दृष्टि रखकर मन के उमड़ते घुमड़ते भावों को सहेजती हूँ। कोई क्या समझे !···जिसके लिए मैं देश-देशान्तर, लोक-लोकान्तर···।

मम्मी विरक्त होकर कहती है—समय हो रहा है। धूप तेज हो जायगी।

मैं क्षमा याचना के लिए शब्द ढूंढ़ रही हूँ।···आत्मसमर्पणात्मक भावावेश की घड़ियाँ! झूमर गीत पर झूम रही हूँ मैं—दर-भंगा-वाली-कनियाँ!··· मम्मी मुझे एक शब्द भी उच्चारण नहीं करने देगी!

···मेरी लाचारी देख रहे हो, मेरे पुरुष ? मेरी आँखों की भाषा वह पढ़ लेता है।

मुस्करा कर उठा। हाथ जोड़ कर बोला—नमस्कार। होप टु सी यु अगेन।

सचमच, सचमच !!···मेरे दोनों हाथ जुड़े रह गए, मेरी गोदी में!

बाहर, घोड़ा हिनहिनाया—ईं-हिं-हिं-हिं !!

कदम्ब के डाल पर बैठा कोकिल आग लगा कर भाग गया।

कोठी के मुड़ेरे पर बैठी एक पड़ुकी अनवरत पुकार रही है—तुतु-तू-तू-तू!

घोड़े के टापों की छन्दमयी खटपटाहट धीरे-धीरे दूर होती गई।

ड्राइंग रूम हठात् श्रीहीन हो गया। मेरे मन के कोने में बैठी विरहनके दिल में *पहली हूक उठी, एक मीठा दर्द! अपूर्व !! मैंने आँखें मूँद ली।* मन के भावातुर प्लेट पर एक छवि उतर आई है, काले घोड़े पर सवार, लाल वस्त्र में आवृत दिव्य पुरुष!

दिव्य पुरुष, मेरा अपना पुरुष। जिससे जन्मजन्मांतर के बाद मेरी आँखें चार हुई हैं, दो घड़ी के लिए। प्रथम बार···दिस नाउ!

नमस्कार! ओ मेरे···।

पूर्णियाँ शहर के एक एकाँत कोने में है प्लाँटर्स क्लब का बँगला—

परती : परिकथा—३००

—खबड्डा ! मायबाप, हाय बाप ! सपाक् !!

—मुझे ली कहते हैं। एक सुन्दर साँवर नौजवान ने आकर कहा—मैं आपको थोड़ा विरक्त करूँगा। क्षमा करेंगी।

इस नौजवानको मैंने देखा है, बहुत कम बोलने की आदत है। बोलता तो है, वह रेलरोड-इन्सपेक्टर मिस्टर बार्कर। मोटर ट्राली की तरह ! मैं बोली—बैठ जाइए। आइए।

—आपके इलाके को, रानीगंज सर्किल को यहाँ के ग्रामगीतों की जन्मभूमि कहते हैं। गुनमन्ती, हांसामारी की विधवा रानियों ने जिनकी रचना की थी, सैकड़ो साल पहले। जो अब गाँव-गाँव में, लोक कण्ठ में हैं।

ली, फोकम्यूजिक एक्सपर्ट बनना चाहता है। इन्टरनेशनल फोकम्यूजिक कौंसिल का सदस्य है। वह अपने पॉकेट से एक टाइप की हुई पाण्डुलिपि निकाल कर पढ़ना शुरू कर देता है : ओनली जेनुइन फोक सॉंग्स हिच हेव बीन हेन्डिड डाउन फ्रॉम जेनेरेशन टु जेनरेशन बाइ ओरल ट्रांसमिशन···! मैं आपको बोर तो नहीं कर रहा ?

पागल ली ! बाप सलाह देता है, कटिहार में सूअर के गोश्त की फैक्ट्री खोलने की और यह गीतों के पीछे पागल है। कहता है—पूर्णियाँ-डे के अवसर पर जुटे हुए लोगों में सिर्फ तीन मिले उत्साहित करनेवाले। नहीं तो, बाकी सभी··· ।

बाकी सभी ? ली की अनकही बात को भी सुन लेती हूँ। बेचारा ली !··· और, वह रेल-रोड इन्सपेक्टर मिस्टर बार्कर ! सदा चुम्बनोद्यत मुँह ! आदमी बीमार मालूम होता है। कटिहार की कीटी का अनुगत है !

कीटी ? परिचय के बाद ही जिसने मेरे कान में फुसफुसा कर कहा था—ह्वाइ डोंट यु फिश एनी फैट नेटिव राजा ?

पूर्णियाँ जिले के सभी प्लांटर्स ने परिचय के बाद ही परानपुर के शिवेन्द्र मिश्र की चर्चा की। चेतावनी दी : माइन्ड यु ! दैट नोटोरियस मिस्सा'क

पेरानपो !

मैंने ली को वचन दिया···वह जब भी चाहे मेरे इलाके में आवे, मैं उसकी यथासाध्य सहायता करूँगी। अन्य सूत्रों की भी व्यवस्था कर दूँगी। ली प्रसन्न होकर चला गया—धन्यवाद !

चार दिनों तक मैं ली के साथ रही। इन्टेलेक्चुयल व्यक्ति का संग !···नाच के बाद, लेडीज कॉर्नर में लड़कियों ने दर्जनों बार कहा—ली नपुंसक है। वर्थलेस है। क्रैंक है, सनकी है। ब्लैकवेरिइस्ट है !

भगवान ही इनकी बात समझें। ब्लैकवेरिइस्ट का मतलब ? जो, नेटिव लड़कियों के पीछे दीवाना हो। भारतीय सुन्दरता का प्रेमी ! मैंने हँस कर कहा, ली से—गीत तो पीछे होगा। पहले, रॉयल डिक्शनरी सोसायटी वालों को ब्लैकवेरिइस्ट शब्द भेज दो। अर्थ सहित !

ली हँसना जानता है !

अहोरात्रि डिनर डान्स और ड्रिंक से ऊब कर, समारोह के संयोजकों से छुट्टी ले, जब स्टेशन आ रही थी, मैंने स्पष्ट शब्दों में मम्मी से कहा—मैं यहाँ फिर कभी नहीं आऊँगी।···आई हेट !

मम्मी चिढ़कर बोली—तुम्हारा सिर फिर गया है !

स्टेशन पर मिला, मिस्टर बार्कर। मानो, हमारी ही प्रतीक्षा कर रहा था वह। मिलते ही, अस्वाभाविक ढंग से ठहाका मार कर हँसा—गाड़ी डेढ़ घंटे देर से आ रही है। तब तक हम अररिया पहुँच जायेंगे। मुझे भी फोर्बिसगंज की ओर जाना है।

अपनी कोठी में पहुँचने को इतनी उतावली हो रही थी कि मैंने उसके लिफ्ट को, बिना कुछ सोचे समझे स्वीकार कर लिया।···मम्मी को उसने दाहिनी ओर बैठाया ! गाड़ी, पूर्णियाँ स्टेशन से उत्तर की ओर अग्रसर हुई और बार्कर का बायाँ हाथ मेरी कमर के इर्द-गिर्द रेंगने लगा।

उसकी बड़बड़ाहट बढ़ती ही गई। असंभव शक्ति दी है भगवान ने इसे बोलने की। भट-भट-भट-भट !

मोटर ट्राली की रफ्तार को तेज, मद्धिम करता, राह के जंगलों, पोखरों और नदियों से परिचय कराता हुआ बार्कर बीच-बीच में मुझे अपनी ओर खींचने की चेष्टा करता। सांप की तरह रेंगने वाला उसका बायाँ हाथ···। देयर ! देयर'ज़ दि फेमस जिवच्छ पोकरा। थाउजन्ड ऑफ़ थाउजन्ड वाइल्डगूज़ डाइरेक्ट फ्रॉम हिमालया।···कीटी का बावर्ची वाइल्डगूज़ का बेहतरीन मोगलाई बनाता है। भट-भट-भट-भट ! और, ऐसे जंगल की झाड़ियों में मिस मोबर्ली हाइड .एंड सीक खेलना खूब पसन्द करती है। लड़कियाँ ? मत पूछो। जान देती हैं मोटर ट्राली में एक लिफ्ट के लिए ! भट-भट-भट-भट !

प्लांटर्स की लड़कियों ने बार्कर को आदत बिगाड़ दी है, इतना तो मैं क्लब में ही देख कर समझ गई थी। किंतु, इस आदमी के अन्दर का पशु इतना भूखा है, मुझे ट्राली में बैठने के बाद मालूम हुआ।···क्लब में, कीटी के आगे दुम हिलाता था।

अरारिया स्टेशन पर ट्राली से उतरते समय मैंने छोटा-सा धन्यवाद दिया। उसके लुभावने निमन्त्रण को सफाई से टाल गई। किन्तु, उस जानवर ने प्लेटफार्म पर खड़े सैकड़ों व्यक्तियों के सामने मुझे छाती से बदहवासी से चिपका लिया और...।

पीले, गन्दे दांत ! दुर्गन्ध से भरी उसकी सांस।··ब्रूट ! यहाँ के प्लांटर्स समाज का सारा विष इस एक ही आदमी के अन्दर आकर जमा हो गया है ?

फेकनी की माय और सामबत्ती पीसी ने सारे गुअरटोली में खबर फैला दी—कम्पूवाले बिना किसी झंझट के रुपैया सेर दूध लेते हैं ! लोगों को विश्वास दिलाने के लिए फेकनी की माय आँचल में बँधा दुटकिया नोट निकाल कर दिखलाती—देखो। दो सेर दूध का दाम दो रुपैया ! सामबत्ती पीसी बोली—तर-तरकारी, साग-सब्जी जिनकी बगिया में है उनलोगों की चाँदी है, समझो ! लोगों के चेहरों पर मुस्कराहट की एक पतली रेखा दौड़ गई ! ···हः हः ! रात भर डर से थरथराती रही है देह !

पूरे, बारह घण्टे से गाँव और टोले के लोग परेशान थे !

रात भर मोटर गाड़ियों की गड़गड़ाहट, तरह-तरह की रोशनी और शोरोगुल को देख सुन कर कलेजे की धड़कन घटती-बढ़ती रही। गंगोला टोली की औरतों ने सूप पीट-पीट कर हल्ला मचाया—मुड़बलिया पिशाच है। सूप बजा कर हरकाओ !

सुबह को लोगों ने देखा, गाँव से पूरब परती पर—जित्तन बाबू के नये बाग के पास सैकड़ों खीमे गड़े हुए हैं ! एक सफेद नगरी बस गई है ! थाना के सिपाहीजी और गाँव के चौकीदार ने कहा—डरने की कोई बात नहीं। कोशीवाले साहब लोग हैं ? चन्ना,गढ़ी में पुल बाँधने आए हैं। फिर भी, लोगों के मन में शंका बनी रही। छत्तो, वीरभद्दर, जयदेव बाबू और मकबूल ने भी बारी-बारी से कहा—डरने की कोई बात नहीं ! तब लोगों को अन्न-पानी की रुचि हुई। किन्तु औरतों ने प्रश्न उठाया—चतरागढ़ी

में पुल बाँधने आए हैं तो वहाँ जायँ ! पचास कोस दूर बैठ कर भला पुल कैसे बाँधेंगे ? और पुल बाँधने के पहले तो आदमी की बलि की जरूरत होती है । सो ?

सो, कम उम्र के बच्चे घर-घर में कैद कर दिये गये थे !

फेंकनी की माय ने और भी कहा—आकि देखो, कम्फू में रोज एक मन दूध खपेगा । मुदा सब भैंसान से कह दो, भाव कम न करे । डरने की क्या बात है । बड़े भले लोग हैं । आकि देखो, पूछो सामबत्ती से, डर से मेरी बोली बन्द हो गई पहले, बड़े साहेब को देखकर । जब लम्बे-लम्बे केशवाली औरतों और नन्हे-नन्हे मुँहवाले बच्चों को देखा तो जान में जान आई । कम्फू ! मेला है मेला । मेला जैसा सब कुछ।...एक जवान लड़की है, ठीक देवी दुर्गा की तरह । आकि देखो, इया बड़ी-बड़ी आँखें ! हम लोगों को बैठा कर दुनिया भर की बात पूछने लगी—कोशी मैया किसकी बेटी है । शादी किससे हुई ? ससुराल कहाँ है ? अरी, तुम लोग हँसती हो ? पूछो सामबत्ती से । भला, मैं उतना क्या जानूँ ! सामबत्ती बोली—उतना तो किसीको नहीं मालूम । तब, एक बात सभी जानते हैं कि कोशी मैया अपनी सास और ननद से लड़-झगड़ कर नैहर की ओर जा रही है—पच्छिम !...आकि देखो, एक किताब निकाल कर खसर-खसर लिखने लगी, वह । मैं डरी कि कहीं अँगूठे का निशान न देने को कहे !

सिर्फ दूध ही नहीं, पुदीना और धनियाँ की पत्ती भी मँहगी हो गई ।

कोशी प्रोजेक्ट—पार्टी नं० १० !

पार्टी क्या है, एक छोटा-मोटा शहर है । दर्जनों डिपार्टमेंट्स, उनके अलग-अलग अधिकारी, स्टेनो, पियन, बैरा । अलग-अलग ऑफिस, बँगले, बावर्चीखाने और गैरेज । एक ओर साहबों का क्लब है, दूसरी ओर अन्य कर्मचारियों की कैंटीन ! उजाड़ धरती पर सफेद नगरी—छोटे बड़े तम्बू-

पाँखे फैलाये हंसों की तरह । दो सड़कें हैं—रेड रोड, ह्वायट रोड ! ह्वायट रोड पर दफ्तरों की पंक्तियाँ और रेड रोड पर बँगले । ह्वायट रोड सदा शान्त रहती है । दफ्तरों में टाइपराइटरों की खटपटाहट, कॉलिंग बेल की तुनुक आवाज—ट्रिं ! बड़े दफ्तर के बड़े साहब की मोटी आवाज ! हवा में गूँजते हुए कुछ अंग्रेजी शब्द : कैचमेंट एरिया, रोड ब्रिज, माइनर रोड ब्रिज, टाइडेम, मेन कैनाल, बरॉज, लार्ज रेगुलेशन, स्माल फाल्स एण्ड रेगुलेशन, एक्विडक्ट, साइफून, क्रास ड्रेनेज, रिजर्वायर, सैन्डी सोयॅल !

रेड रोड पर मुर्गे लड़ते । महीनों पिंजड़े में बन्द रहने के बाद किसी कैम्प में उन्हें जब आजादी मिलती है तो वे अपनी प्रेमिकाओं के लिए लड़ते हैं । बेचारी मुर्गियाँ दिनभर परीशान रहती हैं ! उनकी हरकतों से चिढ़कर चेन में बँधे हुए कुत्ते रह-रह कर गुर्राते हैं ! धूप में खेलते हुए बच्चों को मातायें डाँटती हैं । बावर्चीखाने से भूने हुए प्याज की गन्ध आती है । हर एक कैम्प के आस-पास चटाइयों पर, छोटे बड़े कद के बर्तनों में अचार, मुरब्बे, सूखे बेर, सूखी तरकारियाँ और पापड़ सूख रहे हैं । बूढ़ी औरतें फटे कपड़ों की सिलाई करतीं और जवान लड़कियाँ कैरम-बोर्ड पर गोटियाँ खटखटाती हैं !

बँगले और दफ्तरों के अलावा—खलासी, दरबान, ड्राइवर, पियन, बैरा का अलग-अलग कुनबा । जहाँ दिन भर सन्नाटा छाया रहता है !

काम-काम-काम !! एक मिनट भी फुर्सत नहीं । मिट्टी खोदो, बालू तौलो, जमीन मापो, साँकल खींचो । ...मिनट-मिनट पर जीप गाड़ी गुर्राती हुई विशाल परती पर, किसी ओर निकल पड़ती ।

सारे कैम्प में सिर्फ इरावती है जो एकान्त पसन्द करती है । दिन भर वह लिखने-पढ़ने में अपने को बझाये रहती है अथवा कभी-कभी उस विशाल निर्जन मैदान को, दूर तक फैली हुई बंध्या धरती के आँचल को देखती रहती है ।

परती : परिकथा–३०६

मैदान के सफेद बालूचर पर गोधूलि की मटमैली लाली दौड़ जाती। जीप गाड़ियाँ गरजती हुई कैम्प में लौटतीं। कुलियों के जत्थे, ओवरसियरों का कोलाहल! पेट्रोमेक्स की रोशनी से सारा कैम्प जगमगा उठता।

इरावती मलहोत्रा! देश के बँटवारे के बाद जिसके हिस्से में पड़ी है—खानाबदोश जिन्दगी। लाहौर से दिल्ली। दिल्ली के शरणार्थी कैम्प से बिहार! बिहार में, एक राजनीतिक पार्टी में काम करने लगी।...दस महीने में ही उसने तीन राजनीतिक पार्टियों से अपना रिश्ता जोड़ा और तोड़ा। कहीं भी चैन नहीं! किसी पर विश्वास नहीं। लोगों ने कहा, माथा खराब हो गया है। उसके चरित्र के सम्बन्ध में भी तरह-तरह की बातें उड़ीं।

···'हरेक पार्टी के लीडर को डिमोरॅलाइज्ड करने के लिए सरकार ने इस कुटनी के बिहार भेजा है!'··'तपस्या भंग करती फिरती है, तपस्वियों की!

···सी. आइ. डी है!···मीठी छुरी है!

कटी हुई पतंग की तरह उड़ रही है, इरावती! उसके मन का भ्रम बढ़ता ही जा रहा है। उसका विश्वासहीन मन, धीरे-धीरे उसके व्यक्तित्व को लील रहा है। कुण्डली मारकर बैठा हुआ साँप!···

इरावती को याद है, छोटानागपुर के पहाड़ी अंचल के दौरे पर जा रहे थे, उसकी पार्टी के प्रमुख नेता। इरावती को उन्होंने अपने साथ चलने को कहा—तुम्हारे सभी सवालों का जवाब देने को मेरे पास समय नहीं। मेरे साथ चलो! मैं तुम्हारे मन पर छाये हुए भ्रम को दूर करने की कोशिश करूँगा। एक-एक सभा में हजारों-हजार भूखे-नंगे आदिवासियों की आँखों में तुम अपने सवालों का जवाब पाओगी। नेता ने मुस्कुरा कर कहा था—फिर, आवश्यकता हुई तो कांके के पागलखाने में रहने की व्यवस्था भी कर दूँगा।...

···छोटानागपुर के पहाड़ी अंचल की पथरीली धरती पर गड़गड़ाती हुई

कर सकती कि इन्सान कत्ल और बलात्कार करने के सिवा और कुछ कर सकता है।···चुप क्यों हो नेता भैया ? अभी दो घन्टे पहले ही तुमने कहा था कि इरा ! तुम तो ड्रामे का डायलॉग बोलती हो। कहो न, कैसा डायलॉग बोलती हूँ !···न, न। माफी मत माँगो ! अधर्म होगा।···

···रात के सन्नाटे में एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी। पहिये की घड़घड़ाहट थमी। इरावती ने अपनी झोली सँभाली—मुझे जाने दो नेता भैया। रोको मत।···हजारीबाग रोड ! कभी नहीं भूल सकती इरावती इस स्टेशन को। यहीं से उसकी यात्रा शुभ होकर शुरू हुई थी !···

ढाई बजे रात का सन्नाटा ! हाथ में झोली लटकाए, अकेली इरावती उस अजनबी स्टेशन पर उतरी। प्लेटफार्म तुरत सूना हो गया। कुलियों ने बताया, पटने की ओर लौटनेवाली गाड़ी, सुबह आठ बजे मिलेगी।··· वेटिंग रूम के सामने टहलते हुए भलेमानस ने घूर-घूर कर उसे देखना शुरू किया। इरावती ऐसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना भूल चुकी थी।—नमस्कार ! उस घूरनेवाले व्यक्ति ने हाथ जोड़ कर कहा—आप इरावती-जी हैं न ? हाँ, इरावती उसे पहचानती है। पटने में बहुत बार देखा है, पार्टी दफ्तर में—आर्यभूमि और इण्डियन नेशनलिस्ट के दफ्तर में, रवीन्द्र जयन्ती के अवसर पर लेडी स्टिफेन्सन हॉल के मंच पर, प्रोफेसर शशांक के साथ चित्र प्रदर्शिनी में। इरावती मुस्कुराना नहीं जानती। कभी जानती थी ?

···भगवान् जाने, कहाँ है जीत ! बहुत दिनों से पटने भी नहीं गई है, इरावती। जितेन्द्रनाथ मिश्र के लिए कभी-कभी वह बेचैन हो उठती है। हाँ, उसी ने इरावती के उजाड़ मन में प्यार को पनपाया है, पहली बार। हजारीबाग रोड स्टेशन···।

···आप कहाँ जा रही हैं पूछ कर आपकी यात्रा अशुभ नहीं करना चाहता। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपकी पार्टी ने आपको आदिवासियों में काम करने के लिए तो नहीं भेजा है ?—जी नहीं, मैं पटने वापस जा रही हूँ।

धड़ाम ! ब्लास्टिंग होती है। पहाड़ तोड़े जा रहे हैं ! बड़े-बड़े बुलडॉजरों की गड़गड़ाहट और रह-रह कर कुलियों की किलकारी—मार जवानो-हइयो ! परवत-फोड़–हइयो ! कस के जोर–हइयो ! पत्थर तोड़–हइयो !! …अजीब वातावरण ! सड़क के लिए काटी गई पहाड़ी के कगार पर बैठ कर, बोखारो थरमल पावर प्लांट के बारे में समझाते वक्त जीत का चेहरा तमतमा उठा था। बाइनोक्युलर में देखता फिर दिखाता जीत—और, वहाँ जो उस पहाड़ी के ऊपर का हिस्सा सेब के टुकड़े जैसा काट कर निकाल लिया गया है—रोपवे का रास्ता बन रहा है, वह पाँच माइल दूर, बेरमों में एक खदान क्या…मनहूस खदान है। बेकाम के कोयले की खदान। जिस कोयले से कोई आग सुलगाने की सम्भावना नहीं। बाँझ कोयला कह सकती हैं ! थरमल पावर प्लांट उसी कोयले से चलेंगे। रोपवे से रोज हजारों-हजार टन कोयला आवेगा। तारों में लटकती डोंगियों में। खुद खाली करेंगी डोंगियाँ—स्टोर में कोयले ले जाकर, फिर वापस आएँगी। एक खास ताल पर सब काम होगा—क्रिरि-खटक, क्रिरि-खटक-खटक-खटक खट्ट ! एलिवेटर के सहारे खुद-ब-खुद अपनी राह तय करता हुआ, एक चेम्बर में जाकर चूर-चूर—फेस पाउडर जैसा महीन होकर फिर अग्निकुण्ड में धधक उठेंगे। तीन मंजिल नीचे, अण्डरग्राउण्ड में, कोनार नदी की धारा कुलबुलायेगी। पानी ऊपर जायगा, गर्म होगा—वाष्प होगा। वाष्प उड़ नहीं जायगी ! उसे फिर ठण्डा किया जायगा। डिस्टिल्ड वाटर, बर्फ जैसा ठण्डा।

… प्रायः सभी यन्त्र आटोमेटिक काम करनेवाले होंगे। और तब दूर-दूर तक इन पहाड़ियों और जंगलों में—विशाल राक्षस के सफेद कंकालों की तरह, छै हाथ फैलाये ट्रान्सफोर्मर के ऊँचे-ऊँचे टावर गड़ जायेंगे। बिजली की लहरें जायेंगी पटने, कलकत्ते…। बिहार-बंगाल !!

जीत के मन का भी कोई पौधा मुर्झा गया था। वह इन्हीं घाटियों के पानी मे सींच कर जिलाने की उम्मीद कर रहा था ! पंचेट, माइथन, दुर्गापुर !!

प्यार के तीर्थक्षेत्र। पलास का रंग उसकी आँखों में हमेशा छाया रहता।

कोनार नदी के किनारे—डैम साइट पर, एक विशाल क्रेन की छाया में बैठते हुए कहा था जीत ने—न जाने कोसी का काम कब शुरू हो। वह मेरा इलाका है। कोसी कवलित अंचल। जहाँ हर साल लाखों प्राणियों की बलि लेती है कोसी महारानी !···धड़-धड़-धड़ाम !

···कोसी ! हिमालय की गोद से निकलने वाली तीन धाराएँ—अरुण, तिमुर और सुनकोसी, बराहक्षेत्र के पास आकर आपस में मिल जाती हैं। त्रिवेणी ! त्रिवेणी के बाद सप्तकोसी। फिर-कोसी। डायन कोसी !! उन पहाड़ियों में भी ब्लास्टिंग होगी। किन्तु, उसकी प्रतिध्वनि इससे भिन्न होगी ! कहते हैं, कोसी को बाँधना आसान काम नहीं।

···तिलैया डैम के पास उदास हो गया था, जीत ! थरमस में कॉफी पड़ी रही। न खुद पी और न इरावती को पीने दी। रात को हजारीबाग के निवास स्थान पर पहुँचते ही वह चंगा हो गया !

···हजारीबाग का निवास स्थान ! जितेन्द्र ने कहा—मैं अकेला होता तो किसी होटल में डेरा डालता। किन्तु, यात्रा की बात ! इस बार सुख भोगना लिखा हुआ है। पास ही, श्यामगढ़ स्टेट का नौ-रत्तन है। मेरे ममेरे भाई के दोस्त दयासिन्धु सिंह के दूर के मौसा लगते हैं राजासाहब। हमारे भी मौसा हुए। राजासाहब लेकिन, आप तो वामपंथिनी हैं। आपकी जाति मारी जायगी। वहाँ नहीं ले चलूँगा, आपको। जस्टिस मल्लिक के खाली बँगले में रहने का परमिट मेरे पास है।···

···जस्टिस मल्लिक का बँगला ! हजारीबाग शहर से दो माइल दूर एकांत में—केनाड़ी नामक पहाड़ी की गोद में। छोटी केनाड़ी की चोटी को तोड़वा कर बना है—बँगला ! आज भी मल्लिक कोठी, बिहार की सर्वश्रेष्ठ इमारतों में से एक समझी जाती है। जस्टिस मल्लिक के वंशधर कलकत्ते में रहते हैं। किन्तु एक-एक पेड़ और पौधे का कुशल क्षेम चिट्ठी से पूछते हैं। हर महीने, कलकत्ते से बाबुओं के दल आते हैं, कोठी में ठहरने का

परवाना लेकर। बाग के बूढ़े माली की आँखों में हमेशा रहस्य की घुमड़ती छाया दिखाई पड़ती।···बरामदे पर बैठकर बहुत रात तक दोनों ने बातें की थी। जितेन्द्र ने इरावती से कहा था—आपका दुख मैं समझता हूँ। अनुभव करता हूँ। आपके यहाँ की नदियों में खून की बाढ़ आई थी। एक अन्धवेग, एक पागलपन, एक जुनून! खून की धारायें बहीं। ज्वार-भाटे आए।···सिर्फ बाढ़ ही नहीं, दावानल भी! भयंकर लपटें उठानेवाला। सब कुछ जल गया। धन-सम्पत्ति, कला-कौशल! मैं उसकी भीषणता की कल्पना कर सकता हूँ। और, आप भी कल्पना कीजिए, उस भूभाग की। डायन कोसी के सफेद-बलुवाही आँचल पर बिखरे लाखों नये नरकंकालों की कल्पना से आप डर तो नहीं जायेंगी?

···दूर, पहाड़ी के उस पार, शाल के जंगल में बाघ गरजा—हाँऊँ-हाँऊँ-हाँऊँ!! ठाँय-ठाँय!! बँधी भैंस पर टूटनेवाले बाघ की जान निश्चय ही गई।···जितेन्द्र ने कहा। बाघ मरा है!

···इरावती और जितेन्द्र! दोनों ने उस दिन उपवास किया था। दोनों गुम-सुम रहे थे। दोनों ने दामोदर नदी में डुबकी लगा कर स्नान किया था और राह में एक थके वृद्ध किसान को जीप में चढ़ा कर घर पहुँचाने का पुण्य किया था। आशीर्वाद बटोरा था।···बूढ़ा तैश में आकर देखने निकल पड़ा—पथरीली धरती को समतल बना लेंगे ये लोग? खेल बात है। सब झूठ। इस इलाके का खाता-पीता किसान था बूढ़ा। भँभरा गाँव में उतरकर बूढ़े ने कमरबन्ध से दो रुपये का नोट निकाल कर जितेन्द्र को देते हुए कहा—बाल-बच्चा राजी-खुशी से रहेंगे, आपके। वही भोगेंगे भी, यह सब। कपाळ में यह भी देखना बदा था—देख लिया दामोदर की छाती पर घन चलते! जितेन्द्र ने नोट वापस करते हुए कहा था—आप भी भोगेंगे बाबा! कौन मारे सौ साल की देर हो रही है। दस साल में तो सिंचाई शुरू हो जायगी। बूढ़े ने मुस्कुराकर कहा था—कत्ते तनखा मिले हको? तोहर तनखवा बढ़तउ। तोहर···।

मल्लिक-कोठी की खिड़की से हजारीबाग जेल के टावर की रोशनी एक मनहूस सितारे की तरह झिलमिलाती! जितेन्द्र को मल्लिक-कोठी की एक-एक रात की याद आने लगी थी। १९४१, ४२, ४३ और फिर '५०...! वह उठ कर अपने कमरे में चला गया। इरावती आरामकुर्सी पर झपकियाँ लेती, सो गई थी। छोटा-सा सपना आया था—उसका प्यार फिर पनप रहा है! इन्सान सिर्फ कत्ल और बलात्कार ही नहीं करता। इन्सान गढ़ भी सकता है। गढ़ रहा है! बना रहा है, रचना कर रहा है—समाज के लिए, अवाम के लिए। वीरान को बसाने के लिए, वन्ध्या धरती को शस्य-श्यामला बनाने के लिए, जी-तोड़ परिश्रम कर रहा है आदमी। उसके प्यार पनपने के लक्षण! वह सपने में बार-बार रोमांचित हुई थी।...बाइनोक्युलर इरावती की आँखों के सामने से हटाते हुए जितेन्द्र ने कहा—उठो!

मल्लिक-कोठी के चौकीदार के गले की आवाज—फटी-फटी! नींद खुली इरावती की। चौकीदार ने कहा—मेम साहब, अन्दर जाइए। बिछावन किया हुआ है। इस पहाड़ी में ए-गो अजगर बड़ा उतपात मचा रहा है, कई महीना से। हँसता हुआ आया जीत, चौकीदार चला गया।...जितेन्द्र ने बहुत समझाया। कहा—दस साल पहले भी एक भद्र महिला को इस चौकीदार ने अजगर का डर दिखाया था!

जितेन्द्रनाथ को यह दिखाने के लिए कि वह दस साल पहले आनेवाली महिला की तरह अजगर से नहीं डरती, इरावती अपने कमरे की खिड़कियों को खोलकर सोई। किन्तु, सच्ची बात! वह अजगर का नाम सुनकर ही डर गई थी। खिड़कियों के रंग-बिरंगे काँच...मणि-मुक्ता-भण्डार, नाना रत्नों के खान पर सोई है, इरावती। एक बड़ा-सा छत्रधारी साँप फुफकारता है—भाग जा! मेरी जगह छोड़ दे!!

बाहर बरामदे पर चौकीदार के खुर्राटे! इरावती डर से उठ बैठी थी।...

धूसर, वीरान प्रान्तर! जितेन्द्र ने इस अंचल की चर्चा बार-बार की थी।

वह हँसकर अपने को परतीपुत्तर कहता और इरावती को पांचाली ! इधर ही कहीं जितेन्द्र का गाँव होगा ! कहाँ हो ओ परतीपुत्तर ?

—खबरदार होय खबरदार ! अन्तहीन शून्य मैदान में कैम्प के पहरेवाले की आवाज बड़ी खौफनाक मालूम होती है। इरावती को नींद नहीं आ रही।…कहाँ हो जीत, तुम ? मैं तब से दर्जनों बार छोटानागपुर के उन कर्म-क्षेत्रों में भटकी फिरी हूँ। बोखारो के तीनों प्लाण्ट को चलते देख आई हूँ। कोनार और तिलैया के रिजर्वायर के नीलजल से मुँह धो आई हूँ। और, तुम्हारी कोसी मैया के कछार पर कब से घूम रही हूँ। तुम कहीं नहीं मिले। वर्षों से तुम्हारे सपनों के देश में हूँ। तुम मिलो तो एक कविता सुना दूँ—गाकर। निश्चय ही तुम स्वस्थ हो, प्रसन्न हो। तुम्हारा बाइनोक्युलर ?…

इरावती के मामा मिस्टर खानचन्द गार्चा, कैम्प के बड़े साहब हैं। तीन बजे रात को ही उठ कर जीप स्टार्ट कर रहे हैं।…भर्र-र-र-र-र !!

इरावती करवट लेती है !

गाँव में दलितवर्ग को हर तरह से मर्दित करके रखा गया था, अब तक ! नाटक-मण्डली के लिए प्रत्येक वर्ष खलिहान पर ही चन्दे का धान काट लेते थे, बाबू लोग। लेकिन, कभी भी द्वारपाल, सैनिक अथवा दूत का पार्ट छोड़ कर अच्छा पार्ट, माने हीरो का पार्ट, नहीं दिया सवर्ण टोली के लोगों ने।

दीवानाजी ने नाटक की रचना खास कर नाटक-मण्डलियों के लिए की है। दीवानाजी की बात विचार करके देखने की है ! नाटक-मण्डली के लिए सभी चन्दा देते हैं। और नाटक में राजा, राजा का बेटा, पुरोहित,

मन्त्री आदि जितने भी अच्छे पार्ट होते हैं, ऊँची जातिवालों को दिये जाते हैं। बाकी बचे हुए लोगों को 'जो आज्ञा' वाला पार्ट देकर टरका दिया जाता है। कहते हैं, नाटक में जितना पार्ट लिखा है, उससे ज्यादा लोगों को कैसे दिया जाय ?···भला शहर के नाटक लिखनेवालों को क्या मालूम कि गाँव में कितने लोग, यों ही बिना पार्ट के रह जाते हैं। 'प्यार का बाजार' में तीस हीरो हैं। औरत का पार्ट कोई लेना नहीं चाहता, इसलिए एक घूँघटवाली हीरोइन की व्यवस्था की गई है, किताब में।' दीवानाजी ने गाँव की पुरानी नाटक-मण्डलीवालों की धाँधली का पर्दाफाश करते हुए कहा—गाँव में गाँव के नाटककार का नाटक स्टेज नहीं करते और देश के कल्यान की बात करते हैं !

किन्तु, 'प्यार का बाजार' ने एक विराट व्यापार का रूप धारण किया ! दलित नाटक मण्डली वाले जब सवर्णटोली से पर्दा-पोशाक लेकर चले गये तो मालूम हुआ कि अब वे पर्दा-पोशाक लौटाकर नहीं देंगे।···पचीस साल से चन्दा लिया जा रहा है। मगर कभी हीरो का पार्ट नहीं मिला। छित्तन बाबू ने पुस्तकालय को हथिया लिया। बिकूबाबू सरकारी रेडियो बजाते हैं, अपनी कोठरी में। पर्दा पोशाक पर दलित नाटक मण्डली का कब्जा होना जायज है। देखना है, कौन माँगने आता है पर्दा-पोशाक ? एक मूँछ भी नहीं मिलेगी !

किन्तु, सवर्णटोली पर जाहिरा इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। नाटक शुरू होने के दो घण्टा पहले सवर्णटोली के दर्शक भी पहुँचे। सब ने मिलकर स्टेज की तारीफ की। सजावट को सराहा।

बातों-ही-बातों में सवर्णटोली के नौजवानों ने अपनी गलती मान ली। नाटक-मण्डली के स्थायी मन्त्रीजी बोले—नाटक ही करना था तो मिलजुल कर करते !

—दूर-दूर से लोग देखने आये हैं ! क्या कहेंगे लोग ?

—अरे भाई, जमीन की लड़ाई जमीन पर। गाँव की लड़ाई गाँव में होती
रहेगी! लेकिन, नाटक-मण्डली में फूट होने से तो दुनिया हँसेगी!
एक तेज नौजवान ने काँपती हुई आवाज में कहा—परानपुर की प्रतिष्ठा
का प्रश्न है, प्यारे भाइयो!

दीवानाजी को समझाया गया, नाटक-मण्डली ने अब तक उनकी किताब
को अस्वीकृत करके भारी भूल की है। गाँव के नाटककार की कद्र गाँव
में ही न हो, यह अच्छी बात नहीं।...किन्तु, यह बात भी ठीक है कि
दूसरे सीन में संशोधन की आवश्यकता है। संशोधन करते ही नाटक चमक
उठेगा।

दीवानाजी ने उत्साह से हाथ फेंकते हुए कहा—यह तो मेरे लिए बायें हाथ
का खेल है। एक रात में नाटक लिखा है, पाँच मिनट में संशोधन कर
सकता हूँ!

सर्वसम्मति से यह संशोधन भी स्वीकृत हो गया कि सवर्ण और दलित,
दोनों दल के लोग मिलजुलकर नाटक खेलेंगे। सवर्णटोली वाले सिर्फ
संशोधित सीन में उतरेंगे। दलित-दल के एक भी हीरो को ड्राप नहीं किया
जायगा!

हारमोनियम मास्टर ने जब 'मारी कटारी मरि जाना' गीत का गत बजाना
शुरू किया तो किसी को भी होश नहीं रहा। दर्शकों ने तालियाँ बजाकर
पर्दा उठाने की उत्कंठा प्रकट की।

पर्दा उठा। प्रथम दृश्य में नाटककार—मंगनीसिंह उर्फ प्रेमकुमार दीवाना-
जी ने पन्द्रह मिनट भाषण देकर प्रमाणित कर दिया कि सिर्फ नाटकों से ही
ग्राम-सुधार सम्भव है। शर्त यह है कि गाँव में, गाँव के योग्य नाटक ही
खेले जायँ। बीच-बीच में दोहा, कवित्त, शेर जोड़कर दीवानाजी ने
इंगलैण्ड, अमेरिका, चीन, रूस आदि देशों के नाटकों पर काफी प्रकाश
डाला! प्रथम दृश्य में दलित-मण्डली के एक दर्जन कलाकारों ने मिलकर प्रेम

प्रार्थना की—प्रेम की महिमा अपार जग में, प्रेम की महिमा अपार-हाँ-हाँ !!

दूसरा दृश्य ! इसी दृश्य में सवर्णटोली के बीसों कलाकारों को एक ही साथ उतरना था। सबसे पहले एक व्यक्ति हाथ में तलवार लेकर स्टेज पर आया। दीवानाजी पर्दे की आड़ से प्राम्पटिंग कर रहे थे। किन्तु, उस हीरो ने अपने डॉयलाग में पुकारा—साथियो ! तैयार हो ?

अन्दर से सम्मिलित आवाज आई—हम तैयार हैं !

हुक्म दिया प्रथम व्यक्ति ने—एक-एक कर प्रवेश करो !

बीसों कलाकार, किस्म-किस्म की पोशाकें और हथियारों से लैस होकर स्टेज पर आये। आठ-दस नायकों के सिर पर बक्से भी लदे थे। दीवानाजी दौड़ कर स्टेज पर आये। उन्होंने कुछ कहने की चेष्टा की। किन्तु, प्रथम हीरो ने हुक्म दिया—इस आदमी को कैद कर लो। दीवानाजी चक्रव्यूह में फँस गये। उन्होंने बहुत हाथ-पैर मारने की चेष्टा की। इस घेर-भाग और धर-पकड़ से समवेत दर्शक-मण्डली बेहद खुश हुई और तालियों से इस दृश्य का स्वागत किया। हारमोनियम मास्टर साहब ने लड़ाईवाली धुन बजाते हुए तबल्ची से कहा—अंग्रेजी बाजा की तरह बजाओ ! ड्रम-ड्रम-ड्रम ! डम-डम-डम !! दीवानाजी पकड़े गये। हीरो आखिरी डायलाग बोला—निकल पड़ो !

बीसों हीरो सारे साजो-सामान तथा पोशाक के साथ दर्शकों के बीच उतर पड़े। दो नायकों ने नाटककारजी को कन्धे पर बेबस करके लटका लिया था। दलितटोले के पंचायती पेट्रोमेक्स को गुल कर दिया गया।···भीषण कलरव और कोलाहल में किसी के समझ में नहीं आया कि क्या हुआ। टँगे हुए पर्दे की डोरी भी काट कर ले गये, सवर्णटोली के नायक। बारह-तेरह व्यक्ति नकली तलवार की मार से घायल भी हुए।

गाँव में सरगर्मी है। थाने में खबर दी गई है। लुत्तो, गरुड़धुज झा, वीरभद्र बाबू वगैरह पैरवी कर रहे हैं। गवाही देंगे—नाटक की बात नहीं !

डकैती का अभियोग लगाकर नालिश की गई है !

सवर्णटोली के नौजवानों ने 'प्यार का बाजार' को सेबोटेज कर दिया। किन्तु, उसी रात को हवेली की बगिया में एक दलित-दुहिता ने एक सवर्ण-युवक के प्यार के संसार को असंख्य चाँद-सितारों से जगमगा दिया। युवक धन्य हुआ !

—तुम्हारी जाति मारी गई। मलारी मुस्कुराई—हाय, हाय ! तुम्हारी जाति चली गई !

कहाँ चली गई जाति ? सुवंश ने मलारी के कान के पास मुँह रखकर पूछा—किसकी जाति मारी गई ? मलारी ने बार-बार सुवंश की जाति को लौटाने की चेष्टा की। मरी हुई जाति जी जाती, फिर मर जाती ! मरती और जीती हुई जाति अन्त में अमर हो गई। सुवंश ने मलारी के घुँघराले बालों की लहरों पर हौले-हौले हाथ फेरते हुए कहा—मलारी मुझे बताओ, मैं क्या करूँ ? अब जी की जलन को सहना मेरे बूते की बात नहीं। मलारी एक क्षण के लिए गम्भीर हुई। फिर बोली—और मैं किससे पूछूँ ! मेरा दुःख तुमसे दूना है सुवंश बाबू !

—फिर तुमने बाबू कहा ? लाओ जुर्माना !

मलारी ने हँस कर दण्ड स्वीकार किया। सूखे पत्ते की खड़खड़ाहट पर चौंक कर मलारी ने अपने को सुवंश के बन्धन से छुड़ाना चाहा—शायद कोई आ रहा है, इधर ही !

—कोई आवे, मेरी बला से। मैं नहीं डरता। मलारी, तुम विश्वास क्यों नहीं करतीं ?

तुम नहीं जानते, विश्वास करने में कितना सुख मिलता है, मुझे। किन्तु मन में जमता ही नहीं है। जो कुछ आज तक नहीं हुआ वह तुमसे कैसे हो सकेगा ? मैं कुछ नहीं समझ पाती हूँ। सुवंश की चौड़ी छाती पर

अपना सिर रख कर बोली मलारी—गाँव में भूकम्प हो जायगा। कैसे सँभाल सकोगे तुम अपने को ?···इसीलिए, कहती हूँ—जो हुआ बहुत हुआ। अब···।

सुवंश ने अपनी हथेली से मलारी का मुँह बन्द कर दिया। पेड़ पर बैठे किसी पंछी ने डैने फड़फड़ाये। ओस की बूँदें झरझरा कर धरती पर गिरीं !!

सचमुच, भूकम्प हो गया गाँव में !

मलारी और सुवंशलाल गाँव छोड़ कर भाग गए। घाट-बाट, खेत खलिहान, डगर-सड़क और अली-गली में बस एक ही चर्चा—हद हो गई ! जुल्म हो गया। जित्तन का भी कान काट लिया। हरिजन-उद्धार हो गया। भूमिहार सभावाले क्या कहते हैं ? हरिजन वेलफेयर औफिसर आ रहे हैं ! हरिजन-मिनिस्टर साहब को तार दिया गया है।

कल, खबर मिली है—मलारी मुजफ्फरपुर में ट्रेनिंग ले रही है और सुवंशलाल भी मुजफ्फरपुर कॉलेज में नाम लिखा चुका है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन से पहले ही छुट्टी ले चुकी थी मलारी। सुवंशलाल ने भी, चिट्ठी-पत्री लिखकर सब काम दुरुस्त कर लिया था, पहले से ही।

सुवंशलाल की माँ रो रोकर अन्धी हुई जा रही है। बगीचा में बैठ कर रैदासटोली की ओर मुँह करके, जोर-जोर से रोती है, वह। मलारी की माँ हमेशा बुदुर-बुदुर बकती रहती है——कोख में साँपिन पल रही है, जानती तो पेट पर गरम पानी की कटोरी रख कर तुमको पेट में ही पका मारती, छिनाल। भाग गई टरनिंग लेने, भूमिहरवा के साथ ? उस भूमिहरवा छौंड़े की मां को, भाई को, भौजाइयों को लाज नहीं··!

सुवंश की मंझली भाभी अपनी रोती हुई सास को समझाती हुई, जोर-जोर से कहती है—रो-रोकर आँख चौपट करने से क्या होगा मइया ! मर्द की जात, सोने की जात। सुवंश बाबू की जात जरा भी मलिन नहीं होगी। लेकिन, उस हरजाई चमारिन छौंड़िया का हवाल देख लीजियेगा। नट्टिन

टोली में नहीं आकर बसे तो, मेरे नाम पर काली कुतिया पोसे कोई ! जो एक मर्द के साथ भाग सकती है, वह दस मर्द के साथ आँख लड़ावेगी !

रोज, दिन डूबने से पहले, पनघट पर खड़ी औरतें इस हवाई झगड़े को सुनती हैं। टीका-टिपकारी करती हैं। फिर, दोनों का पक्ष लेकर आपस में झगड़ती हैं। हाथ चमकाकर फेंकनी की माय चुनौती देती है—आकि देखो, बाभनछतरी की बेटी-पुतोहु को भी सोलकन्हटोली का कोई छौंड़ा लेकर भागेगा। जब, भागा-भागी का कारबार शुरू हुआ है तो, देख लेना। आकि देखो !

आज, मलारी की माँ और सुवंश की माँ और दोनों भाभियाँ हवेली की ओर मुँह करके गाली-श्राप दे रही हैं। सुवंश की माँ रोती हुई कहती है—रे उकलगौना जितना ! तेरे बाप ने मेमिन का जूठा खाकर धरम गँवाया। तेरी मैया की जात का कोई ठीक-ठिकाना नहीं ! तेरी हवेली में रण्डी की बेटी पली। तू दूसरे की जात क्यों नहीं मारेगा। किस्तनवाँ, मुसलमनवाँ, नट्ट-बजीगरवा। रण्डी का भड़वा ! मेरे सुवश का माथा खराब करके गढ़ में गिरा दिया और अपने मौज से बैठकर हवेली में फेनूगिलास का गीत सुनता है। तजमनियाँ तुमको जहर खिलाकर मारेगी रे-ए-ए-ए !!

मलारी की माँ रोती नहीं, चिल्लाती है—बैठा बनियाँ क्या करे तो, इस कोठी का धान उस कोठी में ! तजमनियाँ से मन नहीं भरा तो मलरिया पर आँख पड़ी। पोसा कुत्ता सुवंशलाल को हुल्का दिया। पूँछकट्टा गीदड़ कहीं का।

गाँव में नई खबर फैली है, जित्तनबाबू ने ही दोनों को, सलाह-मशविरा, चिट्ठी-चपाटी और शायद रुपया-पैसा देकर भगा दिया है। सुवंश के बड़े भाई खुवंश बाबू से जितेन्द्रनाथ ने स्पष्ट शब्दों में कहा—सुवंश और मलारी, दोनों की चिट्ठियाँ मेरे पास हैं। मैंने दोनों को समझाने की कोशिश की। लेकिन, अपने फैसले पर दोनों अटल थे।···मुझसे सिर्फ परिचय पत्र लिया है सुवंश ने। हाँ, मैंने प्रान्त के एक प्रसिद्ध मिनिस्टर की घोषणा की याद

अवश्य दिलाई थी, सुवंश को । एक डेढ़ महीना पहले ही मिनिस्टर साहब का वक्तव्य निकला था—हरिजन कन्या से विवाह करनेवाले सवर्ण युवक को स्कॉलरशिप देंगे । सुवंश की चिट्ठी आई है, कल । उसने मिनिस्टर साहब को अचरज में डाल दिया है ।

रघुवंश बाबू ने चिट्ठी पढ़ी । कुछ बोल नहीं सके । उठते समय बोले—माँ मर जायगी, रोते-रोते ! जितेन्द्रनाथ ने लाचारी की साँस ली !

दीवाना, अब सचमुच दीवाना हो गया है । अपने प्यार की कहानी वह गा-गाकर सुनाता फिरता है । सरपट चाल वाली कविता बनाता है, आज-कल—खटर-खटर, पटर-पटर रेलगाड़ी जा रही, उड़ाये जा रही है प्रेमिका को मेरी—बहुत दूर, बहुत दूर ! धुकुर-धुकुर धुँआ मेरे दिल से निकलता है···! कभी-कभी तैश में वह भाषण देना शुरू कर देता है—मुझे मालूम है, मेरे भाइयो ! आपको भी मालूम होना चाहिये, दुनिया को मालूम होना चाहिये कि प्यार का क्या फल मिलता है ! कलात्मक प्रेम के पुजारी की हैसियत से मैं कहना चाहूँगा···इत्यादि !

बालगोबिन मोची का माथा अब ज्यादा झुका रहता है । लुत्तो रोज धमकी देता है, तुम्हारी ही बेवकूफी से सब कुछ हुआ । यदि मलारी से उस कागज पर दस्तखत करवा लेते तो आज ऐसा नहीं होता । तुम्हारी बदनामी हरिजन वेलफेर ऑफिसर के यहाँ भी हो गई है । नहीं चलेगी तुमसे अब लीडरी !

वीरभद्र का विभीषण भाई शिवभद्र खुले आम प्रचार कर रहा है—मलारी को खजवा टोपीवालों ने भगाया है । जित्तन भैया को क्या पड़ी है ? यह काम तिरंगा झण्डावालों का है । जिसको परतीत नहीं हो, मेरे पास कागज है—आकर पढ़ लो । मैं पढ़ना नहीं जानता तो क्या हुआ ? काँग्रेसी-छाप कागज भी नहीं पहचानूँगा !

शिवभद्र ने आजकल भैंस चराना छोड़ दिया है । लोग कहते हैं, जित्तन बाबू ने उसकी पीठ पर हाथ रखा है । देह की ताकत में दोनों बड़े भाई

उससे पार नहीं पा सकते। इसलिए, अब मारपीट की धमकी भी वे नहीं देते। बीरभद्दर कहता है—लुत्तो ! क्या बतावें। यह डम्फास भाई मेरा जो है न, सब गुड़ गोबर करनेवाला निकला। आजकल उसका मन कौमनिस्ट होने के लिए कसमसा रहा है। देखो, वह सिडुलवाला कागज कैसे हाथ लग गया ?...फुसलाना मलारी को। दिखलाना लोभ ! सामबत्ती पीसी की खुशामद, दिन में दो बार कर आता है, लुत्तो। देखना ! एक तो तुमने काम नहीं बनाया। अब, मुफ्त में बदनाम मत करना। पान-पत्ता के लिए बीरभद्दर बाबू तैयार हैं। जो, कहो ! जयवंती और सेमियाँ फिसफिसा कर आपस में बतियाती हैं—लिलिया पहले से ही जानती थी मलारी के मन की बात। इसीलिए, पटना चलने के लिए कह रही थी।

आजकल, रामलला की पूजा से छुट्टी नहीं मिलती है, सरबजीत चौबे को। किन्तु, मलारी की माँ रोज पहुँचती है—चौबे जी ! पैर पड़ती हूँ, आज जरा फिर से पोथी में हिसाब करके देखिये, मेरी बेटी घर लौटेगी या नहीं ?...चौबेजी को भी मलारी के भाग जाने का बहुत दुख है। जब से गई है मलारी, गाँव अलोना-अलोना लगता है !

उस दिन भूदान के तीन कार्यकर्ताओं को मारते-मारते बेदम कर दिया, सरबन बाबू के लठैतों ने ! सरबन बाबू और लालचन बाबू में भैयारी झगड़ा है। लेकिन, बाहर के दुश्मनों से मुकाबला करने के समय दोनों भाई में मेल हो जाता है।

सर्वे की आँधी के पहले ही जिला के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने—विनोबा की पदयात्रा को सफल बनाने के लिए—दानपत्र बटोरने का काम पूरा कर लिया था।...कांग्रेसियों और समाजवादियों ने मिलकर गाँव-गाँव में अलख जगाई—भूदान करो ! भूदान करो !! विनोबा के प्रत्येक पड़ाव पर दान-पत्रों और दान में मिली जमीन के आँकड़े सुनाये जाते। दाताओं के नामों की घोषणा की जाती। प्रत्येक नाम पर जनता जै-जैकार करती !...

दुखरन साह की तरह, परानपुर के अधिकांश जमीनवाले बड़े किसानों ने सोचा—सामने सर्वे की कड़ी सरसराती हुई आ रही है। जमीन माँगनेवाले कोई नये लोग थोड़े ही हैं ! पुराने ही बाबू लोग हैं। कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी के लीडर लोग। विनोबा बाबा को कुछ बीघे जमीन का दानपत्र देकर काम बनाया जा सकता है—सर्वे में। भूदान देने वालों पर कांग्रेसियों और सोसलिस्टों की मिलीजुली नेकनिगाह जरूर रहेगी।···

लेकिन, सर्वे के समय न तो सर्वोदय के कार्यकर्ता काम आए न कांग्रेसी और न सोशलिस्ट-कम्युनिस्ट। काम आए आखिर गरुड़धुज झा। किसी ने इस दान का ख्याल नहीं किया। दान का प्रतिदान तुरत चाहने वाले लोगों में हैं सरवन बाबू। अपने भाई लालचन के हक को उड़ाने के लिए सरवन बाबू ने भरी कचहरी में हलफ लेकर कह दिया—लालचन मेरा भाई नहीं। ···सरवन बाबू ने फैसला कर लिया था मन-ही-मन—एक धूर जमीन भी नहीं देंगे। दानपत्र दिया है तो क्या हुआ ?

लुत्तो, सर्वोदय के लोगों पर बहुत नाराज है। तीन सौ एकड़ जमीन का दानपत्र बटोर दिया लुत्तो ने। लुत्तो ने समझा था और आज भी समझता है—जमीन माँगनेवालों को परसेन्टेज के हिसाब से कुछ कमीशन जरूर मिलता है। लुत्तो को कुछ भी नहीं मिला ! वह अपनी आँख के सामने देख रहा है, मौज में हैं सर्वोदय के कार्यकर्ता। खँजड़ी बजानेवाले को भी मुसहरा मिलता है !

लुत्तो की उपर्युक्त धारणा को गलत प्रमाणित करने के लिए सर्वोदय आश्रम के खजांची ताराबाबू ने दाँत किटकिटा कर कहा था—क्या समझ लिया है ? कपड़ा-चीनी तेल के परमिट का डिपू समझ लिया है, इसको भी ? तारा बाबू जरा तीखे मिजाज के आदमी हैं। सोशलिस्ट-साइड के सर्वोदयी हैं। आश्रम की भाषा में, इस साइड का अर्थ—कांग्रेसी, उस साइड का माने सोशलिस्ट होता है।

तारा बाबू ने चिल्लाते हुए कहा था—इस साइड और उस साइड

की क्या बात ? कांग्रेस में ही बचपन काट कर जवान हुआ हूँ। कार्यकर्ताओं को नहीं पहचानूँगा ?

सामूहिक भोजन के समय भोजनालय-भाई ने बेपानी कर दिया था लुत्तो को—यहाँ शरीरश्रमीभाई का पेट एक पैली चावल में ही भर जाता है। आप पाँचवीं बार भात माँग रहे हैं···! लुत्तो तैश में आकर खड़ा हो गया था, पर्दाफाश करने के लिए। धर्मपुर इलाके के दुग्गी-तिग्गी कार्यकर्ता भी, दूसरे इलाके के कार्यकर्ताओं पर हुकुम चला कर बात करते हैं। लुत्तो ऐसे लोगों को 'हजूर-कार्यकर्ता' कहता है। हर जगह हजूर हैं, सब जगह मजूर हैं।

झगड़े को जिला कांग्रेस कमिटी के प्रधान महोदय ने निबटा दिया था—एक पैली भात दे दीजिए, भोजनालय-भाई जी !

इसके बाद, लुत्तो ने सर्वोदय का नाम लेना कम कर दिया। ···ताराबाबू कभी परानपुर इलाके में नहीं आवेंगे ? तब पूछेगा, लुत्तो !

एक सर्वोदयी अमीन के साथ दो भूदानी आए—रामलखनजी और टमाटर परोपकारीजी। लुत्तो ने साफ-साफ कह दिया, मेरे पास समय नहीं। कांग्रेस का भी काम करें, भूदान की भी बेगारी करें और पेट का भी धन्धा खोजें ! जमीन माँग दी है, अब आप लोग घर-घर डोलिये। दाताओं के यहाँ डेरा डालिए। जो साग-सत्तू मिले, प्रेम से पाइए।···यहाँ कांग्रेस कमिटी का दफ्तर मेरे पाकिट में है। पाकिट में रहियेगा ?

ऐसे-ऐसे भूदानी, जीवनदानी भी हो जाँय—लुत्तो की लंगी को नहीं समझ सकते ! रामलखनजी को वह बहुत दिनों से जानता है। सूधे आदमी हैं। लेकिन, टमाटर परोपकारी जरा टेंबाज है। असल नाम छिपा रखा है, उसने। जहाँ जाता है, टमाटर के गुण पर भाषण देता है। अनुमान भेद से गुणभेद, अनुपम अनेक गुण का बखान करने के बाद नारा देता है—अधिक टमाटर उपजाइए। लुत्तो को पक्का विश्वास है, वह आदमी जरूर किसी बीज बेंचनेवाली कम्पनी का एजेंट है।···अच्छी बात, कलाहार

करावेगा लुत्तो, इस बार !

लुत्तो ने गाँव के दाताओं से बातें कर लीं—ब्योरा मत दीजिए जमीन का। सर्वोदयवालों ने हमारे गाँव में कौन सी भलाई की है ? दिया है एक भी कुआँ या रहट ?

दिनभर डोलते रहे गाँव में दोनों भूदानी। किसी ने इनकी ओर देखा भी नहीं आँखें उठाकर। रात में कोई आश्रय देने को तैयार नहीं। सभी टाल देते, दूसरे टोले का रास्ता दिखला देते।···रामलखनजी पहली बार नहीं आए हैं, परानपुर। किन्तु, गाँव ऐसा हो जायगा उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

लुत्तो ने इन्हें अच्छी तरह भटकने दिया। शाम को जब दोनों भूदानी हवेली की ओर जाने लगे, तब लुत्तो ने पुकारकर कहा—सुनिए जी, बिलैती बैंगन ···टमाटरजी और रामलखनजी। कहीं कोई नहीं रहने देंगे, रात में। इस इलाके में अफवाह फैली है कि भूदानी और जीवनदानी जहाँ टिकते हैं, जो चीज सामने देखी—वही दान में माँगने लगते हैं।···चलिए, मेरी हाँड़ी का बना हुआ भात खाइएगा या फलाहार ?

दिन भर के भूखे भूदानियों को भरपेट दूध-भात खिलाकर लुत्तो ने समझाया—असल बात क्या है, जानते हैं ? एक भी आदमी ब्योरा नहीं देगा, आप लोगों को। मैं बात कर चुका हूँ लोगों से। दानपत्तर का कोई भैलू ही नहीं लगाते हैं लोग। किसी बड़े कार्यकर्ता को ले आइए बुलाकर। नहीं तो, कुछ नहीं होगा। जब आए हैं तो एक सप्ताह रह कर रंग-रतबा देख लीजिए !

एक सप्ताह रह कर रंग-रतबा देख लिया, दोनों भूदानियों ने। झोली-झण्डा लेकर सर्वोदय-आश्रम रानीपट्टी की ओर मुँह किया !···लुत्तो ने इसी बीच सरबनबाबू को चोट पर चढ़ाया। बतलाया—आपने तीस एकड़ जमीन दी है न ? सुना है, आपकी गुलरीवाली जमीन को बितरन कर देंगे भूदानी लोग ! सरबनबाबू सुन कर अगियाबैताल हो गए—कौन साला गुलरी

वाली जमीन··· !

दस-पन्द्रह दिनों के बाद रामलखनजी और टमाटर परोपकारीजी के साथ आए खुद ताराबाबू ! ···खजांची बाबू आए हैं ? लुत्तो खुशी-खुशी जाकर मिला—ठीक है, अब आप आए हैं। देखिएगा, कितना जल्दी ब्योरा देते हैं गाँव के लोग।

लुत्तो ने सरबन बाबू के बारे में बतलाया—सब कोई जमीन का ब्योरा दे दें, मगर सरबनसिंघ नहीं दे सकता। भारी दुश्मन है भूदान का। कहता था, विनोबाजी का भी क्या विश्वास ? यदि सभी जमीन लेकर खुद जमींदारी करने लगें, तब ? कहिये, भला ! ताराबाबू ने अपनी डायरी में नोट करते हुए पूछा—क्या नाम बताया ? सोबरन या सरबनसिंह और लालचनसिंह ? —जी हाँ ! लुत्तो ने विनम्रता से कहा—जयदेव बाबू के मामा हैं। एक दिन कह रहा था सरबनसिंघ—सभी डकैत लोग सर्वोदय में पैठ गए हैं। मैंने पूछा—कौन डकैत ? तो, बोला—सोशलिस्ट लोग।

तारा बाबू तेज मिजाज के आदमी हैं किन्तु लुत्तो से इस बार उन्होंने हँस-हँसकर बातें कीं। लुत्तो ने ताराबाबू को अपने घर पर रखा। आदर-सत्कार किया—ऐ बिटैली वाली ! जानती नहीं, कैसा मेहमान आया है ? दही खानेवाला ! खूब अच्छी तरह दही जमाओ। घर में दही जमाने की ताकीद करके, लुत्तो निकला। गरुड़धुज झा, वीरभद्दर और रोशन बिस्वाँ से मिला। भूदानका नया एलान सुनाया, ताराबाबू कहते हैं कि जो दाता ब्योरा नहीं देंगे, उसकी जमीन बगैर ब्योरा के ही बाँट कर देंगे। सरकिल कर्मचारी से ब्योरा ले लेंगे। ऊपर से सरकिल कर्मचारी को भी हुकुम आया है ! लुत्तो ने यह भी बताया कि ताराबाबू बहुत तीखे आदमी हैं। इसबगोल की भूसी दही के साथ खाते हैं फिर भी दिमाग तेजी से काम करता रहता है। और वह जो विलैती बैंगनजी···नहीं-नहीं, टमाटर परोपकारीजी हैं न ! कह रहे थे—इस गाँव में हिसाब से मोती बनाएँगे और सोना··· !

गरुड़ झा ने खैनी थूकते हुए कहा—जितने काने-कोढ़ी और पागल हैं, सब सर्वोदय में ही आकर जमा हुए हैं क्या ? पेशाब से मोती बनायेंगे ?

रोशन बिस्वाँ ने कहा—जरूर कोई भारी ठग है। मेरे बाप को ठग गये थे दो साधू सो नहीं जानते ? बोले कि, एक नोट का पाँच बना देंगे। लुत्तो ने बताया—ताराबाबू धरमपुर के हैं न। इसलिए कह रहे थे कि परानपुर गाँव लंगटा-लुच्चों का गाँव है।

इस बात पर सबसे ज्यादा रोशन बिस्वाँ का पित्त खौला—क्या कहता है ? लंगटा-लुच्चे का गाँव है ! कैसा आदमी है ?

गरुड़धुज ने कहा—अच्छी बात ! इसी बार भेंट हो जायगा, तब !

गरुड़धुज झा और लुत्तो ने एकांत में सरबन बाबू की बात की। फिर, आकर रोशन बिस्वाँ और वीरभद्दर बाबू से बोले—क्यों पंचो ! इस धरमपुरिया को फलाहार करा दिया जाय ?

—हाँ, हाँ। हो जाय !!

गरुड़धुज झा, सरबन बाबू और लालचन बाबू को लेकर कचहरी उड़ा—भोर की गाड़ी से। लुत्तो ने सरबन बाबू को गुप्त खबर दी है—गुलरीवाली धनहर जमीन पर सोशलिस्टों की आँख है। जिस गुलरीवाली ऊपजाऊ जमीन के लिए सरबन बाबू ने हलफ उठा कर कह दिया था···! उसी जमीन को तितर-बटेर करके बँटवाना चाहते हैं लोग ?···वकील साहेब ने फीस लेकर सलाह दी—कोई डकैती करने आवे तो क्या कीजियेगा ? बस, और क्या ?

ताराबाबू ने एक सप्ताह तक गाँव में छोटी-छोटी सभाएँ कीं। रामलखन-जी ने खँजड़ी बजाकर भूदान-संकीर्तन सुनाया और टमाटर परोपकारीजी ने टमाटर की तरह-तरह की तरकारियों और चटनियों की बात सुना कर सुनने वालों की रसना को सरसाया। किन्तु, गाँव के किसी दाता ने जमीन का ब्योरा देना स्वीकार नहीं किया। कुछ लोग बहाना बनाकर टाल

गये—मालिक घर में नहीं हैं। कागज कचहरी में लगा हुआ है ! कुछ लोगों ने कहा—भूदान में जो जमीन देने की बात थी सो सरकार ने छीन ली। परती जमीन !

ताराबाबू ने भूदान कार्यालय में तार दिया—जमीन वितरण करके ही लौटूँगा ! और, उस दिन निकल पड़े ताराबाबू अपने कार्यकर्ताओं के साथ। लुत्तो भी साथ था। उसने धीरे से कहा—तारा बाबू ! पहले सरबन सिंह से ही शुरू कीजिए !

गुलरीवाली जमीन की मेंड़ पर जाकर जमा हुए सभी। तीसों एकड़ में धान के पौधे, दूधभरी बालियों के गुच्छे झुकाये हुए ! हवा का हलका झोंका भी खेत में तरंग पैदा कर देता है। ताराबाबू भी किसान परिवार के पुत्र हैं। धान देखकर उनका जी जरा जुड़ा गया। बोले—पहले यहीं से ? लुत्तो ने कहा, देर क्यों करते हैं। शुरू कर दीजिए !

ताराबाबू कागज-पत्तर ठीक करने लगे। रामलखनजी ने खँजड़ी बजा कर गीत शुरू किया। और, अमीन साहब कड़ी का झब्बा खोलकर—गुनिया ठीक करने लगे ! आस-पास कुछ लोग आकर जमा हुए।···घेर, घेर, घेर ! गाँव के पास कुछ लोग दौड़ रहे हैं ! लुत्तो ने कहा—खरहे का शिकार कर रहे हैं, शायद। किन्तु, पलक मारते ही सरबन सिंह का छोटा भाई लालचन सिंह दस-पन्द्रह लठैतों के साथ आ धमका—क्या हो रहा है ? क्या समझ लिया है ! मुसम्मात की जमीन है ?···मारो सालों को !

लठैतों ने लाठी भाँजनी शुरू की। अमीन साहब जरीब की कड़ी छोड़कर भागे। ताराबाबू के सिर पर लाठी लगी तो वे सिर पर झोली रख कर बैठ गए। दूसरी लाठी में ही चित्त हो गए।···भूदानियों पर लट्ठ पड़ने लगे—साला ! पहले जमींदारी खत्म किया। तब सर्वे और तब सरबोधन। साला सरबसोधन। और लो ब्योरा ! बाँटो जमीन अपने बाप की ! तड़ा-तड़ ! तड़ा-तड़ !! राखलखनजी धरती पर लोट गए। लुत्तो को एक भी लाठी नहीं लगी। ताराबाबू के गिरते ही वह भागा···फलाहार करिये ! किन्तु,

टमाटर परोपकारी जी अडिग खड़े रहे। लाठियाँ पडती रहीं, सिर से खून की धारा बह चली किन्तु उन्होंने बचाव के लिए हाथ भी नहीं हिलाया। उन्होंने प्रार्थना शुरू कर दी : ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह, पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है···सब ओर आत्मा घेर कर आत्मज्ञ सो—है बैठ जाता प्राप्त कर लेता उसे—जो तेज से परिपूर्ण है !···घायलों को छोड़कर भागे सभी।

कॉमरेड मकबूल अपने साथियों के साथ दूसरे गाँव की ओर जा रहा था। सुनते ही सायकिल छोड़ कर दौड़े सभी ! ताराबाबू ने आँख खोलकर देखा—मकबूल और उसके साथी रामलखनजी को चुल्लू से पानी पिला रहे हैं।

जिला के प्रमुख तन्त्रमुक्त भूदानी नेता ने घोषणा की है—परानपुर में आमरण अनशन करेंगे !

भिम्मलमामा का पागलपन बढ़ गया है। जबर्दस्त दौरा ! जित्तन बाबू को भी इस बार आशंका हो रही है, मामा पागलखाने में भेज दिये जायेंगे। काँके !

दौरे के समय भिम्मलमामा—होल्डिंग डांग के बदले दूसरी पंक्ति रटते हैं, हमेशा। राह चलते समय हाथ नचा-नचा कर बकते हैं—हेक्सागन प्लस पेंटागन !

आक्रमण नहीं करते, किसी पर। किन्तु, राह काट कर चलते हैं लोग फिर भी ! कौन डेढ़ घंटा तक उनकी परिभाषा सुने और उनकी भाषा को समझे ?···हू मेड कोकोनट ? जहाँ पवन को गमन नहिं, रवि-शशि उगे न भानु—जो फल ब्रह्म रचे नहिं सो अबला माँगत दान। ह्वाट्स दैट फ्रूट ? जाफल, काफल, श्रीफल, कटहल, कटहल-बड़हल, कटहल-बड़हल ! हेक्सागन प्लस पेंटागन !!

जितेन्द्रनाथ को भिम्मलमामा की बड़ी चिन्ता है। किन्तु, आजकल जितेन्द्र-

नाथ का नाम सुनते ही भिम्मलमामा उत्तेजित हो जाते हैं।...

जितेन्द्रनाथ ने हिसाब लगाकर देखा, ठीक है! उसी शाम को, हवेली से जाने के बाद से ही मामा की हालत बिगड़ी है!

उस शाम को!...

खँड़ाऊ खटखटाते आए मामा। कभी जितेन्द्रनाथ के ड्राइंगरूम में पैर नहीं रखते। उस शाम को आए तो बाहर प्रतीक्षा करने के बदले अन्दर चले गए। मीत ने उनको सूंघ कर छोड़ दिया!

—जित्तन! तुम्हारे निजस्व व्यक्ति से कुछ कथा है!

—कहिये!

—पंचचक्र तुमने कैसे प्राप्त किया?

—ताजमनी ने दिया। माँ ने एक पिटारी दी थी, उसी में था! क्यों?

—और, ताजमनी अब फिर हवेली के अन्तर में प्रवेश पा गई? सोचकर जवाब दो!

ताजमनी ने हवेली के अन्दर सुधना को डाँट बताई, किसी बात पर-रोज-रोज तुम्हारा दिमाग बिगड़ता ही जा रहा है?...भिम्मलमामा ने ताजमनी की बोली की प्रतिध्वनि सुनी—और वह नटकुमार भी है?

—हाँ।

—क्या हाँ-हाँ?

जितेन्द्रनाथ ने ताड़ लिया। बोला—आप बैठते क्यों नहीं? बैठिये, पहले।

—इसे क्यों नहीं बैठने कहते? भिम्मलमामा ने खड़ी पत्थर की मूर्ति की ओर दिखा कर कहा—और अब इसकी आवश्यकता ही क्या है! भिम्मलमामा की एक कमजोरी को सिर्फ जितेन्द्रनाथ ही जानता है। बचपन से ही भिम्मलमामा उसको प्यार करते हैं। नाटक में भी कभी ऐसा पार्ट नहीं लेते, जिसमें जित्तन के विरुद्ध कुछ कहना पड़े। द्रोणाचार्य का पार्ट

करना छोड़कर, नकुल का पार्ट लिया भिम्मलमामा ने।···जित्तन अभिमन्यू बनेगा और वह कौरवदल में रहेगा ?

घंटों, एकटक जित्तन को देखते—कभी-कभी एकांत में। जित्तन पूछता—क्या है मामा ?···कुछ नहीं, तुम्हारी कमीज पर एक कीड़ा चल रहा था। कहकर, उँगली से कुछ हटाते हुए जित्तन की देह स्पर्श कर लेते। आज भी, रोज किसी-न-किसी बहाने, जित्तन की देह को वे एक बार अवश्य छू लेते हैं। बचपन में ललाट पर लटकते केश को भी हटा देते। किन्तु आजकल कभी-कभी अपनी कलाई जितेन्द्रनाथ की ओर बढ़ा कर कहते हैं—देखो तो जित्तन, देह गर्म तो नहीं ? अरे, तुम्हारी हथेली इतनी गर्म क्यों है ?

उस शाम को, ड्राइङ्गरूम में भिम्मलमामा गुस्सा-से टहलने लगे। और, एकबार तो उन्होंने जितेन्द्रनाथ की किसी बात से चिढ़कर नोंच लेने के लिए हाथ भी बढ़ाया। किन्तु, मीत ने भूँकना शुरू कर दिया।

भिम्मल मामा ने मीत की ओर गौर से देखा, क्षण भर। फिर जितेन्द्रनाथ की ओर छलछलाई आँखों से देखकर कहा—यू हेक्सागन ? हि पेंटागन ? और इसके बाद हेक्सागन प्लस पेंटागन रटते, खड़ाऊँ खटखटाते हुए चले गये भिम्मलमामा।···जित्तन ने खिड़की से देखा था, कामिनी के पेड़ के पास, आँख पोंछते हुए जा रहे हैं भिम्मलमामा।

जब से ताजमनी हवेली में आकर रहने लगी है, लुधना उदास रहा करता है। अब उसे मीत से दोस्ती करने का लोभ नहीं। वह मीत से मन-ही-मन चिढ़ा रहता है। रह-रह कर लहेरियासराय जाने के लिए रोता है।···

जहाँ भूखों मर रहा था ! आजकल वह गाँव के लड़कों के साथ खेलने में अपना अधिकांश समय बिताता है। शाम को पढ़ने के समय ताजमनी की झिड़की सुनता है। जितेन्द्रनाथ के सामने तो गूँगा ही हो जाता है, वह !

जब कभी ताजमनी, जित्तनबाबू के कमरे में जाती है; सुधना दम साध कर अपने गुस्से को रोके रहता है।···कभी-कभी दिन भर भूखा रहता है।

ताजमनी ने जाकर देखा—कालीबाड़ी का रूप ही बदल गया है। जंगल-झाड़ियों की सफाई करते समय घुँघरू के कुछ दाने पाये गये हैं।... ताजमनी ने पहचाना, उसी के पाँव के घुँघरू ! श्यामा-कीर्तन गाकर नाचते समय टूटे हुए घुँघरू ! ताजमनी बीते हुए बचपन के दिनों की स्मृतियों के जाल में उलझ गई।

शाम को वह सीधे जितेन्द्रनाथ के कमरे में गई—जिद्दा ! बलिदान रोकने का हुक्म किसने दिया है ? ताजमनी की आँखों की ओर देखता ही रह गया, जित्तन !

—बोलो न !

—माँ श्यामा ने !

—ठिठोली नहीं करते जिद्दा !

जितेन्द्रनाथ ने कहा—तो, पूछने ही क्यों आई ? माँ श्यामा की पूजा में किसी का हुक्म कैसे चल सकता है, तुम्हारे रहते। ···और, मैंने हजार बार प्रार्थना की है—जो कुछ कहना या पूछना हो, बैठ कर पूछो ! ताजमनी लजाती हुई हँसी। बैठी नहीं।

—तुम्हें पूजा से कोई मतलब नहीं ?···भिम्मल मामा के लिए चिन्ता क्यों करते हो। पूजा के दिन अपने आप आराम हो जायेंगे। पहली बार, ठीक पूजा से पाँच दिन पहले सनके थे !

—क्यों, पूजा से मतलब क्यों नहीं ! श्यामा-संकीर्तन के लोभ से ही मैं

पूजा में दिलचस्पी ले रहा हूँ !

—श्यामा-संकीर्तन का लोभ ? मैंने माँ से हुक्म ले लिया है। मन-ही-मन संकीर्तन गाऊँगी।

—क्यों ?

—खोल कौन बजावेगा ?

—क्यों, मैं ?

—बजाओगे ? जिद्दा, सच कहते हो ? तुम खोल बजाओगे ! मुझे परतीत नहीं। तुम ठिठोली करते हो।···याद है ? तुमने खोल नहीं बजाया था। घुंघरू खोलकर फेंक दिया था मैंने ! उस बार भी तो तुमने कहा था। प्रतिज्ञा की थी तुमने !

ताजमनी को जितेन्द्रनाथ ने कुर्सी पर बैठा दिया—ताजू ! तू इतनी छोटी कैसे हो गई, फिर से ? शायद, माँ के ही डर से इस तरह धीरे-धीरे बोलती हो ?

ताजमनी उठ खड़ी हुई। जितेन्द्रनाथ ने हाथ पकड़ लिया—एक श्यामा-कीर्तन का पद गुनगुना जाओ। मैं भूल गया हूँ। वह···

ताजमनी मुस्कराने लगी। कहने पर भी कोई कीर्तन न गाये, यह कैसे सम्भव है ?—

—कौन सा ! पगला-पगलीवाला ?

—हाँ-हाँ !

ताजमनी गुनगुनाने लगी—मधुर-मन्द स्वर में :

पगली माँ केर कोन भरोसा ?
खनहि मैया राजी-ई-ई खुशी-ई,
राशि-राशि हाँसि हँसे-ए ;
खनहि मैया तिरिख नयनी-ई-ई के सँभारे माय केर गोसा··· ?

जितेन्द्रनाथ की माँ मालदह जिले की कन्या थी। बंगला श्यामा-संगीत को मैथिली में रूपान्तर करके, स्वयं सुर देकर गाती थी। बचपन से ही वह अपने पिता के साथ श्यामा-संगीत गाती।...जितेन्द्रनाथ के पिता शक्ति के उपासक और प्रसिद्ध तान्त्रिक माने जाते थे। काली पूजा के समय, उनसे सभी डरते। हमेशा आँखों में अड़हुल फूल खिले रहते। कारन[1] और प्रसाद[2] की अतिरिक्त मात्रा को जितेन्द्र की माँ कम नहीं कर सकती थी। बहुत सोच-विचार कर उसने श्यामा-कीर्तन की तैयारी की। संकीर्तन सुन कर साधक का तपा हुआ मन शान्त होता है।...घोर अन्धकार में, काली-बाड़ी की अँगनाई में एक दीपक जल रहा है! प्रतिमा के सामने बैठे हैं शिवेन्द्र मिश्र और बरामदे पर बैठी वह कीर्तन गाती—अकेली!

जितेन्द्र की माँ ने अपने मैके से एक जोड़ी खोल और नरहरि खोलावाहा को मँगाया था!...

अपने तँ पगली मैया, बरहु पागल जुटऽल
पगला-पगली केर पागल संतान
मन भुलावल रे-ए-ए-हे...

जितेन्द्र सब कुछ भूल जाय, खोल का ताल कैसे भूल सकता है? बूढ़े नरहरि पाइन ने कहा था, बेजोड़ खोलवाहा होगा तू बाबा! तेरी उँगलियों पर माँ स्वयं बैठ जाती है!...ताजमनी की गुनगुनाहट के साथ-साथ खोल और मंदिरा की ध्वनि जितेन्द्र के मन में गूंजने लगी—पगली माँ केर कोन भरोसा? एक-दो, तीन-चार! धिन्-ते, इत्-था—धिन्-ते, इत्-था...पगला पगली केर पागल संतान भुलावल रे-ए-ए-हे...धिन-खेरे खेरे, ताँग-खेरे-खेरे—धिन-खेरे-खेरे—ताँग-खेरे-खेरे-ताँग-थित् धिन्नक!...किन्नक-किन-काँ, टिन्नक-टिनाँ—खोल और मंदिरा, ताजमनी और जित्तन, माँ

---

1. माँ काली को उत्सर्ग की हुई शराब।
2. माँ काली को चढ़ाया हुआ मांस।

श्यामा और श्यामा-संगीत ! जित्तन कहीं खो गया—रेहल पर मोटी बही लेकर बैठी हुई माँ ताजमनी को संकीर्तन सिखा रही है । पास में बैठा नरहरि-पाइन जित्तन को ताल पकड़ाता है, एक-दुई-तीन-चार-धिन्-ते, इत्-था !

ताजमनी न जाने कब चली गई अन्दर, उसे अकेला छोड़कर !···नहीं, वह आज ताजू को अपने पास बैठा कर रखेगा । ताजू जब होती है सामने, बड़ा निडर हो जाता है, वह । इधर कई दिनों से वह अशान्त रहा है—खन्तर गुलाबछड़ीवाला, ननकू नट, बकला ! साँप बिच्छुओं से भरी हाँड़ी ! गाँव का एक प्राणी भी नहीं जी सकता । कैसे जीयेगा, इस दुनिया में कोई ?

जितेन्द्र ने पुलीस के बड़े अधिकारियों को सूचना दी है । मुन्शी दरबारी-लाल दास को उसने सदर भेज दिया है कुछ दिनों के लिए ।··· वह उसका मुँह नहीं देखना चाहता । नर पिशाच !!

—मैं पूछती हूँ कि बेचारे मुन्शीजी को क्यों बनवास दिया गया है ? इतने दिनों के बाद पूजा हो रही है और बेचारा पूर्णियाँ में बेकार बैठा है । ताजमनी लौट आई ।

—किसने कहा बेकार बैठा है ? काम कर रहा है ।···तुम बैठोगी नहीं, थोड़ी देर ?

—बैठने से काम नहीं चलेगा । आप भी दया करके टहलने जाइए ।

—ताजू ! मुझे माँ की याद सदा आती है, आजकल ।

—आयगी, आयगी माँ ! अभी से इतनी उतावली क्यों···?

गाँववालों ने देखा—युगों के बाद कालीपूजा तो हो रही है । लेकिन, रात का कोई प्रोग्राम नहीं । ऐसा तो कभी नहीं हुआ । मुसम्भात के जमाने में तो सतरंगे झाड़-फानूस टँगते थे । दल-के-दल नाचवाले आकर पाँच दिन पहले से ही मुजरा करते थे । जात्रा, नाटक या संकीर्तन कुछ भी नहीं ?

तब, क्या पूजा ? लोग माँ काली की प्रतिमा को देख कर लौटते, मायूस होकर—बड़ा फीका-फीका लगता है !

रात में, घड़ी देख कर—ठीक आठ बजे ताजमनी ने माँ को पुकारा, गुन-गुना कर—माँ गो-ओ-ओ ! सुनु माँ-आ-आँ !!

जितेन्द्रनाथ की गोद में—पास पड़ा खोल किसी ने उठा कर रख दिया, मानो ! ताजमनी ने झुककर माँ के चरणों से एक फूल उठा लिया। सिर, आँख और गले से छुलाया। खोल और खोल बजानेवाले को नमस्कार किया। फिर :

हेरि हरऽमनऽमोहिनी, शिशिर शेखरऽनन्दिनीईई
काली कालभवऽवारिनी-ई ई-ई···
ता-रे-ना-रे-तिट्टा-तिन्ना धिन खेरि-खेरि···!

श्यामा संकीर्तन की पहली कड़ी को जब ताजमनी ने तन्मयता से दुहराया तो गाँव का एक-एक प्राणी रोमांचित हो उठा। ···रघ्घू रामायनी की गीत—कथा और सारंगी सुनकर भी जिन लोगों की चमड़ी पर कुछ असर नहीं हुआ था—वे भी आज दौड़ रहे हैं। मकबूल, जयदेव सिंह, रामनिहोरा और डी० डी० टी० आपस में बातें करते हुए जा रहे हैं—ताजमनी ही गा रही है ! है न ?

—याद है, मकबूल ? उस बार तुमने भाषण दिया था !

—और, तुमने स्टेशन के लड़कों से लड़ाई की थी !

—दीनदयाल ? तुम तो श्यामा-संकीर्तन दल के सदस्य थे ?

घर-घर से स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े आ रहे हैं।···सामबत्ती पीसी गला भाँज रही है—तुम लोग क्या जानोगी ? दूसरे गाँव की बेटी हो ! उत्तरवाले बरंडा पर हमेशा सोलकन्ह टोली की औरतें बैठती थीं। दक्खिनवाले बरंडा पर जाओ। हल्ला-गुल्ला मत करो !

सामबत्ती पीसी को जवानी के दिनों की याद आई है ! फेकनी की मार,

आज शान्त है। समझा कर कहती है,—आकि देखो ! हाथ जोड़कर निहोरा करती हूँ। जरा सुनने दो। बहुत दिन के बाद महाबारनी लगी है।

केवट टोली का गोवरधन, श्यामा-संकीर्तन दल में मंदिरा बजाता था। आज वह चुपचाप खड़ा देखेगा, भला ? दौड़ कर घर से मंदिरा की जोड़ी ले आता है। खोल के ताल पर मंदिरा बजाता और नाचता मन्दिर के अन्दर चला जाता है। देखते-देखते डी० डी० टी० को छोड़ कर सभी पुराने कीर्तनियाँ, सब भेद-भाव भूलकर कीर्तन में सम्मिलित हो गए।···ताजमनी आज दम नहीं लेगी क्या ? आगमनी के बाद रूपवर्णन गा रही है :

जनि उलंग रहवि भवानी-ई-ई-ई
वसन पहिरू वसन पहिरू
मेघवरन धारऽन करू—ओ-गो-मुण्डमाली-ई-ई !

कोसी कैम्प में लेटी इरावती अब बेचैन हो गई। कीर्तन के सुर में उसका मन बँध गया। मामी को जगा कर बोली—गाँव में कोई उत्सव हो रहा है। चलो मामी देख आयें !

विशाल जनसमूह में लहरें आती हैं रह-रह कर !···लो, पगला-पगलीवाला पद शुरू किया ! लोगों के सिर ताल पर स्वयं हिलने लगे। पगला-पगली ! भोला-काली !!

इरावती रोमांचित हुई—जितेन्द्र ने, पहाड़ी नदी कोनार की कलकलाती हुई धारा को संबोधित कर गाया था—खनहि मैया राजी-खुशी, राशि-राशि हाँसि हँसे—खनहि मैया तिरिख नयनी···! राशि-राशि हँसी रह-रह कर बिखर जाती है, भीड़ में !

···पगला-पगली को पागल संतान, मन भुलावल-रे-हे-!

और विहाग के परस से पावन विदा गीत गाते समय, ताजमनी की आँखों से आँसू की धारा झरने लगी :

सुनऽसुनऽनगरवासी-ई-ई उमाशशि मोर उदासी-ई-ई
भिखारिनी वेष साजी-जाय-रे-जाय रे-कहाँ जाय रे,
देख-देख, राज-राजे-ए-एश्वरी-आज कहाँ जाय रे···!

राज-राजेश्वरी की भिखारिनी मूरत उपस्थित कर दी ताजमनी ने !

पगला-पगली ने मिलकर मन को भुला लिया !···लोग आँखें पोंछते हुए घर लौटे।

इरावती अपने कलेजे पर भारी पत्थर का टुकड़ा लाद कर लौटी ! जितेन्द्र की याद को इसी तरह दबा कर रखती है वह।

हजार पौधों में अँखुए लगे हैं। लग गये पौधे !

जितेन्द्रनाथ प्रसन्न है—ताजू ! गोविंदो !···मुन्शीजी ! सुरपति बाबू ! मैं गिन कर आ रहा हूँ—हजार पेड़ जम गए ! छोटी बात समझते हैं, लोग। अरे, इस परती पर पौधे लग गये, यह छोटी बात है ?

भिम्मल मामा आए—हेक्सागन प्लस पेंटागन ? ···तुम्हारा नन्दन-कानन कोंपलित हुआ है ? घबराओ नहीं। आ रही है—वन-टु-तीन-चार—देख लेना। काल वैशाखी की कृपा होगी। तुम्हारे सभी पौधे बगैर पानी के तड़फ-तड़फ कर दम तोड़ेंगे !

ताजमनी आकर बोली—श्राप क्यों दे रहे हैं, मामा ?

न जाने क्यों, भिम्मल मामा का मुँह सूख गया···उसने श्राप कहाँ दिया है ? क्या उसने श्राप दिया है ? नहीं-नहीं।

जितेन्द्रनाथ ने कहा—ठीक कहते हैं, भिम्मल मामा ! मुझे अभी इतना उत्साहित नहीं होना चाहिये। सिंचाई की क्या व्यवस्था होगी !

जितेन्द्रनाथ ने मुंशी जलधारी लाल को बुलाया—कम-से-कम एक सौ ट्यूबवेल खरीदने होंगे। रुपये का प्रबन्ध कीजिये !

मुंशीजी ने गर्दन झुका कर कहा—हुजुर! तहवील में तो अब कुछ नहीं है। कर्ज भी आजकल लोग नहीं देंगे।

—क्यों? तहवील में नहीं है तो जूट पर अग्रिम रुपया लीजिए महाजनों से।

—मुझे कौन देगा?

—तो, मुझे कौन पहचानता है?···मुन्शीजी, मैं कुछ नहीं जानता। मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। प्रबन्ध कीजिये, चाहे जहाँ से हो।

ताजमनी बोली—चाहे जहाँ से हो? क्या डकैती करके ले आयेंगे मुन्शीजी? यहाँ, जमींदारी खत्म हो गई लेकिन जमींदारी शान बढ़ती जा रही है! दो सौ बीघे धान और डेढ़ सौ बीघे पाट की खेती करनेवाला हवाई-जहाज से सफर करेगा, महीने में पाँच सौ रुपये की किताब, तस्वीर और अखबार मँगावेगा! दान करेगा, बाग लगायेगा!

मुंशी जलधारीलाल मुँह लटकाये, वापस हुआ। ताजमनी हवेली के अन्दर गई और जितेन्द्रनाथ की आँखें छलछला आईं—ताजमनी ने ठीक कहा है! भिम्मल मामा ने ठीक कहा।···लगे हुए पेड़, पानी के बिना सूख जायेंगे? तहवील में कुछ नहीं? यह क्या हुआ?

रात को गोविन्दो रसोईघर में थाली लौटा कर ले गया—ताजनदि! फिन दादा बाबू को क्या हो गिया? बोलते हैं, दूध-डीम-घी कुछ नहीं। आलू का भर्ता और भात खाकर कैसे रहेंगे दादा बाबू?

—परोसी हुई थाली इस तरह लौटा कर नहीं लाई जाती! ताजमनी नाराज हुई—तुमसे कितनी बार कहा! ताजमनी चली।

—क्यों, फलाहार करने की क्या बात हुई?

—नहीं, ताजू। मुझे मालूम नहीं था। मैंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। अब, रहन-सहन···।

—रहन-सहन ? दूध-घी छोड़ने से कुछ नहीं होगा। हर महीने शाह कम्पनी का तीन सौ रुपये का हिसाब भुगतान देना पड़ता है, उसको कम कीजिये ! न मालूम किसने आदत लगा दी ! कब से लगी···।

जितेंद्रनाथ ने अपनी अलमारी की ओर देखा, ताजमनी ने सब कुछ देख लिया है। किसने बताया कि तीन सौ रुपये प्रति मास शराब के लिए देना पड़ता है, शाह कम्पनी वालों को ? जितेन्द्र लज्जित हुआ !

—जिद्दा ! मैंने क्या भला-बुरा कह दिया जो खाना-पीना छोड़ रहे हैं ? लेकिन, मैं चुप नहीं रहूँगी।

—ताजू। मैं अब नहीं पीयूँगा···।

—इतना आसान नहीं है, जिद्दा ! ताजमनी मुस्कुराई—इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या जरूरत !

जितेन्द्रनाथ को ताजमनी ने बैठकर खिलाया—रुपये का प्रबन्ध हो जायगा। कोई चीज छोड़ने की जरूरत नहीं। जमींदार का बेटा शराब नहीं पीयेगा भला ?

—रुपये का प्रबन्ध हो जायगा ? कैसे ? कहाँ से ?

—घबराइए मत ! ताजमनी ने एकटक जितेन्द्रनाथ की ओर देख कर कहा—मालकिन माँ सब प्रबन्ध कर गई हैं। वह चाहती थीं, उनका बेटा शराब पीये, जुआ खेले, बेकाम के काम में रुपया उड़ाये। उनका सपना पूरा हुआ है !

ताजमनी को याद आई, मालकिन माँ की बात—ताजू ! मेरा बेटा फकीर की तरह झोली लेकर भीख माँगता फिरता है, मोटा खाता है, मोटा पहनता है ! इस खान्दान की इज्जत उसने मिट्टी में मिला दी। जमीन्दार का बेटा भला ऐसा होगा ?

—ताजू ! तुम विश्वास करो। मैंने पिछले कुछ वर्षों से ही पीना शुरू किया है।···

—इतना छोटा क्यों करते हैं अपने को ?

आधीरात को, ताजमनी ने जितेन्द्रनाथ को आकर जगाया—जिद्दा !
जितेन्द्रनाथ ने ताजमनी को अपने पलंग पर बैठाना चाहा। किन्तु, ताजमनी ने अपना हाथ भी नहीं स्पर्श करने दिया। बोली—अन्दर चलिये !
जितेन्द्रनाथ, हवेली के अन्दर गए। ताजमनी ने भण्डार-घर के पास जाकर लालटेन की रोशनी तेज की।···ताजमनी कौन होती है रोकनेवाली ? मालकिन माँ जो चाहती थीं। वही होगा !
ताजमनी ने हाथ के इशारे से दिखला कर कहा—उसी मूर्ति के नीचे है !
—क्या ?
–आपकी माँ ने कहा था, जिस दिन मेरा बेटा राह पर आवे, उसी दिन···!

गोरस के व्यापार से मेरी आत्मीयता बढ़ती गई !
अब तो कलकत्ता, पटना, दार्जिलिंग के व्यापारियों के हाथ मक्खन, पनीर, क्रीम और घी बेचने के बदले—दही की मटकी लेकर गाँव-गाँव घूमना चाहती हूँ मैं—राधा की तरह ! गोकुल की ग्वालिनियों की तरह : दधि ले ले ! दधि ले ले !!
गोशाले में एक बीमार बछड़े को दवा पिला रही थी कि नये अर्दली ने आकर सलाम किया। हाथ में एक पुर्जा देकर मुँह देखने लगा। मम्मी का पुर्जा : मिसरा'ज कम विथ प्रेजेन्ट्स। आइ थिंक वी मस्ट रिफ्यूज···! मैंने बिना कुछ भूत-भविष्य सोचे, अर्दली से कहा : मिसराबाबू को कोठी पर माँगता छोटा मेम। अब्बी !

मछली, महीन सुगन्धित चावल, पके केले, नारियल, मिसरीकन्द, शहद, ऊख, मिठाई और कीमती रेशमी साड़ी! मिसरा ने कहा—पहला बेटा हुआ है। आज उसकी छट्ठी है। मेरी स्त्री आपसे बहिनापा जोड़ना चाहती है।...दैट इज गॉड सिस्टर, मिन्स—फ्रेंड!

इस पुरुष को देखते ही मुझे कुछ हो जाता है। मेरी आँखों को वह सही-सही पढ़ लेता है। भगवान को धन्यवाद!

कचहरी-बँगले से मम्मी आई और घोर प्रतिवाद करने लगी!

हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं...! उस पुरुषसिंह ने फुर्ती से झुककर मम्मी की चरणधूलि ले ली। बड़ी विनम्रता से उसने समझाया : माइ वाइफ हैज मेड योर डॉटर हर बहिनापा—दैट इज गॉड-सिस्टर, मिन्स-फ्रेंड! फ्रॉम टु डे यु आर माइ मदर-इन-लॉ!

मम्मी हतबुद्धि होकर मुझे देखने लगी और मैं उस लीलाधर की लीला देखकर मन-ही-मन मुस्कुरा रही थी।

स्वीकार अथवा अस्वीकार का मौका वह नहीं देता। चँगेरी से एक डिबिया निकाल कर खोलते हुए बोला : एण्ड, दिस इज फॉर मदर-इन लॉ। इसको कृपा कर स्वीकार करें। अपनी गॉड-डॉटर और गॉड-ग्रेण्डसन को ब्लेसिंग दें।...यु मे कर्स मी!

रत्नजटित मुँदरी?—इस आदमी को क्या कहिये!

—एण्ड गिव मी चान्स टु सर्व यू!

मेरी अच्छी मम्मी मुस्कुराई! भगवान, मम्मी मुस्कुराई? मुस्कुराहट को खोलते हुए मम्मी बोली—सी द फन! आई डनो हट हि वान्टस?

मिसरा ने कहा—आपकी जमींदारी कचहरी के सभी कारकून निकम्मे ही नहीं—चोर और बेईमान हैं। चार महीने बीत रहे हैं, अभी तक स्टेटमेण्ट, कागज बुझारत नहीं दे सके हैं? मैं सिर्फ दस दिन में इनसे कागज बुझारत लेकर, दो महीने के अन्दर बकाया सहित हाल का खजाना वसूल

सकता हूँ।···आइ से !

लगातार डेढ़ घण्टे तक अपनी अँग्रेजी में बातें करके उसने मम्मी को इस तरह मोह लिया कि···हीरू दरवान के शब्दों में—अन्धेर हो गया ! ब्लैकमैन को कुर्सी पर आमने-सामने बैठाकर बड़ा और छोटा मेम ने चाय पिलाया ? पुतली को दूसरे किस्म का अचरज हुआ—ब्राह्मण होकर अंग्रेज के किस्तान बावर्ची के हाथ का छुआ हुआ खाया ?

मम्मी मुझे एकान्त में ले गई : वह जमींदारी की मैनेजरी अथवा कण्ट्राक्ट चाहता है। आदमी तो काम का मालूम होता है। अपनी कचहरी के सभी अमले इसको देखते ही बदहवास हो गये।···रीयली ! तुम क्या कहती हो ? मैं मन-ही-मन भगवान को धन्यवाद दे रही थी : मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। मैंने पहले ही कहा था, आदमी अद्वितीय है।

—आइ डन्नो ह्वाइ दे से सो मच !···जो भी हो, हमें हर हालत में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखनी है। मम्मी कुछ सोचने लगी।

एस० मिसरा···नहीं, पण्डित शिवेन्द्रमिश्र उसी दिन से हमारी जमींदारी का जेनरल मैनेजर हो गया। वह अपनी जमींदारी सँभालने के साथ-ही-साथ हमारे इस्टेट का भी काम देखेगा। एकरारनामे पर दस्तखत करने के बाद उसने मुस्कुरा कर मेरी ओर निगाह उठाई : आइ हैव हर्ड दैट यु वांट टु लर्न हिन्दी !···और रामायण पढ़ना चाहती हैं आप ? मैं बिग संस्कृत पण्डित हूँ, दैट इज शास्त्री !

बातों ही बातों में उसने मुझे शिष्या बना लिया।···छलिया !

जब कालिदास के ग्रन्थों पर बातें होने लगीं तो मम्मी किसी काम से कमरे के बाहर चली गई।

उसने कहा : इट इज सो स्वीट दैट वन्स यु रीड कालिदास—यु विल फॉरगेट एवरीथिंग यु हैव रेड !

—मैं पहले ही सब कुछ भूल चुकी हूँ···माइ मास्टर ! मैं अपने मन को

काबू में नहीं रख सकी। अब उसकी आँखों में मदिरा ही मदिरा थी : आइ हैव सोल्ड माइसेल्फ… । •

मैं कहना चाहती थी, नहीं, नहीं ! ऐसा मत कहो। मैं तुम्हारे हाथ बेमोल बिक चुकी हूँ।

मम्मी आ गई। अपने बाग के पके मैंगोस्टीन की एक टोकरी ले आई, पुतली !

मम्मी मुस्कुरा कर बोली—फॉर माइ गॉड-डॉटर। …दूध में इसका रस मिलाकर पीने दीजियेगा।…सोमवार से आप अपने काम पर आ रहे हैं ?

—नमस्कार !

…नमस्कार ! माइ मास्टर !! रेस्टलेसली आइ'ल वेट फॉर यू !

जादू ? ब्लैक मैजिक ??

जादू नहीं तो और क्या कहा जाय ? मिश्रा ने मम्मी को इतना प्रभावित किया है कि उठते-बैठते मम्मी प्रशंसा करती है : नाइस फेलो ! एक ही सप्ताह में जमींदारी कचहरी का दफ्तर सुचारुरूप से चलने लगा है। इलाके के जेठरैयतों के नाम परवाने जारी किये गये हैं !

अब हीरू दरबान अपना विरोध नहीं प्रकट करता। कभी-कभी वह छुट्टी लेने की बात अवश्य करता है। पुतली बहुत चालाक है। मुझे गोशाले के एकान्त में समझा कर सलाह दी, उसने—यदि गोशाले की व्यवस्था भी मैनेजर साहब अपने हाथ में ले लें…।

पुतली मेरे मन की बात बोली !

उसी शाम को हिन्दी पढ़ते समय, बात को पेश करने की भूमिका मैंने बाँधी—मिश्रजी ! मुझे अपनी स्मरण-शक्ति पर अब जरा भी भरोसा नहीं। देखिये न, एक शब्द भी याद नहीं। परतीच्छा और परीच्छा के अर्थ में…।

बर्खास्त कर दिये गये। हीरू खुद भाग गया। एक महीना बीतते-बीतते—पुतली और बूढ़ा माली उत्तिमलाल को छोड़ कर सभी कर्मचारी और नौकर-चाकर चले गये। मिश्रा कहता : ऑल आफ देम—लॉट ऑफ देम—ए बण्डल ऑफ थिम्स ! दूसरे जमींदारों के यहाँ से चोरी और बेईमानी करके भागे हुए लोग !

मिश्रा द्वारा नियुक्त किये हुए लोगों के बारे में मम्मी ने कहा : ये काम के सिवा और कुछ जानते ही नहीं, मानो।

मैं सुनती और हँसती !···ऐसे मादक दिनों की स्मृति ही मेरा सम्बल है। मन में एक मखमली डिबिया खोल कर देखती हूँ—जीवन-ज्योति मिलती है। जीने लगती हूँ !

[इसके बाद के पाँच पृष्ठों को सुरपति ने सम्पादन करके अलग रख दिया है !]

अपने कलम बाग में, मिश्रा से आमों की किस्म, जाति और विशेषता की जानकारी हासिल कर रही थी : लँगड़ा, आमों का राजा ! कृष्णभोग, बादशाह पसन्द, बेगम··· ।

बाग के माली ने आकर सूचना दी : फाटक पर एक अंग्रेज बहादुर खड़ा है।

मिश्रा ने मेरी ओर देखा। मैं बोली : साहब को कोठी दिखायगा !

—नहीं मेमरानी, वह आपको देखने माँगता है।

मिश्रा ने कहा, जाओ, देखो-कौन है !

जाकर देखा, जिसका भय था—वही ट्राली··· ।

—गुड इवनिंग मिसिस रोजउड। दुष्ट हँसी हँसता हुआ आकर मिला—आर यु नॉट वेटिंग फॉर योर हेड-ब्याय ?

बन्दूक को उसने कन्धे पर रखकर, मिश्रा को देखा। फिर बोला : लास्ट सटर्डे दि प्लाण्टर्स वाज फुल ऑफ योर स्कैण्डल स्टोरीज। फ्रॉम कंट्री टु मलाया !···मैं देखता हूँ, कहानियाँ झूठी नहीं ! शेम···।

मिश्रा आकर ठीक मेरी देह से सटकर खड़ा हो गया। बार्कर की बोली मुँह में अटकी रही। उसके चेहरे पर एक तिलमिलाहट दौड़ गई। मिश्रा ने कुछ क्षण बार्कर की ओर देखा। फिर, बिना किसी झिझक के उसके हाथ से बन्दूक ले ली : नाउ, कन्टिन्यु योर स्टोरी। आइ नो, यु आर मिस्टर बार्कर। सो, बेटर बार्क !

गुस्से से बार्कर के केनाइन टुथ ओठ की दोनों कोर पर निकल आए। कुछ सेकेण्डस वह कठाया खड़ा रहा। फिर, एक भद्दी गाली का भद्दा उच्चारण कर मिश्रा पर टूटा—स्वा···।

—तड़ाक ! गाली पूरी होने के पहले ही मिश्रा ने तमाचा जड़ते हुए कहा : गूड़ का दारू बड़ा तेज होता है।···लेकिन, इससे गर्मी थोड़ी शान्त होगी। आइथिंक !

—मि-श्रा-जी-ई ! आतंकिता मैं चीख पड़ी। बार्कर अपने पतलून की जेब में हाथ डाल रहा था।

—हा-हा-हा-हा !! मिश्रा के ठहाके से पास का बाँसवन प्रतिध्वनित हुआ। मैं जानता हूँ। खाली पाकेट में हाथ डालकर मत डराओ मिस्टर बार्कर ! पिछले सप्ताह ही तुमने अपनी पिस्तौल भाड़े पर भेज दी है—डकैती करने। जो आज तक वापस नहीं आई।···आइ नो मिस्टर बार्कर, देर इज नो योर रिवाल्वर !

बार्कर के चेहरे पर अचानक राख पुत गई !

न जाने किस समय मिश्रा ने मेरा हाथ थाम लिया था। मेरी कलाइयों को जरा-सा झटकते हुए बोला : गीता ! साहब को कोठी में ले जाओ। हि नीड्स रेस्ट···आराम चाहिये।

···आराम करने आए हैं साहब बहादुर !

वार्कर खाली हाथ टूटा !

मिश्रा ने फुर्ती से वार्कर के उठे हाथ को बाँह के पास थाम लिया और भगवान जाने क्या कर दिया कि वार्कर का हाथ ऊपर ही उठा रह गया। ···दिस इज कॉल्ड ऊर्ध्वबाहु गिरह !

उठा हुआ दाहिना हाथ, बँधी हुई मुट्ठी। उसकी चेष्टाओं को देखकर लगा—वह किसी अदृश्य शक्ति से लड़ रहा है। ऊपर की ओर उठा हुआ हाथ टस-से-मस नहीं होता। ···उसके पाँव लड़खड़ा रहे हैं। किन्तु, बँधी हुई मुट्ठी हवा में भाँजने की कोशिश कर रहा है।

दो मिनट के अन्दर ही, चारों ओर से—पाट के खेतों से, बाँसवन से, कलमबाग और बीजूबाग से—बीसों आदमी हाथ में लट्ट, बल्लम-भाले लेकर दौड़े आए। मिश्रा ने धीरे से कहा : घबराओ नहीं ! सभी अपने ही लोग हैं—तुम्हारे चरवाहे, सिपाही, दरवान, कारकून !

—मिस्टर वार्कर ! रेल रोड छोड़कर, देहात की कच्ची सड़कों पर निकलने से ऐसा ही होता है ! मिश्रा ने वार्कर के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। वार्कर का हाथ हठात् गिर गया : सिगनल डाउन !···नाउ दिस इज योर वाकिंग मुद्रा गिरह ! इजन्ट ?

मिश्रा के इस लड़कपन से मैं नाराज हुई।···क्या आवश्यकता है ?

वार्कर का हाथ तो गिर पड़ा किन्तु, मुँह खुल गया। खुले हुए जबड़े, मैले गन्दे दाँत-पीले।

मैं थर-थर काँपने लगी : मि-श्रा-जी !

मिश्रा ने वार्कर के हाथ में बन्दूक वापस दे दी। और, वार्कर की गर्दन के पीछे चमड़ी पर चुटकियों से कुछ किया। लीवर वाले केस की तरह वार्कर का मुँह लप्प से बन्द हो गया ! ···दिस इज काल्ड जुजुत्सु। जापानी कला !

बन्दूक को उसने कन्धे पर रखकर, मिश्रा को देखा। फिर बोला : लास्ट सटर्डे दि प्लाण्टर्स वाज फुल ऑफ योर स्कैण्डल स्टोरीज। फ्रॉम कंट्री टु मलाया !···मैं देखता हूँ, कहानियाँ झूठी नहीं ! शेम···।

मिश्रा आकर ठीक मेरी देह से सटकर खड़ा हो गया। बार्कर की बोली मुँह में अटकी रही। उसके चेहरे पर एक तिलमिलाहट दौड़ गई। मिश्रा ने कुछ क्षण बार्कर की ओर देखा। फिर, बिना किसी झिझक के उसके हाथ से बन्दूक ले ली : नाउ, कन्टिन्यु योर स्टोरी। आइ नो, यु आर मिस्टर बार्कर। सो, बेटर बार्क !

गुस्से से बार्कर के केनाइन टुथ ओठ की दोनों कोर पर निकल आए। कुछ सेकेण्डस वह कठाया खड़ा रहा। फिर, एक भद्दी गाली का भद्दा उच्चारण कर मिश्रा पर टूटा—स्वा···।

—तड़ाक ! गाली पूरी होने के पहले ही मिश्रा ने तमाचा जड़ते हुए कहा : गूड़ का दारू बड़ा तेज होता है।···लेकिन, इससे गर्मी थोड़ी शान्त होगी। आइथिंक !

—मि-श्रा-जी-ई ! आतंकिता मैं चीख पड़ी। बार्कर अपने पतलून की जेब में हाथ डाल रहा था।

—हा-हा-हा-हा !! मिश्रा के ठहाके से पास का बाँसवन प्रतिध्वनित हुआ। मैं जानता हूँ। खाली पाकेट में हाथ डालकर मत डराओ मिस्टर बार्कर ! पिछले सप्ताह ही तुमने अपनी पिस्तौल भाड़े पर भेज दी है—डकैती करने। जो आज तक वापस नहीं आई।···आइ नो मिस्टर बार्कर, देयर इज नो योर रिवाल्वर !

बार्कर के चेहरे पर अचानक राख पुत गई !

न जाने किस समय मिश्रा ने मेरा हाथ थाम लिया था। मेरी तलहथी को जरा-सा झटकते हुए बोला : गीता ! साहब को कोठी में ले जाओ। हि नीड्स रेस्ट···आराम चाहिये।

···आराम करने आए हैं साहब बहादुर !

बार्कर खाली हाथ टूटा !

मिश्रा ने फुर्ती से बार्कर के उठे हाथ को बाँह के पास थाम लिया और भगवान जाने क्या कर दिया कि बार्कर का हाथ ऊपर ही उठा रह गया। ···दिस इज कॉल्ड ऊर्ध्वबाहु गिरह !

उठा हुआ दाहिना हाथ, बँधी हुई मुट्ठी। उसकी चेष्टाओं को देखकर लगा—वह किसी अदृश्य शक्ति से लड़ रहा है। ऊपर की ओर उठा हुआ हाथ टस-से-मस नहीं होता। ···उसके पाँव लड़खड़ा रहे हैं। किन्तु, बँधी हुई मुट्ठी हवा में भाँजने की कोशिश कर रहा है।

दो मिनट के अन्दर ही, चारों ओर से—पाट के खेतों से, बाँसवन से, कलमबाग और बीजूबाग से—बीसों आदमी हाथ में लट्ठ, बल्लम-भाले लेकर दौड़े आए। मिश्रा ने धीरे से कहा : घबराओ नहीं ! सभी अपने ही लोग हैं—तुम्हारे चरवाहे, सिपाही, दरबान, कारकून !

—मिस्टर बार्कर ! रेल रोड छोड़कर, देहात की कच्ची सड़कों पर निकलने से ऐसा ही होता है ! मिश्रा ने बार्कर के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। बार्कर का हाथ हठात् गिर गया : सिगनल डाउन !···नाउ दिस इज योर बार्किंग मुद्रा गिरह ! इजन्ट ?

मिश्रा के इस लड़कपन से मैं नाराज हुई।···क्या आवश्यकता है ?

बार्कर का हाथ तो गिर पड़ा किन्तु, मुँह खुल गया। खुले हुए जबड़े, मैले गन्दे दाँत-पीले।

मैं थर-थर काँपने लगी : मि-श्रा-जी !

मिश्रा ने बार्कर के हाथ में बन्दूक वापस दे दी। और, बार्कर की गर्दन के पीछे चमड़ी पर चुटकियों से कुछ किया। लीवर वाले केस की तरह बार्कर का मुँह खप्प से बन्द हो गया ! ···दिस इज काल्ड जुजुत्सु। जापानी कला !

परती : परिकथा—३५०

वार्कर के हाथ में बन्दूक ? भगवान ! यह क्या हो गया ?

वार्कर ने बन्दूक की सेफ्टी की परीक्षा की। …उसका इरादा खौफनाक मालूम होता है। उसने भूखे भेड़िये की तरह गुर्रा कर मेरी ओर देखा। उसने मेरी सूरत पर थूकने की मुद्रा बनाई। वह कोई भद्दी-सी गाली थूकना चाहता था।

विदा-भाषण का कोई शब्द उसके मुँह से नहीं निकला। उसने उलट कर पगडण्डी पकड़ी। बीस-पच्चीस कदम, मानों गिनता हुआ वह चला। और अचानक मुड़ कर खड़ा हो गया।

मिश्रा ने हँस कर कहा : सी दैट कावर्ड फेलो ! …अब वह हम पर चार्ज करेगा !

—विल ही-ई-ई ? मैं चीख पड़ी। लाठी-भाले वाले दौड़े तो मिश्रा ने हाथ उठा कर रोक दिया !—घबराओ मत, चुपचाप देखो !

वार्कर ने कारतूस-चेम्बर की परीक्षा की…भरी हुई बन्दूक ! निशाना लेने के पहले फिर भद्दी मुद्रा बनाई। पागलों की तरह चिल्लाकर बोला—यु बिच। दैट्स ह्वट यु आर। फर्स्ट ऑफ ऑल यु…।

मिश्रा ने पलक मारते ही मुझे ढँक लिया। मैं उसकी पीठ पर लद गई। उसने मुझे केहुनी से झटका देकर कहा : सी द फन, डरो मत। वार्कर ने निशाना लिया !…लेट जाओ माइ मास्टर !

वार्कर को बन्दूक की परीक्षा की आवश्यकता हुई। उसने जब दूसरी बार निशाना लिया तो, मैं मिश्रा से लिपट गई—ओ-म-म-। धाँय-धाँय !!… बन्दूक की आवाज ? नहीं, मिश्रा ठहाके लगाकर हँस रहा है : जरा एक बार फिर बन्दूक की परीक्षा कर लो मिस्टर वार्कर ! हा-हा-हा !…ट्रिगर का नॉजल ही टूटा हुआ है।…चलाओ नहीं तो, नाउ इट इज माइ टर्न ! सँभालो !

झोली से लोहे के गोले जैसा एक काला कच्चा आम निकाल कर मिश्रा ने

दिखलाया ।

मैं बोली : मिश्राजी जी-ई । डोण्ट !

हल्की झिड़की मिली मुझे : अपनी वन्दूक लाकर मिस्टर वार्कर के हाथ में क्यों नहीं देती? उसकी तो खराब हो गई···ट्रिगर टूटा हुआ है । गोली दगती ही नहीं । और सुनो ! जब मैं एक्शन में रहूँ तो, मुझे टोक-टाक मत किया करो ।···ह्वेन आइ एम इन एक्शन, आइ एम नो मैन !

वार्कर ने वन्दूक की परीक्षा करते हुए एक वार इधर-उधर देखा । फिर, अचानक सिर पर पैर लेकर भागा—पाट के खेतों की ओर ।

—हा-हा-हा । ट्राली साहव··· । वार्कर के पीछे लाठी वाले दौड़े । मिश्रा ने हँसकर रोका : हुलहुला दो । लोग समझेंगे गीदड़ भागा है ।

सभी पुकारने लगे : उय-उय-तू-तू । हो-हो-हो । भागा-भागा !!

मिश्रा को मुद्रा वदलने में देरी नहीं लगती । मुँह गम्भीर करके वोला : गीत, तुम अपनी कोठी में जाओ!

—आप नहीं चल रहे ?

—नहीं, मुझे अभी ही परानपुर जाना है ।···अपने देशवासी का अपमान करने वाले को मुलाजिम नहीं रखना चाहिये, तुम्हें ।

मिश्रा को मैंने, अपनी आँखों की राह—दिल का कोना कोना दिखलाया ! ···कितनी वार कहूँ, तुम मेरे मुलाजिम नहीं । मैं तुम्हारी चेरी हूँ ।

—अपना हेट-व्याय तो नहीं समझती ? मिश्रा ने वच्चों जैसी वात की ।

—मुझ पर विश्वास नहीं करते, भाईमास्टर ? मैं दुखी हुई ।

मिश्रा ने नाक पर उँगली डाली । सोचकर वोला : चलो ।

कोठी के पास ही मम्मी सिपाहियों के साथ आती मिली । पुतली सदने

आगे थी ! घबराई हुई मम्मी ने पूछा : ह्वट्स द मैट···?

—मिस्टर बार्कर 'ड कम टु किल अस !

—किल अस ? बट ह्वाइ ?

—मम्मी ! उसने मुझे भद्दी गालियाँ दीं : मम्मी से लिपट कर मैं रो पड़ी। आज मिश्रा···मिश्राजी नहीं होते तो वह मुझे मार डालता। नशे में धुत्त था वह।···

—डेडड्रंक हि वाज !

मम्मी गम्भीर होकर बोली : मिश्रा कहाँ था ?

—सुनो मम्मी ! दो-दो बार निशाना ले चुका था, वह तो ? किन्तु, मिश्र जी थे।···कोठी के अन्दर चलो मम्मी ! वह फिर लौट कर आ सकता है।

—इज इट ? मम्मी गुर्राई।

मिश्राजी ने कहा : नो-नो। हि वोन्ट।···आराम करो जाकर।

मम्मी ने मिश्राजी से कहा : थोड़ी देर के बाद आपको बुला भेजूँगी। आप अपनी कोठी में जाकर कपड़े बदल डालिये !

मैंने मिश्राजी की ओर देखा : आइएगा तो ?

मैं अब मिश्राजी कहना सीख गई हूँ !!

लुत्तो का दुख कौन समझे ! बचपन से ही उसे रात भर-आँख खोलकर-सपना देखने का रोग है। तीन बजे भोर तक उसे नींद नहीं आती। सुबह, आठ बजे तक सोता है। क्या करे लुत्तो ? वही जो, पाँच या सात

वर्ष की उम्र में एक रात को नींद उचटी, सो उचटी ही हुई है। माँ-बेटा रोते रहे थे दिन भर। बाप को खटोली पर सुला कर ले चले, गाँववाले। उससे कहा गया—आग दो अपने बापको। लुत्तो को याद है, वह चिल्ला उठा था—बप्पा जल जायेंगे।···

लगता है, कल की ही घटना है! रातमें उसकी माँ ने कहा था—तू नहीं खायगा तो तेरा बाप भी भूखा रहेगा। सोने के समय बाप की याद और भी जोर से आई थी। वह रोज अपने बाप के साथ सोता था। पीठ पर थपकी देते हुए उसका बाप शेखचिलिया की कहानी सुनाता। खाते समय घण्टों बैठा रहता था लुत्तो के लिए—बाबू! आओ दूध जुड़ा गया।···

जब तक लुत्तो का बाप जिन्दा रहा, खाने-पीने की चीजों से घर महँकता रहता! किस्म-किस्म की मिठाई, तरह-तरह के फल—जिसका नाम भी नहीं जानते गाँववाले। हवेली में, जितेन्द्रनाथ की माँ के लिए जो साड़ी आती, उससे बस एक आना कम कीमत की साड़ी लुत्तो की माँ पहनती। कभी-कभी लुत्तो का बाप जानबूझ कर पैंट और कमीज छोटा खरीद लाता, जितेन्द्र के लिए। जितेन्द्रकी माँ कहती—बड़ा होता तो किसी तरह काँट-छाँटकर ठीक भी कर लिया जाता। यह तो एकदम छोटा है। क्या होगा? ले जाओ, अपने बेटे के लिए! जितेन्द्र के लिए जितने किस्मके पुष्ई मेवे या फल आते, उसमें से चतुर्थांश तो खुद शिवेन्द्र मिश्र निकाल कर देते। लुत्तो का बाप कहता—मालिक कहते हैं बुद्धि और बल में मजबूत नहीं होगा बेटा तेरा तो, जित्तन को कौन सँभालेगा? ···हुँ मालिक! लुत्तो, एक भद्दी गाली देकर, बीड़ी सुलगाता—सँभालूँगा! देखते रहो बूढ़े। लुत्तो तुम्हारे बेटे को कैसा सँभालता है!···

सो, उस रात को लुत्तो ने सपने में देखा—उसका बाप थाली पर बैठा पुकार रहा है—बाबू! लुत्तो अपने बाप के साथ खाने बैठ गया। थालियों और कटोरों की ढेर! जब वह खाने लगा तो उसका बाप जानवर की तरह

गों-गों करने लगा। लुत्तो ने हँसकर कहा, बप्पा ! मुझे डराते हो ? उसका बाप फिर गों गों करने लगा तो लुत्तो ने अपनी माँ को पुकार कर कहा—देख मैया ! बप्पा बैल की तरह सींग हिलाकर गोंगाता है ! वह खिल-खिला कर हँस पड़ा। उसकी माँ बोली—बौवा ! हँसते हो ? लुत्तो उठकर बैठा। इधर-उधर देखा, फिर रोने लगा—अभी तो बप्पा आए थे…।

रोज रात में बस, एक ही सपना देखकर वह जग पड़ता—बाप आया है, उसका। कभी बाहर से पुकारता है, कभी घर में आकर।…लुत्तो की माँ ने लगातार एक महीना झाड़-फूँक करवाया। तब जाके कहीं वह सपना आना बन्द हुआ। सपने में उसका बाप नहीं आया कभी। उसको रात में नींद ही नहीं आती। सपना कहाँ से आवेगा ? जगकर जो कुछ देखता है, वह भी यदि सपना है तो लाखों सपने देखे हैं, लुत्तो ने। उसको हजार किस्म की बुद्धि दे जाता है, उसका बाप।… दगनी पकड़ते समय जल्दी-बाजी मत करना। नहीं तो, खुद दग जाओगे ! पीठ पर ढेरा की तरह दाग देना ×, हाँ इसी तरह ! ढेरा की तरह दाग। पाट की सुतली बाटने वाले ढेरे नाचते, लुत्तो की आँखों के आगे × × × × ×, अनेकों ! जितेन्द्र चीख रहा है—गों-गों-गों ! जलती हुई चमड़ी की गन्ध लुत्तो को लगती है।…

—धेत्तेरी नाक में। ए बिठैलीवाली ? बिठैलीवाली ?… बाह, तुम्हारी नाक तो आजकल जोगबनी जूट मिल के हुसील की तरह बोलती है !

लुत्तो की स्त्री कुनमुना कर करवट लेती है—हाँ-अ, बेबात की बात मत कहे कोई ! हाँ-अ, मेरी नाक नहीं बोलती।

—नहीं बोलती ? मैं झूठ बोलता हूँ ? अच्छी बात। इस बार जब बोलेगी तो देखना। मारे बौकिंग के तोड़ता हूँ या नहीं।

—मारने के लिए हाथ खुजलाता है तो मार ले कोई। ई दुपहर रात को किसी की नींद तोड़कर झगड़ा क्यों करता है कोई !

लुत्तो अपनी स्त्री बिठैलीवाली से बहुत नाराज रहता है, आजकल !··· साली, कीर्तन सुनने चली गई बीमार बच्चे को गोद में लेकर। रातभर पड़ी रही उस जंगल-झारवाले मन्दिर की अँगनाई में ! ऊपर से बात बनाती है कि खुली अँगनाई में नहीं बरामदे पर बैठी थी—आराम से ! मन्दिर में अब जंगल कहाँ—चमचम चमकती है मन्दिर की अँगनाई। साली, आराम लूटने गई थी।···

लुत्तो को भगवान ने आँख-कान नहीं दिया है क्या ? वह क्या कालीमाई को नहीं मानता ? वह स्टेशन के बनियाँ लोगों की कालीमाई का दर्शन कर आया है। मान-मनौती भी की है, उसने !···उसकी गँवार औरत ने उसके व्रत को तोड़ दिया। प्रण को तोड़ दिया ! भोजभात तो कभी वह नहीं खाने गया हवेली में। लेकिन, मन्दिर में दर्शन करने और कीर्तन सुनने जाता था—हर साल। लेकिन, उस बार···!

···भागलपुर डिविजन भर में प्रसिद्ध चम्पानगर के शारदाबाबू की जात्रा-पार्टी आई थी, उस बार। बँगला जात्रा को हिन्दी में रूपान्तर करके बँगला सुर में ही गाते थे, शारदाबाबू। उनकी पार्टी के बारे में यह बात मशहूर हो गई थी—साज-बाज शुरू होते ही लोगों के सौ दुख दूर हो जाते हैं। मन्त्रमुग्ध होकर दौड़ते हैं लोग !···

बात झूठ नहीं थी। हारमोनियम-तबला के अलावा ढोलक, खोल, करताल, मंदिरा, बाँसुरी, बेहाला, क्लारनेट बजानेवाले, पाँति में आलथी-पालथी मार कर बैठते—अर्धवृत्ताकार ! बीच में दो कुर्सियाँ, कुर्सियों के पीछे जात्रा के मास्टर घड़ी और सीटी लेकर बैठे ! मास्टर ने इधर-उधर देखकर सीटी दी—हारमोनियम मास्टर ने झुककर हारमोनियम को नमस्कार किया। सभी साजिन्दों ने अपने-अपने सुर मिलाये हुए साज को नमस्कार करके उठा लिया। गत बजाना शुरू किया।···लुत्तो बयान नहीं कर सकता। जिसने अपनी आँख से देखा और कान से सुना—वही समझ सकता है !

पूरे आध घण्टे तक बाजा बजाते रहे। एक-एक साज के बजानेवाले—काल बजनियाँ थे ! बाजा शुरू हुआ और गाँव के लोगों के मन में फिरकी नाचने लगी। ढोलक पर गिरगिरी देने लगा ढोलकिया—तिर्र-तिर्र-र-र-र-र-र-तड़क-तड़क-तड़-तटक-तटक-तड़-तिर्र-र्र र-र-धड़क-तटक तर्र। है, है, है, है ! पाँच जोड़ी मंदिरावालों ने ताल पर है-है करना शुरू किया !···सुननेवाले भी झूम-झूमकर ताल पर है-है करने लगे। देह की बोटी-बोटी नाचने लगी, कुकाठ लोगों की भी। रह-रहकर ढोलकिया ताल काटते समय चिल्लाता —भालो रे भालो ! क्लारनेट कटे हुए ताल को दो बार—एकदम महीन आवाज में—पें-पें-पट पें करके आगे बढ़ाता—पें-पें-पट-पें, पें-पें, पूँ-ऊँ-ऊँ ! सब लोगों की नजर इन्हीं नये साजबाज के बजनियाँ लोगों की ओर टँगी, ···देखने में अजीब, लेकिन आवाज कैसी ललमुनियाँ चिड़िया की तरह ! पेट्रोमेक्स जलाते ही, जंगल-झार के सभी फतिंग-पतंगे जिस तरह पर फड़-फड़ाते हुए टूटते हैं उसी तरह गाँव के लोगों को दौड़ते देखा था लुत्तो ने। ···लुत्तो दौड़कर घर की ओर भागा, अपनी माँ से कहने—ऐसा नाच जिनगी में फिर कभी नहीं देख पाओगी। लुत्तो की स्त्री बिना गौना के ही आई थी मेला देखने। घर आकर लुत्तो ने देखा था—घर का दरवाजा खुला है ! चूल्हे पर दूध की कड़ाही छोड़कर ही सास और पुतोहू नाच देखने चली गई हैं। लुत्तो ने कड़ाही उतार कर झाँपी से ढक दिया। और, अपनी धोती बदलकर पायजामा पहना था उसने, पहली बार। एक बार फिर से सिर में चमेली का तेल डालकर कंघी से बालों को उलटाया था ! गाँव के ही नहीं, दूर दराज के भी हजारों लोग आये थे। पायजामा आखिर किस दिन के लिए सिलाया था उसने फत्तू खलीफा के सिर पर सवार होकर ?···

लुत्तो जब सज-धजकर दुबारा आया तो उसने देखा, तिल रखने की जगह नहीं। ···बबुआनटोली के बाबुओं पर मन-ही-मन गुस्सा हुआ था लुत्तो—पुरानी आदत ! कोई भी तमाशा देखने जायेंगे तो, [illegible]

की औरतों के झुण्ड से सट कर खड़ा होकर देखेंगे। औरतों के झुण्ड में अपनी माँ को खोजता हुआ वह बबुआनटोली के बाबुओं के पास जाकर खड़ा हो गया। भूमिहारटोली के लड़कों को न जाने क्या फुचफुची लगी कि लुत्तो को देख कर फुच-फुच हँसने लगे। और, मैथिलटोले का मूरत झा अपने को बड़ा पहलवान समझता था उस समय ! भद्दी-से-भद्दी बात को रसदार बना कर बोलने में, कूट की बोली बोलने में उस्ताद। मूरत झा ने लुत्तो को अचरज से देखा, थोड़ी देर तक। फिर, अकचका कर बोला—अरे! लुतवा है, यह तो ? मैंने समझा कि जात्रापार्टी है कोई फारस करने वाला एक्टर आकर खड़ा है !

लुत्तो ने देखा है, बाबड़ी और जुल्फी केश यदि बाबू लोग के बेटे रखें तो कोई बात नहीं। जहाँ किसी भी सोलकन्ह के लड़के ने पट्टी छँटाई कि बाबूटोले के बूढ़े पुराने से लेकर नये नवतुरिये तक के जी जलने लगते हैं। ···अरे-रे ! तुमने भी दस आना छै आना वाली पट्टी छँटाई है ? मूँछ अभी काला भी नहीं हुआ—फुचकट कटाने लगे ?···उस रात बबुआनटोली के लड़के उसके पायजामा देखकर ही नहीं, गले में बँधी रेशमी रंगीन रूमाल की बहार देख कर भी जले थे। उधर, जित्तन ने जो ढीला ढाला पंजाबी कुर्ता और धरती-बुहार धोती पहन रखी थी, उस पर नजर नहीं गई। मैथिलटोली के मूरत झा को वह कोई कड़ा-सा जवाब देना चाहता था, किसी दिन। बराबर कूट बोली सुनाकर कलेजा बेधता—हाँ-हाँ, लुत्तो की माँ के घर में असली चमेली के तेल का स्टॉक इतना है कि लुत्तो सारी जवानी लगायगा तो भी नहीं घटेगा तेल ! हाड़ से माँस को अलग कर देने वाली बोली कब तक सुने लुत्तो ? उसने कड़क कर जवाब दिया था—मोटा पावर का चश्मा खरीद कर लगाइये !

मूरत झा ने पोतू की तरह मुँह बनाकर कहा था—तो इसमें चिढ़ने की क्या बात हुई जो डेढ़-डेढ़ हाथ उछलने लगे ?

—क्या बोलता है ? कौन बोलता है ? क्यों उछलता है ? भूमिहारटोले के

लड़कों ने चिल्लपों शुरू की। एक लड़के ने कहा—हम लोग तुम्हारा पैजामा देख कर नहीं हँस रहे। बकरी करे जुगाली और डायन बूढ़ी समझती कि उसी की चर्चा हो रही है! मूरत झा ने कहा—धोखा होगा नहीं? यह नाटक नौटंकी तो नहीं कि स्टेज पर पर्दे की आड़ से निकलेंगे एक्टर लोग। अभी देखना, जात्रा का एक्टर कभी-कभी भीड़ में छिप कर भी सवाल-जवाब करता है।

—कौन है? जात्रा का एक्टर? लुत्तो? हा-हा-हा।···हल्ला-गुल्ला रोकिये! भीड़ की गलबल बोली सुनकर लुत्तो ने समझ लिया, लोग उसी को दोषी समझ रहे हैं। मैथिल और भूमिहारटोली के पढ़ुवा लड़कों ने मिलकर हल्ला मचाना शुरू किया—डिस्टर्ब करने आया है! जान बूझ कर कोई बखेड़ा करेगा तो थुरावेगा! मैथिल, भूमिहार, और राजपूतों की यारी खूब देखी है लुत्तो ने। हजारों की भीड़ में से स्कूल के स्काउट-मास्टर साहब ने, लुत्तो को निकाल कर एक किनारे किया। कहा—यहीं बैठकर तमाशा देखो। लुत्तो ने स्काउट-मास्टर की मुट्ठी से अपनी कलाई छुड़ाकर कहा था—छोड़िये, नहीं देखूँगा नाच। घर जाने दीजिए!··

घर लौटते समय लुत्तो ने कालीबाड़ी की कालीमाई के बारे में सोचकर देखा, जित्तन की कालीबाड़ी की कालीमाई, लुत्तो के मन की क्यों होने देगी कोई बात? उसने प्रतिज्ञा की थी—प्राण रहते, कालीबाड़ी की पूजा या नाच-तमाशे में फिर कभी नहीं आएगा वह!·· और उसकी स्त्री रात भर कीर्तन सुन आई?

लुत्तो गुस्सा कर करवट लेता है—साली, कहती है कि भोज में क्या होगा, भोज में? भोज जो होने वाला है हवेली की ओर से, इसमें क्या करेगा कोई? सब घर खायगा और अकेला एक घर मुँह बाँध कर रहेगा तो क्या समझेंगे लोग! ढड़वा-बँधवा तो नहीं है कोई!

खूब समझता है लुत्तो। औरत—तिसपर देहाती, साली की बुद्धि ही कितनी? ···लेकिन, बात कहती है ठीक ही सिंहौलीवाली—इस भोज में क्या होगा?

हवेली की मुसम्मात ने ब्राह्मणटोली वालों से कहा—आप लोग सारे टोली के भोज का एक मोट रकम ले जाइए! टोली में भोज का प्रबन्ध करके खाइये!

ब्राह्मण, भूमिहार और राजपूतों ने अपने-अपने टोले के भोज के लिए नक़द रुपया लिया। सोलकन्ह लोगों ने हवेली में होनेवाले भोज में शरीक होने का फैसला किया।···साल में दो-तीन छोटे भोजों के अलावा कालीपूजा में लगातार तीन दिनों तक पके हुए प्रसाद का भोज होता और शिवेन्द्र मिश्र के वार्षिक श्राद्ध में हर साल पाँच दिन—पन्द्रह जून भोजन पाते गाँव के लोग।···हवेली के भोज के इर्द-गिर्द, गाँव की प्रत्येक जाति और टोले-टोली में बहुत-सी ऊँची-नीची बातें घटीं। दलबन्दी, जातिबन्दिश आदि के विवाद भोज के समय जोर पकड़ते। शिवेन्द्र मिश्र के श्राद्ध में मैथिलों ने चालाकी से चौगुना भोज वसूल किया था। टोले के भोज के लिए सवा सौ रुपया लिया, सो अलग। जब साधु-फकीर भाँट-भिखारी और लूले लँगड़ों को सीधा दिया जाने लगा तो, मैथिल लोग उस पंक्ति में भी खड़ा हो गए। ब्राह्मण का हक। अपांक्तेय घोषित मिश्र-परिवार की पंक्ति में भोजन करने के लिए दस ब्राह्मण भी तैयार हो गये।···गरुड़धुज झा के बाप काने महापात्र की एक आँख अपनी दक्षिणा के अलावा ब्राह्मणदान के नाम पर आई हुई चीजों पर थी। सो, कुछ ब्राह्मणों ने मिलकर बाँट लिया। दान लेने में कोई पाप नहीं!···

भूमिहारों ने दूसरे साल वार्षिक श्राद्ध में चालाकी की। भोज का रुपया भी ले गए और जब हवेली के भोज का बुलावा आया तो उसको भी कबूल कर लिया।···अजाति घोषित किया है मैथिलों ने। भूमिहारों को क्या?

हवेली के भोज को केन्द्र करके, जाति पंचायत के बहुत-से दाँव-पेंच खेले गये हैं, गाँव में। लुत्तो ने सदा कुकुरभोज कह कर हवेली के भोज की खिल्ली उड़ाई है। लेकिन, इस बार? इस बार···कहीं उसकी स्त्री भोज के दिन भाग कर तो नहीं चली जायगी भोज खाने?

—ए, बिठैलीवाली ! सुनती है ? नींद में क्या बकर-बकर बोल रही है ? साली, सपने में भोज खा रही है।

—हाँ-अ, खा-म-खा जानवर समझ लिया है किसी को, क्या कोई ? बेर-बेर नींद तोड़कर गाली क्यों सुनाता है, कोई ? नटिनियाँ छौड़ी हिरिया के कारन मैं गले में घड़ा फाँसकर दुलारीदाय के कुण्डा में डूब मरूँगी। हाँ-अ!

बिठैलीवाली उठकर बैठ गई और खाँसने लगी। असमय में नींद खुलने पर उसकी खाँसी उभर आती है। तीन चिलम तम्बाकू हुक्के पर गुड़गुड़ा कर पीती है, तब भी शांत नहीं होती खाँसी।···साली ! हीरा बाई की बात कहाँ से सुनकर आई ? आज लुत्तो को खबर मिली है, नट्टिनटोली की नटिनियाँ मेले से तम्बू तोड़कर गाँव वापस आ रही हैं। पंचायत करके ताजमनी से भोज वसूलेगी, गंगा बाई।

बिठैलीवाली ने हुक्का गुड़गुड़ाया और उधर लुत्तो की नाक बोलने लगी। बिठैलीवाली खाँसती हुई बड़बड़ाई—नाक किसकी बोलती है सो सुन ले कोई !

पुस्तकालय के सामने ऐसी भीड़ कभी नहीं लगी। मैट्रिक्युलेशन परीक्षाफल निकलने के दिन भी नहीं।···फिर मलारी की तस्वीर छापी हुई है ? सुवंशलाल के साथ ? चलो, चलो !

भूमिहारटोले का प्रयागचंद आजकल पुस्तकालय का सेक्रेटरी हुआ है। वह दैनिक आर्यभूमि में प्रकाशित संवाद को, रेडियो से समाचार सुनाने वालों के लहजे में जोर-जोर से सुना रहा है।···ठीक, शिवनागर मिसर का नकल किया है प्रयाग ने !···क्रांतिकारी विवाह ! लोगों ने सुना कि

परती : परिकथा—३६२

सुवंशलाल और मलारी ने रजिस्ट्री करके विवाह का पक्का कागज बनवा लिया है। कि बड़े-बड़े लीडर और मिनिस्टर लोग इस शादी के बाराती थे। कि मिनिस्टर साहब ने अपनी ओर से दान-दहेज दिया है, सुवंश को। और तिलक में नकद रुपया के अलावा पढ़ाई खर्च !···अब कौन क्या बोल सकता है ?

प्रयागचन्द भूमिहार युवक संघ का भी मन्त्री है। उसने संघ के सदस्यों को आवश्यक बैठक की सूचना दी है। आज ही बधाई का प्रस्ताव पास करके भेजना है !···प्रयाग भी वाममार्गी हो गया, क्या ?

भूमिहार युवक सभा के सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट सदस्यों ने सुवंशलाल की बहादुरी की प्रशंसा करते हुए प्रस्ताव में एक स्थान पर—'पूँजीवादी समाज की रूढ़िवादी रीढ़ पर प्रहार कर'—पंक्ति जोड़ने के लिए जोर दिया।

रघुवंश और यदुवंश के सामने छाया हुआ अन्धकार दूर हुआ।···इसी भोज में भूमिहारों ने रघुवंश और यदुवंश के परिवार को पंगत से उठाने का विचार किया था। भूमिहार युवक संघ के सदस्यों ने अपने-अपने घर में नारा लगाकर सुना दिया—कौन उठायेगा पंगत से ? कल ही खबर पटने चली जायगी और तब देखना !

पनघट पर खड़ी औरतों ने कानाफूसी की—जोर से मत बोलो ! सुना है, सुवंश और मलारी के खिलाफ बोलनेवाले को दरोगा साहब पकड़ कर चालान करेंगे ?···रास्ट्री बिहा हुआ है किसी का, इस गाँव में ? तब कैसे जानोगी सरकारी शादी का बिध ?

फेकनी की माय अपने जानते खूब गला दाबकर बोलती है। लेकिन, फुस-फुसाकर बोलने की आदत रहे तब तो ! बोली—हिन्नू चा गरमागरम ? आकि देखो···।

—फेकनी की माय ? तुमको थाना-पुलिस का डर नहीं हो, हम लोगों को

के हवलदार साहब के मुँह पर हवाई उड़ रही है। न जाने क्यों, एसपी साहब बहुत नाराज हैं। थाना के दारोगा साहब ने आँख के इशारे से कहा —मामला बड़ा बीहड़ है !

गाँव में खबर फैली—परबतिया दाजू को पकड़ने के लिए आए हैं इसपी साहेब। परबतिया अपने देश से कोई खून करके भाग आया है।··· भुजाली भाँजने का मजा अब मिलेगा, बिलारमुँहा को !

एस. पी. साहब को पटने से आइ. जी. ने ताकीद करके टेलीफोन किया है, जितेन्द्रनाथ के पत्र पर जल्दी कार्रवाई करो। एस. पी. साहब ने अपनी पन्द्रह साल की नौकरी के दरम्यान ऐसा पेंचीला मामला नहीं देखा—रेकर्ड और फोटो की बात पढ़ कर उनको हँसी आई थी !···सचमुच पागल है यह जितेन्द्रनाथ ! किन्तु, आइ. जी. साहब ने बी. एल. केस चलाने की सलाह दी है—कोई जरूरत नहीं एक हजार आदमी के दस्तखत की ! जितेन्द्रनाथ ने पुलीस सुपरिन्टेन्डेन्ट की उचित खातिर की। सुरपति ने अपने टेप रेकार्डर मशीन का डिमांस्ट्रेशन किया, गवाही दी। भवेश ने तस्वीरों के साथ फिल्म के नेगेटिव्स दिए और एस. पी. साहब रसीद ले ली !···जितेन्द्रनाथ ने हँस कर कहा—हमें कुछ नहीं कहना है, रेकर्ड बजा कर सुन लीजिये। सारी बात समझ में आ जायगी !

ननकू नट को न जाने कैसे बात की गन्ध लग गई ! वह अपने घर में गड्ढा खोद कर ताजे चमड़ों की गद्दी गाड़ रहा था कि पुलीस ने घर घेर लिया ! ···खंतर गुलाब छड़ीवाला, बकला अहीर और उसके साथ सोये हुए पाँच-सात अजनबी नौजवान—सब मिला कर पन्द्रह आदमी गिरफ्तार हुए !

थाना पहुँचकर, एस. पी. साहब ने पहले मारपीट नहीं की। एक-एक आदमी को बारी-बारी से बुला कर बैठाते और रेकर्ड बजाते···हें-हें-हें ! हुजू-उ-उ-र। आपके अकबाल से अभी तक मैं बीच खेत में कभी नहीं पकड़ा गया।···फोंफ-फोंफ् ! उधर खेत साफ ! बकला की आँखें गोल हो गईं ! अचरज से थरथराती हुई देह काठ की तरह कड़ी हो गई। उसकी

बोली-निकल रही है ? कहाँ से ?···कुत्ता भी भूँकता है, बीच-बीच में ! ननकू नट का रिकार्ड खत्म हुआ तो एस. पी. साहब ने एक भद्दी गाली दी—साले !···बहुत मवेशियों को जेबह किया है। इस बार, देखना !

खंतर गुलाबछड़ी वाले ने नाक से आवाज निकाली—खँक !···फरमायशी गुलाबछड़ी ! खँक !···

एस. पी. साहब ने बीच में ही मारना शुरु कर दिया। रेकर्ड से खंतर की बोली निकलती रही—जानबूझ कर जान नहीं···खँक। तीन फरमायशी गुलाबछड़ी बनाकर खिलाया। बड़े खान्दान वाले हैं, नाम क्यों ले। खँक···।

—साले। नाम नहीं लेगा ? बताओ, नाम बताओ ! नहीं तो, मारते-मारते गुलाबछड़ी बना देंगे साले ! तुमको तो आग में झुलसा कर मारना चाहिये !

मुंशी दरबारी लाल को भी एस. पी. साहब ने गिरफ्तार किया। किन्तु, जितेन्द्रनाथ ने जमानत पर छुड़ा लिया है।···मुंशी दरबारी लाल गवाही देगा !

गाँव के लोगों की समझ में कोई बात नहीं आई !

केवटटोली में खबर उड़ी—सुन्नरिनैका के दिन जो बाजा कुरकुरा रहा था, उसी में कोई भेद है !

बूढ़ा रघ्घू रामायनी थर-थर काँप रहा है—गुरु हो ! देखना !!

दिलबहादुर और रामपखारनसिंह निमन्त्रण-पत्र बाँट रहे हैं—घर-घर घूम कर !

गाँववालों ने दिलबहादुर की मुस्कुराहट पहली बार देखी ! ···'परानपुर-पार्क' की सफलता के उपलक्ष में एक प्रीतिभोज ! दिलबहादुर मुस्कुराकर पूछता है—आयगा ? फिर हमको लम्बर लिखना पड़ेगा !

···वाह रे भोज ! पहले ही पूछ कर नाम क्यों नोट करता है ? इस बार किसी टोले को नकद रकम नहीं दिया गया है। जिसकी श्रद्धा हो, हवेली में जाकर भोज खाँय। यह तो सोचविचार कर करनेवाली बात है। ब्राह्मणटोली वालों को छोड़कर बाबू टोला के सभी परिवार ने अपने घर भर के लोगों की गिनती करके लिखा दिया, दिलबहादुर को।···पहड़िया भूत भी लिखना-पढ़ना जानता है ? कहता है—छोटा केटाकेटी ? हाँ, लड़का-बच्चा का भी भोज होगा !

सोलकन्हटोले में एक घर, लुत्तो ने साफ जवाब देकर निमन्त्रण-पत्र लौटा दिया—नहीं जायेंगे, भोज खाने। दिलबहादुर ने पूछा—किन ? क्यों नहीं जायगा ?

लुत्तो की नजर दिलबहादुर की बुड़कती हुई आँखों पर थी।···कोई जबर्दस्ती है ? जिसका मन नहीं होगा—नहीं जायगा। दिलबहादुर ने कहा—ताजुदि बोला है, लुत्तो को जरूर बोलना, आने को !

—नहीं, नहीं। हम भोज नहीं खाता है। जाओ !

—नहीं खाता है तो नहीं खाता है। इस माफिक बोलता काहे है ?

रामपखारनसिंह ने राह चलते दिलबहादुर को समझाया—जरा प्रेम की बोली ही बोलल करो दाजू। लोग तुमको देख कर घबड़ा जाता हैनु ! ···दिलबहादुर के कारण रामपखारनसिंह कहीं एक पल बैठ कर कोई गप भी नहीं कर सकता है।—नट्टिनटोली में तुम अकेले जाओ दाजू !

रामपखारनसिंह ने लौट कर बाबूटोले में अड्डी जमाई—अब राम जानें, ई भोज कैसा होता है। हमने बहुत समझाया बौवाजी को। लेकिन जानते ही हैं—लम्बरी जिद्दी आदमी हैं ? कहते हैं, नहीं। पटना से पेन्टो या मेन्टो कौन होटल है, उसीका बावुर्ची आवेगा। चार किसिम की मिठाई और दु-तीन किसिम के···!

के हृदय परिवर्तनवाद पर विचार कर लें तो अच्छा हो। कामरेड गुरुजी मार्क्सवादी होकर भी हृदय परिवर्तनवाद पर विश्वास करते हैं, यह कहाँ तक जायज है ?

—इसी को प्रतिक्रियावादी विश्वास कहते हैं ? एक सदस्य ने अपनी राय जाहिर की।

—हृदय परिवर्तनवाद को प्रतिक्रियवादी विश्वास कहते हो ! रंगलाल गुरुजी का चेहरा लाल हो गया।

—मेरा ख्याल है, गांधी ने इससे बढ़कर और कोई खतरनाक शब्द नहीं दिया भारतीय राजनीति को। विश्वकर्मा आजकल महात्मा गांधी के बदले सिर्फ गांधी बोलता है।

रंगलाल गुरुजी का विश्वास इतना कच्चा नहीं—फिर आपके पार्टी-साहित्य, प्रचार-पुस्तिका, पत्र-पत्रिका और भाषण-वक्तव्य की क्या आवश्यकता ? बन्द कर दीजिये इन्हें !

—क्यों, हृदय परिवर्तनवाद का इनसे क्या सम्बन्ध ?

—मैं कहता हूँ कि इन सारे आयोजनों के पीछे हृदय को परिवर्तन करने का ही मुख्य उद्देश्य काम करता है।

—हृदयपरिवर्तन करने के लिए नहीं, गुमराह मास के दिमाग को इनलाइटेन माने उजागर करने के लिए···।

—एक ही बात है। रंगलाल गुरुजी ने पूछा—अन्धकार दूर होकर प्रकाश छा जाना, परिवर्तन नहीं ?

विश्वकर्मा कोई माकूल जवाब ढूढ़ रहा था कि मकबूल ने मुस्कुरा कर कहा—साथियो ! हृदय परिवर्तनवाद पर हम फिर से क़भी विचार करेंगे। आज हम फैसला करें कि इस भोज में हमें कौन-सा रुख अख्तियार करना है। रंगलाल गुरुजी शायद भोज खाने के पक्ष में हैं ?

घर लौटते समय उसने रामपखारनसिंह को सुना दिया—वँड़ाँ झँझट कॉ काँम हॉता हैं पाँटॉ मिंटिं में पँटरॉ वैठाना···!

सुचितलाल ने पखारनसिंह को पान खिलाने के बहाने रोका और सुनाया कि किस तरह उसकी पार्टी के लोग भोज को भंडुल करना चाहते थे और किस तरह उसने लोगों को समझा कर रास्ते पर लाया है !

रामपखारनसिंह मन-ही-मन बोला—ससुरे हम तुमको चिन्हते नहीं हैं का ?

—फूल फूटिलो रे रांगा···ओ गो···फूल फूटिलो रे जवा···फूटिलो रे ! रसोईघर के पिछवाड़े में मगन होकर गोविन्दो गुनगुना रहा था । साम-बत्ती पीसी बगल से जा रही थी । बोली—बड़ा गीत गा रहे हो गोविन्दो ! कौन फूल फूटा है ?

सामबत्ती पीसी इस राह से आते-जाते गोविन्दो से मिलना नहीं भूलती है । अन्दर हवेली में कुत्ते के डर से जाने का साहस नहीं होता । गोविन्दो पान जर्दा का पुराना शौकीन है । सामबत्ती को बड़ा भला लगता है, गोविन्दो । बचपन से है इस गाँव में । लेकिन, कभी किसी लड़की से मुँह खोल कर नहीं बोला । सामबत्ती से बोलते समय अब भी वह आँख नहीं मिलाता है, कभी । निगाह नीची ही रहती है । लेकिन, आज तो लगता है कि दूसरा ही गोविन्दो है ! गोविन्दो ने मुस्करा कर जवाब दिया—हाँ, फूल फूटा है । मँन का फूल फूटा है, दादाबाबू का । श्यँमा पूजा में देखा नहीं ? कैसा फूल फूट गिया था सब लोग का ऊपर । सबका आँखि में जवा फूल जैसन फूट गिया था । और, तुम्हारा भी डिजैन उस दिन एकदम बाँगला काट का गिन्नी का माफिक हो गिया था । हम देखा···।

सामबत्ती पीसी हैरान हो गई । कहता क्या है, गोविन्दो ? सामबत्ती को अशर्फी-गिन्नी कहता है ? क्या मतलब है इसका ?—पान-जर्दा है तो खिलाओ । तुम्हारी मालकिन से तो डर लगता है, अब । कहीं आ न

जाय ?···अच्छा गोविन्दो ! वह रसोईघर में भी आती है ?

—ई कौन नाया बात है ?

सामबत्ती पीसी पीढ़ी पर बैठ ही रही थी कि रामपखारनसिंह आकर पुकारने लगा—गोविन्दो ! ए गोविन्दो । तू इधर नाया बात के पुराना बात बनाओ—उधर देखो का हो रहा है ?

—क्या ?

—इधर आओ।

गोविन्दो और रामपखारनसिंह रसोईघर के ओसारे से हटकर बातें करने लगे तो सामबत्ती पीसी उठकर चली आई। चलते-चलाते उसके कान में बात आई—मुंशी जी रो रहे हैं !···जलधारीलाल मुंशी रो रहा है ? आखिर, क्यों ? सामबत्ती पीसी शाम को भी एक फेरा लगा जायगी, इधर से !

•

—क्यों, रो क्यों रहे हैं ? जितेन्द्रनाथ ने अवाक् होकर पूछा।

—हजूर, अब हमको छुट्टी दीजिए ! अब नहीं···।

मुंशी जलधारीलाल हाल की घटनाओं से क्षुब्ध है। जितेन्द्रनाथ उसे जब-जब समझाना चाहता है, वह बधिर हो जाता है। कुछ सुनता ही नहीं, मानो। आज वह छुट्टी माँग रहा है।

—ठीक है। छुट्टी लीजिए। रो क्यों रहे हैं ?

—हुजूर, इस इस्टेट से पालन पोषन हुआ। इसके एवज में खिदमत भी की ताउम्र। क्या किया, कुछ नहीं किया। अपना फर्ज अदा किया, हमेशा। लेकिन, कभी ऐसा···मुन्शी जलधारीलाल का गला फिर भर आया।

—आप को अपने किये पर पछतावा हो रहा है। यही प्रायश्चित्त है !

नहीं ! मुंशी जलधारी को अपने किये पर जरा भी पछतावा नहीं । उसे दुख है, उसके साथ धोखेबाजी क्यों की गई ? क्या-क्या नहीं किया उसने इस इस्टेट के लिए ! लेकिन कभी हाथ में हथकड़ी नहीं लगी । इज्जत रह गई थी, सो भी गई । मुन्शी के साथ अन्याय हुआ है । उसको जमानत पर छुड़ा कर गवाही देने कह रहे हैं उसके मालिक ? क्या करे वह ? न निगलते बनता है, न उगलते । रेकार्ड में उसकी बोली चली गई है । हर आदमी का परिचय देती हुई आवाज—हुजूर, यह है बकला अहीर ! यह ननकू नट···!

—गवाही तो आप को देनी ही होगी !···आवाज तो मेरी भी है उसमें । अपनी आवाज को कबूल करने में क्या हर्ज है ?

मुंशी जलधारीलाल को हठात् कोई बात याद आई ! उसने तकमकाकर कोठरी में इधर-उधर एक नजर दौड़ाई ।···कहीं फिर न बोली रेकर्ड हो रही हो । मुंशी जलधारीलाल सुरपति और भवेश को जोड़ा साँप कहता है, आजकल । ऐसा जानता तो एक दिन भी नहीं टिकने देता, मुंशी जलधारीलाल । अच्छी बात, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है । ब्रह्मपिशाच से भेंट करा देगा मुंशी इन दोनों बाबुओं को । बोली और फोटो खींचने वाले—भूत की बोली रेकार्ड कर लें, फोटो छापें । अच्छी बात ! देखेगा ।···

रामपखारनसिंह कमरे के बाहर से मुंशीजी को चेतावनी देना चाहता है, होशियारी सें ! फिर कहीं फिलिंग रिकाट···! रामपखारनसिंह भी नाराज है । वह गोविन्दो से कहने गया था, अब यहाँ से छुट्टी लो—नहीं तो किसी दिन हम लोगों के हाथ में भी हथकड़ी पड़ के रहेगी । लेकिन, गोविन्दो अपने को बड़ा माथावाला समझने लगा है, बोला—देखो, सिंहजी ! जो जैसे कॅर्म कॅरेगा वैसा पावेगा । मुंशीजी बहुत जुल्मी काम कॅरेगा तो मॅरेगा नहीं । हाम ऊ सब बात नहीं बूझता है ।···

क्या समझ लिया है इस सालन-भात बनानेवाले गोविन्दो ने ? रामपखारन सिंह के बाप ने इस इस्टेट के मालिक शिवेन्द्रमिश्र के एक खून को खुद

कबूल कर कहा था, हाकिम से—मालिक ने नहीं, खुद हम रामजीयावनसिंघ ने गोली से मारा है ! हँसते-हँसते दामुल की सजा भोगने चला गया रामपखारनसिंघ का बाप। लेकिन, अब तो फिलिंग रिकाट···!

मुंशीजी को गवाही देनी ही होगी। जितेन्द्रनाथ ने कहा—तब जो भोग भोगना बाकी है, भोगियेगा !

मुंशी जलधारीलाल क्या करे ? कलम की बात रहती तो ऐसी-ऐसी बात को वह कलम की मार से सही कर लेता। कलम की बात नहीं—रेकर्ड की बात है। आवाज की बात है !

मन की खीझ को कहाँ उतारे जलधारीलाल ? वह चाहे तो जितेन्द्रनाथ को रास्ते का भिखारी बना दे। ऐसी-ऐसी चीजें उसके पास हैं ! लेकिन, जित्तन का मुँह देख कर मुंशी चुप हो जाता है। ···जित्तन के मुँह के आसपास कई मुखड़े दिखाई पड़ते हैं, मिट जाते हैं—मालिक शिवेन्द्रमिश्र की मूरत ! मालकिन की अन्तिम आज्ञा या प्रार्थना—जीत का कागज कभी कमजोर न हो ! जीत का कागज बिगाड़ना मत कभी !!

मुंशी जलधारीलालदास आजकल बात-बात में डरता है। जेब से अशर्फी की थैली निकालकर देते हुए कहता है—हुजूर ! रुपया पैसा की बात नहीं। यह कम्पनी के जमाने की अशर्फी है। बैंक में खुद जाकर जमा कर आइए !

—क्यों ? बैंक में पुरानी अशर्फियाँ नहीं ली जाती हैं क्या ?

—सो बात नहीं है, हुजूर। इससे भी पुरानी अशर्फियाँ जमा होती हैं।

—बात है कि अब तो हुआ मैं दागी आदमी। हथकड़ी पहना हुआ ! न जाने नीयत कब बिगड़ जाय। दूसरी बात, इन अशर्फियों का कौन भरोसा ? न जाने किस गोरे साहेब के खजाने का हो। या, नकली अशर्फियाँ ?

ताजमनी कमरे में आई—मुंशीजी !

मुंशी जलधारीलाल दास को मालकिन की याद आती है, अचानक—मुंशी जलधारी, तुम हवेली की बहुत-सी ऊँची-नीची बात जानते हो।

काशी-विश्वनाथ की सौगन्ध खाकर बोलो—कभी जित्तन के सामने उनकी चर्चा नहीं करोगे ! मुंशी ने काशी नगरी में बैठ कर प्रतिज्ञा की थी।···

डाक्टर रायचौधुरी पार्टी नं० १० के साथ हैं। कोशी के विभिन्न अंचलों में पेड़-पौधे, वनस्पति और उद्भिद् की परीक्षा कर रहे हैं। पिछले तीन साल से हिमालय के प्रसिद्ध स्थान, वराह-क्षेत्र के पास किसी फूल की खेती का प्रयोग किया है। अब, पार्टी नं० १० में भेजे गये हैं। तीन बड़े-बड़े ट्रकों में सैकड़ों गमले भर कर ले आये हैं। इसलिए, परती पर लगे हुए बाग पर एक सप्ताह के बाद नजर पड़ी।···विशेष प्रकार के झाऊओं की तरह झाड़ियों के गमले फूट गए। पाँच तो सूख ही गए हैं। नील-अमलतास का बहुत दुख है डाक्टर को !···डाक्टर रायचौधुरी ने बाग में जाकर देखा—पौधों को, दूबों को, बन लहसन के फूलों को ! मघवा जंगल का रंग बहुत भाया डाक्टर को। घंटों भूले रहे ! अचानक उनके मन में प्रश्न उठा—किसका है यह बाग ? योजनाबद्ध पाँतियों की कल्पना करने वाला, कौन है यह ? यह किसका प्रयोग सफल हुआ है ? किसका सपना साकार हुआ है, यहाँ-एकान्त में ? यह किसने उसके काम को सहल बना कर रख दिया है, उसके सामने ? कौन है वह ? डाक्टर राय चौधुरी बेचैन हो गए ! शाम को बंगला धोती कुर्ता पहन कर, हाथ में मोटी छड़ी लेकर निकले डाक्टर रायचौधुरी। अधेड़, बंगाली भद्रमानुस !

इरावती के मामा मिस्टर खानचन्द गार्चा ने हँस कर पूछा—क्यों डाक्टर साहब ! कहीं मछली-वछली की दावत मिली है क्या ?

डाक्टर राय चौधुरी ने हँस कर जवाब दिया—हाँ। खूब बड़ा जात का माछ ! बाद में बोलेगा।

इरावती, डाक्टर साहब की इसी बात से चिढ़ी रहती है। कुछ पूछिये तो, बाद में बोलेगा। और, बाद में कभी नहीं कहते कुछ। अंकल कहके देखा, मामा कहके पुकारा। पर, कुछ नहीं कहते खोल कर।

—मामा ! अपने नील-अमलतास के बारे में कुछ कहिए !

—बाद में बोलेगा। डाक्टर राय चौधुरी विरक्त होकर कहते। अपने दुख को भूलने का जितना बहाना करो, बेकार ! फिर, नील-अमलतास की बात छेड़ दी इस लड़की ने। बंगला में ऐसी लड़कियों को नाछोड़बन्दा कहते हैं। नाछोड़बन्दा है ये !

कार्ड पढ़ कर जितेन्द्रनाथ का चेहरा चमक उठा—डाक्टर सी० के० राय-चौधुरी···? बहुत श्रद्धा है जितेन्द्र को इस नाम से। उसने सिर्फ तीन लेख पढ़े हैं !···पूज्य व्यक्ति ! जितेन्द्रनाथ तेजी से कमरे के बाहर गया। प्रसन्न होकर स्वागत करते हुए बोला—बड़ी लालसा थी आपसे मिलने की। मेरा सौभाग्य ! पधारिये !

डाक्टर राय चौधुरी ने कमरे में एक निगाह डाली।···क्राइस्ट, बुद्ध, रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी की—कैस्टनगर की मूरतें !

—पाइरिथ्रम एक्सपेरिमेंट का क्या हुआ, सर ?

कीमती सिगार में छेद करके फूंकते हुए बोले डाक्टर राय चौधुरी—हॅम तो रिपोर्ट कर दिया। बॅराहक्षेत्र-आउर उसका चार पाँच माइल नीचू को पॅहाड़ी में पाइरिथ्रम का खेती हो सॅकता है। नेपाल सॅरकार इस खेती को प्रोत्साहन देने से मॅलेरिया का विभीषिका बॅहुत कॅमती···। पाइरिथ्रम ? एहि, क्राइसेनथेमम-चन्द्रमॅल्लिका फूलेर एक जात। आश्चर्य-एर सॅमॅता ! आइम सॅरी ! कीट-पतंग-नाशक उद्भिद् ! मॅशा, माछी, माकड़ाशा आउर

सॅब किसिम का कीड़ा-पोका इसको छूने से एक-दु मिनिट को अन्दर पंगु होकर मारा जाता है। पॅहाड़ी भूमि को छोड़ के आउर जगहा नेंही होने सकता।···इसका एक्टिव प्रिंसिपल माने कीट-नाशॅक गुन जिसको पाइ-रिथ्रम बोलता है—हमारा चास किया हुआ फूल में हुआ—जेरो डेसिमल सेवन···!

जितेन्द्रनाथ ने मुस्कुरा कर कहा—चाय ठण्डी हो गई, सर! छोड़ दीजिये। गर्म चाय ला देता हूँ।

—आरे, नेंही नेंही। हॅम ठांडा चा पीता है।···आपका बागान देखकॅर के हॅम बूझ लिया! जॅरूर कोई माँ का बेटा होगा। आकॅर देखा—ठीक! उई, जॅवाफूल देखकॅर बूझ गिया हम!

—हाँ, काका। इस बार फिर पूजा हुई है माँ की। आप नहीं आये। ताजमनी पर्दे के उस पार से इस पार चली आई।···साँझ की बेला टली जा रही है। ठाकुरों को धूपदीप तो देना ही होगा। ताजमनी ने समझा, पूर्णिया के नवीनबाबू वकील आए हैं। ताजमनी काका कहती है नवीनबाबू को। कमरे में आकर प्रणाम करते समय उसका भ्रम दूर हुआ—वह तो कोई दूसरे काका हैं! जितेन्द्रनाथ ने मुस्कुरा कर देखा, ठगी-सी ताजमनी को।

डाक्टर रायचौधुरी धूपदीप की बेला में कुर्सी छोड़कर खड़ा हुए। जितेन्द्र कभी खड़ा नहीं होता। ताजमनी ने बार-बार उसकी ओर देखा। अन्त में, वह भी उठकर खड़ा हुआ!

ताजमनी ने अन्दर जाते समय सुना, जितेन्द्रनाथ पंचचक्र की बात कह रहा है। पिटारी निकाल रहा है भोजपत्र की। ताजमनी रुक गई पर्दे के उस पार!

—एक चक्र में, मेरा अनुमान सच निकला। सम्भव है, बाकी में आपको कुछ और सहायता मिले, इसलिए अपने अनुमान की बात स्पष्ट कर दूँ।

मेरा अनुमान है, इन चक्कों में जो मिट्टियाँ हैं—वे भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं। सम्भव है, इस विशाल परती पर ऐसी मिट्टियोंवाले चकले—जगह-जगह हजारों एकड़ में फैले हों।···किसी में गेहूँ की खेती। जड़ी-बूटियों की खेतीवाली धरती ही कहीं निकले!

डाक्टर रायचौधुरी प्रसन्नता से उलट रहे हैं भोजपत्र को। चश्मा पोंछकर देखते हैं!···वही माँ! उसी की माया है। अपने आँचल में न जाने कहाँ-कहाँ, कैसा कैसा फूल टाँककर रखती है। कहता क्या है, यह नौजवान? इसके अनुमान के पीछे वैज्ञानिक दृष्टि है!

डाक्टर रायचौधुरी की हालत को एबनार्मल कह सकते हैं।···इस युवक के बालों को मुट्ठी में लेकर स्नेह से झकझोर कर कहना चाहते हैं—ओ रे दुष्टू! डाक्टर साहब ने लगातार कई प्रश्न पूछे—दुलारीदाई नँदी में गेहूँ का खेती होता है?

—होती है।

—उ होता-होती माफ करेगा हमारा!···जितेन्द्रनाथ की आँखों को राय-चौधुरी ने गौर से देखा।

—आमार चोख बुझि कॅटा? जितेन्द्रनाथ ने मुस्कुरा कर पूछा।

डाक्टर ने कहा—नेहीं। हॅम क्या देखता है? सो, बाद में बोलेगा।··· आँखें कुरी नहीं। आँखों में कोई खास बात उन्होंने देखी है। यह युवक तो स्वयं एक वनस्पति है। नील-अमलतास जैसा!···तुमी पारबे! तुमी पारबे! तुमी जे निजेई एक बिरल वनस्पति!

न जाने क्यों, डाक्टर की आँखें छलछला आईं। जितेन्द्रनाथ को आशीर्वाद दिया डाक्टर रायचौधुरी ने—तुमी पारबे!

बातों ही बातों में रात्रिभोजन का समय हो गया!···शाक्त के घर दोनों जुन माँ के भोग के लिए ही रंधन होता है। माँ के प्रसाद को अस्वीकार कैसे कर सकते हैं, डाक्टर रायचौधुरी?

परती : परिकथा–३६८

बहुत रात तक दोनों बेसुध होकर बातें करते रहे !

मिस्टर खानचंद गार्चा ने अचरज से कहा—अरे ! आपको अहले सुबह यह मछली कहाँ मिल गई ?

—माछ का दर्शन शुभ होता है। आप अॅभी फिल्ड पर जा रहा है ? लौट के आइए। आपसे एक बात है। बाद में बोलेगा।

इरावती को देखते ही डाक्टर ने कहा—लक्खी माँ। नील-अमलतास को बारे में अब बोलेगा। मिल गिया—नील-अमलतास !

—कहाँ मिला मामा ?

—गाँव में एक भॅद्रलोक है जितेन्द्रनाथ मिश्र, उसीको पुराना बागान में ! ई नाया बागान भी उसी का है। हि-हि ! माँ भी खुब है। कैसा-कैसा अपूर्व···।

—क्या नाम ? जितेन्द्रनाथ मिश्र ?

—हाँ। लेकिन, तुमको आबार क्या हुआ ?···माछ ले जाओ ! कि माछ नहीं छूता···छूती ?

—नहीं, मामा ! इरावती हँसी। इस नाम का मेरा एक बन्धु खो गया है। इसलिए पूछ रही थी।···हमारे प्रान्त का नहीं ! वह इसी इलाके में रहता है, कहीं। मैं उसको परतीपुत्तर कहती। सदा अपने इलाके की परती की बात छेड़ने वाला। वह मुझे पांचाली···।

डाक्टर रायचौधुरी मुस्कराए। इरावती के चेहरे पर आने-जाने वाले भावों को देखकर एक भठियाली गीत गाने का मन हुआ उनका—बधुआ तोमार मनेर मानुस, घाटे-घाटे डाके लो-ओ, नाम धरिया हाँके···।

—लेकिन, लक्खि माँ ! मामा को छाड़ि के, बन्धु को पानेवाला कोई नेहीं।···बहुत दिनन में बधुआ मिलल। मामा को नाहीं भूलल ?

इरावती हँसती हुई कैम्प के अन्दर चली गई। एकबग्गा हैं डाक्टर राय-चौधुरी! आज खुश हैं तो गीत गा रहे हैं। नहीं तो, बाद में बोलेगा छोड़कर और कोई जवाब ही नहीं देते।

इरावती ने झोली और छतरी उठाई अपनी!

कैम्प के आसपास के गाँवों में घूमना ही काम है। रात में लौटकर, मामा के बच्चों को और एसिस्टेंट कैम्प इन्चार्ज की तीन लड़कियों को एक साथ बैठा कर पढ़ाती है।

इरावती ने गाँव में प्रवेश किया। हलचल मच गई गाँव में!

पनघट पर भीड़ लग गई।···कम्फू की देवी-दुर्गा जैसी लड़की आ रही है! फेकनी की माय आगे बढ़ कर सलाम करती है—सलाम बीबीजी। आकि देखिये, हम दूर से ही देख करके चिन्ह लिया आपको!

—ओ! दूधवाली? यहाँ जितेन्द्रनाथ मिश्र रहते हैं, कोई?

—जित्तन बाबू? फेकनी की माय की आँखें नाचीं।

पनघट के पास सामबत्ती पीसी भी खड़ी थी। हँसती हुई आई—परनाम छोटी बीबीजी। जित्तन बाबू के पिछवाड़े में ही है, वह बुर्ज। चलिये, मैं ले चलती हूँ। मैं भी उधर ही जा रही हूँ। गाँव के लड़के अच्छे नहीं। ···सामबत्ती पीसी ने कैम्प में बैठ कर कितनी कहानियाँ सुनाई हैं छोटी बीबी को। उसके एक सवाल का भी जवाब नहीं देगी, छोटी बीबी?—जित्तन बाबू से आपकी पहले से ही जानपहचान है?···कभी खोज-पुछार तो नहीं किया आपने? कहाँ? पटने में? तब ठीक है।

इरावती प्रसन्न हुई, जितेन्द्र मिल गया!

—बस, इसी रास्ते से जाकर गोविन्दो का नाम लेकर पुकारियेगा।··· इस गाँव की बेटी बहुरिया हवेली में नहीं जाती। हाँ, कुत्ता बड़ा कटहा है! जरा, होशियारी से।

···खुट-खुट करती चली गई कम्फू की बड़ी-बड़ी आँखोंवाली देवीदुर्गा जैसी लड़की ! हवेली की ओर !

गाँव के कुछ नौजवानों ने सामवत्ती पीसी से कुछ पूछा तो पीसी चिढ़कर बोली—तुम लोगों की यह क्या आदत ! कोई जनिजति आई गाँव में कि पेट में छुछुन्दर छुछुवाने लगता है। कोई रहे, तुम लोगों को मतलब ? हवेली में गई है। जाओ न। पूछना कि कौन है और क्या है !

जितेन्द्रनाथ अपने कमरे की खिड़की से सामने पोखरे में पड़ती नारियल और सुपारी के पेड़ों की परछाइयों को देख रहा है।

—जितेन्द्र !···सरप्राइज्ड ?

—अरे ? इरावती ? तुम ? तुम कहाँ से ?

पर्दे को हटाकर इरावती खड़ी मुस्कुरा रही है ! जितेन्द्रनाथ ने कहा—अन्दर आओ ! मीत दौड़ कर दरवाजे के पास गया और सूँघने लगा। इरा ने चुमकार कर कहा—क्या नाम है तुम्हारा डियर ?

—वह मीत है। मीत ने सूँघ कर परखा, हाथ के स्पर्श से समझा—हथेली प्यारभरी है !

—इरावती को भूल नहीं सके हो, देखती हूँ। अभी भी उसकी तस्वीर तुम्हारी मेज के एक किनारे मुस्करा रही है।

जितेन्द्रनाथ अप्रतिभ हुआ—विश्वास करोगी ? अभी ही, कुछ ही क्षण पहले ढूँढ कर निकाली है। अचानक हजारीबाग की केनाड़ी की याद आई। ···और, इस तस्वीर में तुम्हारे पीछे केनाड़ी पहाड़ी भी मुस्करा रही है !

—क्यों, केनाड़ी की याद ही क्यों आई ?

—पाइरिथ्रम की खेती···।

इरावती हँसी—ओ-हो ! मालूम होता है डाक्टर रायचौधुरी आकर प्रचुर

पाइरिथ्रम का बीज बो गए हैं। तीन साल तक इस मक्खी मारने वाले फूल के पीछे लगे रहे। मक्खी मारना कहावत है न ?

—हाँ। लेकिन, जानती हो ? मैलेरिया, हैजा, प्लेग, टायफायड आदि मारात्मक रोगों के अलावा ये कीड़े-पतिंगे दुनिया की खेती को कितनी बड़ी क्षति पहुँचाते हैं ? अमेरिका में प्रति वर्ष २०० करोड़ डालर और सोवियत रूस में २५० करोड़ रूबल !

—आँकड़े पसारने की आदत तो नहीं थी, तुम्हारी ?

जितेन्द्र हँसा ! यह आँकड़ा पसारना शब्द उसी का कहा हुआ है। आश्चर्य ! इरावती भूली नहीं है···काम करने वाले सिर्फ काम करते हैं, आँकड़े नहीं पसारते फिरते !

मीत को ताजमनी के पाँव की आहट मिली। दौड़ कर दरवाजे के पास गया। फिर, उछलता-कूदता अन्दर आया। उछल कूद कर, वॉख-वॉख करता हुआ फिर बाहर की ओर गया। जितेन्द्र ने कहा—बहुत प्रसन्न है मीत !

—मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ। इरावती मुस्कराई मन्द-मन्द।

उस बरसाती रात की याद ? मेरी उँगली में उस रात की अँगूठी अभी भी पड़ी हुई है। उसी रात को गुरु ने मेरे कान में इष्टमंत्र दिया—काली !

बाहर मानसून के बादल आकाश में लरज आए थे !

हिमालय की ऊँचाई से टकरा लेकर वापस लौटे मेघ उ... ...ने

और झूम-झूम कर बरस जाते। झड़ी बन्द होती तो, कोठी की पक्की नालियों में पानी की कुलकुलाहट स्पष्ट हो जाती।

लगातार, तीन चार घण्टों तक कमरे में चहलकदमी करके राजकाज की बातें की थी, उन्होंने। उनका विश्वास दृढ़ था—बार्कर इस घटना की चर्चा भी नहीं करेगा कहीं। किन्तु, वह बदला लेने की पूरी चेष्टा करेगा। बिजली की हर कौंध पर उनकी उँगलियों में पड़ी अँगूठियाँ झलमलातीं। रह-रह कर उनके शरीर से शक्ति की एक तीखी गन्ध आती!

मम्मी बहुत देर तक चुपचाप बैठी कुछ सोचती रही। फिर, दस-पन्द्रह मिनटों तक उनकी ओर गौर से देखती रही।···प्रफुल्ल मुद्रा में मम्मी उठी और मुझे एकान्त में ले गई—सो यु लव मित्ता?···वह किसी राजा से क्या कम है?

—मम्मी! मैं मम्मी की छाती में मुँह सटा कर बोली थी—आइ कान्ट हेल्प!

—आइ'म ग्लेड···!

मम्मी ने पुतली के हाथ, मेरे कमरे में धूप और अगर पाउडर की डिबिया भेज दी। धूपदानी में अगर पाउडर डाल कर पुतली ने मेरी ओर देखा।···ओ, पुतली! आज धूप जलाने की क्या आवश्यकता? आज तो स्वयं गंधराज उपस्थित हैं। बादल थम चुके थे!···

घोर लाल रंग की धोती उनकी। घोर लाल रंग की साड़ी मेरी, रेशमी जरीदार! लाली क्रमशः बढ़ती गई! आकाश में छा गई। मेरी आँखें बन्द थीं या खुली मुझे नहीं मालूम! शक्ति की तीखी गन्ध निकलती है। उसी सुरभि के सहारे आगे बढ़ रही हूँ। तन्मय! आकाश-पाताल व्याप्त लाली पर काले-काले अक्षरों में लिख गया कोई—का-ली-ई-ई!···

मैं गोरी नहीं, काली हूँ अब। ब्लैक बेरी! जामुन, जमुना, काली, काला,

कृष्ण, कालिन्दी, काले-काले मेघ···कालिदास के देश की काली !···माँ मेरी और क्राइस्ट—यशोदा की गोद में बालगोपाल !

अरे ! मेरी आँखों में परमपश्यन्ती-दृष्टि कौन दे गई ?

···वेदी पर बैठी है, जगदम्बा !

मेरे तपते हुए ललाट पर उन्होंने रक्तचंदन का तिलक किया। मुझे लगा, उसी तिलकचिह्न के साथ सारी लाली—आकाश-पाताल में फैली—मेरी देह में समा गई। लगा, आग पी रही हूँ !···

मिश्रजी···अब मिश्रजी नहीं। परमगुरु—पति। सामान्य पुरुष नहीं—सम्पूर्ण पुरुष। प्राणकर पति ने मुझे छूकर देखा। गात्रदाह, मर्मदाह मेरा शान्त हुआ, एक निमिष के लिए !

सुबह को पुतली ने बाहर से पुकारा। जगी तो लगा, मेरा दूसरा जन्म हुआ है। दौड़कर मैं आइने के पास गई—हे भगवान् ! मैं कहाँ खो गई ? मैं कहाँ चली गई ? यह मैं ही हूँ ?·· ललाट पर रक्त-चन्दन के तिलक के चारों ओर पीले चन्दन की बिन्दियाँ ! कपोल पर हरसिंगार जैसे दो फूल रक्त-चन्दन से ही अंकित !

···कनपटी के पास। वक्षस्थल पर···!! चन्दन की नन्हीं-नन्हीं बिन्दियों में मैं खो गई।···तो, सारी रात मुझे चन्दन-चित्रित करने में काट दी ?

मेरे रोम-रोम में एक स्वर्गिक सुगन्ध बस गई !

आरसी के पास मैं ठगी-सी खड़ी थी। पीछे से आकर मेरे कन्धे पर हाथ धरकर धीरे से बोले—कौन हो तुम ? यह या वह ?

···मेरे पति की छाती जल रही थी। आनन्दातिरेक में बरसती आँखों के आँसू से शान्त होगी यह ज्वाला ? काली !

हम दोनों ने एक साथ माँ का ध्यान किया : साकारशक्तिस्वरूपा, दिगंत-

वसना, खड्गमुण्डाभिरामा, पुरातनी, परमार्थी···!!

मैं हिन्दू हो गई !

मम्मी ने सुना तो स्तब्ध रह गई।···नहीं, मम्मी नहीं ! मरियम और काली में कोई अन्तर नहीं। एक ही शक्ति के दो नाम !

बार्कर काण्ड के दस बारह दिन बाद सदर से फादर आए। मेरे ड्राईंगरूम को कालीमन्दिर समझ कर, बाहर ही रहे—बरामदे पर। उन्होंने मेरी ओर गौर से देखा। मेरी आँखों में कुछ देखने की चेष्टा की।···परम गुरु ने मेरे मन के पद्मासन पर माँ की मूर्ति प्रतिष्ठित कर दी है। क्या देखते हो फादर ? मरियम और तारा !···फादर दो कदम पीछे हँट गए !

···भागो मत फादर ! दो कदम आगे बढ़ आओ। मुक्त, उदार हृदय से विचारो—तुम भी मातृपूजक और हम भी।

फादर तेजी से रोजरी के दाने घुमा रहे थे। उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं कहा। एकबार माँ काली की छवि को गौर से देखने के बाद, कुछ बोलने को उनके ओठ फड़के। किन्तु, चुपचाप रहे। फिर धीरे-धीरे बरामदे से नीचे उतर गए।···बहुत दुखी, बहुत अप्रसन्न !

मम्मी ने स्पष्ट शब्दों में कहा—क्या बुरा किया ! इसी जिले में दो राजा और एक जमींदार की अंग्रेज पत्नियों ने हिन्दू धर्म को स्वीकार किया है।

फादर ने अपनी सम्पनी में बैठने के बाद माँ को घायल करने की चेष्टा की —मदाम ! तुम भी अपने लिए कोई हिन्दू पकड़ो !

मम्मी घायल नहीं हुई। मम्मी को बहुत सहना पड़ा है, जीवन में। उनके किसी पुराने घाव को ठेस लगती है, ऐसी बातों से। मैं जानती हूँ, मम्मी कई दिनों तक मौन रहेगी।

एक ही रात में, अचानक दस-दस गाँव के अशिक्षित लोगों को धर्म-परिवर्तन करानेवाले—अपने धर्म की एक सामान्य महिला से इतना अप्रसन्न

क्यों ?

मम्मी ने ठीक समझा है—धर्म-परिवर्तन करके किसी नेटिव राजा की रखैल की तरह रहने से इन्हें दुख नहीं होता। तुम देवी-देवताओं की पूजा करने लगी हो। आचार-विचार भी बदल गए हैं, तुम्हारे। तुमने फादर को बैठने के लिए कुश की आसनी क्यों दी ? तुम वेदान्त क्यों सुनाने लगी ? तुमने मरियम और काली को समतूल कर दिया···! मम्मी हँसी। मम्मी की उल्लासिनी मूर्ति ! माँ हँसती है—माँ काली हँसती है ? मुझे क्या भय ? क्या भय ??

ग्रेटी के पति राजा महिपाल सिंह अच्छा करते हैं ! प्लांटरों को साल में चार-पाँच भोज देते हैं। गार्डन-पार्टी, कॉकटेल और एटहोम देकर मुँह बन्द कर देते हैं। राजा महिपाल सिंह की शिकारपार्टी का निमंत्रण ? पूर्णियाँ-डे के उत्सव में, राजा साहब की शिकारपार्टी की तारीफ सुनाते समय बूढ़े मोबर्ली के मुँह से, वास्तव में लार टपक पड़ी थी।···गैलॅन्स ऑफ गैलॅन्स ह्वाइट हॉर्स एण्ड ऑल दैट यू वांट इन ए जंगल ! मिसिस मोबर्ली राजा साहब के साथ हाथी पर चढ़ने का अनुभव बताते समय कुर्सी हिलाने लगी थी।

ग्रेटी ने मुझे बताया—राजा साहब के सामने सभी प्लांटर्स हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। मैंने एक मीठी चुटकी ली थी—इसीलिए, प्लांटर्स क्लब की सीमा के इस पार अपनी गाड़ी लाने की इजाजत नहीं !

—सिस। ओठों पर उँगली डाल कर ग्रेटी ने मद्धिम आवाज में बताया—हीं'ज टू क्लेवर। उसने खूब पहचाना है इन्हें। मिस्टर विलियम को देखा न ! कैसी-कैसी शेरमार कहानियाँ सुना रहे थे। वास्तविकता यह है कि पिछले साल नेपाल के जंगल में एक गैंडे को देख कर हाथी पर बेहोश हो गए थे।···

ब्रंटी के पति से, पूर्णियाँ-डे के लिए दो हजार रुपये लेकर भी प्लांटर्स क्लब वालों ने उनको निमन्त्रित नहीं किया। इस बात की चोट ब्रंटी को लगी थी। बोली—देखना! वह जरूर इसका बदला लेगा। यों लापर्वाह और मस्तमौला है मेरा राजा। लेकिन जिद्दी भी है। चाहे तो खिताब भी ठुकरा दे, इस जिद में।...राजा ने एक अलग क्लब की स्थापना करवाई है—स्थानीय वकीलों के द्वारा। जिले भर के राजाओं, जमींदारों और वकीलों का क्लब होगा—स्टेशन क्लब! मुझे सेक्रेटरी बना रहे हैं!

मेरे पतिदेव कह रहे थे—राजा महिपाल सिंह अन्दर-ही-अन्दर चिढ़ा रहता है, एक-एक प्लांटर से। मौका पाकर एकाध को बेइज्जत भी करता है। और, कभी-कभी अपने पाले हुए डकैतों की पीठ ठोंक देता है।...रात में डकैती हो जाती है! ब्रंटी का हरकारा सिपाही कल आया।

ब्रंटी ने बधाई भेजी है—राजा कहता है, तुमको बहुत अच्छा आदमी मिला है। बहादुर और बुद्धिमान। ए बिग संस्कृत स्कॉलर...नाउ यू नो बेटर! क्लब के उद्घाटन में तुम्हारी अनुपस्थिति खटकी। स्टेशन क्लब में तुम्हारे पति की ओर से पार्टी का प्रबन्ध कब करूँ? हाँ, मैं सेक्रेटरी जो हूँ।

मैंने भी लिख कर जवाब भेजा : क्लब के उद्घाटन में नहीं आ सकी। दुख है। जब सुविधा हो, पार्टी की व्यवस्था करो। मुझे खुशी होगी।...और, यह मेरी जिन्दगी की अन्तिम अंग्रेजी-पार्टी होगी। इसके बाद तो प्रीति-भोज। टेबल-कुर्सी नहीं, चन्दन की पीढ़ी पर बैठना होगा तुम्हारे गुलथुल राजा को!...

मेरे अंग्रेज भाई-बन्धु क्यों नाराज हैं, यह मैं जानती हूँ!

मिस्टर बार्कर ने अपनी बदली करवा ली है—सोनपुर सेक्शन में। मेरे पति ने हँस कर कहा—गीता! तुम्हारा मोटर ट्राली सड़का! हा-हा-हा!! मुझ पर इल्जाम लगाते हैं वे—एक डकैत, जालसाज, खूनी आदमी से

मैंने रिश्ता किया है। बार्कर प्रचार कर गया है, मलय में मैंने अपने स्वामी की हत्या की है !…

शैतान !

मेरे पति यदि डकैत हैं, क्रिमनल हैं तो, कानून किसका मुँह जोहता है ? पकड़ कर फाँसी पर क्यों नहीं लटका देते ? प्रमाण इकट्ठा करना तो आसान है। अंग्रेजी राज में एक इंगलिश हेटर इस तरह विचरण करे, यह आश्चर्य की बात है !

प्लांटर्स के प्रबल प्रताप के दिन अब नहीं रहेंगे, क्या ? सुना है, पाँच-सात साल पहले तक ये खून करके आते और जिला मैजिस्ट्रेट को लिख भेजते—आज मैंने एक जंगली आदमी का शिकार किया है। बनमानुस !

किन्तु, आश्चर्य ! मेरे पतिदेव अंग्रेजों के सभी आरोपों को स्वीकार करते हैं—हाँ, गीता। तुम्हारे भाई-बन्ध ठीक ही कहते हैं। मैं डकैत हूँ, जालसाज हूँ, ठग हूँ, खूनी हूँ !

पहली बार, अपने स्वामी के साथ इलाके में गई थी, मैं। अर्धवार्षिक कैम्प में। मधुचन्दा कैम्प। मधुचन्दा, गाँव का नाम है। दुलारीदाय के कगार पर, चार माइल दक्खिन बसा हुआ, मधुचन्दा। मधुचन्दा—हनीमून ?

खजाना वसूली के लिए जेनरल मैनेजर का कैम्प इलाके में दो बार जाता। अर्धवार्षिक—एक सप्ताह का। वार्षिक—सवा महीने तक।…

…राशि-राशि पुरइन के फूलों की वह सेज ! गाँव की मालिन लड़कियों को एक-एक गिन्नी पुरस्कार दिया गया था !!

पुरइन की सेज पर, महाभाव से मतवारी मैं ! मेरी आँखें, नशे में चूर ! मैं बोली—काला, डकैत ! डकैत नहीं तो और क्या ? तुमने तो मेरा सब कुछ लूट लिया। काली का बेटा काला !

—मुझे दण्ड दिया जाय, महारानी विक्टोरिया ! मेरे स्वामी ने मुस्कराकर

हाथ जोड़े। मैंने चरण धूलि ली, झुककर। मैंने अपने स्वामी को डकैत कहा ? मुझे क्षमा करो देव···!

—गीता ! मैं आज जी खोलकर कहना चाहता हूँ !

[कमल के कुछ फूल अंकित हैं—पांडुलिपि पर !]

···क्या, तुम समझती हो कि बिना डकैती किए ही आदमी राजा हो जाता है ?

लड्डू लड़े तो बुंदिया झरे !

गरुड़धुज झा जरा सोच में पड़ गया है। लड्डुओं को लड़ा कर तीन साल तक झड़ी हुई बुंदिया बटोरी है उसने। लेकिन, अब तो लड्डू लड़ते ही नहीं ! ···बुंदिया कैसे झरे ?

उसको भरोसा था, भूदानियों और सरवन बाबू में जम कर मुकदमेबाजी होगी। किन्तु, भूदानी लोग भी अजीब जीव होते हैं ! इतनी मार पड़ी, सिर फूटे और हाथ-पैर टूटे। पर बजाप्ता-फौजदारी की बात तो दूर—पुलिस-केस भी नहीं किया भूदानियों ने ! घायल भूदानियों को अस्पताल भेज कर, खँजड़ी पर गीत गाने लगे—भइया जमींदरवा से करता अरजिया से···। और, सरवन बाबू को क्या कहा जाय ? भूदान के नेता ने दरवाजे पर आकर जरा-सा अनशन करके मरने की धमकी दी तो, दोनों भाई सर्वोदय आश्रम में जाकर माफी माँग आए। गरुड़धुज माफी माँगने वालों और देनेवालों—दोनों को हिजड़ा समझता है।···

गरुड़धुज झा घर-घर का हाल जानता है।···ऊँचे चढ़ के देखा, घर-घर

एके लेखा । लेकिन, ऐसा कभी न देखा । गरुड़ झा ने क्या, किसी ने नहीं ! और कोई माथा घमावे या नहीं, गरुड़ झा भंग के नशे में कभी-कभी सब कुछ देखता है । एक-एक घर की तस्वीर···एक-एक परिवार के हरेक सदस्य को हवा में डोलते हुए देखा है, उसने । इसलिए, गरुड़ झा को पूरा भरोसा हुआ—उसका व्यापार कभी मन्दा नहीं होगा । गाँव थिर नहीं । पहले से भी ज्यादा वेग से दौड़ रहा है सारा समाज ! गरुड़ झा बेकार घबड़ाता है । सोच में पड़ने की जरूरत नहीं । लड्डू लड़ेंगे, बुंदिया झरेगी ।···झर-झर झरते हुए-लोग !···

बता दे कोई गरुड़धुज को एक भी परिवार की ओर—आँख के इशारे से ही सही ! कोई घर साबूत नहीं । क्या गरीब, क्या अमीर ! इतने दिनों तक सर्वे में जमींदार की जमीन हासिल करने और दर-रैयत से जमीन बचाने के दाँव-पेंच में रहे । अब, परिवार का एक प्राणी दूसरे प्राणी की ओर संदेह भरी निगाह से देख रहा है । एक-एक आदमी अपने को एक किला बना रहा है । सभी कछुए हुए जा रहे हैं ?···

गरुड़धुज झा के पास दिन-रात मवक्किल लोग चक्कर मारते हैं ।···क्यों झा जी ! मान लीजिए कि एक बाप के तीन बेटे थे । मर-खप कर दो भाई रहे । तीसरे भाई की बेवा को छोड़ कर दोनों भाई की बहू समझ लीजिए कि कागबन्ध्या और काठबांझ हैं ! तो, बचे हुए दोनों भाइयों का हक ?

—हक ? जो हाथ सो साथ, जब तक जीवे-पेट भात !

—क्यों पंडित जी, बाप को हक है कि अपनी स्त्री के नाम से उइल कर जाय—बेटे के रहते ?

—बाप को कुपुत्तर करने का हक हमेशा दे दिया है, पंडितों ने ! क्या करोगे ? गरुड़ झा पत्थर का दाँत चमका कर, खैनी ओठ में दाब लेता ।
—आप ही विचारिए ओझा जी । बेटा अपने कोख का है । लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि बेर-बेर हजार-हजार रुपया माय-माय कह कर ले और देने के बेर उकट-नाकट गाली ! यह कि उसके बाप या दादा का

कमाया हुआ पैसा है ?···जब से आई हूँ—राख की ढेरी ही देखी ! ओझा जी ! बेटा किरिया कहती हूँ—सब मेरे नैहर का है ! बोलिए, दूसरी जगह मेरा रुपैया बैठा तो नहीं रहता ? सो, कल से कह रही हूँ, कागज बना दे भैया के नाम। तो, लाठी लेकर मारने आए दोनों प्राणी ? ओझा जी···!

—छिः छिः ! आप की जैसी स्त्री भी रोती है, भला ? बिना कागज बनाए, अब एक पैसा भी नहीं दीजिए। आ रहा है, मौका सामने ! आप के बेटे को फिर हजार-बारह सौ की जरूरत होगी।—गरुड़ झा फुसफुसा कर बोलता है !···

और-तो-और, गरुड़धुज झा का सबसे जिगरी दोस्त रोशन बिस्वां भी दरार पड़ी दीवारों वाले घर में ही है। आज नहीं तो कल, उसका बेटा लड़ाई-झगड़ा करके भिन्न होगा-ही-होगा। गरुड़ झा सतर्क होकर देख रहा है—दीवार गिरी-गिरी ! रोशन बिस्वां या उसका बेटा-दो में से एक अथवा दोनों ही उस दीवार के नीचे आ जायँ तो ?···गरुड़ झा ने अपना नियम बना लिया है। पुरोहित जजमान का पुराना रिश्ता उसका घर-घर से है। हर घर में श्राद्ध करके वाजिब दक्षिणा लेने का हक उसको है।···मुवक्किलों को अपने दरवाजे पर से निराश करके लौटाने में पाप होता है मुकदमा-बाजों को !···लेकिन आश्चर्य ! बलभद्दर का शिवभद्दर घर से लड़कर जब इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा तो गरुड़ झा ने सोचा, एक चरखी को जरा चला दिया जाय ! सो, एक-एक कर तीनों भाइयों को पम्प दिया गरुड़ झा ने। फूले भी थे तीनों, अलग-अलग खूब। लेकिन, लगता है कहीं से हवा धीरे-धीरे लीक करती है। इधर कुछ ढीले हैं, तीनों !

—क्यों लुत्तो बाबू ! अपने दोस्त बीरभद्दर बाबू को नहीं समझाते ? समय टल जाने पर टाइटिल-सूट तो नहीं चल सकता; कलेजा कूटने से भी कुछ नहीं हाथ आयगा, बाद में।

—झा जी ! कौन किसका दोस्त ? किसको क्या समझाया जाय ? मालूम नहीं आपको ? आज सुबह से ही तीनों भाई हवेली में घुटना टेक कर दही-

चुनिया उड़ा रहे हैं। पता नहीं क्या बात। धरकट्ट कहीं के !!···लुत्तो उदास है।

—हवेली में ? सो कैसे ? गरुड़धुज ने थू-थू कर खैनी थूक दी।

—तिरिया-चलित्तर ! वीरभद्दर की स्त्री कालीपूजा की रात कीर्तन सुनने गई। न जाने वहाँ कैसे जित्तन से आँख लड़ गई। देवर लगता है न !··· दूसरे दिन सुबह उठ कर, गोदी में एक महीने के बेटे को लेकर चुपचाप हवेली में जाकर हाजिर हो गई। सुना है, जित्तन ने पाँच भरी सोने की मोहनमाला दे दी। अपने बचपन की मोहनमाला क्या दे दी, तीनों भाई गदगद हो गए। ·· आज तीनों भाई मिलकर हाजिर हुए हैं ! लेगा, एक-एक मोहनमाला तीनों भाई—देखूँगा ! वहाँ अन्दर हवेली में कौन घुसी है ? तजमनिया कानी कौड़ी नहीं देगी ! लुत्तो ने अपनी उदासी को ढँकते हुए कहा—जाने दीजिए ! पीछे मजा मालूम होगा ! कांग्रेस में तो अब गुजर नहीं, उसका। सभापतिजी से कह कर तुरत इसपेल्ट करवाते हैं।···ग्रामपंचायत के चुनाव की तारीख भी अब करीब है !

रोशन बिस्वां सायकिल की घण्टी बजाता हुआ आया ! आजकल, उसने अपनी सायकिल में मेढ़क की तरह बोलनेवाला हारन भी लगाया है—

—पें-ऐं-ऐं-ग-पें-ऐंग ग !!

लुत्तो चमक गया ! रोशन बिस्वां ओठ चाटता हुआ सायकिल से उतर पड़ा। फिर, मुस्कुरा कर दो बार जीभ ओठ पर निकालने के बाद बोला—

—सुना कि आज पोखरा में महाजाल डालने गये हैं, चौधरी तीनों भाई !

गरुड़धुज झा ने कनखी देते हुए कहा—सब मछली निकलेगी !···न जाने क्यों, तीनों एक ही साथ ठठा कर हँस पड़े—हा-हा-हा-हा।

हँस कर कुछ हल्का हुआ दिल। तब गरुड़धुज झा ने गम्भीर होते हुए बात खोली—हाँ, अब ग्राम पंचायत के बारे में क्या सोचते हो, लुत्तो बाबू ?··· जित्तन तीनों भाइयों को ही नहीं, सारे गाँव के लोगों को तीन दिन-है खाना खिलाने का प्रबन्ध कर रहा है। सो, पॉकेट में नहीं। कुछ समझते हो ?

—खूब समझते हैं। लुत्तो और रोशन बिस्वां ने एक ही साथ कहा !
रोशन बिस्वां आजकल लुत्तो को रुपये-पैसे से भी मदद करने लगा है, समय-असमय ! बोला—रास्ते में खड़ा होकर बतियाना अच्छा नहीं। कहीं, चलिए··· ।

—कहाँ चलें ? गरुड़धुज झा ने कूट किया—आपके भी यहाँ बैठकर कोई बात बतियाना अब ठीक नहीं। रोशन बिस्वां ने कबूल किया—हाँ, आप ठीक कहते हैं झा जी ! अब मेरे घर में भी छेद हो गया है ! बहुत सोच-विचार कर चले तीनों, सबसे सुरक्षित स्थान···नट्टिन टोली !

·

महीचन रैदास से मलारी की बात मत पूछे कोई ! लड़ाई हो जायगी उससे, मुफ्त ही। आजकल, वह दिन-रात कलाली में पड़ा रहता है। जाने के पहले मलारी ने अपनी माँ के हाथ में पचास रुपये दिए थे। रमदेवा के सामने ही। मलारी के घर से गायब होने के बाद मलारी की माँ ने धरती खोदकर छोटकी टुमनी निकाल के देखा था।···रमदेवा अपने बाप का बेटा है, वह मलारी नहीं। महीचन से छिपाकर रखेगी रुपये घर में ? मार-पीटकर छीन लिया—साली ! जैसी माँ वैसी ही बेटी। तुम इस रुपये से मदनपुर के मेले में सैल-सप्फड़ करने जायगी ! जातिवालों को भात कहाँ से देंगे री-साली ! तेरी बेटी ने सरकारी शादी की है तो कहे न सरकार-बाप से—जातिवालों का भात कहाँ से आवेगा ? बोल ?···खोलती है मुट्ठी कि लगाऊँ लात ?···

जाति के सर्दार झल्लू मोची और दीवान बोतन मोची को वह रोज दारू पिलाता है। यह कांग्रेसी बात नहीं कि बालगोविन्द से अब कहने जाय कुछ। बालगोविन्द भी जाति के सर्दार से बाहर कैसे हो सकता है ? महीचन ने जाति के सर्दार से मिलकर तय किया है, समय-समय पर मलारी की माँ से जातिवाले भोज जरूर माँगें। हुक्का-चिलम बन्द करने की भी धमकी

दें।···

महीचन, अपनी बेटी पर जन्म के बाद से ही दाँत कटकटाता है।···साली इतनी गोरी कैसे हो गई ? सौर घर में ही घुसकर उसने अपनी स्त्री को लात से मारते हुए कहा था—अब बोलो ? यह गोरी-लारी छौंड़ी मलारी कहाँ से आई ? इसका मुँह भोगेन्दर भुमिहरवा के जैसा क्यों है ?

कई बार महीचन ने इस लड़की को गला टीपकर मारने का भी विचार किया।···लेकिन, इसकी माँ हमेशा कलेजे से सटाए रहती बेटी को। नाम लेकर पुकारती—मलारी ! महीचन चिढ़े तो चिढ़े। अपनी बेटी को—अपने पेट की बेटी को वह बचायगी नहीं ?

मलारी बढ़ती गई और महीचन का गुस्सा भी उसी अनुपात में बढ़ता गया। मलारी की माँ कम चालाक नहीं। दो वर्ष की उम्र में ही मलारी की शादी करा दी उसने, एक जवान रैदास से !···दो वर्ष की बेटी अपना धन नहीं। पराये की चीज है, कोई कुछ नहीं कहे ! लेकिन, वर्ष लौटते-लौटते मलारी बेवा हो गई। दो बरस की बेटी की माँग भरवा कर उसने जमाई को घर-जमाई करके रखा।···महीचन एक साल नहीं, दो साल तक देखता रहा, तिरिया-चलित्तर का नया-से-नया खेल। आखिर, एक दिन घर-जमाई और ससुर ने एक दूसरे पर अपना पुराना गुन फेंका। मवेशी को जहर-महुरा खिलाने में दोनों मशहूर !

मलारी की माँ को कुछ नहीं मालूम ! जानते हैं, ऊपर जो जल रहे हैं देवता सुरुज महाराज ! मलारी की माँ को मालूम रहती बात तो···। साँप भी मारती और लाठी भी नहीं टूटने देती। अपने जमाई को भिन्न करके उसका कारबार अलग कर देती, मलारी की माँ। यह काम तो दोनों ने गुपचुप करने का मंसूबा किया।

···जिसको गोली पहले लगी वह मर गया ! मलारी बेवा हो गई !

मलारी की माँ ने देखा है, बचपन से ही मलारी की बुद्धि बबुआनों की बेटी जैसी ! पढ़ने-लिखने का ऐसा शौक कि भाग कर कब चली गई

एकदिन पढ़ने, किसी को मालूम नहीं। और, ट्रेनिंग भी लेने गई ठीक वैसे ही !···भोगेन्दर बाबू ने एक दिन रास्ते में देखा था मलारी को और देखते ही रहे थे, कुछ देर तक ! आखिर, जहाँ की थी—वहीं चली गई। मलारी की माँ ऊँघ रही थी। कोई आ रहा है, शायद !

—महीचन जी !

—कौन है ? क्या काम है ?

—मैं दीवाना। महीचन जी कहाँ हैं, माँ जी ?

दीवाना के दावे को कोई गलत साबित कर दे। ···वह सबसे पहला माई का लाल है, गाँव का—जिसने खुले शब्दों में मलारी से प्रेम की भिक्षा माँगी थी, बचपन में ही। कोई, कसम खिला कर पूछे मलारी से। आज-तक दीवाना ने किसी लड़की की ओर नजर भी उठा कर नहीं देखा ! मन-ही-मन कलात्मक प्रेम करने लगा वह। और, उधर सुवंशलाल जीवन बीमा करते-करते लूट ले गया।···जीवन, यौवन-प्राण गँवा कर भी वह जी रहा है—माँ सरस्वती की कृपा !···

दीवाना ने बहुत सोच विचार कर एक नई बात निकाली है। वह रैदास-टोली के सर्दार—दीवान से लेकर पंच-पंचान से साफ-साफ कहेगा–सुवंशलाल ने मलारी के साथ, सभी रैदास की जाति ले ली है। दीवाना ऐसा नहीं ! वह जाति लेगा नहीं। वह देना चाहता है—वह रैदास हो जायगा। हरिजन ! ···हरिजन होने में नफा हो या न हो। गाँधी जी के प्रिय थे—हरिजन ! वह हरिजन बन कर दिखला देगा, वह रैदास होकर रहेगा। अपनी जाति में लेकर देखें, हरिजन के लिए जान देता है या नहीं। वह ढोल बजावेगा, पिपही बजावेगा, चाम का कारबार करेगा, चमरौधा जूता सीयेगा, यहाँ तक कि माल-मवेशी को जहर-महुरा भी खिला सकता है। उसके दो दर्जन बैल, एक कोड़ी गाय लोग चुरा कर ले गए हैं। वह क्यों छोड़ देगा ? और, यदि कहें जातिवाले कि जूता अंडी के तेल में भिगा कर फलाने के सिरपर मार आओ—करके दिखा देगा, दीवाना।···जिसके सिर पर कहें !

—बाबू साहेब, जरा गला दाब कर बोलिए। अड़ोस-पड़ोस में हितमुदैया लोग हैं।

—नहीं, नहीं। मैं डंके की चोट पर बोलूँगा। सुनिए माँ जी! मैंने कल एक कहानी लिखी है। कहानी छपने पर तो दुनिया वाले पढ़ेंगे। लेकिन, आपलोगों को पहले ही सुना देता हूँ। 'कलात्मक-प्रेम की सचाई की परीक्षा' उसका नाम है। महीचनजी को भी आने दीजिए! हाँ, हाँ। मैं इसी चटाई पर बैठूँगा! आप दोनों सुनिए मिल कर। देखिए कि आप लोगों के दुश्मन—ऊँची जातिवालों पर, बड़ी-बड़ी पगड़ी वालों पर किस तरह भींगा हुआ चमरौधा लगाया है, मैंने।···हरिजन-उद्धार खेल बात नहीं। कोई सच्चा हरिजन प्रेमी नहीं। दीवाना का दावा है!···महीचन ने बाहर से ही पुकार कर कहा—डेरा में कौन बोलता है रे रमदेवा?

रमदेवा ने दौड़ कर बाप की अगुवानी की। उसने उत्तेजित होकर कहा—रजपूत टोली का है, बप्पा! एक लाटी माथा पर कस के लगायें? मैया को भी फुसलाने आया है।

भँगनी सिंह दीवाना जानता है, किस देवता की पूजा में कौन सी चीज चढ़ती है।···महीचन ने दारू की बोतल को ढिबरी की रोशनी में देख कर समझ लिया—तीस नम्बर!!

नट्टिनटोली गुलजार है, फिर!

गंगाबाई नट्टिनटोली की सर्दारिन ही नहीं, मालकिन भी हो गई है। बिना उससे पूछे अब कोई किसी पुरुष से प्रीत नहीं जोड़ सकती। मेले में गंगाबाई ने बड़े-बड़े हाकिमों की बोलती बन्द कर दी! गिरोह की नट्टिनों ने गंगाबाई की मर्दानगी देख ली है। वे, अब अपनी सर्दारिन का पैर पूजती हैं। सर्दारिन की डिबिया में आजकल अफीम की दूनी गोलियाँ रहती हैं!···डिबिया छौंड़ी पर नजर रखना होगा। मेले का खाया-पिया मुँह है।

कहीं अपथ-कुपथ खाकर जान न दे दे। माँ तो उसकी चंडालिन है !

—क्यों री हिरिया। तुझे कबूतर का मांस खाना मना है न ? तेरे लिए आग है आग। सो, समझ ले !

—नहीं काकी। माँ से कह रही थी कि काली माय को एक जोड़ी कबूतर क्यों नहीं चढ़ा आती, मानत करके।

चढ़ती अगहन की साँझ ! दूर, दुलारीदाय के खेतों में अखता अगहनी धान काटने वालों की टोली—पुआल में आग लगाकर हुलास से ताप रही है। गंगाबाई अपने ओसारे पर अँगीठी के पास खाट पर पाँव मोड़ कर बैठी है। गेंदाबाई एक बोतल दारू पीकर आ रही है। अँगीठी के पास आकर हँसती हुई बोली—जाड़ बड़ी जाड़, बूढ़ी खेलाड़; बूढ़ा भेल ठंडा कि कथरी सँभार—हि-हि-हि-हि !

—दूर हरजाई ! गंगाबाई की मिस्सीमजित दंतपंक्तियाँ अँधेरे में नहीं दिखाई पड़ती हैं। लगता है, मुँह के अन्दर अँधेरिया का एक टुकड़ा समा गया है। निःशब्द हँसी हँसती हुई बोली—ठहर ! आ रहा है तुम्हारा ताड़ का पेंड़ गरुड़ा और कड़ाही की पेंदी बिरवां। गंगाबाई की बात पर गेंदा-बाई हँसी—हँ-हँ-हँ ! फिर, बीड़ी सुलगाती हुई बोली—जानती है नानी ? ई करिया-कलंदर का मन तो डोल रहा है !

—मन डोल रहा है ? किस पर ? गंगाबाई ने इशारे से पूछा।

—और, किस पर ? गेंदा ने हिरिया के घर की ओर कनखी मार के कहा—मेरे दूसरे आसामी की मेहरबानी है, ई सब। वह देखने में ही लम्बा नहीं, उसकी जीभ भी लम्बी है। उसी ने बिरवां को उचकाया है। मैं खूब जानती हूँ। आवे तो आज !

गंगाबाई मन-ही-मन हिरिया की माँ पर नाराज है। वही, कहावत है न—छौंड़ी सिखावे बुढ़िया को खेल, देखो भाई समय का खेल।···मेले की बहुत-सी बातें हैं। गंगाबाई किसी दिन खोलकर मन को साफ कर देना

चाहती है। अवसर देख रही है। बोली—तो, इसमें डरने की क्या बात ? मेले में हिरिया की माँ ने ही लड़ाई-झगड़ा करके, कानून पास करवाया है कि किसी के मवक्किल को कोई नहीं फुटकावे। जो कानून मेले में, वही गाँव में !···हिरिया की बीमारी का पता नहीं है अभी किसी को !

गंगाबाई से रार करके पार नहीं पा सकती हिरिया की माँ। मेले में जाकर गंगाबाई का कलेजा और भी दो हाथ बढ़ गया है। उसके बाल फिर से काले हो रहे हैं और आजकल वह दिन-रात रंगीन साड़ी पहनती है।··· गंगाबाई नहीं रहती तो कोई नट्टिन इस साल मेले में तम्बू नहीं गाड़ पाती। कितने झमेले !···

सबसे पहले ही, मेले के मुस्ताजिर ठेकेदार से टकठक ! मेले से आध माइल पच्छिम ही सरकारी सिपाही के साथ रास्ता रोक के हुकुम सुना दिया—नया कानून पास हुआ है। मेले में कोई रंडी-पतुरिया—मोजरा गानेवाली हो या तम्बुकवाली, किसी को बसने का हुकुम नहीं है। गाड़ी खोलो ! नाम लिखाओ—सिपाही जी को पहले···। मेले के चारों ओर छेकी हुई रंडियों के झुंड ! जिले के बड़े-बड़े कस्बे की कस्बिनों के होश उड़ रहे थे—देहातिनों की क्या बात ? अपनी-अपनी एंठ-गंठ, गठरी-मोटरी, हांस-मुर्गी, लटकन-फुदना, तम्बू-कनात के साथ कुछ धनखेतों के पास, कोई पक्की-सड़क के पुल के नीचे तीन दिन से पड़ी हुई थीं। ···क्या करेंगी ? सिपाही का पहरा चारों ओर। मुजरा-खेमटा गानेवालियों फारबिसगंज स्टेशन के प्लेटफार्म पर, पड़ी-पड़ी आती-जाती गाड़ियों से उतरनेवाले यात्रियों को देखकर कहतीं···इस बार, पाट का भाव तेज है न ! न जाने, खुदा को क्या मंजूर है ! सभी किस्म की नटिनियों की जमात मुर्झाई हुई—पास के पैसे गुड़ाकर खाती रही !

तीसरे दिन, गंगाबाई पर परानपुर परती पर रहनेवाली कोई देवी आकर सवार हो गई, शायद।···देहात की नट्टिनों में भी परानपुर की नट्टिनें ! जो, पहली बार मेले में तम्बू लेकर आई हैं। पटेटी-हॅसा, होरिल बेगला,

टोल मीरगंज और खुट्टी-खरैया की खुर्राट नट्टिनों से कुछ मदद नहीं माँगी गंगाबाई ने। गाड़ी से उतर कर सीधे मेले की ओर चली।···तम्बू नहीं गाड़ने दें, मेला जाने से भी रोकेगा कोई? वह सीधे मेले के डाक-बँगले पर गई और चौकीदार को सलाम कर बोली—अन्दर में कौन हाकिम हैं भैया?

चौकीदार ने धीरे से कहा—इशडिवो साहेब हैं।···इशडिवो कहते समय उसके मुँह से एक सिसकी-सीटी जैसी निकली—शी-ई!

लेकिन, गंगाबाई डरी नहीं। डाकबँगले के बारामदे पर जाकर गुहार दी—हुजुर माय-बाप!

डाकबँगले की कोठरी से तुरत बाहर आ गये, हाकिम! गंगाबाई ने सलाम करके कहा—हुजुर माय-बाप! मेले में यदि नहीं बसने देंगे तो हम खायेंगे क्या? कौन उपाय करके पेट पालें? गंगाबाई पर सचमुच कोई देवी ही सवार हुई थी!

हाकिम ने झुँझला कर सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा—क्या बकबक करती है! दुनिया में कोई काम ही नहीं···इ-इ-इसके सिवा?

—हुजुर! बेअदबी माफ करल जाउ। मेले की आमदनी से ही हम लोगों का सालभर का खर्च निकलता है।···और, जब सरकार की ओर से ममा-नियत है तो कानून सबके लिए एक बराबर है। एकतरफा, गरीब मार नहीं कीजिए हाकिमबाबू!

—क्या एकतरफा?

समझाना शुरू किया—हाँ ! पान बेचनेवालियाँ—गिनते जाइए—एक ! दोयम—हरमुनियाँ पर घूम-घूमकर मेले की हरेक पट्टी में गाने-नाचनेवालियाँ, न जाने कहाँ से आई हुई छोकरियाँ, किस देश की !…वही ! सुनिये, गा रही है—ऊँची-ऊँची दुनिया की दीवारवाला गीत। दारोगा-हवलदार, सिपाही-मुस्ताजिर सबके कन्धे पर हाथ डालकर गाती है न। पाकिटकाट छोकरियाँ…।

हाकिम साहब ने हाल में ही तरक्की पाई है। ऐसी औरत से पहली बार भेंट हुई है, उनकी।…बार-बार ओवरकोट पहनने और खोलने लगे, बेकार।

—और भी ! तेसर नम्बर पर, एक बार चल के देख लीहल जाउ—अपनी चसम से। झूठ साबित हो तो हुजूर की जूती और मेरे ये ओठ।…ऊ टेटर-नौटङ्की कम्पनी में भरी हुई हैं—मुजरावालियाँ-पछवरनियाँ छौंड़ियाँ ! बाहर में बड़की-बड़की सैनबोट में नाम लिख रखा है—मिच अलानी तो मिच फलानी !…सो सब क्या है ? देखना है तो चलकर देख लीजिए अभी। चाह की बेला है न अभी। नौटङ्की कम्पनी और टेटर कम्पनी के पर्दे के पीछे बड़के-बड़के बाबू महफिल लगा के बैटल हैं। मारे तबला टनक रहा है, चाह-बिस्कुट उड़ रहा है।…नये हाकिमों को भी रिहलसल दिखलाते हैं, कम्पनी वाले। निसाफ कौन करेगा ? गरीबों का देखवैया को-ई-ई-नहीं !

इस इलाके के महफिल-मुजरा के माहिर बाबुओं का एक-न-एक दूत, किसी-न-किसी काम से हाकिमों के कैम्पों के पास चक्कर मारता रहता है।…सारे मेले में बिजली की तरह बात फैल गई—एक देहातिन रंडी की बूढ़ी सर्दारिन हाकिम को सब भेद बता रही है। इलाके के बाबुओं ने एक-से-एक कानूनची भी हैं, हाईकोर्ट की हवा खाए हुए। किसी ने बात सुझाई—मेले में नहीं चलने देते हैं, नहीं सही। मेले की चौहद्दी से सटी जमीनवालों से बातें करें ! मेले के पास जिन बाबुओं की जमीन थी—उनकी तक[illegible]

दिन डूबने के पहले ही जमीन के मालिकों से [illegible]
की हाथ। अलग-अलग पट्टी के अलग-अलग [illegible]
हो गई, समाप्त। [illegible] उसको देखकर [illegible]

हाकिम से लड़कर हक हासिल करने वाली !...जबर्दस्त कलेजावाली।... वालिस्टर जैसा बहस करनेवाली !

और, यदि गंगाबाई नहीं रहती तो हिरिया फारबिसगंज मेले से जिन्दा लौट कर नहीं आ सकती थी ! इस बात को हिरिया की माँ भी कबूलती है।... मथुरामोहन कम्पनी के फरहाद के साथ भागने को तैयार थी, हिरिया। बहुत लम्बी कथा है। गंगाबाई किसी दिन सूद सहित वसूलेगी !

—एक बात जानती है, नानी ? गेंदाबाई दूसरी बीड़ी सुलगाती हुई बोली—आजकल दोनों आसामी एकहि साथ आता है और एकहि साथ जाता है। ...अँधेरिया-इंजोरिया दोनो एकहि साथ। मन तो करता है कि एक दिन जाकर दिलबहादुर को नेंत आऊँ !

गेंदाबाई की मौसी आकर आग तापने बैठ गई। फिर, इशारे से बताया—तीनों। अर्थात्—आज तीनों एकहि साथ आए हैं ! गरुड़, रोशन, लुत्तो !! गेंदाबाई ने गला खोल कर पूछा—कुछ लाया भी है या फोकट में कोई पंचैती-बखेड़ा करने आया है ? साथ में कुछ था भी ? बोतल-उतल ? उसकी मौसी जानती है, कुछ लाया भी हो तो हाँ नहीं कहना है। गंगाबाई को सुना कर उठी गेंदा, बड़बड़ाती हुई—फोकटिया मिटिंगबाजी करने के लिए नहीं है, हमारा घर। पतुरिया की जात, मेरे लिए जैसे जित्तन बाबू, वैसे छित्तन बाबू या कोई बाबू ! ...गंगाबाई गीत गाते हुई राह लगी। बहुत पुराना गीत, पूरबी की एक कड़ी—*हम-से-गेहुँआ-आं-पीसबेला-आ-बेदर्दाआ सैंयाँ हो-ओ !* धुन सुन कर रोशन और गरुड़ की आँखें मिलीं। दोनों ने गर्दन हिलाते हुए एक दूसरे को देखा...बहुत पुरानी बात याद करा रही है, गेंदाबाई !

गेंदाबाई दिलचस्प किस्म की औरत है।...मिस्सलीयनाम अर्जन किया है उसने अपने गुन पर—मेरीगोल्ड ! और, गरुड़धुज, रोशन दोनों मेरीगोल्डकप होल्डर।...नया मवक्किल लुत्तो !

नट्टिनटोली से लौटते समय, तीन बजे रात को अचानक मिस्सलमाना मिल

पूछूँगी ! उसकी आँखों में, मन की दबी हुई मुस्कराहट की छटा छा गई !

—यों, मैं फलाहार करने की बात सोच रहा था। लेकिन, आज नहीं। गोविन्दो पूछ गया है अभी—उई मोरोग टा'र की हबे ?···

—हाँ, अच्छी याद आई ! गोबिन्दो को क्या आपने ही धर्मादेश दिया है, माँ काली को मुर्गा-मुर्गी चढ़ाने का ? ···आज यदि मालकिन-माँ रहती ! ताजमनी सचमुच नाराज हो गई।

जितेन्द्र कहना चाहता था, मुर्गे ने क्या अपराध किया ? किन्तु, उसने हँसकर कहा—परानपुर हवेली में कभी किसी पुरुष ने कोई धर्मादेश नहीं दिया। मैं अनधिकार काम क्यों करूँ ? ···तुमने गोविन्दो को हुक्म दिया था शायद, बगैर प्रसाद के किसी किस्म का मांस नहीं आयगा, रसोई में। ···तुम कुछ पूछ रही थीं न ?

—हाँ। पूछती हूँ, आप इतना अकेला कैसे हो गए हैं ?

—अकेला ? जितेन्द्र को अचरज हुआ, क्या कहती है ताजमनी !

—अकेला नहीं तो और क्या ? पिछले पाँच दिन से आ रही है, बेचारी। और, किसी दिन आपसे यह नहीं कहते बना कि एक दिन यहीं लाइये ! कल आई तो आप कमरे में बन्द थे। मैं पूछती हूँ कि उस बक्से में क्या है जो घंटों···।

जितेन्द्रनाथ अपनी हँसी को रोक नहीं सका, हँस पड़ा। बोला—उसको मेकानो कहते हैं। लेकिन, तुम इरावती से यह मत कहना कि मेकानो लेकर कमरे में बन्द थे !

—तब तो जरूर ही कोई बुरी चीज है। आखिर है क्या इसमें ? क्या ? मेकानो ?

—बच्चों का खिलौना !

—मुझे अब कोई ठग नहीं सकता। मैं इरावती दाय के पास अभी भेजती हूँ, पलारन काका को।···ताजमनी, शरारत-भरी हँसी हँसती है।

जितेन्द्र ने कहा—आओ, देखकर खुद समझ लो !

जितेन्द्रनाथ अपना बनाया हुआ, ग्राम-नाट्य मण्डप ले आया !

—देखो, इसको कहते हैं, मेक्कानो। बच्चे, मकान बनाते हैं, पुल बनाते हैं, हवड़ा का पुल, भद्रा का डैम !

ताजमनी, एकटक देखती रही–नहीं, नहीं। तोड़िये मत। रहने दीजिए न ! लेकिन, इसमें छिपाने की क्या बात है ?

—बच्चों के खिलौने से खेलता हूँ, यह अच्छी बात तो नहीं।

ताजमनी कुछ समझ नहीं पाई तो फिर अपने प्रश्न पर लौट गई—इसीलिए तो कहती हूँ, आप इस तरह कैसे बदल गए ? गाँव की गलियों मे दिन-भर गायब रहनेवाला आदमी इस तरह कैसे हो जायगा ?···क्या हो गया है, आपको ?

—कुछ भी नहीं ! जितेन्द्रनाथ झेंप गया। मानो, किसी ने उसके कमजोर स्थल पर दृष्टि दे दी।

ताजमनी गम्भीर हो गई थी !···जित्तू नहीं जानते कि गाँव के अधिकांश लोग क्यों दुखित हैं। इतना पराया बना देना, खलेगा नहीं ? भोज खिलाने से क्या होगा ? नेह-छोह की भूख पूरी-मिठाई से नहीं मिटती !

ताजमनी ने दवा मापनेवाले गिलास से 'कारन' माप कर दिया। कमरे से निकलती हुई कह गई—बुर्ज पर जाकर बैठा कीजिए !

दो रात बैठ चुका है, बुर्ज पर !

जितेन्द्र ने अनुभव किया है, एक पेग से एक बूंद भी ज्यादा पीकर अब वह नहीं सँभाल सकेगा।···पाँच घंटों तक सुध-बुध खो कर बैठा रहना ! ···ऐसा नशा उसको कभी नहीं हुआ !

तीसरी रात, ताजमनी चुपचाप पैर दाब कर बुर्ज पर देख आई···बुर्ज

पर बैठ कर खोने की आदत लग गई? जै मां, अब मैं कहाँ जाऊँ! क्या करूँ!

वह डरी थी। किन्तु, उसे याद आई, मालकिन-माँ होती तो हँस कर बोल उठती—बाप की आदत!···माँ तारा! परती साध रहा है, तुम्हारा बेटा। देखना!

इष्टनाम जपती हुई वह सीढ़ी से उतरी।···आश्चर्य! मीत भी सूँघ-साँघ कर लौट आया! बेचारा! बिना प्यार पाये लौटा हुआ, मीत!

नहीं! आज जितेन्द्रनाथ बेसुध नहीं होगा। आज उसने एक पेग से भी कम 'कारन' लिया है।···बुर्ज पर बैठना अच्छा लगता है, इसका यह अर्थ नहीं कि आदमी किसी दिन बुर्ज से गिर कर अपनी जान दे दे!

जितेन्द्रनाथ ने बुर्ज पर चढ़ कर देखा, दो माइल उत्तर परानपुर स्टेशन पर गाड़ियों की क्रॉसिंग हो रही है। दक्खिन से आनेवाली गाड़ी निश्चय ही मालगाड़ी है। ···ओ! आज तो बारह तारीख है। बारह की शाम को ···यही गाड़ी है, कोशी-प्रोजेक्ट-स्पेशल गुड्स-ट्रेन की प्रथम सवारी बारह की शाम को! भिम्मल मामा ने कल ही सूचना दी है।···तो, यही है, वह गाड़ी। कोशी प्रोजेक्ट के लिए सामान ढोने वाली गाड़ी!

—धू-ऊ-ऊ-ऊ!···

मालगाड़ी में निश्चय ही चितरंजन-इंजन जुड़ा हुआ है। इसकी सीटी अन्य इंजनों से भिन्न है, आवाज के किनारे-किनारे एक सुनहली खनक!—धू-ऊ-ऊ-ऊ!!···

जितेन्द्रनाथ रोमांचित हुआ! 'कारन' पीने के बाद ऐसा ही रोमांच होता है कभी-कभी।···तू-ऊ-ऊ ऊ!···शंखध्वनि? हवेली में आज कोई व्रत-कथा है। किस व्रत-कथा में कितनी बार शंखध्वनि की जाती है, नहीं मालूम जितेन्द्र को। सात दिनों तक, हवेली में कोई-न-कोई व्रत-कथा करवाने का प्रोग्राम है, ताजमनी का।···धन-धन बाजे शंख!!

पर बैठ कर खोने की आदत लग गई ? जै मां, अब मैं कहाँ जाऊँ ! क्या करूँ !

वह डरी थी। किन्तु, उसे याद आई, मालकिन-माँ होती तो हँस कर बोल उठती—बाप की आदत !···माँ तारा ! परती साध रहा है, तुम्हारा बेटा। देखना !

इष्टनाम जपती हुई वह सीढ़ी से उतरी।···आश्चर्य ! मीत भी सूँघ-सूँघ कर लौट आया ! बेचारा ! बिना प्यार पाये लौटा हुआ, मीत !

नहीं ! आज जितेन्द्रनाथ बेसुध नहीं होगा। आज उसने एक पेग से भी कम 'कारन' लिया है।···बुर्ज पर बैठना अच्छा लगता है, इसका यह अर्थ नहीं कि आदमी किसी दिन बुर्ज से गिर कर अपनी जान दे दे !

जितेन्द्रनाथ ने बुर्ज पर चढ़ कर देखा, दो माइल उत्तर परानपुर स्टेशन पर गाड़ियों की क्रॉसिंग हो रही है। दक्खिन से आनेवाली गाड़ी निश्चय ही मालगाड़ी है। ···ओ ! आज तो बारह तारीख है। बारह की शाम को ···यही गाड़ी है, कोशी-प्रोजेक्ट-स्पेशल गुड्स-ट्रेन की प्रथम सवारी बारह की शाम को ! भिम्मल मामा ने कल ही सूचना दी है।···तो, यही है, वह गाड़ी। कोशी प्रोजेक्ट के लिए सामान ढोने वाली गाड़ी !

—धू-ऊ-ऊ-ऊ !···

मालगाड़ी में निश्चय ही चितरंजन-इंजन जुड़ा हुआ है। इसकी सीटी अन्य इंजनों से भिन्न है, आवाज के किनारे-किनारे एक सुनहली खनक !—धू-ऊ-ऊ-ऊ !!···

जितेन्द्रनाथ रोमांचित हुआ ! 'कारन' पीने के बाद ऐसा ही रोमांच होता है कभी-कभी।···तू-ऊ-ऊ ऊ !···शंखध्वनि ? हवेली में आज कोई व्रत-कथा है। किस व्रत-कथा में कितनी बार शंखध्वनि की जाती है, नहीं मालूम जितेन्द्र को। सात दिनों तक, हवेली में कोई-न-कोई व्रत-कथा करवाने का प्रोग्राम है, ताजमनी का।···बन-बन बाजे शंख !!

जितेन्द्र की माँ भूल गई थी कि अभिमन्यु का वध करने के लिए ही नाटक किया जा रहा है। जब महारथियों ने घेरकर उसको निहत्था कर दिया, तब उसको याद आई···अरी जिबछी, इसको तो जान से मारेगा ? उठ ! चल !

अभिमन्यु मरते समय अपने पिता, चाचा आदि को बारी-बारी से सन्देश दे रहा था···लेना, बदला लेना ! केहुनी के बल लेटा, हिचकियाँ लेता, खून से लथपथ ! इस्स !···लेना, बदला लेना ओ गदाधारी, ओ गाण्डीव-धारी···!!

खून से लथपथ कई शरीर आकर दम तोड़ गए, मानों। जितेन्द्र ने घड़ी देखी। नहीं, आज वह न डरेगा, न बेसुध होगा। अपने मित्र कामरेड कुलदीप की लाश, खून से लथपथ उसने देखी थी। मीनार के झरोखे पर एक बार झलक गई मृत मित्र की मूरत !!···एक ही नहीं, कुबेरसिंह का शिकार, वह नौजवान साथी, जिसे मोटर से कुचल कर मार दिया गया ! दूर, छोटानागपुर पहाड़ी की एक घाटी में उसकी लाश के आस-पास किल-बिलाते गिद्ध-काक !···धेत्त, बादुड़ हैं वे। गिद्ध नहीं ! जितेन्द्रनाथ ने घड़ी देखी···आश्चर्य ! आज भी वही हाल ! उसने विश्वास कर लिया··· 'कारन' है, हँसी-खेल नहीं !

ताजमनी प्रसाद लेकर बैठी होगी।

···सुरपतिराय की कोई खबर नहीं ली है जितेन्द्र ने इधर कई दिनों से। गेस्ट-हाउस के दोनों कमरे में रोशनी हो रही है। तो, दोनों मित्र जगे हुए हैं। सुरपति और भवेश···परदेसी पंछी। गेस्ट-हाउस का नाम दिया है दोनों ने मिलकर—घोंसला ! उस दिन, गोविन्दो भवेश की नकल करके सुना रहा था रसोई घर में—भेदीबाबू बोला कि घोंसेलों तो, हेम दूसा पाखी का बासा हुआ है कोई। ओ-ओ बाबा ! देर-बाड़ी को नाम हुआ—घोसोलों ! और, भेदीबाबू बोला—हाँ-हाँ-हाँ। इ इ-न घो-घोसोलों में में रोनार टीम रहेगा—पे-परदेसी पाखी ! हा-हा-हा !!

प्रेमिका से ज्यादे प्यार करता हूँ। कैनाड़ी पहाड़ी को !···

इरावती भी अकेली है क्या ? ताजमनी से पूछना होगा। मन-ही-मन बहुत-से लोग मेक्कानो के घर बनाते हैं, तोड़ते हैं, गढ़ते हैं।···फिर रोमांच ! इरावती, ताजमनी ! दोनों मिलकर कहती हैं—जित्तन ! अकेलेपन के अन्धकार से निकल आओ।···लेकिन, यह तो नाटक नहीं कि स्टेज पर बल्ब का तिर्छा प्रकाश डाल दे कोई ! और, कौन नहीं है अकेला ? उन्हें कोई नहीं कहता कि निकल आओ अंधकार से !···क्यों ?

नाटक की बात याद आई जितेन्द्र को !···उसकी माँ के पास आए हैं तिवारीजी, गाँव के नौजवानों को लेकर। भिम्मल मामा ने अन्दर-हवेली में जाकर सूचना दी थी—नाटक समिति की संस्थापिकाजी हैं ? माँ झुँझला कर बोली थी—मैं समिति-पंचायत कुछ नहीं जानती। मैं एक पैसा भी बेहरी नहीं दूँगी। एक बार रुपया ठग के ले गये। कलकत्ते से पर्दा-पोशाक लेकर आए। और, नाटक ऐसा दिखाया कि निहाल हो गई देख कर !

तिवारीजी ने चिक के पास खड़ा होकर जवाब दिया था—अब, इसमें हम लोगों का कौन कसूर ? आप महाभारत की एक-एक कथा-उपकथा जानती हैं। आपको यह भी मालूम था कि जितेन्द्र को अभिमन्यु का पार्ट दिया गया है। आपको पहले ही तौलकर देख लेना चाहिये था, कलेजे को।···'अभिमन्यु-वध' नाटक पूरी नहीं देख पाई थी, जितेन्द्र की माँ। स्टेजपर जितेन्द्र को देखकर माँ की नौड़ी बोल उठी थी—ठीक लगता है···दुलहा-मालिक ब्याह के दिन ऐसे ही···।

—चुप ! माँ ने हल्की धमकी दी।

जितेन्द्र की माँ भूल गई थी कि अभिमन्यु का वध करने के लिए ही नाटक किया जा रहा है। जब महारथियों ने घेरकर उसको निहत्था कर दिया, तब उसको याद आई···अरी जिबछी, इसको तो जान से मारेगा ? उठ ! चल !

अभिमन्यु मरते समय अपने पिता, चाचा आदि को बारी-बारी से सन्देशा दे रहा था···लेना, बदला लेना ! केंहुनी के बल लेटा, हिचकियाँ लेता, खून से लथपथ ! इस्स !···लेना, बदला लेना ओ गदाधारी, ओ गाण्डीव-धारी···!!

खून से लथपथ कई शरीर आकर दम तोड़ गए, मानों। जितेन्द्र ने घड़ी देखी। नहीं, आज वह न डरेगा, न बेसुध होगा। अपने मित्र कामरेड कुलदीप की लाश, खून से लथपथ उसने देखी थी। मीनार के झरोखे पर एक बार झलक गई मृत मित्र की मूरत !!···एक ही नहीं, कुबेरसिंह का शिकार, वह नौजवान साथी, जिसे मोटर से कुचल कर मार दिया गया ! दूर, छोटानागपुर पहाड़ी की एक घाटी में उसकी लाश के आस-पास किल-किलाते गिद्ध-काक !···धेत्त, बादुड़ हैं वे। गिद्ध नहीं ! जितेन्द्रनाथ ने घड़ी देखी···आश्चर्य ! आज भी वही हाल ! उसने विश्वास कर लिया··· 'कारन' है, हँसी-खेल नहीं !

ताजमनी प्रसाद लेकर बैठी होगी।

भवेश के सिर पर पंछी फड़फड़ा रहे हैं, शामा-चकेवा की रात से। किलकती चिड़िया-हजार, पाँखे पसार। ऐसा अवसर नहीं मिले बार-बार। ले निहार —ओ-ओ-परदेसी पंछी···!

परती पर टिटही बोल रही—टि-टिंहि-टिं, टिं-टिंहि-टिं।···अशुभ है, यह बोली! मातायें, घर-घर में अपने नवजात शिशु को छाती से चिपका कर बड़बड़ाती होंगी—छिनाल! टिटही···कहाँ से कहाँ मरने आई है! तुझे तीर लगे, कीरवा बनजारे का! टीं-टीं करती है राकसनी।

जितेन्द्रनाथ बुर्ज की सीढ़ी से उतरते हुए मुस्कराया—बेचारी टिटही! बे-वजह गाली सुनती है। लोग कहते हैं, टिटही दोनों पाँव को ऊपर उठा कर सोती है, घोंसले में। हिमालय जब गिरेगा तो पैर से थाम लेगी!···

मेरे पतिदेव कहा करते—जमींदारों के वंश-परिचय में खोज कर देखो—अर्जन करनेवालों में किसी ने अवश्य डकैती की होगी। राजा खिताब मिलने के बाद तो दिनदहाड़े डकैती करने का लायसेंस मिल जाता है।···हमारे इस्टेट के सिपाहियों को क्या समझती हो तुम? सुल्तानपुर से हवेली परगना तक शिवेन्द्र मिश्र के डर से लोग खाँसी तक नहीं करते। क्यों?

'कारन' पीने के लिए एक मधुर विराम दिया मेरे स्वामी ने! हँसकर बोले—तुम्हारे भाई-बंध मुझे इंगलिश-हेटर समझते हैं। मैं क्या हूँ सो तुम देख रही हो!

—लेकिन, आप तो अंग्रेज प्लांटर के मुलाजिम थे।

—हाँ, विश्वासपात्र कर्मचारी-एंथोनी साहेब की कोठी का। और, उसकी कोठी में दस साल तक नौकरी करके घृणा पालता रहा, मैं।

मैंने पनडब्बे से पान निकाल कर खिलाया मिश्रजी को। घृणा से बार-बार सिकोड़ रहे थे मुँह। कस्तूरी-अम्बर मिश्रित तम्बाकू खाकर सहज हुई मुद्रा! उन्होंने शुरू किया—हिन्दुस्तानी को, चाहे वह इस्टेट का मैनेजर हो अथवा चौकीदार, ये जानवर ही समझते हैं।···माली की जवान बेटियों को धमकी देते हुए बाथरूम से नंगा निकल कर डाँटना। नंगी देह को तौलिये से पोछते हुए अपने हेड-ब्याय से बातें करना! जानवर के सामने नंगा होने में क्या लाज? एक दिन की बात···!

मैं अपने पति के पास लेटकर कहानी सुनने लगी···एक दिन की बात!

—हेडब्याय बैरागी छुट्टी लेकर घर गया था। एंथोनी साहब कटिहार गए थे। मैं अपने कमरे में बैठ कर लिखा-पढ़ी कर रहा था। छोटे मुंशी की जगह पर था, मैं। दोपहर को, मेम साहब ने मुझे बुलाया। गर्मी से परेशान थी वह। व्याकुल होकर बुलाया—यू मिस्सा! कम इन।···कोठी के भीतरी हिस्से में जनाना बाग था। आम के एक नये पेड़ के नीचे बड़ा छाता धरती में गाड़ कर बैठी थी मेम साहब। मैं गया तो कुछ काम की बातें पूछ कर उसने मेरे हाथ में पंखा थमा दिया—धीरे-धीरे चलाओ!

मैं पंखा हलने लगा···।

—हो-हो-हो-हो! मैं अपनी खिलखिलाहट को नहीं रोक पाई! भगवान् कहाँ हो?···पंखा हलने लगे आप! हो-हो हो!

—हाँ, हलता रहा। मेम साहब गर्मी से बेचैन होकर कैम्पचेयर में इधर से उधर हरकत करती तो और जोर से हलता। अचानक मेम साहब ने मेरे हाथ से पंखा छीन लिया। पंखे की डंटी मेरी बाँह पर मार कर बोली—शैतान, सूअर, सूअर का बच्चा, जंगली सूअर।···गुर्राती हुई चली गई

मेम साहब कोठी के अन्दर !

—चः चः । मैं मिश्रजी की बाँहों पर हाथ फेरने लगी तो वे हँसे—पगली ! मैंने पूछा—क्यों मारा उसने ?

—और, रात में जब साहब लौटा तो मेम ने सबसे पहले मेरी शिकायत की । वह गर्मी से मरी जा रही थी, बेसुध थी । उसकी देह को आँख फाड़-फाड़ कर देखा गया । आश्चर्य ! देखो भला !···साहब ने रात में ही मुझे बुलाया । दाँत कटकटा कर टूटा ! क्यों डेक्का ? बोलो, क्यों डेक्का ?··· बोलो, फिर डेक्केगा ? साहब के मुँह पर जवाब हम कभी नहीं देते । कुछ जवाब देते ही वह पागल हो जाता । मुझे चुप देख कर उसका गुस्सा कम हुआ । बोला—पहला कसूर, माफ किया । कल, सुबह मेम साहब के सामने दस बार कान पकड़कर···उट्ठेगा बैट्ठेगा । बाट समजूटा ?···मुझे जमींदार बनना था । मुझे जमींदारी खरीदनी थी अपने गाँव की । पण्डितों के टोल में पढ़ी हुई विद्या मैंने पिटारी में बंद कर दी थी । क्योंकि, उससे एक बीघा जमीन भी नहीं खरीदी जा सकती थी । मेरे जिले में एक अपढ़ आदमी ने किसी साहब की कोठी में सिपाही की नौकरी करके, जमींदारी खरीदी थी । इसलिए, कैथी अक्षर और कचहरी की विद्या-बुद्धि से मैं भी जमींदारी खरीदना चाहता था ।···मैंने स्वीकार कर लिया ।

—इज़ इट ? आँ ?

—

मेरी निगाह कभी नहीं झुकी ।···साहब का विश्वास मुझ पर बढ़ता ही गया । मेम साहब हर हफ्ते मुझे टीप देतीं । मेरी तरक्की हुई । मैं मीर-मुंशी बना दिया गया ! छै महीने के जमा किये हुए टीप के रुपये से ही मैंने अपने गाँव में, बरदिया घाट के पास दस बीघे जमीन की बन्दोबस्ती ली । आँखें खोल कर देखता रहा, सीखता रहा । और, अन्त में एक दिन घृणा से मुझे आँखें मूँद लेनी पड़ी··· ।

—बस, आज रहने दीजिए । ओ मेरे परमगुरु ! मैं अब कुछ नहीं सुनना चाहती ।

—और, अन्तिम घटना नहीं सुनोगी ? ···वह दृश्य ! उस बार टाइनापोकॉट में कोई फौजी मेहमान आए थे, साहेब के यहाँ छुट्टी मनाने के लिए । हेड-ब्वाय बैरागी ने साहब को बताया—टुराईदास गौना करके नई बहू ले आया है । तुरत, सिपाहियों को हुक्म हुआ—सूर्जसिंग, बाकरमियाँ दोनो जायगा । अब्भी ले आयगा··· ।

—मेरे स्वामी ! मुझे माफ करो । मैं आज नहीं सुनूँगी । ···आप थोड़ा 'वारन' और लेंगे ?

लिए आई है, डोली में। गीतवास कोठी से परानपुर ड्योढ़ी, आठ माइल उत्तर। कुपाड़ी गाँव के पास हमारी डोलियाँ रुकीं। रानी-वहिना ने अपनी डोली से निकल कर कहा—उस पोखरे को देखती हो न ? उसका नाम है, इन्द्रानी पोखर ! गुनवन्ती ड्योढ़ी की विधवा रानी ने गाँववालों का जलकष्ट दूर करने के लिए खुदवाया था। किन्तु, पोखर यज्ञ के दिन ही उसमें एक घोड़ा डूब कर मर गया। और, उसके बाद से उस पोखरे का पानी कभी किसी ने स्पर्श नहीं किया।

परानपुर ड्योढ़ी के जनाने फाटक पर औरतों की एक बड़ी भीड़ पहले से ही तैयार थी।

[तीन पृष्ठ खो गए हैं !]

मेरा लॉली मेरे बिना एक क्षण नहीं रह सकता ! मेरा जिद्दू-बद्दू, लॉली। सभी हँसते—देखो देखो, कितना बेईमान है ! राह चलते समय इनको पुतली की गोद चाहिए और बैठेंगे मेम-माँ की गोद में ! ···अहा-हा। बेचारे के दाँत देर से आ रहे हैं। पेट खराब है, वैद्यजी ने हिंग्वाष्टक दिया है। और आठ-नौ महीने के लॉली-लला हिंग्वाष्टक की शीशी देखकर काँपने लगते हैं। ···मेरी गोदी में दवा के डर से ही बैठा रहता। इतनी तेज घ्राणशक्ति ? रानी-वहिना रोज मेरे लिए रसोईघर में अपने हाथ से मेरे लिए तरह-तरह के मैथिली व्यंजन बनाती। ···उस दिन मुझे भी हिंग्वाष्टक की जरूरत हुई। अबेर में, सोते से उठा मेरा लॉली—मम्म, मम्म ! मैंने पुतली से कहा—

हाथ बढ़ाया तो मुँह छिपाने लगा। किसी के समझ में नहीं आती, क्या बात है! रानी-बहिना ने समझा और हँस कहकर बोली—तुमने आज हिंग्वाष्टक लिया है न। जब तक मुँह में गंध रहेगी, गोदी में नहीं जायगा! ओ माँ! छुट्टू पण्डित इतना चालाक है!

रानी-बहिना के शब्दकोश में जितने बेढब नाम थे, सब मेरे लॉली के लिए व्यवहार करती।···लड़के को भोंड़े नाम से पुकारने पर लड़का जीता है। कहते हैं, पण्डित लोग भी इस बात पर विश्वास करते हैं। मैं नहीं मानती। मेरा लॉली भी नहीं मानेगा। पण्डित लोग पंक्ति से छाँट दें। मेरा लॉली छुट्टू पण्डित होकर रहेगा। यह लॉली है, जीत है, जिद्दू है, बद्दू है!···

परानपुर से गीतवास कोठी लौट रही थी जिस दिन!

रानी-बहिना की सखी-सहेलियों के समदाउन गीत शुरू करने के पहले से ही मैं रो रही थी। मेरे जिद्दू की रुलाई, हवेली की दीवारों को चीर कर मेरे कानों के पास मड़राती। मैं बोली: वह रोकर जान दे देगा। एक बार ले आ पुतली। मैं फिर समझा कर देखूँ।···हुलसता आया और डोली में बैठ गया। अब!···लॉली! लिटल-लिटल लोटस···डार्लिंग! जिद्दू-बद्दू तू चुप रहेगा। ले, अब रानी-मैया की गोदी में जा। मैं फिर आऊँगी। जरूर! जिद्दू ने मेरे मुँह की ओर देखा और धीरे से रानी-बहिना की गोद में चला गया।

—लॉली मम्मी आयगा!

—आम-आम!

कर रही थी। मेरा सदाबहार कभी झूठा वादा नहीं करता !

ठीक, सूरज डूबने के पहले आकर मुझे अपनी चरणधूलि दी ! किन्तु, मुझे लगा—सदाबहार जरा मुर्झाकर लौटा है। …लॉली के बारे में बार-बार पूछती हूँ। कहते हैं—ठीक है, सब !

रात में फिर स्वीकारोक्ति के मूड में आ गए !…मैं नहीं सुनना चाहती वैसी कहानियाँ। मुझे डर लगता है !

—डरने से काम नहीं चलेगा, गीता। तुमको सुनना चाहिए।…दस्तावेज जाल करनेवालों को प्राणदंड तक की सजा होती है। मेरे दस्तावेजों को कई नीलहों ने कई बार जाली दस्तावेज कहकर चैलेंज किया। बादशाही जमाने के दानपत्र, ताम्रपत्र—सभी जाली हैं, उन्होंने कहा। कह देने से ही तो नहीं होता है ! पचहत्तर नम्बर तौजी को लेकर मिर्जापुर कोठी के डिगबी साहब से झगड़ा था। साढ़े पाँच सौ एकड़ जमीन ! एक ही चक-बन्दी !! उस एकचक जमीन में धान और पाट की ऐसी खेती लगती है कि फसल देखकर आदमी पुत्रशोक भूल जाय। उमड़ते-घुमड़ते बादलोंकी तरह मेघलाल पाट के घोर लाल पौधे।…डिगबी साहब दानपत्र देखकर पागल हो गया। मेरा दानपत्र मेरे पितामह के समय का था। गुनवन्ती ड्योढ़ी की रानी इन्द्रानी का दानपत्र ! रानी ने अपने पति के श्राद्ध में पण्डितों को दान में जमीन भी दी थी। बाद में, दूसरे जमींदार ने फुसला-धमका कर मेरे पितामह से जमीन ले ली ! साहब के वकील ने हाकिम से कहा—हुजूर ! रानी इन्द्रानी के बारे में मशहूर है कि उसने पण्डितों को डेढ़-डेढ़ एकड़ जमीन दी थी।…

मेरे वकील ने सबूत में दूसरे ब्राह्मणों के दानपत्र पेश करने की अर्जी दी। हांसामारी के चनकू पण्डित का दानपत्र मँगवाया गया। भरी कचहरी में डिगबी साहब के हाथ में दोनों दानपत्र दिये गए—कौन जाली है और कौन असल ?…पागल हो गया डिगबी—नो, नो, नो, नो, फोर्ज्ड ! फोर्ज्ड !! इतनी जमीन और इसका लगान सिर्फ तीन रुपये ? नो, नो।

···लगान भी नहीं, दस्तावेज में लिखा है—स्वस्ति के रूप में प्रतिवर्ष मात्र तीन कम्पनी !···

लॉ-जरनल खोलकर पेश करते हुए मेरे वकील ने दिखलाया—रानी इन्द्रानी के दानपत्रों के बारे में इसमें एक न्यायाधीश ने स्वीकार किया है : रानी इन्द्रानी के दानपत्र अथवा अन्य दस्तावेजों का जाल पकड़ना आसान है। उसका जाली होना असम्भव नहीं। रानी के जीवित दीवान के कथनानुसार रानी इन्द्रानी की करधनी में लटकने वाली सोने की दो सौ छोटी-छोटी मछलियों में से एक मछली से सील-मुहर का काम लिया जाता था जिसको रानी के सिवा और कोई नहीं पहचान सकता था। इतनी बारीक रेखाओं की कारीगरी का जाल करना कठिन काम है।···

दिगवी ने उस दानपत्र को सरकारी एक्सपर्ट के पास भेजने की अर्जी दी, डबल फीस के साथ।···तुम जुम्हाई लेती हो गीता ? नींद आ रही है ?

मिश्रजी की उँगलियाँ मेरे बालों के गुच्छे से खेलने लगीं। हठात्, उँगली रुक गई। मैंने कहा—नहीं देवता ! मैं सुन रही हूँ।

मंद-मंद मुस्करा कर बोले—और, कलकत्ते के सरकारी एक्सपर्ट ने कहा : दानपत्र असली है !

मिश्रजी ने मुझे बाँहों में जकड़ कर कहा—माफ करो गीत। जब कहने ही बैठा हूँ तो सच कहूँ। असल में, वह दानपत्र जाली था !

—जाली ! फोर्ज्ड ! ···किसने किया था ? मैं अचरज से चीख पड़ी।

में मैंने उसको छठ्ठी का दूध याद कराया। हाईकोर्ट ने मुझे ही डिक्री दी !

···मैंने बिना माँगे ही पात्र में 'कारन' ढाल कर दिया।

कुछ क्षण इष्ट नाम जाप करने के बाद बोले—जीवन में सबसे बड़ी ग्लानि मुझे, एक···एक स्त्री-हत्या जिस दिन हो गई। मेरे हाथ से नहीं, मेरे सिपाही के हाथ से !···

मैंने अपने पति की छाती के अन्दर, कलेजे की अस्वाभाविक धड़कन, छंद-पतन का अनुभव किया। मैं उनकी छाती में मुँह छिपा कर बोली—नहीं-नहीं ! तुम क्यों करोगे किसी का खून ?

हवेली परगना के इतिहास में पाँच-सात इस्टेट की विधवा हिन्दू रानियों के राजकाज की बातें मिलती हैं। इनमें रानी इन्द्रानी और रानी चम्पावती के सुनाम के चिह्न आज भी पाए जाते हैं। बाकी रानियों के कुनाम की कहानियाँ भी घर-घर में होती हैं।···उसमें से एक ने पति के मरने के बाद अपने एकमात्र तीन मास के पुत्र की हत्या कर दी थी। मेरे पति ने उस पतिता को मारने का बीड़ा उठाया था। सिपाहियों ने उनका काम पूरा कर दिया। मेरे पति ने हत्या नहीं की, नहीं की ! वह स्त्री-हत्या नहीं कर सकता कभी !···

मेरे देवता ने मुझे सँभालते हुए कहा—गीत ! अब 'कारन' नहीं। मधु···!!

सुबह को, सूरज उगने के पहले ही मिश्रजी अपने मूँगा पर सवार हुए। मिश्रजी के चतुर और प्यारे घोड़े का नाम है मूँगा। मोती, हाथी का नाम है। मूँगा मेरी प्रतीक्षा में खड़ा देखता रहा। कानों को जरा हिला-डुला कर हिनहिनाया—ई-हीं-ही-ही ! मैं जब तक उसे प्यार कर, उसकी गर्दन पर उँगली से काली नाम न लिख दूँ, वह कभी कदम आगे नहीं बढ़ा सकता। रानी-बहिना भी ऐसा ही करती है। मूँगा ! डियर !!···खड़प-खड़प, खड़प-खड़प-खड़-पड़, खड़-पड़ !!

खड़ाप-खड़ाप, खड़ाप-खड़ाप···!!

चार दिन बाद ! मिश्रजी की चादर के एक किनारे पर ॐ काढ़ रही थी कि पुल पर घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई पड़ी। उत्तरा से झाँककर पुतली बोली—हाँ ! मैनेजर साहब !

मेरे स्वामी आ रहे हैं !

फाटक पर घोड़े से उतर कर, दौड़ते हुए आए मिश्रजी। मैंने चरणधूलि ली। मेरा प्राप्य मुझे देकर बोले—हेरिंज मम्मी ?

—मम्मी पास के गाँव में गई है। स्कूल खोल रही है न ! क्यों, मेरा लॉली कैसा है ? कुशल तो है न ?

—जय माँ !···सब ठीक है। एक काम कर सकोगी ? तुमको याद है, पिछले महीने एंथोनी साहब ने मम्मी को एक पत्र भेजा था ! एंथोनी के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी ? किसी जमीन के बारे में लिखा था उसने !··· है ? दोगी खोज कर ?

—क्या होगा उसका ? आज सुबह को बास्केट से निकाल कर ले तो नहीं गई पुतली !

—ऐंव ! मिश्रजी ने अपना सिर थाम लिया।

मुझे याद आई ! पत्र सुरक्षित है। बोली—है ! क्यों, क्या बात है ?

पत्र पाते ही मिश्रजी सदाबहार हो गए, फिर—मम्मी से कहना मत ! यह ख़त मैं ले जाता हूँ। मिश्रजी की देह से मृँगा के पसीने की गन्ध आ रही थी !

मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। देर करना अनुचित लगा। फाटक तक मैं साथ गई। मैं मिश्रजी के प्रत्येक पदचाप पर इष्टनाम जाप करती जा रही थी।

उस दिन मूँगा, मेरी थपकियों के लिए रुका नहीं। मिश्रजी सवार हुए और वह भागा—खड़ाप, खड़ाप !! मेरे मूँगा ने मान किया है, रूठ गया है ! आते ही प्यार नहीं मिला, इसीलिए इतना गुस्सा ? भगवान जाने कब का भूखा-प्यासा था ! उसके मुँह से गिरे हुए सफ़ेद झाग धरती पर चमक रहे हैं।...ओ रे मेरे मानी, अभिमानी !!

कॉलेजों में पढ़ने वाले लड़के गाँव लौटे हैं।

जिला के कॉलेजों में पढ़नेवाले लड़के पहले ही आ गए हैं। जिले के बाहर पढ़नेवाले लड़कों का दल आज ही आया है। पटनियाँ और भगलपुरिया बैच !

जाड़े की छुट्टियों में घर आए हुए लड़के आसानी से पहचाने जाते हैं। कोट-पैंट की काट और बालों की छाँट ही बता देती है कि किस कॉलेज में पढ़ता है लड़का। किस शहर के किस सैलून का नाई कैसा बाल बनाता है, यह गाँववाले नहीं जानते। लेकिन, गाँव में यह बात मशहूर हो गई है—पटना के जिस नाई से जित्तन बाबू बाल कटवाते थे, शैलेन्दर भी उसी से पट्टी छँटवाता है। और, वह नाई लाट साहेब के अमला-फैदा का केश काटता था, सुराज होने के पहले !

शैलेन्दर तीन साल के बाद आया है,

है। रह-रह कर हँसी का एक शोर उठता है। बीच-बीच में फिल्मी गीतों के धुन सुनाई पड़ते हैं। ब्याह-गौना किए हुए लड़के जब चौकड़ी छोड़ कर जाने लगते हैं, उन पर एक फुलझड़ी फेंकता है परमा, बारी-बारी से—नाइट-कॉलेज का समय हो रहा है! जाने दो!!

इस बार पटने में पढ़नेवाले विद्यार्थियों का दल सुवंशलाल से मिल आया है!

आज की बैठकी में पटने के लड़कों के मुँह की ओर ही सबकी नजर है। आज चौकड़ी जमेगी। प्रयागचन्द का मँझला भाई त्रिवेणी गप का एकाध टुकड़ा पहले ही सुना चुका है। बजरंगराय आ जाय तो बात जमे!

बजरंग आया और एक ही साथ कई नौजवानों ने उसका स्वागत किया—आओ, आओ!! कब से तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।···त्रिवेणी ने इसी साल पटने में नाम लिखाया है। बजरंग चार साल से पटने में पढ़ रहा है। त्रिवेणी का मुँह छोटा हो गया।

भागलपुर कॉलेज मे पढ़ता है शोभा, लेकिन मुँहचोर है। नहीं तो उसके पेट में एक ऐसी बात चुलबुला रही है कि सुनते ही सारी चौकड़ी ठठा कर हँस पड़ेगी। उसने परमानन्द के कान में डाल दी बात।

प्रयागचन्द कहीं मेहमानी गया है। उसके बदले में ललितलाल हैं। किताबों की बँधी-बँधाई गठरी उठा कर दूसरे कमरे में चला गया वह!

शैलेन्दर ने हँस कर कहा—सुवंश-कथा हो रही है?

—हाँ! आइए, आप भी सुनाइए कुछ!

—बस, हमको एक ही बात जाननी है। परमा ने कहा—ह्वेदर इट इज ए फैक्ट या पटनियाँ फफटबाजी! अभी तिरबेनियाँ कह रहा था कि मलारी हो गई है, क्या नाम भला, डांसिंग-गर्ल? क्या यह सच है शैलेन्दर बाबू?

—डांसिंग-गर्ल?...हाँ, वह डांस स्कूल में भरतनाट्यम् सीख रही है।

—मैंने झूठी बात की है? त्रिवेणी ने पूछा।

—ठहरो, तिरबेनियाँ! परमा ने कहा—डांसिंग-गर्ल का मतलब भी कीड़ों का समूह है, जानते हो? चेम्बर्स-ऑक्सफोर्ड उलटो जाकर!

शैलेन्दर ने उठते हुए कहा—सुवंश और मलारी की तरह कितने लोग हो सकते हैं? उन लोगों ने ऐतिहासिक काम किया है।

परमा ने कहा—वाजिब बात। ऐतिहासिक ही नहीं। क्रान्तिकारी क़दम! हम लोगों ने लिखा है उसको—ब्रेवो। वेल डन!

—पूछो बजरंग से। शैलेन्दर ने मुस्करा कर कहा—बजरंग और त्रिवेणी वगैरह सुवंश से मिलने गये थे, मुजफ्फरपुर। पूछो, इन लोगों ने सुवंश के हाथ का पान तक नहीं लिया।

परमा जोश में आकर खड़ा हो गया—शेम! शेम!!

भाभी कह रही थी, उसका भाई कह रहा है—घर में पैर नहीं रखने देंगे !

शैलेन्दर ने कहा—सुवंश उस घर में पैर भी नहीं देने जायगा, शायद ।

शैलेन्दर के जाने के बाद लोगों ने मँगनीसिंह दीवाना की चर्चा शुरू की । नरमा ने इधर-उधर देख कर कहा—कहीं पीछे में कोई बैकवर्ड-शिड्यूल कास्ट तो कान लगाकर नहीं सुन रहा ?···प्यारे भाइयो ! आप लोग गम्भीरता से मँगनीसिंह दीवाना के चाल-चलन पर विचार करें । आजकल वह चमका है । उससे पूछना होगा, ह्वाट हि वाटस ?

—सचमुच । दीवाना के चलते नन-बैकवर्ड···।

नरमा ने बोलने वाले को धमकी दी—नन बैकवर्ड क्या ! फोरवर्ड बोलो । अग्रगामी जाति !

—दीवाना भी पटना गया है ।

—वापस आने दो । प्रेमपहाड़ा पढ़ा देंगे ।···प्यार का बाजार लगाता फिरता है । अग्रगामी जाति को कलंकित करता है । दीवाना की दीवानगी निकालता हूँ !!

—बात तय रही न ?

—हाँ, तय ही समझिए !

लुत्तो को गरुड़धुज झा ने कानूनी दाँव पेंच के उदाहरण देकर समझा दिया—ग्रामपंचायत के लिए, कांग्रेस की ओर से रोशन बिस्वाँ को खड़ा किया जाय । नाम रहेगा रोशन बिस्वाँ का, काम तो सभी लुत्तो के मन से होंगे । ग्राम पंचायत के मार्फत गाँव में पूरी तरह जड़ जमाकर, लुत्तो विधान सभा के लिए नाम पेश करेगा । रोशन बिस्वाँ तन-मन-धन से मदद करेगा । कैसे नहीं चुनेंगे कांग्रेस वाले ? रुपया की क्या कमी होगी ? एक ही साल में तीन-तीन चुनाव लड़ने का पैसा, ग्राम पंचायत के मार्फत, यदि गरुड़धुज झा जमा नहीं कर दे तो वह ब्राह्मण नहीं—चमार !

भाभी जामा आकर देखे कोई। देया-री-देया, बाघ छाप कपड़ा कभी नहीं देखा था !

—और, सुवंश ने अपनी माँ को कुछ नहीं भेजा है ?

—मलरिया मोजरा का नाच नाचती है। सचमुच, नट्टिन हो गई।

—सरकारी नट्टिन !···चुप !!

—अब यह परानपुर नहीं, नट्टिनपुर हो गया। किसको क्या कहा जाय। जयवंती अपने दुलहा को पीट कर भाग आई है, ससुराल से। रातों रात !!

—सेमियाँ कहती थी, ठीक किया है।

—देखना है सेमिया को !

—करिया बिलार और लमगोड़ा नकलोल की बात मालूम है ?

—तजमनियाँ को भी अब आसमान सूझने लगा है। बड़ा हवेली की पटरानी बनने आई थी ! अब आ गई है, शहरवाली। देखती नहीं, रोज आती है कम्फूवाली बीबी ?

—सिर्फ आती है ? तब तुम क्या जानती हो ? आती है, खाती है, पीती है। हँसती-बोलती है। क्या नहीं करती है ? शहर की पाटी है। तजमनियाँ मखाने के पत्ते से मुँह पोछे अब अपना !

—अरे हाँ, कल नूनू के बाप ने देखा, घड़ी पहर रात में बरदिया घाट पर दोनों गुदुर-गुदुर, फुसुर-फुसुर बतिया रहे थे। कम्फू की बीबी और जित्तन बाबू। नूनू के बाप को डर हो गया।

इरावती हैरान है ! क्या हो गया है जितेन्द्र को ?

इरावती ने लक्ष्य किया है, बातें करते समय जितेन्द्र की आँखों में नींद उमड़ने लगती है। रह-रहकर वह जम्हाई लेता है। इतना आत्मकेन्द्रिक तो नहीं था जीत !

इरावती ने लोकमंच की विस्तृत परिपकल्पना का फाइल समेटते हुए कहा —लगता था, जीवन में कभी कुछ सुव्यवस्थित ढंग से सोच नहीं पाऊँगी। तुम्हारी बताई हुई राह पर चलती गई। वर्षों, जंगल-पहाड़ और पठारों में भटकने के बाद प्रीत की रीत जान पाई। किन्तु, जिससे प्रीत करना चाहती हूँ, उससे परिचय नहीं। इसलिए तुमसे प्रार्थना है···।

—लोकचित्त और लोकचेतना का ज्ञान मुझे भी नहीं, इरा ! मैं क्या सहायता कर सकता हूँ, तुम्हारी !

—कैसी बात करते हो, जीत !

—हतबुद्धि का विलाप-प्रलाप कहो !

इरावती तिलमिलाई।...वह क्या सुन रही है जितेन्द्र के मुँह से? यह जितेन्द्र है? छोटा नागपुर की पहाड़ियों में भटकनेवाला भावप्रवण प्राणी। बात-बात में जिसका आत्मविश्वास पहाड़ी झरने की तरह कलकल कर उठता था। शक्ति की सुन्दरता से आलोकित मुखमण्डल, मानव-प्रीति से भरपूर स्वस्थ आत्मा। समाजमुखी, उदार मन! परानपुर हवेली की तंग कोठरी में कैद करके अपने को किस अपराध का दंड दे रहा है, यह!... सिर्फ, मुस्कराहट रह गई है जितेन्द्र के ओठों पर जो निराश नहीं होने देती।

उसने अपने को संयत किया। बोली—हाँ! मुझे दान में ही प्राप्त हुआ था यह विश्वास, एक दिन।

इरावती अन्दर हवेली की ओर जा रही थी। ताजमनी हाथ में एक कार्ड-बोर्ड का बक्स लेकर मुस्कुराती हुई आई—बच्चों का खेल!

—यह क्या है?

—आपके परतीपुत्तर ने बनाया है। देखिए न, क्या है! ताजमनी हँसी—कमरे में बन्द होकर इसी खेल में बझे रहते हैं।

इरावती ने जितेन्द्र की ओर प्रशंसाभरी नजरों से देखा, ऑपन-एयर-स्टेज का मॉडेल!...अजाने ही उसने मेरी सहायता कर दी है? ताजमनी को धन्यवाद दिया, इरावती ने—बहुत-बहुत धन्यवाद! परतीपुत्तर! तुम्हें भी।...इसे मैं ले जाती हूँ। डायग्राम...।

जितेन्द्र ने कहा—लेकिन, स्टेज पर इन्द्रधनुषी रेशमी पर्दा और फूलदार झालर किसने लगा दी है?

ताजमनी मुस्कराकर चिक के उस पार चली गई!

खुले स्टेज पर, महीन तार में चार-पाँच रंग के साटिन कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों को सजा कर बाँध दिया गया है। विशाल स्टेज की पृष्ठभूमि में रंग की धाराएँ आकाश से उतर रही हैं! ...चारों ओर हजारों लोगों की

झलक ! कलरव ! ···तालियों की गड़गड़ाहट !! जितेन्द्र और इरावती ने एक साथ पुकारा—ताजमनी···दी !

—यह बात नहीं कि पहले कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ समाज में ! परिवर्तन होते रहे हैं ।···बात है, परिवर्तन की गति की !

शैलेन्दर की बात को ध्यानपूर्वक सुन रहा है जितेन्द्रनाथ । भिम्मलमामा अपनी मोटी डायरी में उसकी बातों को नोट कर रहे हैं । जितेन्द्र ने पूछा —क्या, इसके पहले भी, किसी काल या युग में, आज की तरह अभाव-अभियोग और व्यर्थता के विलाप से सामाजिक वायुमण्डल परिव्याप्त हुआ था ?

—नहीं, ऐसा नहीं हुआ कभी । मैं मानता हूँ । इसका कारण है, परिवर्तन की गति में भी परिवर्तन हुआ है । ऐसी तीव्र गति कभी नहीं रही । इसकी तेज चाल के साथ तालमेल रख कर चलना आदमी के लिए असम्भव हो रहा है । इसीलिए, यह टूटन···। भिम्मलमामा ने पेंसिल रोक कर कहा —बन्दा बैलगाड़ी पर, जमाना ज्वेप्ट-जहाज में ?

शैलेन्दर श्रद्धा भरी हँसी हँसकर बोला—आप ठीक कहते हैं मामा ! बैलगाड़ी और जेट प्लेन की गति···!

तैयार रहिए ! जितेन्द्र ने कहा—बात तय हुई थी कि पहली प्याली पीने वाला एक चीनी गीत सुनायेगा ।

—चीनी गीत ?

—हा-हा-हा-हा !!

—लीजिए मामा ! मैं दूसरी प्याली लूँगा । शैलेन्दर ने हँस कर कहा। गोविन्दो ट्रे लेकर खड़ा था । बोला—नेंहि, नेंहि । पॅहिला कॉप माँ श्येमा को निवेदॅन कॅरा है ।

—तब, माँ श्यामा ही सुनायेगी एक चीनी गीत !

चिक की आड़ में मीत की छाया डोली । जितेन्द्रनाथ सतर्क हो गया, निश्चय ही ताजमनी अप्रसन्न हुई होगी !

सभी ने चाय की प्याली में पहली चुस्की लेने के बाद एक दूसरे की ओर देखा । भवेश की दृष्टि एक चाइनीज पेंटिंग पर अटकी । ···नई तस्वीर कब आई है ?

भिम्मलमामा ने कहा—माँ श्यामा की कृपा से मैं चीनी भाषा के दो-तीन शब्द जानता हूँ । गोरी-चमेली की पहली चुस्की लेने के बाद मन बेईमानी नहीं करना चाहता । उन शब्दों को जोड़कर यदि पूर्वी धुन में गुनगुना दूँ तो माँ सरस्वती नाराज तो नहीं होगी ?

भिम्मलमामा ने सुरीले सुर में गाया—नि हाउ-पू हाउ···शेई शेई !!

भिम्मलमामा के गुन-दोष को जानते हैं, सभी । इसलिए, सभी ने अपने पेट में कुलबुलाती हुई हँसी को रोक रखा । सुरपति की हँसी जरा फसक कर निकलना चाहती थी । किन्तु, उसने रोक लिया । भिम्मलमामा बोले—आप सदांक हैं ः

सिवा और कुछ उच्चारण नहीं कर सका !···हँसते हो !

भवेश ने हँसी को अपनी तुतलाहट से लपेट लिया ! लेकिन भिम्मलमामा सब कुछ समझते हैं ! बिगड़ कर बोले—वर्तमान खगसाहित्य के गीतों में सभी अपना ही रोना रोते हैं। दूसरे की कौन पूछता है, भला ! तुम नहीं समझोगे। ···हाँ, खगसाहित्य। ऐसा साहित्य जो चिड़िया की तरह पंखदार हो। खग ही जाने, खग ही समझे, खग की भाषा !

—मैं-स-स-स-साहित्यिक तृथोड़ों हूँ, म्मामा। लेकिन चीनी भाषा म्में तृतो प्रायः सभी शब्द में चँ-चँ-चँ-च···।

भिम्मलमामा ने भवेश को माफ कर दिया—चवर्ग-फोबिया है यह तुम्हारा ! बिना चौंचूँ वाले शब्द भी होते हैं।

भिगमलमामा ने शैलेन्दर की ओर मुखातिब हो कर कहा—अच्छी बात। इस चायचक्र और चवर्गचर्चा से चौंकित-चमत्कृत वातावरण में सामाजिक संकट की भूमिका अपिट होगी। इसलिए बात पत्तपन्न रहे। क्यों !··· बन्दा बैलगाड़ी पर, जमाना ज्येष्ठ जहाज में !···सबसे तीव्रगामी हवाजहाज को ज्येष्ठ मानना ही होगा।

गांव के किसी चौराहे से परमा की कठहँसी की हहास सुनाई पड़ी—हह हहह ! हहहह !!···उसकी हँसी के कारन तो बोतू नहीं कहते लोग !

भिम्भलमामा ने कहा—परम ज्येष्ठ आनन, परम आनन्द कन्द श्रीमन्त परमाननजी से मैं पचीस गज दूर रहता हूँ। परम आनन्द अवस्था में ही जो गले की नरेटी टीप देने को उतारू हो जाता है। वह परम कुपितानन होने पर क्या न कर दे !

—हहहहह ! हहहहह !!

परमा की विकट हँसी तीव्र हुई। परम आनंदित है, आज !

बौनाना इस हँसी से बहुत घबराता है। प्यार का बाजार भंग करने के बाद ऐसी ही हँसी का परमानन्द !

दीवाना पटने से लौट रहा है, अभी-अभी। अब, दीवाना नहीं—हरिजन दीवाना नाम है उसका। नाम छपा कर लौटा है पटने से, इस बार।··· हँसे परमा, जी भर कर! सबको ठीक करेगा हरिजन दीवाना।···ले आया है, झोली में!

चमरौधे!

लेखक—हरिजन दीवाना।

विभिन्न अवगुन और गुमान भरे, मुँड़े-कटे-छँटे आठ खोपड़ों पर क्रमशः आठ सर्गों में समाप्त। मूल्य—हरिजन सेवा के नाम, एक अठन्नी!

पुस्तकालय के पास वाले चौराहे पर मस्त होकर गा रहा है हरिजन दीवाना, स्वरचित चमरौधे के गीत—

> रेड़ी के तेल में, भींगे-भींगे, प्यारे-प्यारे
> चर-मर चमरौधे पहले, तेरे ही सिर पर मारें,
> आओ परानपुर के कलंक कुलंगार—
> लम्बे-लम्बे बालों पर कर दें बौछार आज!
> सचमुच में यार, तेरी ई किस्मत बड़ी तेज है···।

चमरौधे की प्रतियाँ धड़ाधड़ बिकने लगीं। ···ले जाइए खुद पढ़िए, अपनी घरवालियों को सुनाइए और बच्चों को रटाइए। जो बूझेगा, वह रीझेगा। नकद नहीं तो उधार ले जाइए!!

> जिसकी जाति बेंच आई अँगरेजिन ग्वालिन बेटी!
> जिसके घर में आई पहले, फूली-फूली पॉवरोटी—
> ···रंडी के पीछे छोड़ा सारा समाज को-ओ-ओ, दुनिया-जहान को।

एक अठन्नी, एक अठन्नी!! आठ बिगड़े दिमाग सिर पर—नरम-नरम, गरम-गरम!!

> भूमिहार सुत कुबेरा के सिर सूखे-सूखे डालें···

—जो भी कहो ! है असल कवि ? है न ?

—जो बूझेगा, वह रीझेगा । बहुत दूर की मार है ! वाह जी हरिजन-दीवाना !

जयमंगल ताँती, शिड्यूल-कास्ट-स्टुडेंट्स-यूनियन का सेक्रेटरी है, अपने कॉलेज में । सवर्णटोली के लड़के उससे बात नहीं करते । अपने दल के लड़कों के साथ वह हरिजन दीवाना के अगल-बगल में तैयार है । ···जरूरते-नागहानी पर मदद करेगा ।

> परम मूर्ख बोतू बातूनी बकबक क्यों करता है !
> आओ इधर नालवाला चमरौधा क्या कहता है ?
> हँसो और फिर हँसो, दाँत पर बार-बार मैं मारूँ···।

—हहहहह ! हहहहहह !! हरिजन सेवा के नाम, एक अठन्नी । हरिजन सेवक के नाम दूसरी अठन्नी । वाहजी, हरिजन दीवाना । क्या बनाया है चमरौधा । परमा भी गाने लगता है हरिजन दीवाना के साथ—

> ऊँची-ऊँची पगड़ीवालो पगड़ी अपनी खोलो
> गंगाजल से अपना-अपना मूँड़ा माथा धोलो··· !

—हहहहह ! हहहहहह !! वाह जी हरिजनदीवाना । लाओ पीठ ठोक दूँ··· ।

—ऐ ! मारते हो क्यों ? देखो जयमंगल, यह मार रहा है और कहता है कि पीठ ठोकता हूँ !···लुत्तो दादा को खबर दो, जरा ।

—क्यों मारा ?

उत्तेजित नौजवानों को अचरज हुआ।···आज जित्तनबाबू भी आए हैं?

परमा ने चमरौधे की प्रति जितेन्द्र के हाथ में देते हुए कहा—ऐसी अच्छी किताब पर तो नोबेल प्राइज मिलना चाहिए। मैंने जरा सा पीठ ठोंक दिया तो क्या बुरा किया? आप ही कहिए, भैया!

—नहीं, वैसे भला पीठ ठोका जाता है? देखिए, पीठ लाल हो गया है!

जितेन्द्र ने पृष्ठों को उलट-पुलट कर देखते हुए कहा—लड़ाई-झगड़ा करने के बदले इसको एंजॉय क्यों नहीं करते, परमा!

जितेन्द्र को हँसते हुए देख कर हरिजन दीवाना को अचरज हुआ, उसके साथियों ने आपस में कानाफूसी की। जयमंगल ताँती ने धीरे से कहा—घबड़ाने की बात नहीं, लुत्तो बाबू आ रहे हैं।

—एक प्रति मुझे भी दीजिए! जितेन्द्र ने कहा। हरिजन दीवाना ने झोली से एक प्रति निकाल कर बढ़ाया। जित्तन ने माथा झुका दिया। सभी ठठा कर हँस पड़े।—हा-हा-हा-हा! हहहह! हहहह!! हो-हो-हो!! हरिजन दीवाना अप्रस्तुत हुआ!

परमा ने हाथ के साप्ताहिक-पत्र को मोड़ कर चोंगे की तरह बनाया और उसमें मुँह लगा कर बोला—भोइओ-ओ! ओज रोत! पुस्तकोलोय में बिरोट कवि सम्मेलन! मोंगनीसिंघ दीवोनो उर्फ प्रेमकुमोर उर्फ हरिजन दीवोनो···!!

जितेन्द्रनाथ बरदियाघाट की ओर चले—हँसते-मुस्कराते। राह में साम-बत्ती पीसी पर नजर पड़ी। पीसी हँस कर रह गई।···आज रास्ता भूल कर गाँव की पुरानी गली से जा रहे हैं!

पनघट पर औरतों ने सिर पर घूँघट खींचे। फेकनी की माय कुछ कहते-कहते रुक गई—आकि देखो···!

रात में पुतली दौड़ी आई : मेमरानी ! सरबनाश हो गया !

—का-ली ! क्या है, पुतली ?

—सुलतानपुर मेले को लूट लिया गया। दो खाटी साहब और एक देशी साहब मारे गए। एंथोनी साहब घायल हुए हैं।···पाँच सिपाही मरे हैं।

—कहाँ ? कहाँ ? मम्मी घबरा गई।

मैंने पुतली को आँख का इशारा दिया। पुतली बोली—अभी, कोई बोल रहा था कि सुलतानपुर मेले को लूट लिया गया है।

—मम्मी ! यहाँ तो हमेशा बलवा-हँसरी, दंगे-फसाद लगे ही रहते हैं। घबराती क्यों हो ?

मम्मी तुरत शान्त हो गई। बोली—तुम्हारा यह भला आदमी न जाने कहाँ है ? सुलतानपुर मेला तो मिस्टर एंथोनी का है न ?

रात भर मैं बेसुध रही माँ के पास। सुबह को फुलवारी से जवाफूल लाने गई तो फाटक के पास एक तख्ती लटकी देखी। रात में ही लटकाई गई है—'श्रीमती गीता मिश्र से मिलनेवाले अंग्रेज बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि श्रीमती एक हिन्दू जमींदार की पत्नी है। हिन्दू धर्म के आचार-विचार पालती है

एक फौजी हुक्म गूँज गया ! प्रतिध्वनि हुई—अ-ऽ-ऽ-वा-हा-ऑ-क् ! दरबान ने परवाना लाकर दिया—डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का परवाना !

"'एस. मिश्रा इज वान्टेड ! खूनी मुकदमे का आसामी अव्वल । डि. एम. कोठी की तालाशी लेंगे !

मम्मी घबराई । मैंने समझाया—मिस्टर एंथोनी से मिश्रजी की पुरानी दुश्मनी है, सो तो तुम जानती ही हो ।

लेकिन, मम्मी ने बार-बार फुसफुसा कर कहा—मरडर ! मरडर !!

मैंने माँ तारा की चरणधूलि लेकर कहा—माँ तारा मेरी, रोज बलि चाहती है तो कोई क्या करे ?

मम्मी मूक-बधिरा-सी खड़ी रही ।

मैं स्वीकार करती हूँ, यदि मिस्टर एंडरसन की जगह पर कोई और अंग्रेज डी. एम. होता तो घटनाएँ दूसरा रूप ले सकती थीं । बहुत प्रतिष्ठित परिवार का विद्वान बेटा है वह । डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मिस्टर एंडरसन अपने कुछ अधिकारियों के साथ अन्दर आया !

फौजी सर्जेन्ट ने डि. एम. से आकर कहा—बहुत-से लोग तीर-धनुष, बल्लम-गँड़ासा लेकर फाटक के चारों ओर जमा हो रहे हैं । आइथिंक ए फिउ राउण्ड'''।

डी. एम. ने कहा—हमेशा गोली से बात मत कीजिए । उन्हें समझा कर पूछिए, वे क्या चाहते हैं । भीड़ क्यों लगा रहे हैं ?

मिश्रजी तो मिले नहीं । किन्तु, तालाशी के सिलसिले में डी. एम. ने मेरे घर का कोना-कोना देख लिया । गुहाल और गोशाले में भी झाँकी मार आया ।

मैंने, अपने प्रत्येक कमरे की दीवारों पर अपनी और मिश्रजी की रुचि से म्युरलस अंकित किए थे । इस अंचल में प्रचलित भित्तिचित्र के आधार पर'''। मिस्टर एंडरसन ने हमारी किताबों की अलमारी दूर से ही देखा—

आली !···सुल्तानो पोखरा का मेला, जिले भर के हिन्दू, मुसलमानों का एक महत्वपूर्ण धार्मिक मेला है। दोनों कौम की स्त्रियाँ तीन दिनों तक नहाती हैं। जनाब को यह भी मालूम है कि मैथिल ब्राह्मण तथा ऊँचे वर्ण की स्त्रियाँ साड़ी के सिवा और किसी किस्म का अँगरखा नहीं पहनतीं !··· मुझे परानपुर पोखरे के जनानाघाट पर नहाती हुई स्त्रियों की याद आई ! ···पिछले साल, जनाब के कुछ दोस्तों ने मिलकर नहान के समय कुछ बेजा हरकत की थी जिसकी सूचना आपको वाजिब समय पर दी गई थी ! इस बार नहान के पहले ही—मेले में जो आपने कलकत्ते से अँग्रेजी डान्स और कार्निवल पार्टी बुलाई है—उसके कुछ लोगों ने छेड़खानी की है, औरतों से।···

मुझे बार्कर की याद आई !

···जनाब से प्रार्थना है, घटनाओं की जाँच करके हमें यकीन दिलावें ताकि हमारी स्त्रियाँ कल सुलतानो पोखरा में धार्मिक अनुष्ठान करके, नहा सकें। नहाने के समय अथवा मेले में कोई अशोभन घटना न घटे !···

दर्खास्त पर बहुत से दस्तखत हैं। सबसे ऊपर मेरे स्वामी का हस्ताक्षर है—श्री शिवेन्द्रनाथ मिश्र, मालिक—परानपुर इस्टेट।···राजा महिपाल सिंह नैनगंज राज। राजा नीलमणि ओझा, राज चम्पापुर। जमींदार उमापति राय, कटौतिया इस्टेट। चौधरी महम्मद अताउर रहमान, चौधरी इस्टेट। राजा आतिश खाँ···।

मुसलमानों ने भी कैथी लिपि में दस्तखत किए हैं। जिले भर के पन्द्रह राजा, जमींदार और पतनीदार के हस्ताक्षर।

—इसमें जाल की क्या बात है ?

—उलट कर पढ़ो !

इसी पत्रक के दूसरे रुख पर लाल रोशनाई से खूब बड़े-बड़े अंग्रेजी अक्षरों में कुछ पंक्तियाँ लिखी गई हैं—आड़ी-तिर्छी ! गुस्से में थर-थर काँपते हुए या शराब के नशे में लिखी हुई पंक्तियाँ—

एक फौजी हुक्म गूँज गया ! प्रतिध्वनि हुई—अ-ट-ट-वा-हा-ऑ-क् ! दरबान ने परवाना लाकर दिया—डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का परवाना !

''''एस. मिश्रा इज वान्टेड ! खूनी मुकदमे का आसामी अव्वल । डि. एम. कोठी की तलाशी लेंगे !

मम्मी घबराई । मैंने समझाया—मिस्टर एंथोनी से मिश्रजी की पुरानी दुश्मनी है, सो तो तुम जानती ही हो ।

लेकिन, मम्मी ने बार-बार फुसफुसा कर कहा—मरडर ! मरडर !!

मैंने माँ तारा की चरणधूलि लेकर कहा—माँ तारा मेरी, रोज बलि चाहती है तो कोई क्या करे ?

मम्मी मूक-वधिरा-सी खड़ी रही ।

मैं स्वीकार करती हूँ, यदि मिस्टर एंडरसन की जगह पर कोई और अंग्रेज डी. एम. होता तो घटनाएँ दूसरा रूप ले सकती थीं । बहुत प्रतिष्ठित परिवार का विद्वान बेटा है वह । डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मिस्टर एंडरसन अपने कुछ अधिकारियों के साथ अन्दर आया !

फौजी सर्जेन्ट ने डि. एम. से आकर कहा—बहुत-से लोग तीर-धनुष, बल्लम-गँड़ासा लेकर फाटक के चारों ओर जमा हो रहे हैं । आइथिंक ए. फिउ राउण्ड'''।

डी. एम. ने कहा—हमेशा गोली से बात मत कीजिए । उन्हें समझा कर पूछिए, वे क्या चाहते हैं । भीड़ क्यों लगा रहे हैं ?

मिश्रजी तो मिले नहीं । किन्तु, तलाशी के सिलसिले में डी. एम. ने मेरे घर का कोना-कोना देख लिया । गुहाल और गोशाले में भी झाँकी मार आया ।

मैंने, अपने प्रत्येक कमरे की दीवारों पर अपनी और मिश्रजी की रुचि से म्युरल्स अंकित किए थे । इस अंचल में प्रचलित भित्तिचित्र के आधार पर'''। मिस्टर एंडरसन ने हमारी किताबों की अलमारी दूर से ही देखा—

—संस्कृत ग्रन्थों पर अंग्रेजी में लिखे सुनहले नामों को पढ़कर विस्मित हुए ···रामायण, महाभारत, रघुवंशम्, मेघदूत, कुमार संभवम्!

जाते समय मिस्टर एंडरसन ने मुस्कुरा कर माफी माँगी : क्षमा करेंगी!

डि. एम. सदल-बल परानपुर की ओर चले। भगवान जानें, रानीबहिना के साथ कैसा व्यवहार करें! वहाँ कोई अप्रिय घटना न घटे कोई। माँ तारा!! दूसरे ही दिन मैं परानपुर गई। ···मिस्टर एंडरसन सचमुच भद्र व्यक्ति है। हम दोनों बहनों ने व्रत पालन किया। दुलारी दाई में नहा आई। माँ तारा के मन्दिर में पूजा हुई!

लॉली को मैं पूछती—लॉली, डैडी आयगा?

—आय, आय! मुँह में उँगली डालकर जिद्दू-बद्दू जवाब देता—आय-आय!!

—लॉली, डैडी आयगा?

—आय-आय!!···दो छोटे-छोटे हाथ, नन्हीं हथेलियाँ!

परानपुर हवेली के अन्दर महाभारत सुन रही थी। अचानक, बाहर शोर-गुल होने लगा। रानीबहिना की नौड़ी चिल्लाई—मालकिन, दुल्हाबाबू आबिगेल! लाउ हमर इलाम-बकसिस। हमर बात ठीक भेल?

—क्या कहती है तू?

—सच! तारा मन्दिर में गए हैं।

रानीबहिना ने गले का चन्द्रहार उतार कर जिवछी के आगे फेंक दिया। शंखध्वनि से सारा वातावरण गूँज उठा!

मूँगा के लिए मैंने बेसन का हलुआ बनवाया। जीतकर आया है—मूँगा! इस मुकदमे की जीत की खुशी में हमारा परिवार दो दिनों तक मस्त रहा। गाँव में भोज और गीत-उत्सव हुए।

पहली बार माँ तारा के मन्दिर में श्यामा संकीर्तन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !

माँ तारा की प्रतिमा हँस पड़ी···

मनहि में राखब भूवनमोहिनी माँ के
करि सब बन्द दुआरे,
सोहि मन्दिर एको दियरो न लेश'ब
तबहुँ जगत उजियारे—तारा-तारा !!

कचनार के फूलों से लदी मैं मिश्र जी की गोद में न जाने कितनी देर तक सोई रही !···गुलाबजामुन के फूल पाउडर-पफ जैसे होते हैं। फूल के केसर थरथराते हैं। मिश्रजी ने कहा—अब जीवन में फिर कोई दस्तावेज जाल नहीं कर सकूँगा। इस बार मेरा दाहिना हाथ अवस होता जा रहा है !

मिश्रजी ने हाथ को ऊपर उठाते हुए कहा—कँपकँपी देखती हो न ? मैं मिश्र जी की हथेली को चूम कर बोली—माँ तारा अब तुमसे कोई ऐसा काम नहीं करवायें जिससे तुम्हारा हाथ अवस होकर काँपे !

मेरे स्वामी की हथेली सचमुच काँप रही थी—भगवान ! यह क्या ?

—हाँ, माँ की यही इच्छा है। अब मैं कोई ऐसा काम न करूँ, इसीलिए यह दण्ड ! तुमको नहीं मालूम गीत ! पिछले महीने, लगातार पन्द्रह दिनों तक दिन-रात काम करने के बाद, जब मेरी हथेली थरथराने लगी तो मैं रो पड़ा। माँ से प्रार्थना की—बस, यही आखिरी···क्या कर रही हो माँ !··· एंथोनी साहब के दस्तखत का आखिरी नुक्ता देते-देते मेरी उँगलियाँ कबूतर के पंख की तरह थर-थर काँपने लगीं।

मिश्रजी ने अपने बैग से रॉल किया हुआ कागज निकाल कर फेंक दिया। एक लम्बी-चौड़ी अर्जी !

···जनाब मिस्टर एंथोनी साहब, मालिक सुल्तानपुर इस्टेट ! जनाब

आली !···मुल्तानो पोखरा का मेला, जिले भर के हिन्दू, मुसलमानों का एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक मेला है। दोनों कौम की स्त्रियाँ तीन दिनों तक नहाती हैं। जनाब को यह भी मालूम है कि मैथिल ब्राह्मण तथा ऊँचे वर्ण की स्त्रियाँ साड़ी के सिवा और किसी किस्म का अँगरखा नहीं पहनतीं !··· मुझे परानपुर पोखरे के जनानाघाट पर नहाती हुई स्त्रियों की याद आई ! ···पिछले साल, जनाब के कुछ दोस्तों ने मिलकर नहान के समय कुछ बेजा हरकत की थी जिसकी सूचना आपको वाजिब समय पर दी गई थी ! इस बार नहान के पहले ही—मेले में जो आपने कलकत्ते से अँग्रेजी डान्स और कार्निवल पार्टी बुलाई है—उसके कुछ लोगों ने छेड़खानी की है, औरतों से।···

मुझे बार्कर की याद आई !

···जनाब से प्रार्थना है, घटनाओं की जाँच करके हमें यकीन दिलावें ताकि हमारी स्त्रियाँ कल मुल्तानो पोखरा में धार्मिक अनुष्ठान करके, नहा सकें। नहाने के समय अथवा मेले में कोई अशोभन घटना न घटे !···

दर्खास्त पर बहुत से दस्तखत हैं। सबसे ऊपर मेरे स्वामी का हस्ताक्षर है—श्री शिवेन्द्रनाथ मिश्र, मालिक—परानपुर इस्टेट।···राजा महिपाल सिंह नैनगंज राज। राजा नीलमणि ओझा, राज चम्पापुर। जमींदार उमापति राय, कटौतिया इस्टेट। चौधरी महम्मद अताउर रहमान, चौधरी इस्टेट। राजा आतिश खाँ···।

मुसलमानों ने भी कैथी लिपि में दस्तखत किए हैं। जिले भर के पन्द्रह राजा, जमींदार और पतनीदार के हस्ताक्षर।

—इसमें जाल की क्या बात है ?

—उलट कर पढ़ो !

इसी पत्रक के दूसरे रुख पर लाल रोशनाई से खूब बड़े-बड़े अंग्रेजी अक्षरों में कुछ पंक्तियाँ लिखी गई हैं—आड़ी-तिर्छी ! गुस्से में थर-थर काँपते हुए या शराब के नशे में लिखी हुई पंक्तियाँ—

···योर नेकेड वीमन ! तुम्हारी नंगी औरतें पोखरे में नहाने आती हैं। हम दुरबीन से उन्हें देखते हैं। दुरबीन की राह हमारे एकदम करीब आ जाती हैं।···हम उन्हें अपने पलंग पर देखना माँगते हैं। कसूर तुम्हारी औरतों का है। वे इतनी सुन्दर क्यों होती हैं। बिना किसी रंग के उनके ओंठ क्यों इतने लाल रहते हैं ? पागल बना देती है··· । तुम्हारे कहने से हम अपनी कोठी की खिड़कियाँ बन्द नहीं कर सकते। केल्केटा, डाइनापो और डेराडुन के दोस्तों को मैंने जशन के लिए बुलाया है। एकादशी और रोजा-नमाज पढ़वाने के लिए नहीं।···तुम्हारी औरतें इतनी बेवकूफ क्यों हैं ? भला, पोखर-तालाब भी बचा दे सकता है ? बचा तो आदमी······ ।

और, और, इस शैतान की जान कैसे बच गई ? पढ़ते-पढ़ते मेरे गाल लाल-टेस हो गए। उसकी मेम ने बचा लिया। पैर पर गिर पड़ी, एक्सक्यूज मिश्रा···प्लीज !

—तुमने यह नहीं पूछा कि इसमें जाल क्या है ?

—कैसा जाल ?

कागज मोड़ते हुए, मिश्रजी बोले—बातें सारी सच हैं। किन्तु, इस कागज पर चढ़ी हैं बातें, मेला लूट हो जाने के बाद।

—आँय !···फिर भी। पहले हो या पीछे, एंथोनी का वह जहरीला जवाब ?

देखता हूँ, दूध घी का व्यापार करने से कुछ डल हो ही जाती है बुद्धि।

मिश्र जी ने एंथोनी की लिखावट पर उँगली डाल कर कहा—इसको एंथोनी ने चैलेंज किया। आसमान से गिरा अपनी लिखावट को देख कर। सपने में भी नहीं ! मैंने कभी नहीं लिखा।···नहीं लिखे, कहा तो उसने अवश्य था।

मैं काँप उठी, न जाने क्यों !

—हस्ताक्षर विशेषज्ञ विभाग के अफसरों ने कहा, एकमत होकर—यह जाल

नहीं। लिखावट मिस्टर एंथोनी की ही है।···और, तुम्हारा मिस्टर एंडरसन सचमुच भला आदमी है। उसने गवर्नर को लिखा : इस बार मिस्टर-एंथोनी ने ऐसा कुकाण्ड किया जिससे सारे जिले में गदर होने की सम्भावना थी। यहाँ के प्लांटर्स हमेशा ऐसी ही वारदातें करते हैं। जिले के पूर्वी इलाके से कल एक जवान लड़की की लाश आई है। ···शासन विशेषज्ञ की हैसियत से मैं कहना चाहूँगा—दंगे का मामला उठा लिया जाय। वरना, दबी हुई आग भड़क सकती है। आप इस मामले के कागज को खुद पढ़ कर, विचार करें। इस मुकदमें को पेंडिंग में रखना भी खतरे से खाली नहीं।···अन्यथा, जिले का शासन भार जिले के किसी प्लांटर को ही दे दें। हा-हा-हा !! लाट साहब ने इन प्लांटर्स को कनैठी दी है, बुला कर—श्री यु हेरी-डिक-टॉम। माइंड यु··· !

···मैं रूठी रही।

मिश्रजी ने कहा—क्यों, तुम मेरे कुकृत्य को सुन कर नाराज हो ?

—कुकृत्य-सुकृत्य मैं क्या जानूँ ! अब, मुझे बोलना ही पड़ा—मैं दूध-दही बेचने वाली ग्वालिन हूँ। मुझसे पण्डित-ज्ञानी लोग क्यों बोलें ?···हल ! एक काले छोकरे की बाँसुरी पर तन-मन जीवन अर्पित करनेवाली मूर्खाओं को टल नहीं तो और क्या कहोगे ?

मिश्रजी ने कहा—हजार बार यशोदा के पास जाकर लाख बातें लगा आतीं ! सौगन्ध खातीं—अब जो कभी तुम्हारे आंगन में पाँव भी धरूँ ! अब जो कभी बोलूँ तुम्हारे काले-कलूटे, चोर बेटे से ! और, ज्योंही बाँसुरी बजी··· ।

हा-हा-हा हा ! हैं-हैं-हैं-हैं !!

गरुड़धुज झा का अनुमान सच निकला! पाँच दीवानी मुकदमें दायर हो चुके हैं। एक-से-एक रंगीले मुकदमें! परिवार का एक प्राणी दूसरे को निगलने की तैयारी कर रहा है। लड़के ने अर्जी दी है—विधवा माँ परिवार को नेस्तनाबूद करने पर तुली हुई है। पारिवारिक सम्पत्ति को बर्बाद कर रही है। माननीय जज साहब तुरत इंजंकशन की कार्रवाई को मंजूर करें!

बाप ने प्रार्थना की है, वह सम्मिलित परिवार का कर्ता होकर अभी भी जीवित है। सम्मिलित परिवार की आमदनी के पैसे से उसके लड़के ने जमीन खरीदी—सब अपने नाम से। अब, एक धूर जमीन भी नहीं देना चाहता उसका बेटा। गुजारिश है··· ।

एक ही पखवारे की आमदनी से आनेवाले महीनों की आमदनी का हिसाब जोड़ कर देखा है, गरुड़ झा ने। मार-काट कर पाँच सौ रुपए महीने की आमदनी!···गरुड़धज झा वकील से कम दावी नहीं रखता है। सलाह, नगद पैसा लेकर ही देता है। मुफ्त में कभी नहीं। फीस के अलावा भेंटी और दर्शनी के रूप में दही, केला, दूध, चिउड़ा आदि भी स्वीकार करता है।

इसके अलावे, रोशन बिस्वां से कर्ज लेने वाले खातुक भी पहले गरुड़धुज झा के ही पास आते हैं। बिना गरुड़ झा की जमानत लिए किसी को कर्ज नहीं देता है बिस्वां। ··· गरुड़ झा एक कहावत को दिन में पांच बार दुहराता है—गाछ पर चढ़ो गिरने के लिए, जमानत होओ भरने के लिए! मुफ्त में कौन जान फसाने जाय अपनी? खातुक लोग दांत निपोड़ कर घिघियावें या देह नोंचे अपनी। गरुड़धुज झा को इसमें क्या? दान-

दक्षिणा की बात वह साफ-साफ शब्दों में करता है। लस्टम-पस्टम नहीं, पांच रुपया सैकड़ा से एक अधेला कम नहीं। तीन रुपये पर बात तोड़ कर वह अपनी दूसरी कौड़ी फेंकता है—क्यों, किसको मुखिया चुनोगे? वैसे, तुम्हारी जो मर्जी हो करना। लेकिन, एक बात जान लो—खगता आदमी का कोई परतीत नहीं। जिसकी संदूक में कभी दस रुपया भी नहीं रहा—उसके पास अचानक हजार रुपया सरकारी तहसील से आ जाय। तो, वह क्या करेगा? एक ही बार में सब हड़पना चाहेगा या नहीं? रोशन बिस्वां को क्या कमी है? अघाया हुआ मन है। वह मुखियागिरी के के लिए जरा भी तैयार नहीं था। मैंने जबर्दस्ती नौमलेशन दाखिल करवाया है।···और आज रोशन बिस्वाँ नहीं होता गांव में तो, बहुतों की इज्जत मिट्टी में मिल जाती। फारबिसगंज के मारवाड़ी महाजन परानपुर गाँव का नाम सुनते ही साफ इनकार कर जाते हैं, सो जानते ही हो। बेर-बखत पर जो काम दे, वही असल हितु। है या नहीं?

गरुड़ झा ठीक ही कहते थे—रोशन बिस्वां की मुखियागिरी उसके तिजोरी में धरी हुई है।

सोशलिस्ट पार्टी के जयदेव और रामनिहोरा में फिर मेलजोल हो गया है। रामनिहोरा, ग्राम पंचायत की मुखियागिरी के लिए खड़ा हुआ है। पार्टी वाले पीठ पर हैं, मदद करने के लिए।

सुचितलाल मड़र, मकबूल से राय लेकर नामजदगी का पर्चा दे आया है।···पर्चा दाखिल करते समय उसकी हालत सांप-छुछुन्दर जैसी हो गई। आखिर, सरकारी कागज में लिखे हुए नाम को कबूल करना ही पड़ा—सुचितलाल मड़र, कोइट में पोंपी!

बस, दो ही विरोधी हैं। बीरभद्र के भाई शिवभद्र को जितेन्द्र ने दस एकड़ धनहर जमीन दे दी है। तीनों भाई आजकल अपने मरे हुए मामा-मामी का गुनगान करते फिरते हैं।···बीरभद्र यदि उतरता चुनाव के

मैदान में ! लुत्तो कहता है—झाजी ! असल मजादार कैण्डेट नहीं तो कुछ नहीं । इसी बार वीरभद्दर को दगाबाजी का मजा चखा देता !

लुत्तो और गरुड़ झा एक ही चुटकी बजाकर दोनों विरोधियों को चित्त कर देगा । गरुड़ झा ने लुत्तो को सलाह दी—खबरदार ! जब तक चुनाव नहीं हो जाय, बिरवां को पूरा भरोसा दिलाकर कुछ कहना ठीक नहीं ।···सबसे मोटी बात यही है, एक ही वोट में हार-जीत की बात है ! क्या जाने क्या हो ! अपनी ओर से कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए ।

तब, लुत्तो ने अपने मन की बात खोली—झा जी ! दोनों कैण्डेट, समझिए कि मेरी मुट्ठी में हैं । मैंने लंगी लगा दी है । एक को सरपंची का लोभ दिया है और दूसरा कुछ रुपया चाहता है ।

गरुड़ झा ने पत्थर का दाँत चमका कर चेतावनी दी—हूँ-ऊँ !···लेकिन, बिरवां से कहना होगा—दोनों उम्मीदवार रुपया लेकर ही नाम वापस लेंगे । और, असल रकम की बात कहीं खोलने की नहीं ।

बिरवां को लुत्तो और गरुड़धुज झा ने मिलकर तुरत समझा दिया—पाँच सौ रुपए फी उम्मीदवार को देकर भी घाटे में नहीं रहेगा, बिरवां । चुनाव में खुदरा खर्च ही इससे ज्यादा हो जायगा । तिस पर भी, ऊँट किस करवट बैठे ! एक ही वोट पर हार-जीत की बात है ।···तिजोरी में रक्खी हुई है बिरवां की मुखियागिरी !

मुखिया ! सारे परानपुर गाँव का मालिक ! जिसके इशारे पर गाँव के लोग उठेंगे, बैठेंगे !! जेल और जुर्माना करने का पावर ! बिरवां ने लगातार तीन चार जीभ निकाल कर ओंठ चाट लिया । तिजोरी से नोट निकाल कर गिनते हुए बोला—कहीं ठग न ले, दोनों ! लुत्तो और गरुड़ झा एक ही साथ हँसा, ठठा कर—ठग लेगा ! ठठेरे-ठठेरे···हा-हा-हा !!

रामनिहोरा ने सोच-विचार कर देखा—सरपंची ही ठीक है ! मुखिया तो सरपंच के हाथ का कठपुतला होता है । उसने गरुड़धुज और लुत्तो को

बात मान ली। पर्चा उठाने को तैयार हो गया।

सुचितलाल मड़र अपने पोंपी नाम को लेकर चुनाव नहीं लड़ना चाहता। गाँव के छोटे-छोटे लौंडे भी उसको देखकर नारा लगाते हैं—पोंपी को फूँक दो, सुचितलाल को भोट दो!

मुवल्ग एक सौ पचीस रुपये गिनकर सुचितलाल ने कमर में खोंसते हुए कहा—रजिस्टर में गँलत नाम कँटवाँ दीजिएँ झाँजी किसीं तरँह!

ग्राम पंचायत आफिसर साहब की कचहरी हाई-स्कूल में लगी है!

रोशन बिस्वां के दोनों विरोधियों ने नामजदगी के पर्चे वापस ले लिए।

लुत्तो ने कहा—देखा झा जी! आखिर, बबुआन टोली को चित्त किया या नहीं? सोलकन्ह मुखिया बनाया या नहीं?

गरुड़ झा ने खैनी थूकते हुए कहा—मैंने मदद नहीं की होती तो?

—ठीक कहते हैं, झा जी। आप ने खूब मदद की है। चलिए जरा टीशन की ओर! सुचितलाल मड़र को देने के बाद बचा है···।

गरुड़धुज झा ने कहा—अढ़ाई सौ रुपया हाकिम का भी घटा दो।··· हाकिम तैयार हीं नहीं हो रहे थे।···पांच बजे के बाद नामजदगी का परचा वापस करने आए हैं? टैम ओवर हो गया। मैंने दो पूरी एक आधी उँगली दिखलाई। तब, कलम पकड़ी हाकिम ने।

लुत्तो ने मान लिया—जो वाजिब खर्च है, वह क्यों नहीं घटेगा!

—और हिरिया ने मुझसे बनारसी साड़ी वसूल ली है। पांच दिन के करार पर खेमचंद मारवाड़ी की बही में अपना नाम चढ़वा कर, मैंने साड़ी ला दी है। तुमने कहा था न! एक सौ पांच रुपए।

—हां। वह भी जोड़ देता हूँ। और···एक सौ रुपया मैंने ईंट बनाने की मजदूरी दी है। बाकी जो बचा, उसका आधा···।

—कैसा हिसाब करते हो? एक सौ रुपए का ईंट दोगे मुझे क्या?

परती : परिकथा–४४४

—हां-हां। ठीक। छै सौ पचीस का आधा ?

मुखिया साहब गाँव की गली-गली में सायकिल का नया हारन बजा कर घूम रहे हैं—पें-ऐं-ग ! पें-ऐं-ऐं-ग !!

—झा जी ! एक खुशखबरी और सुन लीजिए ! जित्तन का भोज भंडुल हो गया। ब्राह्मणों ने भोज खाने से इनकार कर दिया—अब कौन खायगा उसकी हवेली में ? हम लोग नट्ट नहीं हैं ! जित्तन ने कहा—न नकद रुपया देंगे और न भोज देंगे।

लुत्तो और गरुड़धुज झा ने जोर से ठहाका लगाया—गेल भैंस पानी में ! बहुतों की जीभ छटपटा कर रह जायगी।

जीभ छटतटाती है रोशन बिस्वां की ! मुखिया होने के बाद ही उसने अपनी जीभ को लगातार पांच बार दाँतों से कुचल दिया। इसलिए बिना जर्दा वाला पान भी जीभ को धधकाता है।···पान की पीक कुर्ते पर गिर पड़ी ! गरुड़ झा ने कहा— शुभ है, शुभ है !! अब आप हमेशा पान कचरिएगा !

ताजमनी क्या करे ? जितेन्द्रनाथ अधिक संगसुख चाहने लगा है। उँगलियाँ चूम कर सन्तोष नहीं, अब ! अब क्या हो ?···माँ तारा !!

···और जित्ता का क्या कसूर ? क्या हुकुम देती हो माँ ! तुम्हारे सामने झूठ कैसे बोलूँ, मेरा मन भी अब थिर नहीं। मैं अपने जित्ता को सम्पूर्ण सुखी देखना चाहती हूँ। उसकी लजाई आँखें, मैं नहीं देख सकती। मैं उसको क्या जवाब दूँ ! कल ही मेरे पीछे-पीछे दौड़ा आया···।

—ताज़ !

—नहीं, जित्ता ! मुझे माफ करो ! पैर पड़ती हूँ तुम्हारे। मुझे हुकुम लेने दो माँ से !···माँ जो कहेगी, करूँगी।

देखता रहा जितेन्द्र । बन्धन ढीली हुई—ठीक है, तुम्हारा सत्त भंग नहीं करूँगा ।

—सत्त अकेली मैंने ही नहीं किया था !···जिद्दा ! यह क्या ?

ताजमनी को लगा, गालों पर दो सोने के तपे सिक्के बैठा दिए गए ! लाल-लाल !···ताजमनी के ललाट पर, दाहिनी ओर एक छोटा-सा चाँद का दाग है । बचपन में सोने का कण्ठा तपा कर दाग दिया था, उसकी माँ ने । नजर लग गई थी किसी की ! घण्टों चिल्लती रही थी ताजमनी ।···

—विश्वास करो ताज ! सत्त भंग नहीं हुआ है ।

—सच ?

—हाँ ।

ताजमनी के गालों की जलन दूर हो गई ! जितेन्द्र की आँखों में ढूढ़ कर देखा उसने—सचमुच, कहाँ है इनमें कोई कलुष ? ऐसी आँखों का पूर्ण विश्वास है ताजमनी को । उसने बचपन से ही देखा है !···सत्त भंग नहीं हुआ ? तो, जिद्दा !···जि-त्-दा !!

जीवन में पहली बार जितेन्द्र के ललाट को चूम कर, जितेन्द्र की आँखों में देखा उसने ।···अब देखूँ ? और, अब ?···!!

जितेन्द्र के मुख मंडल पर कमल की पंखुड़ियाँ बरसीं ! ···दूसरे दिन, सुबह होते ही सुधना भाग कर गंगाबाई के यहाँ चला गया ! जला-भुना रहता था हमेशा—पिछले कुछ दिनों से । कभी-कभी ताजमनी को भद्दी गालियाँ भी देता, धीमी आवाज में । एक दिन, गुस्से में मार भी बैठा । ताजमनी अवाक है ! जाने के पहले सुधना की आँखें और जहरीली बोली की याद कर वह सिहर उठती है । डाह ?···उत्ती-जरा लड़का भला ऐसा जलेगा ? ताजमनी डर गई है !

सुधना के खाने की बेला में मीत उसके खाट को सूँघ आया । ताजमनी मुँह में कौर नहीं डाल सकी ।

गोविंदो रसोई घर में बड़बड़ा रहा है—कहाँ का कौन तो भाई! उसको खातिर खाना-पीना छोड़के ताजनदि बेकार जान देता है। ···उल्लूक है छोकड़ा!

जितेन्द्र गुनगुना कर गा रहा है—वैराग जोग कठिन उधो-ओ-ओ, हम ना कऽरऽब हो! हुँ-हुँ-अँ, उँ-य-हुँ-हुँ-हु-हुँ-उँ-ऊँ···! पूरबी धुन में मस्त है, जीत।

गोविन्दो चाय की खाली प्याली लेने आ रहा था। अँगनाई में खड़ी ताजमनी चौंक पड़ी।···खड़ी सुन रही थी। गोविन्दो ने जो गुनगुनाहट सुनी तो थमक कर खड़ा हो गया। उसके ओठ खिल पड़े, नुकीले।··· फूल फूटा है, इस बार गन्धऽ निकॅलता है। वह वापस हो गया!

ताजमनी तुलसीचौरा के पास खड़ी अब अपनी हँसी रोक नहीं सकी।··· अभी तुरत वैराग जोग कठिन हो रहा था और अब पटना शहर से जहर मँगा रहे हैं!

···सखि हे-ए—पटना शहर से जहर हम मँगइबए, सखि हे-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ-हुँ-हु खइबए!! ताजमनी ने खिड़की से झाँककर देखा—एक मोटी किताब को रूमाल से झाड़ रहे हैं।···अलमारी की सफाई हो रही है! ऐसे समय में उन्हें कोई विरक्त नहीं करे।·· महाभारत को उलटते-पलटते ताजमनी को भी मालकिन-माँ की कितनी बातें याद आती हैं!

ताजमनी हौले पाँवों अपनी कोठरी में लौटी और माँ काली की तस्वीर को प्रणाम कर मुस्कुराई!···माँ!!

ताजमनी, सचमुच आँखों को पढ़ना जानती है ?

अपनी लाइब्रेरी में लटकाने के लिए उसने हिन्दी, बँगला, अंग्रेजी तथा उर्दू के कई प्रसिद्ध साहित्यकारों की बड़ी-बड़ी तस्वीरें मँगवाई थी। सुबह भवेश आकर, प्रत्येक की जगह तजवीज करके लटका गया था। शाम को टहल कर लौटा जितेन्द्रनाथ। कमरे में पैर रखते ही स्वामी विवेकानन्द की मूर्ति के पास लटकी निराला जी की तस्वीर पर नजर गई !···यह किसने किया है ? मेरे कमरे में कोई आया था ? भवेश, सुरपति···इरावती ?

—क्यों ! क्या हुआ ?

—तस्वीर किसने लटकाई है, यहाँ ?

ताजमनी पर्दे के इस पार चली आई, कमरे में। जितेन्द्र की आश्चर्य-चकित मुद्रा देखकर अप्रतिभ हुई—मैंने !

—तुमने ? सच ? जितेन्द्रनाथ मुस्कुरा कर बैठ गया। बोला—लाइब्रेरी वाले कमरे से क्यों उतार लाई ? ताजमनी चुप रही। जित्तन ने कहा—तुमने अच्छा किया है। लेकिन मुझे कारन नहीं बताओगी ? यों ही, वों ही नहीं। साफ-साफ। और भी दो दाढ़ीवाले थे, उन्हें क्यों नहीं···?

जितेन्द्र ने ताजमनी का आँचल पकड़ा।···छिः अभी तक वही आदत !

आँचल छूटता ही नहीं। मालकिन-माँ का आँचल भी इसी तरह पकड़ लेते, बतलाओ तब छोड़ूँगा। लड़कपन !!

—यों ही ! मैंने देखा···आँखें ! देखिए न, सामीजी की आँखों से मिलती हैं न ? मैंने समझा···मुझे लगा—यह भी माँ तारा का बेटा है, कोई।··· कौन हैं ?

—माँ तारा का बेटा ? शाक्त ? जितेन्द्र नाथ हँसा ठठाकर—ताज़ ! तुमने सही किया है, ठीक समझा है।···जरा, बैठ जाओ ताज़ ! मैं सुनाता हूँ। ताजमनी बैठ गई पास पड़े मोढ़े पर ! जितेन्द्रनाथ अपने सिंहासन के

पास रखी सेल्फ में कोई किताब ढूढ़ने लगा ! इरावती आई—ताजदि ! आज जरूर कोई खास बात है तुम्हारे पाकशाला में। सूपकार गोविन्दो आज मगन होकर गा रहा है—रामौलखन सीता···। ताजमनी हँसी—हाँ, आज आपको यहीं पत्तल जूठा करना होगा !

जितेन्द्र ने कहा—सुनो इरावती ! निराला जी के मुँह से मैंने पहली बार सुनी थी—राम की शक्ति पूजा !

इरावती अपनी कुर्सी खींच कर ताजमनी के पास ले गई ! धीरे से बोली—आज क्या बात है ताजदि ? ताजमनी ने उठ कर धूप-बत्ती जला दी। जितेन्द्र ने कथा-प्रसंग बता कर, शुरू किया।···पद्य पाठ शुरू हुआ। धूप की सुगन्ध कमरे में छा गई—पूजा पर बैठा है राम !!···

> रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
> ·····················।
> है अमा निशा; उगलता गगन घन अन्धका-आ-आ·र;
> खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन-चा-आ-आ-र;
> अप्रतिहत गरज रहा पीछे, अम्बुधि विशा-आ-आ ल;
> भूधर ज्यों ध्यान मग्न; केवल जलती मशाल।
> स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा-आ फिर फिर सं-श-य
> रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय···

पुण्य कथावाचन का पवित्र वातावरण प्रस्तुत हो गया कमरे में !

···होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन··· !

तू-उ-उ-उ-उ ! ताजमनी शंख फूकने लगी, ताखे से उठा कर !!

···कह महाशक्ति राम के वदन में हुई ली-ई-न।

स्नेह, प्रेम, माया-ममता आदि की मधुर धारणायें भी परिवर्तन की प्रचंड गति के आघात से विकृत हो गई है ?

शैलेन्दर की बातें रह-रह कर झकझोर जाती हैं, जितेन्द्र को—तेज चलने वाली मोटर गाड़ियों की बनावट हर साल बदलती है। आदमी के हृदय की बनावट भी बदल रही है ?···लाल पान का एक्का ! लम्बा-लम्बा··· तना-तना !! अत्याधुनिक मोटर गाड़ी जैसा ! भाले के फलक की तरह नुकीला, दिल ?···

कुबेरसिंह की याद आती है, जितेन्द्र को। पार्टी की एक नवागता को कुबेरसिंह ने लाल पान का एक्का दिखाकर कहा था—इसका नाम अंग्रेजी में हार्ट है। लॅव का सिम्बल ! ···घबराओ नहीं, इसको प्लेटोनिक लॅव कहते हैं।

वाणी दास ने हँस कर कहा था—जीत भाई, अनिमा को भी लॅव का सिगनल मिल गया है ! दूसरा जत्था जल्दी भेजिए, रामगढ़ !

अनिमा आठवीं लड़की थी जिसको कुबेरसिंह ने प्यार से पुचकार कर लॅव का सिगनल दिखलाया था। अनिमा अंग्रेजी नहीं जानती थी। उसने वाणी दास से पूछा था—वाणीदी ! लॅव का सिगनल और प्लेटफार्म···!

जितेन्द्र ने दूसरे ही दिन स्वयंसेवकों और स्वयंसेविकाओं का दूसरा जत्था, रामगढ़ कांग्रेस के कैम्प में भेज दिया। प्रेमी जीव है कुबेरसिंह, इसमें सन्देह नहीं ! पिछले साल तक वह लोगों को सुनाता फिरा है—आइ स्टिल लॅव जित्तन ! अब भी प्यार करता हूँ··· !

जितेन्द्र को कुबेर सिंह की याद आने लगी ! प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का प्रधान संस्थापक श्री कुबेरसिंह ! वह जितेन्द्र को अपनी पार्टी का दूसरा स्तम्भ मानता !···

ऐसा लगता है, राजनीति के लिए कुछ लोगों का विशेष अवतार होता है, पृथ्वी पर !

कुबेरसिंह भी अवतार है। ···कुरूप और भद्दा व्यक्तित्व उसका। उसकी सारी सफलताओं ने उसके सारे 'कु' को ढँक लिया ! सफल इन्सानों की पंक्ति

परती : परिकथा–४५०

में है—कुवेरसिंह !

याद आती है···! १९४० में, बिहार सोशलिस्ट पार्टी के एक प्रसिद्ध कलाकार नेता ने, पुराने पिन्टू होटल के एक कोनेवाले टेबल पर चाय पीते हुए, ओजपूर्ण भाषा में कहा था—जितेन्द्र ! इस कुवेर के चक्रान्त में तुम किस तरह पड़ गए ?···वह तुम्हारा शोषण कर रहा है !

—आप अपने चक्र के चक्रवर्ती हैं, सदाबहार जी। दूसरे चक्र के चक्रवर्ती के बारे में आपको बोलने का पूरा हक है। हमलोग तो दरबारी हैं। जैसे इसके दरबार में, वैसे आपके दरबार में !

सदाबहार जी ठठा कर हँस पड़े थे। मुग्ध होकर उन्होंने जितेन्द्र की ठुड्डी छू ली—मैं अपने लड़के का नाम जितेन्द्र ही रक्खूँगा !···अच्छे लड़के ! जरा इसका भी तो ख्याल करो, लोग क्या कहते हैं। भद्दी-भद्दी बातें !!

—मैं जानता हूँ। आपके साथ रहूँ तो आपकी बदनामी भी इसी तरह फैलेगी !

—अच्छा, एक बात बताओ ! जबकि तुम्हारे बॉस···माफ करना-तुमने अपने को दरबारी कहा है। तुम्हारे बॉस और पार्टी के अन्य लोग मिलने पर भी आँखें फेर लेते हैं, बातें तक नहीं करते, तुम मुझे खोज कर क्यों मिलने आते हो ? कोई रहस्य है ?

—बहुत बड़ा रहस्य ! आप मुझे स्नेह की दृष्टि से देखते हैं। मुँह फेर नहीं लेते मिलने पर, इसीलिए। शायद, आपके दल के फौजी अधिकारियों को इसमें कोई दुर्गंध लगी है। है न ? निश्चय ही कहा होगा, जितेन्द्र से मेलजोल ठीक नहीं।

सदाबहार जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा था—जीओ !···जितेन्द्र ने वचन दिया था, बिना माँगे ही—आपको कोर्ट-मार्शल से बचाने के लिए, हमारी यह मुलाकात अन्तिम हो ! सदाबहार की आँखें छलछला आई थीं—राजनीति बहुत-बहुत बलिदान माँगती है, जित्तन ! कुवेरसिंह सौभाग्य-

खाली है।

सचमुच, किस्मत का कुबेर है कुबेरसिंह !

सन छत्तीस से चालीस तक उसने तीन पार्टियों में डुबकी लगाई और हरबार घोंघे-सीपी के साथ एकाध मोती लेकर ऊपर हुआ।...जितेन्द्र को हठात् पाकर, खुशी से खूबसूरत हो गया था उसका चेहरा—समझते हो भैया ! मैंने खूब डुबकी लगाकर थाह ली है, हर पार्टी की गहराई की ! सच कहता हूँ, मुझे अब पूरा विश्वास हो गया। तुम्हारे सहयोग से मैं अपनी, अपने मन की पार्टी बना सकूँगा। बोलो ! मुझे छोड़ोगे तो नहीं !...

काशी विद्यापीठ के स्नातक की तत्कालीन राजनीतिक चेतना को उकसाने में सफल हुआ, कुबेरसिंह। नई पार्टी बनाने की बात भा गई जितेन्द्र को। कुबेरसिंह प्रसन्नता से गीत गाने लगा था, बेसुरे राग और गलत उच्चारण की याद है जितेन्द्र को आज भी—जोदी तोमारी डाकियो ना सुने कोई-ई-ई, तारपोटे एकोला चोलो रे-ए-ए-ए ! एकोला चोलो रे-ए-ए ![1]...

कुबेरसिंह के चेहरे पर जो जामुन की तरह दो बड़े-बड़े व्रण हैं, क्या कभी नहीं सूखेंगे ?...

तगड़ी, नाटी काया। श्यामवर्ण। फेशियल पैरेलिसिस से किंचित विकृत ओठ ! जब वह भाषण देने को उठता, दर्शकों के चेहरे पर आतंक की एक गहरी रेखा खिंच जाती। भारतीय राजनीतिक पार्टियों के ओरेटर नेताओं में कुबेरसिंह का नाम अवश्य लिया जायगा। किन्तु, जितेन्द्र ने सफलवक्ता कुबेरसिंह के भाषण-काल में एक विशेष बात को लक्ष्य किया था। ऐसा भयोत्पादक भाषण उसने किसी का नहीं सुना !...

जितेन्द्र की माँ कुबेर को फूटी नजर से नहीं देखती, कभी—कहाँ से आया है यह दिल्लारमुँहा !!

मातृसत्ताक-संसार से कुढ़े हुए जितेन्द्र ने कुबेर-पुरुष से दोस्ती कर ली !

---

१. शुद्ध रूप : यदि तोर डाक शुने केउ ना-आसे, तबे एकला चलो रे।

माँ नाराज होती गई।···अन्त में, एकदिन वह चल पड़ा कुबेरसिंह के साथ।···रात के पिछले पहर में हवेली छोड़ी थी, उसने। हवेली की अँगनाई, बाघिन की तरह गुर्राती हुई माँ के हुंकार से दलमला रही थी—चला जाय! चला जाय!!···चला आया था, पटने।···प्रगतिशील समाजवादी पार्टी, नया झण्डा, मेनिफेस्टो, पार्टी-विधान आदि की रचना में जो सहायता दी जितेन्द्र ने, उसका उल्लेख कुबेरसिंह कभी नहीं करेगा! कुबेरसिंह को बेकार ही एक भ्रम है, जितेन्द्र ने कभी नहीं कहा किसी से आजतक कि कुबेरसिंह के सारे भाषण, लेख, वक्तव्य आदि का लेखक वही था। पार्टी की पत्रिका के सम्पादन का सेहरा भी अपने सिर नहीं लिया कभी। किन्तु, कुबेरसिंह कह रहा था, किसी से—कलम पकड़ कर राजनीति शब्द लिखना मैंने सिखाया और जितेन्द्र कहता फिरता है कि···!

जितेन्द्र कबूल करता है, 'राजनीति' लिखते समय वह हमेशा गलती करता। 'न' में ह्रस्व और 'त' में दीर्घ या कभी दोनों में···। सचमुच, कुबेरसिंह ने एक बार कलम पकड़ कर सिखलाया था—भैया! 'राजनीति' ही गलत लिखोगे तो हुआ!···जितेन्द्र ने फिर कभी गलती नहीं की थी। कुबेरसिंह ने दूसरा महत्वपूर्ण काम किया—देखो भैया! तुम अपने 'मैं' को भूलो और मैं अपने 'मैं' को भूलता हूँ। आज से—हम!···तुम यू० पी० में रह आए हो, इसलिए जरा ज्यादा 'मैं-मैं' करते हो। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी में 'मैं' क्या?

कुबेर सिंह अपने मैं को भूला नहीं, किन्तु! लिखित भाषणों को रटने के पहले कलम निकाल कर प्रत्येक हम को काट देता—'हमारी' धारणा है नहीं, 'मेरी' धारणा है! 'हम' कहते हैं नहीं, 'मैं' कहता हूँ।···

हिला कर रोका—बोस नहीं, सुभाष बाबू। हम सुभाष बाबू से कहेंगे ! कुबेरसिंह हठात् चैतन्य हो गया था··· जितेन्द्र के बिना वह कलकत्ते नहीं जा सकता !

उस विराट सुपुरुष के प्रथम दर्शन के क्षणों की याद कर रोमांचित हो उठता है जितेन्द्र, आज भी। सम्मानपूर्ण सहयोग का शर्तनामा पढ़ कर सुभाष बाबू नें पहली नजर जितेन्द्र पर डाली थी ! कुबेर सिंह ने, शर्तनामें पर हस्ताक्षर करने की जिद्द करके सुभाष बाबू को याद दिलाई—प्रगतिशील-समाजवादी दल का संस्थापक कुबेरसिंह है। एक मात्र नेता··· । सुभाष बाबू ने हस्ताक्षर करना स्वीकार नहीं किया, चुपचाप शर्तनामा वापस करते हुए बोले—पहले अपने दिल में विश्वास पैदा कीजिए सिंह जी !

कुबेरसिंह ने अपनी पार्टी को अग्रगामी दल की अगम धारा में डूबने से बचा लिया। कलकत्ते के प्रमुख दैनिक पत्रों मे कुबेरसिंह का सचित्र वक्तव्य प्रकाशित हुआ—जहाँ तक कांग्रेस के विरोध का प्रश्न है, हम अग्रगामी दल को सहयोग देंगे। किन्तु··· ।

कलकत्ते में कुबेरसिंह एक लम्हें के लिए भी जितेन्द्र को कहीं अकेला नहीं जाने देता। बार-बार कहता—रसगुल्ला के लोभ में तुम पार्टी को ले डूबोगे, देखता हूँ !

इसके बावजूद, जितेन्द्र मिल आया सुभाष बाबू से एक दिन। वामपंथी-एकता पर बहुत-सी शंकायें दूर हुईं, उसकी।···प्लेट भर रसगुल्ले खाए। चलते समय बड़े प्यार से विदाई दी, उस युगपुरुष ने। उनकी अन्तिम सतर्कवाणी—मुझे डर है, तुम्हारी हत्या न करवा दे कुबेर। सावधान ! उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं !

रामगढ़ कांग्रेस में कुबेरसिंह ने देखा, जितेन्द्र का 'मैं' सिर उठा कर फुफकार रहा है। प्यार से कब तक काम लेना चाहिए, जानता है कुबेरसिंह। रामगढ़ कांग्रेस के कांग्रेस-विरोधी प्रदर्शनों और भाषणों में जितेन्द्र की मन-मानी उसने सह ली। कांग्रेस अधिवेशन के बाद डेढ़-दो महीनों तक कुबेर-

माँ नाराज होती गई।···अन्त में, एकदिन वह चल पड़ा कुबेरसिंह के साथ।···रात के पिछले पहर में हवेली छोड़ी थी, उसने। हवेली की अँगनाई, बाघिन की तरह गुर्राती हुई माँ के हुंकार से दलमला रही थी—चला जाय! चला जाय!!···चला आया था, पटने।···प्रगतिशील समाजवादी पार्टी, नया झण्डा, मेनिफेस्टो, पार्टी-विधान आदि की रचना में जो सहायता दी जितेन्द्र ने, उसका उल्लेख कुबेरसिंह कभी नहीं करेगा ! कुबेरसिंह को बेकार ही एक भ्रम है, जितेन्द्र ने कभी नहीं कहा किसी से आजतक कि कुबेरसिंह के सारे भाषण, लेख, वक्तव्य आदि का लेखक वही था। पार्टी की पत्रिका के सम्पादन का सेहरा भी अपने सिर नहीं लिया कभी। किन्तु, कुबेरसिंह कह रहा था, किसी से—कलम पकड़ कर राजनीति शब्द लिखना मैंने सिखाया और जितेन्द्र कहता फिरता है कि··· !

जितेन्द्र कबूल करता है, 'राजनीति' लिखते समय वह हमेशा गलती करता। 'न' में ह्रस्व और 'त' में दीर्घ या कभी दोनों में···। सचमुच, कुबेरसिंह ने एक बार कलम पकड़ कर सिखलाया था—भैया ! 'राजनीति' ही गलत लिखोगे तो हुआ !···जितेन्द्र ने फिर कभी गलती नहीं की थी। कुबेरसिंह ने दूसरा महत्वपूर्ण काम किया—देखो भैया! तुम अपने 'मैं' को भूलो और मैं अपने 'मैं' को भूलता हूँ। आज से—हम !···तुम यू० पी० में रह आए हो, इसलिए जरा ज्यादा 'मैं-मैं' करते हो। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी में 'मैं' क्या ?

कुबेर सिंह अपने मैं को भूला नहीं, किन्तु ! लिखित भाषणों को रटने के पहले कलम निकाल कर प्रत्येक हम को काट देता—'हमारी' धारणा है नहीं, 'मेरी' धारणा है ! 'हम' कहते हैं नहीं, 'मैं' कहता हूँ।···

एक ही वर्ष में बिहार की इस नई पार्टी ने अखिल भारतीय ध्यान आकर्षित किया। और, जिस दिन अग्रगामी दल के संस्थापक श्री सुभाषचन्द्र बोस ने व्यक्तिगत सन्देशवाहक भेज कर कलकत्ते आमन्त्रित किया ! कुबेरसिंह ने भाषण के लहजे में कहा—मैं बोस से कहूँगा···। जितेन्द्र ने गर्दन

हिला कर रोका—बोस नहीं, सुभाष बाबू। हम सुभाष बाबू से कहेंगे! कुबेरसिंह हठात् चैतन्य हो गया था··· जितेन्द्र के बिना वह कलकत्ते नहीं जा सकता!

उस विराट सुपुरुष के प्रथम दर्शन के क्षणों की याद कर रोमांचित हो उठता है जितेन्द्र, आज भी। सम्मानपूर्ण सहयोग का शर्तनामा पढ़ कर सुभाष बाबू ने पहली नजर जितेन्द्र पर डाली थी! कुबेर सिंह ने, शर्तनामें पर हस्ताक्षर करने की जिद करके सुभाष बाबू को याद दिलाई—प्रगतिशील-समाजवादी दल का संस्थापक कुबेरसिंह है। एक मात्र नेता···। सुभाष बाबू ने हस्ताक्षर करना स्वीकार नहीं किया, चुपचाप शर्तनामा वापस करते हुए बोले—पहले अपने दिल में विश्वास पैदा कीजिए सिंह जी!

कुबेरसिंह ने अपनी पार्टी को अग्रगामी दल की अगम धारा में डूबने से बचा लिया। कलकत्ते के प्रमुख दैनिक पत्रों में कुबेरसिंह का सचित्र वक्तव्य प्रकाशित हुआ—जहाँ तक कांग्रेस के विरोध का प्रश्न है, हम अग्रगामी दल को सहयोग देंगे। किन्तु···।

कलकत्ते में कुबेरसिंह एक लम्हें के लिए भी जितेन्द्र को कहीं अकेला नहीं जाने देता। बार-बार कहता—रसगुल्ला के लोभ में तुम पार्टी को ले डूबोगे, देखता हूँ!

इसके बावजूद, जितेन्द्र मिल आया सुभाष बाबू से एक दिन। वामपंथी-एकता पर बहुत-सी शंकायें दूर हुईं, उसकी।···प्लेट भर रसगुल्ले खाए। चलते समय बड़े प्यार से विदाई दी, उस युगपुरुष ने। उनकी अन्तिम सतर्कवाणी—मुझे डर है, तुम्हारी हत्या न करवा दे कुबेर। सावधान! उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं!

रामगढ़ कांग्रेस में कुबेरसिंह ने देखा, जितेन्द्र का 'मैं' सिर उठा कर फुफकार रहा है। प्यार से कब तक काम लेना चाहिए, जानता है कुबेरसिंह। रामगढ़ कांग्रेस के कांग्रेस-विरोधी प्रदर्शनों और भाषणों में जितेन्द्र की मन-मानी उसने सह ली। कांग्रेस अधिवेशन के बाद डेढ़-दो महीनों तक कुबेर-

पाट को जन्म दिया है—कृषि-विशारदों ने !

भीठ जमीन हो या जुताई कम हुई हो, आकाश चूए या बातास जले, पौधे उगेंगे ही। मवेशी इसके पौधों को दूर से ही सूंघ कर समझ लेते हैं, यह उनकी खाने की चीज नहीं। यदि किसी लम्बी जीभवाले ने बतौर आजमाइश के किसी दिन चार कौर खा लिया, पाँच दिनों तक गुहाल में बेहोश ! दूसरी जाति के पाटों को जानवर के अलावा आदमी भी बहुत शौक से खाते हैं। कड़वा-साग !···पाट साग के झोल के लोभ में, लुकछिप कर बहुत-से खेतों को मूंड़ लेती हैं, औरतें। बकरी और औरतों के झुण्ड को हाँकने का काम ? हर परिवार का बूढ़ा इस काम पर, एक हजार गालियों से लैश, तैनात !···दूसरी जाति के पाटों को समय पर नहीं काटा-बांधा या गोरा गया तो उसके रेशे कमजोर हो जाऍंगे। वजन कम देंगे। लेकिन, चन्नीपाट खेत में लगा रहे, कोई हर्ज नहीं। काट कर महीनों सुखाइए। पानी नहीं है, वर्षा होने पर गोरिए गढ्ढों में। और दर ? सोनापाट से सिर्फ पाँच रुपया कम !

गाँव के अतिवृद्ध लोगों का मत है—जब से यह चन्नीपाट आया, आदमी की मति भरम गई।

गरुड़ झा राहचलते मन-ही-मन नारद-नारद जाप करता है। उसका विश्वास है, नारद सहस्त्र नाम जाप से मिटा हुआ झगड़ा भी सुलग उठता है, जोर से ! धुधुआ कर !! और भी तेजी से—नारद-नारद··· ।

—निकल जा साला घर से। मेरा कोई बेटा-ऊटा नहीं। पुतोहु अपने ससुर की इज्जत करती है। घूँघट ताने ही रहती है। घूँघट के नीचे से ही अगिया-बान बोली, महीन आवाज में छोड़ती—जन्माते लाज नहीं आई इस बूढ़े को ? कहता है, बेटा नहीं !

—साले की बेटी ! मुँह तोड़ दूँगा। लँगटा की बेटी साली लँगटी !

—इह ! बड़ा आया है मुँह तोड़ने वाले का बेटा। ताल ठोक कर जवान बेटा उतर पड़ता है, मैदान में—आइए तो ? क्या समझ लिया है, उसकी

पीठ पर कोई नहीं ? बाप को ललकारता है बेटा--आ जाओ, अपने चारों बेटों को भी बुलाओ, दुलरुओं को। यदि कोई असल बाप का बेटा है, आवे ! दे मेरी जोरू की पीठ पर हाथ, अब ! बार-बार मार कर हाथ परच गया है !···नारद-नारद-नारद-नारद !!

—सिर उतार लेंगे। मजा चखा देंगे। नारद-नारद ! देख लेंगे थाना-पुलीस को भी। दामूल-हौज झेलेंगे, मगर साले एक की जान जरूर लेंगे। नारद-नारद ! गाँव में ही कचहरी खुली है—गिराम पंचैत। सिर्फ दो रुपया खर्च। नारद-नारद ! कल आना जमीन पर, वहीं दो टुकड़ा करके गाड़ देंगे। नारद ! शाम को कोई लड़ैया-भूतों का दल आकर गाँव में, घर-घर में समा जाता है। खाँऊँ-खाँऊँ ! खाँऊँ-खाऊँ !!

गरुड़धुज की खेती लहलहा रही है—सोने चाँदी की खेती। खन-खन, टन-टन !! फिर, घूमने लगा है गाँव। एक-एक प्राणी ताव खाए हुए लट्टू की तरह घूम रहा है—घनघन-घनघन ! एक दूसरे से टकराते हैं, लुढ़कते हैं, फिर ताव पर चढ़ते···।

पाँचों चक्र नाचने लगे जितेन्द्रनाथ की आँखों के आगे—घनघन-घनघन !! खुशी के मारे गूँगा हो गया, वह। उसने, डाक्टर राय चौधरी को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।···डाक्टर राय चौधुरी ने बार-बार कहा—खूब बॅड़ॅकॅथा ! बहुत बड़ी बात !

जितेन्द्र का अनुमान सच निकला। कोसी प्रोजेक्ट की पार्टी नं० १० ने रिपोर्ट दी है, जाँच करने के बाद—इस परती पर यत्र-तत्र-सर्वत्र कई प्रकार की मिट्टी पाई गई है। जंगल और वृक्ष ही नहीं, गेहूँ, धान, पाट तथा दलहन-तिलहन की खेती के योग्य धरती भी मिली है।

···उम्मीद है, अगले सप्ताह ऑपरेशन-पार्टी आ जायगी !

—बहुत बड़ी बात है यह ! हजारों एकड़ परती इस साल जोती-बोई जाएगी,

परती : परिकथा—४५८

ताजू !

—और, पानी कहाँ से आवेगा, पानी ?

—किसी सुन्नरि नैका का अवतार कराना होगा ! दंता राकस···!!

—दंता राकस ! बाप रे बाप !!

—आरे-दैवा ! ई टैक्टर नहीं है रे दैव। न जाने कौन मशीन है ! ऐसी आवाज ? धरती दलमल करती है।

···गुड़गुड़-गुड़-गड़-गर्ड़ र्-र्-गड़-गड़-गड़-गड़डाँड़-गड़गड़ !!

—भूकम्पन !···ए धरती डोलती है, राम कसम ! भागो !

—क्या कहते ? उधर देखो···!

—ए-ले-ह !! हथियासूड़ एक झुंड !!

कई बुलडोजर और बड़े-बड़े ट्रेक्टर आ रहे हैं।···आपरेशन पार्टी ! आस-पास के गाँव के ट्रेक्टरवाले किसानों को सरकारी सरकुलर आया है—मदद दें।

जितेन्द्र जायगा ऑपरेशन पार्टी में, ट्रेक्टर लेकर ! ये लोग डी० वी० सी० में काम कर चुके हैं, पहाड़ी, पथरीली जमीन पर। अब परती पर भेजे गए हैं।···सुन्नरी हाट जंगल के शिकार का मजा यहाँ कहाँ ? यहाँ तो परती है ! अन्य जमींदारों ने अपने ड्राइवरों को भेजा है, ट्रेक्टर लेकर !

गाँव के नौजवानों का दल परती की ओर दौड़ता है। बड़े-बूढ़े खिसियाते हैं—गेहूँ ना केला ! केला भी नहीं उपजेगा। ट्रेक्टर से जोते या···।

···गुड़गुड़-गड़र्र ! भट-भट-भट । गड़र्र-र्-ई !! फर्ट्र-फर्ट्र-फर्र-टर-टर !! अगला बुलडोजर चला रहा है, मि० नेगी। आपरेशन पार्टीका चीफ ! इरावती हाथ में बन्दूक लेकर हवाई-फायर करनेके लिए घड़ी देख रही है। जितेन्द्र ने अपने ट्रेक्टर पर सवार होने के पहले धीमी आवाज में कहा—दया कर

हम लोगों की ओर निशाना मत तानिएगा।…इरावती समझती है ! लेकिन वह क्या करे बन्दूक छोड़ने के सिवा ? ताजमनी रहती तो निश्चय ही शंख फूँकती !…वाह ! ट्रेक्टर पर बजाता सिंदूर से माँ के चरण चिह्न, दस उँगलियाँ अंकित हैं ! ताजमनी !!

ट्रटाँय !…गर्ड़र-गड़-गड़-गड़-गुड़गुड़-भट-भट-भट। फर्ट्-फर्ट्-फर्ट्-फर्ट् !! फड़-फड़, गुड़गुड़ !!

प्रांतीय ट्रेक्टर बोर्ड के सेक्रेटरी मिस्टर सिन्हा ने हँसकर कहा—हैलो जित्तन बाबू ! आई एडमायर योर…!

—नॅट ओन्ली मी ! मेरा मीत भी है ! देखिए…।

एक, दो, तीन…बुल्डोजर। कॉलर्स, एंगलडोजर्स और दो न जाने कौन-सी मशीनें जिनके पिछले दो पहिए धतूरे के बीज के बड़े-बड़े संस्करण। जमीन को छलनी बना देगीं, गतर-गतर उधेड़ देगीं !…गाँव के अधिकांश लोग तमाशा देखने आए हैं।…जित्तन बाबू ने पूरी बाँहवाला स्वेटर पहन रखा है, घोर लाल रंग का। स्पेशल हैट, ताड़ की पत्तियों का !

डिस्ट्रिक्ट एग्रिकल्चर विभाग का ट्रेक्टर चालक बोदूबाबू कहता है—आँख झुलसाने वाले रंगका पुलओवर पहन कर नुमायश लगाने आया है ! बोदू-बाबू से बातचीत कर चुकी है इरावती। इस परती पर बोदूबाबू को हरी-भरी जगह मिल गई, आते ही। …इरावती धानी रंग की साड़ी पहन कर आई है। कितना मैच करता है, आज। कोकटी रंग की, बिना किनारी वाली साड़ी में मैली लगती थी जरा ! अभी तो स्वर्ण रंग !…हू इज दिस जेन्टलमेन जितेन्दर बाबू ? …जमींदारी चली गई है नवाबी नहीं गई ! दिमाग सही है, इसका ! यही है वह आदमी ? 'हुआ सवेरा' में पटनियाँ निटर जिसको खूब गलियाता है ? …सही है। बहुत एय्याश आदमी ! इरावती से इसका क्या सम्बन्ध ? ट्रेक्टर मोड़ते हुए उसने जितेन्द्र पर निगाह डाली। एक दूसरे को देख रहे हैं—पाइलाट-गॉगल्स से ! अन्धकार में धुँधली दो जोड़ी आँखें !!

परती : परिकथा—४६०

···दुष्टी पाखर के पास ! चलो चलो !! टकटर का रेस हो रहा है ! घुड़दौड़ की तरह । कौन फस्ट आता है । चलो, चलो !!

गाँव के लोगों ने देखा—करीव दो सौ बीघे जमीन जोते जा चुके हैं ।

दुष्टी पाखर के ठूँठे डाल पर भवेश अपनी मूवी के लिए उपयुक्त कोण तजवीज कर बैठा हुआ है—यहाँ आकर ट्रेक्टर मुड़े, सूरज की रोशनी शीशे पर झिलमिलाई···एक, दो, तीन, चार-पाँच ! रह-रहकर सूरज की रोशनी झिलमिलाती ! किर्र-र्र र्र रि···!!

ताजमनी सिंगार कर रही है माँ तारा का !

मिश्रजी अपने साथ, एक बैग हमेशा रखते हैं ! उसमें कुछ कागज ऐसे हैं जिन्हें कहीं दूसरी जगह छोड़ कर निश्चिन्त नहीं रह सकते । उस दिन उन्होंने खोलकर दिखलाया था, एक भोजपत्र पर पांच चक्र अंकित ! चक्र के आसपास कुछ चिह्न, चीनी या जापानी लिपि के मेल के !···और, कई मुकदमों के कागज । मुझे कोई दिलचस्पी नहीं मुकदमे की दलील से । किन्तु, इन तीन सौ रेखाचित्रों को तो भूलना असम्भव है । मिश्रजी ने वसहा कागज पर लाल रेखाओं से अनेक चित्र अंकित किए हैं ! रानी-बहिना की एक छवि !···तीन उनके भी बनाये हुए हैं ?

इस चतुर चितेरे की तलहथी को अवाक् देखती रही । फिर, धीरे से मैंने उसे चूम लिया । कलाकार की काँपती हुई उँगलियों ने मेरे ओठों पर गुदगुदी पैदा कर दी ।···अब, इनसे कोई सीधी रेखा नहीं खींची जायगी । ···इस बार माफ कर दो ! एक बार फिर इनमें शक्ति दो । माँ श्यामा !

जाल नहीं करने दूँगी। वचन देती हूँ !

उँगलियों की थरथराहट बढ़ती ही गई। मेरे बालों में उँगलियाँ फेर कर अपनी थरथराहट को बहलाने लगे !

ओ माँ ! ऐसा तो न करो कि मेरा स्वामी कलम ही न पकड़ सके !

[पाँच पृष्ठों पर पद्य हैं, डेढ़ सौ पंक्तियाँ !]

कलम पकड़ेगा मेरा लॉली !

मुँह में दाँत पूरे उगे भी नहीं, भात चाहिए। क्या लेगा रे छुट्टू पंडित, भात ?

अन्नप्राशन के दिन जित्तन की जन्म कुंडली मिली है। लिखा है···अथ··· दशाभ्यां···फलम्—धर्मैकबुद्धिर्बहुवैभवादयः प्रलम्बकंठो बहुशास्त्रपाठी। उदारचित्तो नितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात्।···

···अथ शुक्रवासरे जन्म तत् फलम्—सुनीलसंकुंचितकेशपाशः प्रसन्नवेशो मतिमान् विशेषात्। शुक्लाम्बरः प्रीतिधरो नरः स्यात् सन्मार्गगो भार्गववार-जन्मा।

···कांतः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता ···सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी। मिष्टान्नपानानुरतो विनीतः···।

मैं खोज रही हूँ—यह आँकेगा या नाचेगा या क्या करेगा !

···देवद्विजार्चाभिरतोऽभिमानी धनी दयालुर्बलवान् कलाज्ञः !!—हाँ, है ? है रे छुट्टू पंडित ! तू कलम भी पकड़ेगा, आँकेगा !

—देखो जी छुट्टू पंडित। तुम्हारे बहुत सारे बालों को आज अन्नप्राशन के दिन कटवा दिया है। तेरे जटाए हुए, लटकती इमली की तरह लटें कट गए हैं।···बेचारा अपने मुड़े हुए सिर पर बार-बार हाथ फेर कर मुँह देखता है। अरे हाँ, हाँ, है, है !! है तेरी चुटिया !···चुटिया कटाने से तो

छुट्टू पंडित नहीं, छुट्टू सन्यासी ! छोटा-सा सन्यासी ?…नहीं, नहीं। हमारा जितेन्द्र सन्यासी नहीं होगा ! सत्कर्म वेष:…तू गृहस्थ होकर सत्कर्म करेगा ! तू आँकेगा। तू गढ़ेगा। सिरजेगा।…

दुलारी दाय के तीनों कुण्ड तेरे नाम लिख देती हूँ ! तू इन कुण्डों के पास बैठ कर एक-एक पद्म को अंकित करेगा, पंछियों का गीत सुनेगा। भौंरों की गुंजन से अपना तानपूरा मिलावेगा, तू गायेगा। …कमलगट्टे बेचेगा। मछली पकड़ेगा, खायगा, बेचेगा, सब कुछ करे—जाल नहीं करेगा ! कभी नहीं, कभी नहीं !! परोपकारार्थ इन कुण्डों को बेच भी सकता है।…अच्छा इधर आ ! तू क्या-क्या होगा, बोल, सुखी, भोगी ?

—हाँ-ते !…अच्छा ? मौज करेगा। ठीक है। बड़ा चालाक है, छुट्टू ! अच्छा, प्रियप्रवक्ता ?

—हाँ-ते !

—तू बीच में मत टपक, पुतली ! बासी भात खायगा, भेंड़ चराने जायगा, पीछे पूछना।…तू लिखेगा, गायेगा, नाचेगा, और भेंड़ भी चरायगा ? तब तू मार खायगा ! अच्छी बात, नाचगान में, इन कुण्डों को बेच कर फूक भी दे तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु, जालिया काम ?…नेवर ! कभी नहीं !! बहुशास्त्रपाठी ? अपनी विद्या-बुद्धि को जमीन और जमींदारी-अर्जन में मत लगाना !

उस रात हमने माँ तारा की वंदना की। मेरे स्वामी ने कहा—प्रार्थना करो, जीत को कभी राजकाज में नहीं फँसना पड़े। नहीं तो उसका ज्ञान भी जाल-फरेब में ही खर्च होगा।

—नहीं, नहीं !…मुण्डमालिनी, पद्मालया, शक्तिस्वरूपिनी, शिवभावभाविनी भगवती, जगन्माता, हमारा लॉली तेरे हाथ !!

मिश्रजी के हाथ का कम्पन कम हुआ है। किन्तु, मेरे ललाट पर बिंदिया

सजाने की असफल चेष्टा करते समय, उनकी लाचार आँखें मुझे मार डालती हैं। उँगलियों की थरथराहट रोकने की कोशिश में कँपकँपी और भी बढ़ जाती है। मैंने चिकित्सा की बात चलाई तो हँस कर बोले—असम्भव ! नसों और रगों की बात मुझसे ज्यादा कोई वैद्य नहीं जानते।···मुझे उपयुक्त दण्ड मिला है। सरस्वती के दरबार में, इस तरह के कुकृत्य करनेवालों को कभी क्षमा नहीं किया जाता। हाथ का कम्पन कोई बड़ी सजा नहीं। हल्की सजा है। वरना, गलित कुष्ठ··· !

—स्वामी !

—हाँ, गीत ! मैंने अपनी आँखों देखा है, विद्या के गर्व में चूर, सरस्वती के भाल पर कलंक का टीका लगाने वाला अपनी गली हुई हथेली चादर के नीचे छिपा कर मक्खियों से बचने के लिए भागा फिरता है···।

···मेरे स्वामी का अपराध क्षमा करो, माँ शारदे !

प्लांटर्स बौखलाये हुए हैं।

जिले भर के मैथिल-पण्डितों को उकसाया गया है—शिवेन्द्र मिश्र को जाति से बहिष्कृत करो पण्डितो !···इधर कुछ दिनों से मिश्रजी की गुप्त बातें विरोधियों को कैसे मालूम हो जाती हैं ! अब तक ऐसा नहीं हुआ। कभी नहीं !

पण्डितों की सभा ने मेरे स्वामी को निर्वंद घोषित कर दिया। अब्राह्मण ! ···हाँसामारी के निर्गुण झा को मिर्जापुर के साहब ने पचीस बीघे जमीन दी है। उसी ने प्रस्ताव किया था—शिवेन्द्र मिश्र को जाति से बहिष्कृत किया जाय !

—गीत ! संकीर्ण संस्कार के गहन अन्धकार में एक जीवित धर्म को कब तक छिपाकर रख सकता है कोई ! उदार, उन्मुक्त धर्म को घेरे में नहीं रखा जा सकता !

मिश्रजी को मैंने पहली बार अपनी मैथिली तुकबन्दी सुनाई—शिवे'क

घरनी बड़ बुधियारि, भाँग'क लोटा अछि तैयार !

—बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर !!···और, इन कठपण्डितों के कहने से मैं तुमको छोड़ दूँ ? असम्भव !

ब्राह्मणों ने मिलकर मेरे पतिदेव को, हमारे परिवार को निर्वेद घोषित कर दिया । ब्राह्मणेतर ही नहीं, चाण्डाल की कोटि का मनुष्य ! मेरी कोठी का नाम दिया—गृद्धवास कोठी···! गीतवास !···प्रांत के विभिन्न जिलों की पाँच पुत्रियों के पिताओं ने मिलकर दावा किया—हमारी पुत्रियों का पाणिग्रहन कर के परित्याग कर दिया है । भरण-पोषण का व्यय वसूल करवा दिया जाय !

मिश्रजी गुस्सा से जल रहे हैं, जानती हो ? जीत की माँ के सम्बन्ध में कैसी-कैसी फूहड़ बातें उड़ाई है पण्डितों ने ।···देखता हूँ, ब्रह्म-हत्या का पाप मेरे सिर मड़रा रहा है ।

—नहीं, स्वामी ! ऐसा मत सोचिए !!

रानी बहिना, तिरहुत की मैथिलानी नहीं । मालदह जिले की लड़की है । ग़रीब पुरोहित की बेटी है तो क्या हुआ ?···रूप और गुण पर मोहित होकर मिश्रजी ने अपने कीर्तन के आचार्य से उनकी पुत्री का पाणिग्रहण का प्रस्ताव किया था !···पण्डितों ने प्रचार किया है—देवदासी को फुसलाकर ले आया है !

लरेना खवास अपने को क्या समझने लगा है ! स्वामी के सामने हमें अपदस्थ करने की हिम्मत कैसे हुई, उसकी ?

—गीत ! इस लरेना से बहुत कुछ काम निकलना है, अभी चुप होकर सह लो ।

—आप आवश्यकता से अधिक विश्वास करते हैं, उसका । यह अच्छा नहीं जँचता । रानी-बहिना को भी दुःख है ।

लरेना बड़बड़ाता आया, बाहर से—दो-दो इस्टेट को सम्भालने का यही

नतीजा होता है। एक तरफ भी पूरा मन देकर कुछ नहीं किया जाय···। हजूर! आप अभी पाँच दिन परानपुर हवेली छोड़कर कहीं मत जाइए। हाँ बात है। एकांत में कहने-सुननेवाली बात, कब कहे आदमी? यहाँ तो हमेशा···। परमपति की लाचार दृष्टि को देखकर हम दोनों अन्दर चली गईं।—लरेना के मुँह पर मैं हमेशा शैतान की छाया देखती हूँ, रानी-बहिना बोली। मैंने कहा—मैं भी।

रहिकपुर के किसी प्लांटर से रामपुर-लहना के पतनीदार की लड़ाई है। मिश्रजी से मदद माँग रहा है, पतनीदार जैनन्दन साही। बदले में हल्दिया गाँव की जमीन दे रहा है, जमीदारी हक के साथ!···लरेना इसी काम में अपने को व्यस्त बतलाता है। इसी काम की प्रतीक्षा कर रहे थे मिश्रजी!

मेरा लॉली अस्वस्थ था। लौटने का जरा भी मन नहीं था। बुखार से तपी हुई उसकी देह।···*रात के तीसरे पहर में ताप कमते ही मुस्कराने लगा था—हाँ-ते! ना-ते!!*

मैंने स्वामी से आज्ञा माँगी! आज्ञा मिल गई, किन्तु लॉली···? मेरी साड़ी का खूंट छोड़कर पुतली का गला पकड़ कर लटक गया। सारी हवेली को कँपा देने वाली उसकी चीख—आआ-मेम्मां! मेम्मां रे-ए-ए-ए। आँ-हाँ!!

मैंने स्वामी की ओर देखा। लेकिन उनकी आँखें झुक गईं। उन्होंने नहीं कहा—मत जाओ!

मेरी डोली उठ गई।···सेमलबाग के पास तक कान लगाकर सुनती रही। वही चीख—मेम्मां रे-एए! निश्चय ही धरती पर माथा पटक रहा होगा। जिद में ऐसा ही करता है, वह।

डोली के साथ पैदल चलती हुई पुतली रह-रह कर अपनी आँख और नाक पोंछती रही, सारी राह।

मिश्रजी गिरफ्तार? ऐंय?

हवेली की कालीबाड़ी में नोट बनाने और रुपया ढालने के सामान पकड़े गए ??···माँ तारा, यह क्या ?

लरेना खवास आया है मूँगा पर सवार होकर !—हवेली के एक-एक पैसे को जप्त कर लिया गया है। मिश्रजी को जमानत पर छुड़ाना है। कलकत्ता दौड़ना होगा। रुपया चाहिए।···

—कितना चाहिए रुपया ? उसदिन लरेना पर से सारा गुस्सा उतर गया।···स्वामी भक्त है। हम औरत की जाति। हमारी बुद्धि ही कितनी! इसीलिए, हमारे स्वामी इसको इतना दुलार करते हैं। कहता है—जब तक मिश्रजी को जेल से न छुड़ाऊँगा, सिद्ध अन्न मुँह में नहीं डालूँगा।—रुपये की कमी नहीं। कितने की जरूरत है ? पाँच हजार ? ला देती हूँ।

मेरा मूँगा !···ऐसा उदास कभी नहीं देखा !

मम्मी मुझे समझाती है—उसको कुछ नहीं होगा ! मैं जानती हूँ। तुम्हारे पति को मैं भी पहचानती हूँ। वह बिना ताज का बादशाह है।···माँ तारा! तू ही बोल रही है मेरी मम्मी के दिल में पैठ कर !! पहले मेरी मम्मी कितना भय खाती थी ?

श्यामगढ़ स्टेट के राजा कामरूपनारायण आए हैं। ···परानपुर हवेली में कोई विशेष चांचल्य नहीं, क्योंकि राजा साहब ने आते ही सख्त हिदायत दी है—बगैर पूछे न एक कप चाय और न एक गिलास पानी।

—एक प्लेट उबले हुए आलू और दो अंडे ! बस, यही मेरा दिन का भोजन रह गया है।

—निश्चय ही आपने कोई व्रत लिया है !

—हाँ, हाँ। व्रत।···जब तक अपने विरोधी को वाजिब जवाब नहीं देता हूँ, आहार-निद्रा हराम। राजा साहब आलू में कालीमिर्च की बुकनी मिलाते हुए बोले—मैं ठहरूँगा नहीं, जित्तन ! एक घण्टा मेरे पास बैठ नहीं सकते ?

—आज्ञा !

—मैं तुमसे पूछने आया हूँ, तुम क्या कर रहे हो ?

—मैं ? कुछ नहीं।

—अपने पुराने दुश्मन को भूल गए ? लेकिन, वह तुमको नहीं भूला है।

—कौन ? मैंने नहीं समझा।

दाँत कटकटाकर कामरूपनारायण ने झिड़की दी—समझोगे क्यों ? अब तो गोली का डर नहीं ! वह प्रान्तीय कांग्रेस का सहायक मन्त्री हो गया है, इससे क्या ? गोली दागने वाले अभी भी उसके पास हैं। तुम्हारी जगह पर मैं होता !···मैं तुम पर कोई विचार लादने नहीं आया हूँ। मैं सलाह देने आया हूँ, राजनीति के पुराने खिलाड़ी हो। उपयुक्त टीम चुन कर, उतर पड़ो मैदान में। जहाँ तक मेरी पार्टी का सवाल है, तुम्हारा सदैव स्वागत···।

जितेन्द्र सोच में पड़ गया।···लज्जित हुआ ! राजा साहब ने उस बार कुबेरसिंह के सहचरों के हाथ से बचाया था ! लेकिन···?

—तुम लोगों की देह में न कहीं आन है और न कैरेक्टर में कोई रीढ़ ! ···तुम नहीं समझोगे ! अपमान से मेरी जिन्दगी जल रही है !!

जमींदारी उन्मूलन के बाद राजा साहब ने अपने जिले में अपनी पार्टी की नींव डाली। आज, बिहार के कई जिलों में जड़ मजबूत हो चुकी है।

राजा साहब कहते हैं—अपने इस्टेट के तीन सर्किल मैनेजर, पचास पटवारी और डेढ़ सौ प्यादों को लेकर मैंने प्रजापार्टी का शिलान्यास किया। कहा—चलो ! तुम्हारी नौकरियाँ अपनी जगह पर बरकरार ! जमींदारी

चली गई, राज चला गया, फिर भी मैं वेतन दूँगा। ओहदा बदल गया है, काम बदल गया है। ...और, आज देखो! कई वामपंथी पार्टियों के सधे-सधाये लोग आ गए हैं, वकील, मुख्तार, प्रोफेसर, छात्र, महिलाएँ। मैंने प्रान्त भर में बिखरी ऐसी शक्तियों का संचय किया है, जो सही नेतृत्व के अभाव में बुझी जा रही थीं। पिछले दिनों, दो-दो वामपन्थी पार्टियों ने प्रजापार्टी के झण्डे के साथ अपना-अपना झण्डा बाँधकर, विधान-सभा के सामने प्रदर्शन किया है। ...रेन्ट फ्री लैंड, बगैर किसी खजाना के जमीन! दे सकी है आज तक कोई पार्टी ऐसा क्रांतिकारी नारा?...बोलो, कुछ कहो!

—मौसा जी! मेरे मन में कोई भी राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं। मैं क्या जवाब दूँ, आपको?

राजा साहब ने घड़ी देखी। अपने ड्राइवर और सहकर्मियों को आदेश दिया—गाड़ी तैयार रखो! जितेन्द्र की ओर देखकर बोले—मुझे तुम्हारे बारे में गलत सूचना दी गई। मैंने समझा था तुम मिलिटेंट हो! मुझे क्या मालूम कि एक हिजड़े से मिलने जा रहा हूँ।...परती की तरह निपट्ट निकले तुम! लाज नहीं आती? पतनीदार का बेटा है!...मैं बैठा नहीं रह सकता!

जित्तन ने हिम्मत बटोर कर जवाब दिया—मौसा जी! अपने रेडियो पर इस मैच का आँखों देखा हाल सुनने के लिए नियमपूर्वक मैं ट्युन करूँगा!

—अच्छी बात!...सुनोगे, जरूर सुनोगे। इस बार नहीं तो आने वाले वर्षों में। मैं चुप बैठा नहीं रह सकता।

जितेन्द्र जानता है, काँग्रेस के अन्दर की बुटती हुई शक्तियों और पराजित-पुरुषत्व का गुप्त सहयोग प्राप्त है, राजा साहब को!

—सुनेंगे। सभी सुनेंगे—प्रजा पार्टी तीन गोल से विजयी!...हुर्रा आ!

पनघट पर जित्तन बाबू की चर्चा चली हुई है। सामबत्ती पीसी कहती है—जो भी कहो, मन साफ है जित्तन बाबू का। कल मेरे घर के बगल से जा रहे थे। मैं केश का ढील हेरवा रही थी धूप में बैठ के, रमधनियाँ की माँ से। जित्तन बाबू पर नजर पड़ी तो भाग के पुआल के बोझे की आड़ में चली गई। कि पुकारने लगे—सामबत्ती तुम्हारे यहाँ भफ्फा[1] नहीं बनता, अब ? मैं तो लाज से गड़ गई।···आज भफ्फा बना के दे आई, गरम-गरम। हाथ से लेकर लुबलुब बच्चों की तरह खाने लगे! सच कहती हूँ। उसका कुत्ता अब कुछ नहीं बोलता!

फेकनी की माय बोली—आकि देखो! जिस मुँह से खाये, उस मुँह से शिकायत नहीं करे आदमी, किसी की! कल फेकनी के बाप को हवेली का प्रसाद खाने का मन हो गया। थाली लेकर गई फेकनी।···जित्तनबाबू की माँ के समय फेकनी का बाप हवेली में ही पड़ा रहता था। आकि देखो, जित्तनबाबू ने फेकनी से कहा, रोज प्रसाद ले जाओ, बूढ़े के लिए।

सेमियाँ बोली—आज मेरे दरवाजे के सामने कैसा मजा हुआ। टोले भर के बच्चे मेरे बथान के पास खेल रहे थे। जित्तन बाबू को देख कर कुछ भागे। रामलगन भैया के बेटे ने कहा—जै हिन्न! हँसने लगे जित्तनबाबू। मनोहर की सबसे छोटी बेटी जो डगमग कर चलती है, ठिठक कर खड़ी रही। जित्तनबाबू आगे बढ़ गए तो उतनी-सी टुन्नी छौंड़ी पुकार कर कहती है—हेय! मारे कन्ने !···उसका बाप हमेशा डर दिखलाता है न! चुप रहो, नहीं तो हवेली पर पकड़ कर ले जायेंगे! मारेगा हवेली वाला! इसीलिए, वह छौंड़ी पूछ रही थी कि क्यों मारते हो?

—तू भी उन की बात दून करके बोलती है। नाभी लगी हुई छौंड़ी ऐसी बात बोलेगी भला?

घर घर घर-घर्र-र—डवाक्!

---

1. खरवा चावल के आँटे से भाप पर पकी हुई, मद्रासी इडली की तरह चीज।

पनभरनियों ने भंडुल हुए भोज के लिए, बारी-बारी से ब्राह्मण, क्षत्रिय और भूमिहारों को जिम्मेदार ठहराने की कोशिश की। फत्तू खलीफा की घरवाली ने लुत्तो का नाम लगाया।

सामबत्ती पीसी के कान में सेवियादी ने कोई बात कही। सामबत्ती पीसी हँसकर बोली—दुत्त !...तजमनिया का जुठाया हुआ फल अब कौन खाय ?

फेकनी की माय ने राह में रुक कर कहा, दोनों से—आकि देखो, जो बात अपनी आँख से नहीं देखे कोई, बोले नहीं कहीं। आकि, बेवा हो गई है फिर भी जीभ नहीं समेटती है बाभिन फूहा। अभी कह रही थी सबसे कि तजमनियाँ अँगभरबी है !

सामबत्ती पीसी ने कहा—फूहा को पाँच आँख है। मैं कल ही आई हवेली से। तजमनियाँ जैसी थी, वैसी ही है।...फूहा जलती है क्यों सो नहीं जानती ? अभी जब मैं भफ्फा की बात बोल रही थी तो देखा नहीं, मुँह कैसी चुनिया रही थी, साड़ी की कोंचीं की तरह !

—चुप रहो, आ रही है।

फूहा बड़बड़ाती आ रही है। रास्ते में रुक कर गीले कपड़े को निचोड़ती है और जोर-जोर से कहती है—उत्ती-जरी छौंड़ी की बोली तो सुनो ! मैं तो अभी उसकी माय से जाकर पूछती हूँ कि कब मुझे जित्तन से क्या हुआ था ?

सामबत्ती पीसी ने आँख के इशारे से सेविया और फेकनी की माँ से कहा—चलो। बेबात का झगड़ा...!

जितेन्द्र अकेलेपन के अन्धकार से बाहर निकलना चाहता है !

...सांस्कृतिक जीवन पर राजनीतिक प्रभाव अवश्य पड़े हैं। किन्तु, उसकी काली प्रतिच्छाया सर्वग्रास नहीं कर सकी है, अभी भी !...जितेन्द्र हिजड़ा नहीं ! वह अपनी शक्ति पर फिर से विश्वास करने लगा है। उसका मवने

बड़ा सपना सच हुआ है !

···गाँव समाज में, मनुष्य के साथ मनुष्य का व्यक्तिगत सम्पर्क घनिष्ठ था। किन्तु, वह अब नहीं रहा। एक आदमी के लिए उसके गाँव का दूसरा आदमी अज्ञात कुलशील छोड़ और कुछ नहीं।···कहाँ है आज का कोई उपयोगी उत्सव-अनुष्ठान, जहाँ आदमी एक दूसरे से मुक्तप्राण होकर मिल सके ? मनुष्य के साथ मनुष्य के प्राण का योगसूत्र नहीं !

···प्रीतिबन्धन के खोए हुए सूत्र को खोज कर निकालना होगा। नहीं तो, इस सार्वभौम रिक्तता से मुक्ति की कोई आशा नहीं !

···परमादेव की सवारी के दिन, गाँव में चांचल्य ! रघ्घू रामायनी की गीत-कथा के समय, शामां-चकेवा की रातों मे, बन्द मन के झरोखे जरा खुले थे।···जात्रा, संकीर्तन, नाटक के अवसरों पर आनन्द से सारा गाँव फूला-फूला रहता। और, अब ?

···जितेन्द्र अपने को फिर से युक्त करेगा, चक्र में। पाँच चक्र नाच रहे हैं ! घनघन-घनघन !!

···टूट्टाँय ! ऑपरेशन पार्टी को चाय की छुट्टी मिली !

···इरावती और राजा कामरूपनारायण, दो अपमानित आत्मायें ! दोनों ने अपने अपमान का बदला चुकाने के लिए व्रत लिया है। राजा साहब कह रहे थे—समझे जित्तन ! इतिहास लिखने वाले यह नहीं लिख पायेंगे कि एक दृढ़ इन्सिटिट्यूशन यों ही ढह गया। इसने कोई रीढ़दार व्यक्ति पैदा ही नहीं किया ! ···इरावती कहती है, रोज—हमारी अशुभ मूरत देख कर लोग राह काटते हैं ! राजनीति के कदर्य-कीच से इस नई जाति का जन्म हुआ है। मैं चाहती हूँ, कोई यह न कहे कभी—समाज की रगों में विषाक्त वीजाणु का प्रवेश इसी नई जाति ने कराया। ...मिम्मल मामा आजकल जितेन्द्र के सामने एक नई पंक्ति दुहराते हैं—तांत्रिक का बेटा गणतांत्रिक !

—गोविंदो ! डेढ़ घंटा पहले ही कुलपति बाबू ने... !

ताजमनी की बोली सुन कर जितेन्द्र ने अपनी अस्तव्यस्त लुंगी सँभाली। ताजमनी के पहले ही प्रफुल्ल मीत चुलबुलाता हुआ आया... निश्चय ही आज चाय के साथ पकौड़े आ रहे हैं! पकौड़े के लिये चोरी भी कर लेता है मीत, कभी-कभी।—क्या डेढ़ घंटा पहले?

ताजमनी झुंझलाई हुई आई—सुरपति बाबू ने डेढ़ घंटा पहले कहला भेजा कि जरा चाय जल्दी दे जाय घोंसला में। कहीं जा रहे होंगे, दोनों। सो, अभी तक गोविंदो ने केतली भी नहीं चढ़ाई है। कहता है, आगाड़ी दादा बाबू को चा देके तब...।

जितेन्द्र हँस पड़ा। ताजमनी भी हँसी। पिछले कई दिनों से गोविंदो घोंसलावासियों से चिढ़ा हुआ है। .. सुरपति और भवेश और गोविंदो के लड़ाई झगड़े बड़े रसीले होते हैं। जरूर कोई नई बात होगी!

घोंसला में कोई बात हो, ताजमनी को तुरत मालूम हो जाती है। ताजमनी हँस कर कहती है—इस बार बंगाली-बिहारी झगड़ा हवेली में भी शुरू हुआ है!

—सच? क्या हुआ? घोंसलेवालों को भी बुलाओ, यहीं पीयें चाय!

ऐसी बात से गोविंदो और चिढ़ता है। कहता है—मॅन को माफिक थोड़ा सा बना कर कुछ ले जाओ तो दस जॅन भागीदार...हँ-हँ!

—बात क्या हुई है?

सुरपति बाबू ने पखारन काका और गोविंदो में लगा दिया। पखारन काका ने कहा—भात सालन बनावे वाला बंगाली हमरा से पार पाई! भवेश किंतु, गोविंदो के पक्ष में रहा। गोविंदो ने जवाब दिया—बंगाली को माथा को बराबरी दुनिया को कोई बेटा नहीं! और भवेश ने कहा—ठीक कहता है...!

स्थित कर देती है। जितेन्द्र ने ताजमनी से ही सीखा है।

—ताजू!···बहुत दिनों की लालसा है, एक। अरे, घबराओ नहीं! मैं कह रहा हूँ··· ।

—बहुत दिनों की लालसा है, मेरी भी एक। एक नहीं, अनेक। किंतु, उन्हें माँ काली ही पूरा कर सकती है!

—ठीक है, मेरी लालसा को तुम माँ काली के पास पेश करो। ···मैं तुमको मंच पर देखना चाहता हूँ!

—फाँसी-मंच पर?

—लोक-मंच पर!

—*कोई पार्टी है किसी राजा की?*

—हाँ! नाच पार्टी, इरा रानी की!

चिक के उस पर गोबिन्दो ने खखास कर गला साफ किया—हें-ऍं-क! आ-रे, रहो-रहो। मीत बाबू··· ।

—तब तो मैं सचमुच रानी समझूँ अपने को! इरावती खिल पड़ी।

—हाँ इरा! मेरे अपमानित जीवन के घाव फिर से हरे हुए हैं। मैं अपने मुँहबोले मौसा को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने गाल पर थप्पड़ मार कर ताजा कर दिया!···पाँचो चक्र बायीं ओर घूमते हैं! जितेन्द्र के अपमानित जीवन की उपकथाओं की पोथी के पिछले पन्ने उलटते हैं, फड़फड़ा कर!

···नकटा! नकटा बना दूँगा जीवन भर के लिए याद रखो भैया!··· चाहकर भी तुमको प्राणदण्ड नहीं दे रहा। जाओ, जिन्दगी भर के लिए नपुंसक होकर जीओ। जीना ही चाहते हो यदि तुम। लम्पट!!

१९४२ का मार्च··· !

जितेन्द्र ने पार्टी के अन्दर और बाहर अपनी शक्ति बढ़ा ली थी, धीरे-धीरे।

कुबेरसिंह की सतर्कता के बावजूद वह स्वतन्त्र होता गया।···कुबेरसिंह ने ढील दे दी थी—बँड़सी में बझी हुई मछली, जायगी कहाँ? लग्गी कुबेर के हाथ में है!

१९४२ की फरवरी में ही प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के सामने अगले कदम का प्रश्न उठा।···कुबेरसिंह के मन में कोई और बात पक रही थी, जितेन्द्र कुछ और सोच रहा था। वाणी दास की अपनी राय थी।

कुबेरसिंह ने जानबूझ कर मीटिंग की तारीख एक महीना आगे बढ़ा दी और पार्टी के आवश्यक काम से कलकत्ता चला गया।

वाणी दास संभवतः कुबेरसिंह के प्रस्थान की प्रतीक्षा कर रही थी।... जितेन्द्र से प्रार्थना की वाणी दास ने—जितेन्द्र भाई! मुझे निकालो इस अंधकूप से! कल ही चलना है, साथ तुम चलोगे? नहीं तो, मैं-मैं···।

—वाणीदी। किस समय चलना है, मुझे कह दें।

—सुबह खुलने वाली बस से!

···सुबह खुलने वाली बस से कोडरामा! कोडरामा में टिकट खरीदते समय जितेन्द्र ने समझा, बनारस जा रही हैं वाणीदी!

—भैया! ···तुम पर अविश्वास नहीं करती! माखनदा ने बुलाया है! माखनदा! चंडीपुर बम केस में अंडमन की सजा पानेवाले, नौजवान-गदरपार्टी के प्रधान। पिछली प्रांतीय कांग्रेसी सरकार बनने पर अंडमन से लौट कर अपनी पार्टी को पुनर्जीवित किया है, माखनदा ने। पिछले कई महीनों से फरार हैं!···वाणीदी वाग्दत्ता हैं, माखनदा की। माखनदा की पार्टी और जितेन्द्र की पार्टी में सांप और नेवले की दुश्मनी है। वाणीदी किसी संकट से बचने के लिए ही प्रगतिशील समाजवादी दल में आई थी। दो वर्षों तक सहती रही कुबेरसिंह के उत्पातों को। जितेन्द्र, पार्टी दफ्तर में आकर रहने लगा। कुबेरसिंह से जान छूटी। वाणीदी की उपस्थिति से जितेन्द्र की पार्टी को बहुत लाभ हुए, इसको पार्टी का एक-एक सदस्य जानता है।

लेकिन गलत समझा मैंने।···म-म-मैं ? मेरा दावा है कि मैं उसको सारा जीवन अपनी ऊँगलियों के इशारे पर नचा कर रखता। लेकिन, बीच में टपके आप !···एक डिस्पेप्सिया का मरीज माखन लाहिड़ी पाकेट से औरत छीन कर चला गया और आप शहबाला बनने की खुशी में हैं ? वाह रे सुपुरुष !!

—आपने आज भंग ज्यादा छान ली है, लगता है।

—बनारस से आए हैं आप और भंग का नशा हो मुझे ? क्या बात की आपने ! कुबेरसिंह झोली में आइना रखते हुए बोले—आपके अभिमान का कारण मुझे मालूम है।···बहुत शीघ्र जनरल मीटिंग बुला रहा हूँ।

···जनरल मीटिंग !

दो-ढाई सौ युवक-युवतियों की जनरल रैली, कतरासगढ़ धर्मशाले के बड़े हॉल में शुरू हुई। एजेण्डा की प्रथम विचारणीय बात थी—वाणी दास के पार्टी परित्याग पर विचार।···एक सदस्य ने एजेंडा पढ़ते समय चुटकी ली—पार्टी परित्याग या पार्टी-परिवर्तन !

सबसे पहले, कतरास के युवक कार्यकर्ता पशुपतिनाथ ने उठ कर, अपना आरोप-पत्र पढ़ कर सुनाया। आरोप-पत्र में वाणी दास तथा जितेन्द्र को नौजवाने गदर पार्टी का भेदी कार्यकर्ता कहा गया था।···इसी तरह के अन्य आरोप !

एक आदिवासी युवती, केरकेटा ने उठ कर कहा—जित्तन बाबू के खिलाफ मुझे भी कुछ कहना है। लेकिन, बातें ऐसी हैं कि मैं मुँह से बयान नहीं कर सकती !

—ऐं ? ऐसी क्या बात ? लिख कर दीजिए, अभी तुरत।···छिपा हुआ भेदिया ! गुर्गा, गुर्गा !!

जितेन्द्र भौंचक्क होकर देख-सुन रहा था।···पशुपति ? जो, भैया-भैया की रट लगाए रहता था, एक पखवारा पहले तक ? केरकेटा, जिसको उसने

आज तक 'तुम' नहीं कहा !

—सुमित्रा, विद्या और रामरति का भी एक सम्मिल्लित-अभियोग है !

—पहले, अभियोगों पर विचार हो ले !

केरकेटा ने लिख कर दिया—जितेन्द्र ने मेरी इज्जत ली है ! सुमित्रा, विद्या और रामरति ने सम्मिलित-अभियोग पत्र में लिखा—जितेन्द्रनाथ ने पिछली पार्टी रैली के अवसर पर, हजारीबाग के किसी बँगले पर चलने का प्रस्ताव रखा—गोपी-कृष्ण लीला खेलें।···

—शूट हिम ! रामरति का प्रेमी कार्यकर्ता अवधूत अपनी भारी भरकम देह को तौल कर उठता हुआ बोला—रासलीला करता है ? शूट हिम !·· ए ! ए !! ठहरो, पहले फैसला हो जाने दो, साथियो !···बड़ा मौके से दूसरी पार्टी का भेदिया इतने दिनों के बाद पकड़ाया है भाइयो !!

—और एक चार्ज ! एक तेरह चौदह साल के किशोर ने साफ-साफ शब्दों में कहा—पूछिए, मुझे यह लड़की समझते हैं या लड़का ?···कुबेरसिंह ने रामरति के प्रेमी अवधूत को रोका—अवधूत जी ! शूट-शूट मत चिल्लाइए बेकार ! पहले बातों को एक-एक करके आने दीजिए सामने।···कुबेरसिंह बार-बार मुस्करा कर जितेन्द्र की ओर देखता !

—सुनिए !

सारे हॉल में सन्नाटा छा गया। कुबेरसिंह के चेहरे पर वैसी पैशाचिक मुस्कराहट कभी नहीं देखी थी किसी ने। कुबेरसिंह पाँच मिनट तक अवाक् खड़ा रहा, विकृत ओठों पर मुस्कराहट बनी रही। बोला—भाइयो ! समझ में नहीं आता, क्या कहूँ और क्या करूँ !···जहाँ तक जितेन्द्रनाथ के व्यक्तिगत चरित्र का प्रश्न है, मैं आप लोगों से अधिक ही जानता हूँ उसको। मैंने उसको पाप-पंक से निकाल कर राजनीति में प्रवेश कराया। सोचा था, एक भले घर का बेटा सही राह पर आ गया।···लेकिन, वह इस हद तक पतित हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की थी मैंने। आपको

मालूम होना चाहिए कि इस रंडीबाज ने सोलह साल की उम्र में ही नथिया उतारा था !···

—हा-हा-हा-हा !!

—इसलिए, प्रधान दोषी मैं हूँ। कुबेरसिंह ने नीलकंठ की तरह सारा जहर पी लिया—हाँ, मैं दोषी हूँ। इस व्यक्ति को अपना प्राइवेट-सेक्रेटरी बना कर, इस पर इतना विश्वास करके मैंने पार्टी का अहित किया है !··· कलकत्ते में इन्होंने रसगुल्ले खाकर पार्टी को बेंच देना चाहा, बंगालियों के हाथ। मेरा माथा उसी समय ठनका था ! लेकिन जो होने को होता है वह होके रहता है !···और, सुन लो कान खोल कर। नकटा की जिन्दगी ! प्राणदंड से भी बड़ा दंड ! जब तक जीयोगे, नकटा की जिन्दगी !!···छोड़ दो साथियो ! उदारता से माफ कर दो। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब तक यह वफादार रहा, पार्टी की अच्छी सेवा की इसने।···जितेन्द्रनाथ जी ! आपने कलकत्ते के दीनानाथ चौरासिया से चुपचाप चार हजार रुपया लिया है, वह भी माफ कर देता हूँ। ···कृपया हॉल छोड़ दें। आगे की कार्रवाई शुरू होगी ! रामरति का प्रेमी अवधूत बाहों को तौल कर गुस्सा दिखाते हुए कहता है—याद रखना !

जितेन्द्र का माथा चकरा गया था ! ···श्यामगढ़ पहुँचते-पहुँचते रामरति के प्रेमी अवधूत और विद्या के भाई निगम ने उसको पकड़ लिया था। श्यामगढ़ ड्योढ़ी में पहुँच कर भी गोली दागने का इरादा था उनका। राजा कामरूपनारायण ने बड़ी बुद्धिमानी से उन्हें वापस किया !

कुबेरसिंह ने उसी दिन की रैली में प्रस्ताव मंजूर करवा लिया। बिहार के पत्रों में छपा—प्रगतिशील समाजवादी पार्टी का फैसला ! हम फासिस्ट-विरोधी हैं किन्तु कम्युनिस्ट नहीं !···प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के दूसरे समाचार में जितेन्द्रनाथ के निष्कासन पर एक छोटा-सा वक्तव्य था, पार्टी के प्रधान श्री कुबेर सिंह का—ऐसे चरित्रहीन व्यक्ति को किसी भी राजनैतिक पार्टी में जगह नहीं मिलेगी !

जेल-गेट पर ही बैठा रहना पड़ा ! हर वार्ड के लोगों ने एतराज किया—यहाँ मत भेजिए, यहाँ अब जगह नहीं। जितेन्द्र ने प्रार्थना की थी, उसे किसी सेल में ही जगह दी जाय !···

तीन साल तक वह पुराने सेल में पड़ा खाँसता रहा, किसी ने उसकी खोज भी नहीं की। जितेन्द्र को वे राजनीतिक बन्दी नहीं मानते, सरकारी गुर्गा समझते ! जेल से निकलने के बाद···!

कुबेरसिंह ने अपनी पार्टी को कांग्रेस में वीलीन कर दिया ! शहादत-आश्रम से उसने टेलीफोन किया—क्यों, सदाबहार जी ? जितेन्द्र को आपकी पार्टी में जगह मिल गई ? आपको शायद याद न हो मेरेउस समय के वक्तव्य की भाषा।···हाँ, मैंने लिखा था किसी भी राजनीतिक पार्टी में उसकी जगह नहीं। हँ-हँ ! अरे, पुराना पतित ! हाँ, हाँ ! भैया ! इसी लिए कहता हूँ ! खास करके आपकी पार्टी में तो उसकी जगह नहीं ही होनी चाहिए। महिला-कॉलेज की बहुत सी लड़कियाँ ? हाँ-हाँ। तब समझिए ? रिसीवर रखते हुए कुबेरसिंह हँसा—नकटा !!···

···प्रांत की राजधानी में बैठकर पत्रकारिता करना चाहता है ? ठहरो ! चखा देता हूँ मजा ! कुबेरसिंह ने सभी अखबार के दफ्तरों में जितेन्द्र की चरित्रहीनता का गुप्त संवाद भेज दिया ! ···साहित्य सेवा ? वहाँ भी कुबेर के मित्र हैं, बहुत। कहाँ जायगा, जितेन्द्र ! गली-गली में, उसका नकाब उलट कर दिखलायेगा, कुबेरसिंह। किसी सोसायटी में मुँह नहीं करने देगा !

इसके बावजूद पाँच वर्षों तक पटने में डटा रहा जितेन्द्र। छद्मनाम से लेख लिखता—राजनीतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक ! पटने के कई सम्भ्रान्त परिवारों में घुला मिला। कई नये दोस्त बनाए, बहुत सारी किताबें पढ़ीं, अनेक चित्र प्रदर्शनियाँ देखीं, और अपना प्रिय साज सितार बजाना सीखा !···किन्तु, वह टिक नहीं सका। लांछना, अपमान, असफलता और निराशा को झेलकर भी वह समाज से बँधा रहना चाहता था। सम-

वयसी, समधर्मा, समभावापन्न स्त्री-पुरुषों की छोटी गोष्ठी में जीने भर खुली हवा पाकर ही प्रसन्न था।···बायो-सोशल क्षुधा की निवृत्ति के लिए एक मर्मी मित्र की निष्कपट मुस्कराहट ही पर्याप्त है! कुबेरसिंह ने उसे भी छीन लिया। तब, वह भागा-भागा अपना गाँव आया। ···गाँव के लोग पहचानते ही नहीं, मानो।

—घृणा से मुँह विकृत मत करो जितेन्द्र! राजनीति ने हमें बहुत कुछ दिया भी है। ···फिर भी तुम विस्थापित नहीं! गाँव के लोग तुमको न पहचानें। गाँव की मिट्टी, अपनी जन्मभूमि का पानी तो तुमको प्राप्त है। जहाँ तुम खेले-कूदे, बढ़े···। मुझे देखो! इरावती ने समझाया—मेरे दुख की कल्पना करो!

—तुम्हारे इस सांस्कृतिक-अनुष्ठान के पीछे कोई राजनीतिक हाथ तो नहीं? सरकारी या गैरसरकारी किसी किस्म की राजनीति से प्रभावित तो नहीं लोकमंच की कल्पना?

—तुम बहुत शंकालु हो गए हो!

···यहाँ के सांस्कृतिक जीवन में डुबकी लगाए बिना प्रीति के छिन्न-सूत्र को पकड़ना असम्भव है!

जितेन्द्र ने परानपुर के सभी नौजवानों को, नाटक-प्रेमी व्यक्तियों को आमन्त्रित किया है, परानपुर नाट्यशाला का पुनरुद्धार करने के लिए। नाम-बनाम हर नौजवान की बुलाहट है।···मँगनीसिंह उर्फ प्रेमकुमार दीवाना उर्फ हरिजन दीवाना गाँव का एकमात्र नाटककार है। नाटक का अकेला नामलेवा है। पत्र में लिखा है—आपके सहयोग की विशेष आवश्यकता है!

—क्यों झा जी ! ग्राम पंचायत को, मीटिंग-बैठक पर दफा चौआलीस लगाने का पावर नहीं है ?

रोशन बिस्वाँ की पुरानी आदत छूट गयी है। लेकिन, जीभ को रोकते समय मुँह चुनियाने की नई आदत लग गई है।

लुत्तो कहता है—नट-नट्टिनों की मीटिंग में मैं नहीं जाता।

गरुड़धुज झा की राय है—बहुत दूर की चाल है, यह। मिसर खान्दान की अँतड़ी की बात मैं समझता हूँ !

हरिजन दीवाना पीठपर झोली लादे जा रहा है ! लुत्तो ने पुकारा—ए ! हरिजन जी ! आप भी जा रहे हैं नट-नट्टिन की बैठक में ?

—हाँ, मुझे विशेष निमन्त्रण है। देखिये न, लिखा है—आप की उपस्थिति…। गरुडधुज झा ने कहा—चमरौधे का जवाब बूट-जूते से देने लगे, तब ? गरुड़धुज झा के नकली दाँत की कमानी टूट गई है। हँसते समय अ-गरुड़ध्वज चेहरा हो जाता है !

हरिजन दीवाना ने कहा—आप लोगों का राजनीतिक मतभेद है। मुझे क्या ! मैं तो लेखक हूँ न ! जित्तन बाबू कह रहे थे कि अकेला दीवाना है जो नाम भी लेता है नाटक का, इस जमाने में। मैं कैसे नहीं जाऊँ ?

हरिजन दीवाना अपने नाटकों की पाण्डुलिपि से भरी झोली सँभालता हुआ चला गया।

—जाने दो ! पीछे मालूम होगा।…जे बेटा पैदल परानपुर होली, सेहो दागल गेल ! गरुड़धुज झा ने कहा—इस बैठकी में दीवाना-परवाना सब

क्यों टूट रहा है सो नहीं जानते ? यहाँ डबल पुरोग्राम है । कम्फ की छौंड़िया भी रहेगी !

—ओ !

—सच कहता हूँ, आज यदि मेरे दाँत की कमानी नहीं टूटी रहती तो मैं भी जाता इस मीटिंग में । तुम्हारी शपथ !

गरुड़धुज झा एक विशेष ग्राम्य-मुद्रा बना कर हँसा । हँसते समय दाँत की खुली खिड़की से लार टपक पड़ी । लुत्तो ने हँसकर कहा—आप तो सचमुच···।

—सचमुच क्या ! पुराने मछलीखोरों की भाखा में उस छौंड़िया को नैनी मछली कहेंगे । देखते ही मन लट्टू हो जाता है ।···कहाँ से आई है ? लुत्तो ने कहा—चालू माल है, रिफूजनी है । साला, मजे में यही लोग हैं । मरते हैं हमलोग, जो असल देशवासी हैं ! उधर नेहरू जी इन लोगों के चलते भर पेट भात नहीं खा सकते और इधर दिन में चार किस्म की रेशमी साड़ी पहनकर बरदिया घाट पर बैहर-चुक्का खेलती है !

—जो भी कहो ! जित्तन है जोगाड़ी आदमी । कहाँ से, घर बैठे मँगा लिया इस नैनी मछली को ।···साला बूढ़ा भी जवान हो जाय, देखते ही ! तुमने उसकी बोली सुनी है ? ठीक, पहाड़ी मैना की तरह बोलती है । सामबत्ती से उस दिन बतिया रही थी ।

—झा जी, आप ऊपरी सजावट को देखकर मत भूलिए । वह अधेड़ है और आप कहते हैं छौंड़िया ! आप नहीं जानते आजकल का भेद ! नकली दाँत की तरह सभी चीजें नकली ।···हिरिया की बोली कम मीठी है ?

लुत्तो को हीराबाई की बात याद आई । कल कह रही थी – ताजमनी को जित्तनबाबू ने हवेली में बैठा लिया है, उसी तरह···।

···हमारे गाँव की मिट्टी में सांस्कृतिक सोना फल रहा

विचारशील नौजवानों के मन में इरावती और जितेन्द्र की बातें घर कर गई हैं।···प्राण नहीं, अनुभूति नहीं! अब, मनुष्य को यंत्र चला रहा है। ···टेकनॉलोजी के युग में हमलोग जीवन-उपभोग का मूल तकनीक ही खो बैठे हैं! हजारों-हजार जनता के बीच भी हरेक आदमी विच्छिन्न है, अकेला है। हँसी-खुशी, उत्तेजना-अवसाद, आनन्द उल्लास—सभी यांत्रिक! कामरेड डी० डी० टी० ने प्रश्न किया था—कामरूपनारायण सिंह की पार्टी का कल्चरल फ्रंट तो नहीं यह लोकमंच?

मकबूल के दो सवाल—इस सांस्कृतिक उत्थान के लिए आर्थिक सहायता कहाँ से मिलेगी? भूखे किसान और मजदूरों को इससे क्या फायदा?

···समाज को मानवीय और मनुष्य को सामाजिक बनाना ही मुक्ति का एकमात्र पंथ है!

गरुड़धुज झा कहता है—अब ठीक है। जित्तन ने गाँव के नौजवानों को फुसलाने का नया तरीका निकाला है। नैन की मार!···नैनी मछली!!

हरिजन दीवाना चौबटिया पर रोज नियमपूर्वक भाषण देता है—नाटक! गाँव समाज का नाटक! आपके और हमारे घर का नाटक! इरावती-बहन को भगवान ने खासकर हम लोगों के लिए ही भेजा है।

इरावती घर-घर घूमती है। गीत सुनती है, शादी-व्याह, पर्व त्योहार और आनन्द-उत्सव के समय गाये जाने वाले गीत!

जितेन्द्र के टेबल पर चार-पाँच फोटोग्राफ हमेशा पड़े रहते हैं—परमादेव के गह्वर और शामाँ-चकेवा की रात वाली तस्वीरें!···लोगों के चेहरे पर स्वाभाविक हँसी फूटी हुई है। ···शामाँ-चकेवा खेलती हुई औरतों की खिलखिलाहट कमरे में गूँज जाती है, रह-रह कर। ···आनन्दोल्लास!

परानपुर नाट्य समिति की पुराने नाट्यशाला की दीवारों पर उगे हुए पीपल के पेड़ काटे जा रहे हैं। ईंट-चूने और सीमेंट का हिसाब करता हुआ बड़बड़ाता है जलधारीलाल दास—रह-रह कर मनक मनार होता है।

कभी जंगल लगाते हैं तो कभी···।

गाँव के अधिकांश लोग उदासीन, तटस्थ और शंकालु होकर देख रहे हैं—गाँव के नये-नवतुरियों को क्या !···नाटक तमाशा सूझता है सिर्फ !

गाँव की औरतें बड़े उत्साह में हैं—फिर से पुराना जमाना लौट रहा है !

बरदिया घाट के ताड़ पर बैठा त्रिकालदर्शी ब्रह्मपिशाच हँसता है—बस, तीन चार दिनों की देर है। आ रही है, दिल्ली से नई खबर! खड़क्-खड़क्-खड़ खड़ !!···दूर, दिल्ली में बैठा नदी-घाटी योजना का एक नौजवान विशेषज्ञ परानपुर की तकदीर को फिर से लिख रहा है। विशेषज्ञों की सभा में नक्शा फैलाकर वह समझा रहा है—यह है कोसी की मुख्यधारा ! तीस माईल पूरब की ओर जो यह पतली-सी धारा है—दुलारीदाय, इसको ध्यान से देखिए। ···आजकल सूखी पड़ी हुई है। यही एक धारा है जो नेपाल की तराई में कोसी से निकली थी। यदि, इस जगह···हम कोसी की मुख्य-धारा को डाइवर्ट कर सकें ! दुलारीदाय को फिर जीवित कर देने से हम एक तटबंध के खर्च से बचेंगे। साथ ही, रानीगंज-फारबिसगंज इलाके में परती पर जो नई जमीन पाई गई है, उसकी सिंचाई। ···हाँ। पाँच कुंड हैं। इन्हें केनाल में परिवर्तित करना होगा।···तीन-चार माइल तक इस धारा के बेड में खेती होती है। बाकी यों ही पड़ी रहती है।···पाँच-सात गाँव के किसानों के पुनर्वास के लिए परती पर यथेष्ट भूमि है ! एक करोड़ की बचत, बाढ़ के समय कोसी की मुख्यधारा की बर्बादी से करीब दो सौ गाँव यानी दो-तीन हजार एकड़ धरती को बचाया जा सकेगा !

विशेषज्ञों ने एकमत होकर दुलारीदाय की धारा को पुनर्जीवित करने का प्रस्ताव मंजूर कर दिया। उसी दिन रेडियो और समाचार पत्रों द्वारा कोसी योजना का यह समाचार देश के कोने-कोने में फैल गया—एक करोड़ रुपये की बचत···!

हाहाकार मच गया सारे गाँव में !

…ऐंय ? दुलारीदाय में पानी आवेगा ? खेती कहाँ करेंगे लोग ? किसने यह किया ? जरूर जित्तन का काम है ! वह छौंड़िया इसी काम के लिए आई है।…घर-घर घूमकर अली-गली की खबर इसीलिए लेती है। और भी न जाने क्या हो ? लुत्तो बाबू, क्या होगा ? क्या हो गया ? जयदेव बाबू ! यह कौन जमाना दिखा रही है सरकार ? आग लगे इस सरकार को। मकबूल बाबू ! किस दिन के लिए बैठे हैं, शुरू क्यों नहीं करते क्रांति ! बालबच्चा कैसे जीयेंगे ? कहाँ जायँगे हम ? रिफूजी की तरह हमें भी भेजा जायगा कहीं ?…मारो पकड़ कर जित्तन को ! उस कम्फूवाली छौंड़िया को पकड़ो। क्यों ऐसा किया ! नाटक करने आई है या हमलोगों की जान लेने। जै दुलारीदाय ! हे काली माय ! ओ-ओ-ओ ! हा-आ-आ-आ। हे-ए-हो-ओ ! बाप-रे-ए ! क्या होगा ? क्या-आ-आ- ?

—शांति ! शांति !! ए ! आप लोग रोते हैं काहे। हम आज ही पंडित नेहरू को तार देते हैं, सभी आदमी के नाम से। निकालिए पैसा।…यह हो नहीं सकता !!

लुत्तो, गरुड़धुज और मुखिया रोशन बिस्वाँ को लोगों ने घेर लिया है !… उपाय कीजिए। जान बचाइए। लुत्तो बाबू !

मकबूल और जयदेव सिंह ने अपनी-अपनी पार्टी के लीडरों को खबर भेजी है—इस परिस्थिति में क्या किया जाय ? जल्दी आदेश दें !

सारे गाँव में कोलाहल है। किन्तु, हवेली में रिकार्ड बज रहा है। बंगला भटियाली गीत—नँदीर धारेर काछे-पासे, बाँस बनेरी माझे-माझे-ए-ए-ए ए, देखा जाय जे ग्राम खानि, बँधुआ सेथाय थाके गो-ओ-ओ-र बँधुआ सेथाय थाके-ए-ए !

गरुड़धुज की बात पक्की है—सात-आठ गाँवों का लीडर एक ही रात में हो जायगा, लुत्तो।…आनेवाले चुनाव में फतेह !! यही मौका है ! लुत्तो को

मौका मिला है। इस बार वह करके दिखलायगा। यह परती जमीन नहीं कि जित्तन के कहने से छीन ली।…कांग्रेस से इस्तीफा की धमकी देगा वह! …इनकिला-आ-आ-ब !

डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट दुबारा आए—मेरी कोठी की खानातलाशी लेने के लिए। ली आया, किन्तु उदास होकर लौट गया। मैं उसकी कोई मदद नहीं कर सकी।…माँ तारा के सिवा और किसी से क्या बात की जा सकती है, ऐसे दुर्दिन में !

लोली के लिए कलेजा सहस्रखण्ड हो रहा है। क्या करूँ ! स्वामी ने मना कर दिया है।

लरेना आकर फिर दो हजार रुपया ले गया।

मूँगा की हालत देख कर रोना आता था। पुट्ठे की हड्डियाँ निकल आई हैं। आँखों में कीचड़। मूँगा मेरा प्यार ले रहा था। मैं उसकी आँखों से कीचड़ पोंछ रही थी। लरेना ने गाली दी—चल साले !

लरेना के व्यवहार से मैं दुखी हुई। किन्तु, स्वामिभक्त…।

तीसरे दिन फिर आया लरेना। मूँगा पर सवार रहा, उतरा नहीं। मूँगा मुझे देख कर प्यार से हिनहिनाया—ईं-हिं-हिं !

लरेना कह गया—पण्डित जी जमानत पर रिहा हुए हैं। लेकिन, शिवदास कोठी में नहीं आवेंगे। कभी नहीं आवेंगे ! …और, न यहाँ से कोई परानपुर जायगा !

मूँगा को एंड़ लगाई, उसने। मूँगा जम गया, पिछले दोनों पैरों को उठाकर, दाँत से लगाम को कटकटाने लगा। तड़ातड़ चाबुक बरसाया लरेना ने—साला! मेमिन माँगता है?

क्या अर्थ? क्या मतलब? माँ तारा! मैं कुछ नहीं समझ सकी क्या कह गया वह? मेरे स्वामी का सन्देश लेकर आया था वह?…मेरे स्वामी ने मेरा परित्याग कर दिया? आँ? ओ माँ तारा-आ-आ!

लॉली बेटा रे-ए-ए!

मेरे स्वामी ने सचमुच मुझे छोड़ दिया है।

उन्होंने कचहरी में अपनी सफ़ाई दी है—प्लांटर्स से उनकी पुरानी दुश्मनी है। गीतवास कोठी की मिसिस रोजउड के द्वारा काली-मंदिर और हवेली के अन्दर सामान रखवाए गए!

मम्मी एकदम मौन धारण किए रहती है। पास के गाँव का नाम उसने रखा है—रोजऊड-गंज। दिन भर उसी गाँव में रहती है। अपना जो धर्म समझती है, करती है। स्कूल, पाठशाला…।

और, मैं अकेली माँ तारा को लेकर बैठी रहती हूँ!…परित्यक्ता नारी के मर्मदाह को माँ तारा नहीं समझेगी तो कहाँ जायगी, बेचारी! कुलगई, खोई, औरत की जाति!

मैं नियमपूर्वक सिंदूर लगाती हूँ। रानी-बहिना रोज सिंदूर लगाती होगी। …मेरे स्वामी को कुछ नहीं होगा। कोई दंड नहीं!

रात में मैं स्वप्न देख कर डरी! स्वप्न क्यों? माँ तारा के पदतले बैठे मैंने जो कुछ देखा, वह सपना क्यों हो?

प्रतिमा के आगे। कागज का अँबार। पंछी के पंख की कलम। मेरी हस्तलिपि से मिला कर कुछ लिख रहा है।···बड़े-बड़े अक्षर। हाथ से कलम छूट नहीं रही। कलम चल रही है।···मेरा दस्तखत बनाने की कोशिश कर रहा है? कागज पर रेखायें, वृत्त, चक्र बन रहे हैं। कौन? मेरा स्वामी? क्या हो गया है मेरे स्वामी को? ऐसी विकृत मुखाकृति क्यों? काँपती हुई हथेली में कलम! कागज पर रेखायें, वृत्त, चक्र···!

परमपाविनी क्षमास्वरूपा माँ तारा! क्षमा करो माँ !!

यह कौन आई है मेरी गोद में, अभागिन!···दुलारीदाय? लॉली की दुलारीदाय आई मेरे कोख से निकल कर रोती हुई। सारा जीवन रोएगी, अभागिन!

मेरे पति की आँखें मिली हैं, दुलारी को।

माँ तारा! आनन्दमयी विरहिनी बनाकर मुझे नंगा नचाना चाहती हो! इतना सुख? इतना दुःख! इतनी पीड़ा !!

पुतली जा रही है, परानपुर। मैंने कोई संवाद नहीं दिया है। एक कागज भेज रही हूँ। कागज नहीं, दस्तावेज।···पत्र का एक टुकड़ा! मिसिस-रोजउड ने लिखा है सुल्तानपुर इस्टेट के मालिक मिस्टर एन्थोनी को—डियर मिस्टर एंथोनी!···पिंजड़ा तैयार है। इधर शिकार भी अफीम का शरबत पीकर मदहोश और कमजोर हो चला है। शिकार फँसने के पहले हमारे और आपके बीच हुई शर्त पूरी हो जानी चाहिए।···काली-मंदिर और हवेली के अन्दर सामान पहुँच जायेंगे। नोट और रुपये लेकर चल जाऊँगी। आप अपनी सारी तैयारी कर लें।···आपकी—मिसिस रोजउड, नीलवास कोठी।

···अरी, डोमिन! इतना रोती क्यों है? पुतली गई है तुम्हारे जिद्दू-बद्दू भैया के पास। लाली भैया पूछेगा मेरी दुलारीदाय कैसी है? पुतली कहेगी,

बहुत रोती है।''तू डोमिन है, चमारिन है। तू भैया के घर की मजदूरनी बनकर रहेगी। तू अपनी भाभी की ओढ़नी पखारेगी ? भउजी-हे-भउजी, ओढ़नी तोहर पखारब हे भउजी'''।

मम्मी मुझसे बहुत कम बोलती है। आज हठात् उन्होंने मेरी दुलारी को प्यार करना शुरू किया। कहती है—तू तो इस तरह नहीं रोती थी, जन्म लेने के बाद। यह इतना रोती क्यों है ? मुझे हँसी आती है। हँसते-हँसते मम्मी की छाती में मुँह छिपा कर रोने लगती हूँ।

स्वामी ने अविश्वास किया ?

पुतली लौट आई।'''मुस्कराती है पुतली। ओ माँ ! मेरा भाग्योदय होगा, फिर ?

'''पुतली जान पर खेल कर हवेली के अन्दर गई। भोजन करके उठे थे मेरे स्वामी। देखते ही गरजे—यह कैसे आई ? फिर क्या लेकर आई है ? पुतली ने मेरा वह पत्र दिया—एन्थोनी के नाम। मेरे पति ने बार-बार पढ़ा। मेरी रानी-बहिना आकर खड़ी हो गई। और, मेरा छुट्टू पंडित हवेली के बाहर जाने के लिए रोने लगा। उसने सोचा—मेम्माँ बाहर खड़ी है, कालीमंदिर के पास।—यहाँ क्यों लाई है ? पूछा मेरे पति ने, पुतली से।

पुतली ने निडर होकर कहा—मुकदमे में लगाने के लिए।

गुस्सा से गरज पड़े—दिल्लगी करने आई है ?

पुतली ने झट से कहा—नहीं, मालिक ! रानी-बहिना ने पूछा—क्या बात है ? मेरे पति चुपचाप फिर से पत्र को पढ़ने लगे। कुछ देर के बाद बोले—लरैना जब रुपैया लाने गया था, जमानत की पैरवी के लिए तो उसे गाली क्यों दी गई अंग्रेजी में ?

रानी-बहिना और मिश्रजी ने एक दूसरे को देखा। पुतली ने सुना दिया

—दुबारा भी रुपया ले आया है।

—ऐं!···पहली बार कितना लाया था?

—शायद, पाँच हजार। इस बार, दो हजार!

रानी-बहिना और मिश्रजी की आँखें फिर चार हुईं।

जानती हैं, माँ तारा! मैंने तो पुतली से सिर्फ कहा था—इस पुर्जे को किसी तरह परानपुर इस्टेट के किसी विश्वासी कारकुन को भी दे आओ तो समझो बहुत बड़ा उपकार हो जाय। और, यदि भाग्य अच्छा हो, रानी-बहिना से मिल सको तो कहना—लरेना के हाथ का बनाया हुआ पान स्वामी को खाने न दें।···ली कह रहा था, मिश्र के नौकर को एथोनी के बँगले में देखा है उसने। पूर्णियाँ में भी कई साहबों के यहाँ आता-जाता है। ली ने समझा था, मैंने ही कोई पैरवी करने के लिए भेजा है, मिश्रजी की तरफ से।

—तू क्यों इतनी बात कहने गई?

मैनेजर साहब बोले—तू चल पुतली। मैं गीतवास आऊँगा। लेकिन, अभी नहीं। मुकदमा फैसला होने के बाद।···मैं सब कुछ समझ गया। तू जल्दी भाग। लरेना न देख पावे, तुमको। नहीं तो, साला ऐसा चालाक है कि आज ही मोरंग के जंगल में भाग जायगा।

···सच है! पुतली रानी, सच कहती है! दुलारी इतनी बड़ी तकदीर लेकर आई है, वह अपनी रानी माँ की चरणधूलि ले सकेगी!···बाप की गोदी में बैठेगी! लॉली भाई आवेगा, इसका!

चुप हूँ। सब चुप हैं। दुलारी भी नहीं रोती अब।···मुकदमे की सुनवाई होने तक की अवधि। माँ, माँ तारा! काली-काली!!

दिन गिनती हूँ—एक काली, दो काली, तीन काली!!

आज नहीं तो कल। कल तो अवश्य ही··· ।

मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ा नहीं है । मैं परित्यक्ता नहीं । मैं अपने स्वामी की हूँ । यही क्या कम है, मेरे लिए ? देखने की लालसा पूरी न भी हो, अग। ···तप में फिर कोई त्रुटि हुई । जन्म-जन्मान्तर, फिर दर्शन की प्यासी आँखें लेकर मैं भटकी फिरूँगी ।

···ले आ पुतली । उस अभागिन को मेरे पास। अपनी बीमार माँ के पास पाँच मिनट रहने दे । हाँ, ला !

···लॉली बेटा ! डार्लिंग ! यह रही तुम्हारी दुलारीदाय । मेरा जहाज सम्भवतः कल खुल रहा है ।

···मकरध्वज ? किसलिए ? ···अरे-रे, यह छुटकी ब्राह्मणी भी हँसती है ! वाह री पण्डिताइन !···भैयादूज में घोड़े पर चढ़ कर आवेगा तेरा भाई । तू टीका लगावेगी ? आ रे लॉली, आ-आ ! दधि-दूब-धान से तेरा पैर पूजेगी छोटी पण्डिताइन, तेरी बहन ।

···मेरा लॉली बेटा, तू आयगा ?

···आय-आय !!

···लॉली डैडी आयगा ?

···आय-आय !!

···लॉली, डैडी·········!

—चिया ! चिया इधर में लायगा कि उधर में जायगा । साहब !!

—आय-आय !!

सर्ववर्णमयी प्रकृति से शैत्य ग्रहण कर चुका है !

सुरपति अपने साथ कागजों का बण्डल लेकर, हवेली की ओर चला—जय माँ तारा !

समाजकम्प !

भूकम्प से भी भीषण इस समाजकम्प में, गाँव के लोगों के दिल दरार पड़ी हुई दीवारों की तरह भरभरा कर गिरे हैं। घर-घर में मातम छाया हुआ है। हरेक के चेहरे पर राख पुती है, सभी की आँखें बुझी हुई-सी। बच्चा-बच्चा उदास है—अब क्या होगा ?

सरबन बाबू को कलेजे में धड़कन की बीमारी हो गई है। रह-रह कर पुकारते हैं—लालचन बाबू ! मैं डूबा, डूबा, डूबा। दौड़ो लालचन···।

लालचन की घरवाली मना करती है—हरिवंश उठाकर ईमान खाने का फल दे रहे हैं भगवान जी। तुम क्यों दौड़ कर जाते हो ! उनके बेटे किस दिन के लिए हैं। वह तुम पर अपना आधा पाप डालना चाहता है।

रोशन बिस्वाँ की पुरानी आदत फिर लौट आई है। सूखे ओठों पर सूखी जीभ बार-बार निकलती है।···अब वह क्या मुखियागिरी करेगा, किस पर करेगा—खाजी ! ग्राम पंचायत की बात पर जरा भी ख्याल नहीं करेगी सरकार ! बिना मुखिया से पूछे ही···।

गरुड़धुज झा का दिमाग कोई काम नहीं कर रहा। किसको क्या जवाब दे ! बोला—रोशन बाबू ! जब तक लुत्तो लौट कर कोई खबर नहीं ले आता है पूर्नियाँ से, तब तक असली बात का पता नहीं चल सकता।

बालगोबिन मोची फारबिसगंज से आया है। कहता है—सभापति जी कह रहे थे, यह कानून टलने वाला नहीं।

—बालगोबिन क्या कहेगा !···आखिर, करने से क्या नहीं होता है ?

—झा जी ! कोई कुछ कहे। है यह जित्तन की ही बदमाशी। पहले अपनी परती तोड़ कर तब सरकार को खबर दिया कि परती जप्त किया जाय। पहले नैकासुन्नर सुनने के बहाने उस कुरकुरिया मशीन में गाँव के लोगों की बोली को बन्द किया, तब ननकू नट, बकला अहीर वगैरह की बोली भर कर भेज दिया। बेचारे जेल में सड़ रहे हैं। और इस बार देखिये ! पहले सभी लोगों को बुलाकर नाटक-नौटंकी की बात सुना कर फुसलाया। उधर अन्दर-ही-अन्दर पचासकोप खेला !

—सरबन बाबू की हालत अच्छी नहीं। फारबिसगंज का डाक्टर आकर देख गया है। डाक्टर बोला, कोई भीतरिया चोट लगी है।

—अरे, सरबन बाबू जैसे लोगों के पाप से ही यह सब होता है।··· भूदानियों को मारने का फल सारा गाँव भोगे अब।

सबको अपनी-अपनी जमीनों की याद आती है, धान और पाट के पौधों के रंग आँखों के आगे फैल जाते हैं। अन्त में सब पर पानी फिर जाता है ! सर्वे में, लड़कर जमीन हासिल करने वाले, बाप और भाइयों के पेट में अपने हक़ की जमीन निकालनेवाले, सभी जमीनवाले राह चलते लड़खड़ाते हैं।

··यह कौन जमाना आ गया, हे भगवान !

औरतें बेवजह आपस में झगड़ती हैं।

—इस कोंढ़िया सरकार की आँख में छानी पड़ी है, क्या ? जोत-आबाद होने वाली जमीन को बाँस भर पानी में डुबा रहा है और उधर ऊसर परती को जोतवा रहा है !

सामबत्ती पीसी तुक जोड़ती हुई है—आम कटाये, बबुल लगाये, फल जे फलय मँहकार; उचित कहत सो चित नहीं भावे, चुगलन के दरबार !! सो, चुगलखोर का राज है, यह। कहता है सुराज है। राम राम !! मुँह मारो ऐसे सुराज का।

—सरकार का क्या कसूर ? यह घर के भेदिया ने लंका डाह किया है। सर्वे में लोगों ने जमीन ले ली। इसी डाह से यह सब किया है।

—हाँ, हाँ, जित्तन बाबू और कम्फू की बीबी ने मिलकर यह काम किया है। कहो तो भला ! सामने कैसी मीठी बोली बोलती है ? और, मन में छप्पन छुरी। छँहकबाज छोंढ़िया आवे इधर तब पूछती हूँ। हरजाई, नट्टिन, न जाने कहाँ से आई है।

—तुम लोग बिना जाने बुरे क्यों बोलती हो ? सभी बात का दोख एक ही आदमी को नहीं देना चाहिए। जित्तन बाबू का क्या कसूर ! गोबिंदो कहता था—दादा-बाबू खुद फिकिर में हैं, खाना पीना छोड़कर।

—जित्तन के बारे में कुछ बोलते ही तू क्यों टपकती है, सामदत्ती ?

सामदत्ती पीसी कई दिनों से बेदा फूहा से जी खोल कर झगड़ा करना चाहती थी। फूहा के टोकते ही बरस पड़ी—तुम्हारी जीभ बड़ी पतली हो गई है, फूहा ! टपटप टपकती है खुद और मुझे कहती है कि क्यों टपकती है ! लाज नहीं आती है !···जित्तनबाबू के लिए हवेली के पोखरे में डूबने गई थी, कभी।

—चुप, छिनाल !

—ठहर, तुम्हारा कल्ला तोड़ती हूँ। आ जा !

बाल्टी, घैला छोड़ कर सामदत्ती झपटी। दोनों एक दूसरे पर बिल्लियों की

की तरह टूटीं। दोनों ने एक दूसरे का केश पकड़ा। पनघट पर रा्ड़ी औरतें ऐसे झगड़े में बीचबचाव नहीं करती। फूहा की चाची दौड़ी आई

—मार, मार! मुँह में मार फूहा!

फूहा की चाची मैदान में उतरी तो फेकनी की माय क्यों चुप रहे? सामवत्ती सोलकन्ह की बेटी है—आकि देखो, एक जनि को अकेली पाकर मार रही है दो जनि···।

गुत्थमगुत्थी लड़ाई के समय भी मुँह की लड़ाई नहीं बन्द होती।

—बड़ा तेलवाली हो गई है।···हवेली के निमोंछा रसोइया ने मुँह चिकना कर दिया है, तेरा। मुँह तोड़ दूँगी, आज!···आकि देखो, दाँत काटती है। दाँत तोड़, मार मुक्का।···भफा खिलाने गई थी तू या···?

मार खाकर फूहा और उसकी चाची गला फाड़ कर रोने चिल्लाने लगी। —दौड़ रे-ए-ए-ए-ए बिसना भैया-आ-आ! जान. मारलक रे-ए-ए-ए-ए सामवत्ती नटिनियाँ-याँ-याँ-याँ!!

सामवत्ती कहती है—गाँव के लोगों को भात नहीं रुचता है और छिनाल छौंड़िया बेवा होकर भी दूध की छाली खोजती फिरती है। बुला, जिसको बुलाना है।

चीख-पुकार, रोना-चिल्लाना धीरे-धीरे बढ़ता ही जाता है!

कलात्मक प्रेम, इसी को कहते हैं।

—लॉली बाबू !

जितेन्द्र चौंका ! मेम-माँ का दिया हुआ नाम किसने बता दिया ? मेम-माँ के बाद फिर किसी ने इस नाम से नहीं पुकारा। सुरपति ने जितेन्द्रनाथ को दुबारा चौंकाने के लिए कहा—हिंग्वाष्टक···!

—आज आपको कहीं कोई पुरानी कथा हाथ लगी है क्या ?

—मेरा सौभाग्य !···पढ़कर देखिए, नई है या पुरानी।

जितेन्द्र के हाथ में छपे हुए प्लेट्स देकर सुरपति बोला—इसको पढ़ने के बाद मेरे कुछ प्रश्नों का जवाब देना होगा।

जितेन्द्र ने लिखावट पहचान ली, तुरत। खुशी से चीख पड़ा—सुरपति बाबू ! मेरी माँ की लिखावट है, मेम-माँ की ! कहाँ मिली आप को ?

हाँफती हुई आई, इरावती—यह क्या हो गया है, गाँव में ? औरतें आपस में झगड़ रही थीं ! मैंने छुड़ाने की कोशिश की तो मुझे ऐसी-ऐसी गालियाँ सुनने को मिलीं···।

प्रेमजीत ने उत्तेजित होकर कहा—किसने दी गाली ? आप पहचानती हैं ! मैं अभी जाकर···।

—आखिर, क्यों ? जित्तन बाबू ने चिंतित होकर पूछा।

इरावती बैठ गई—कोसी कैम्पवालों के साथ तुम पर भी कम नाराज नहीं हैं, गाँववाले। वह लम्बा आदमी है न, क्या नाम··हाँ, गरुड़धुज झा अभी कह रहा था—मेमसाहब ! आप और जित्तन जरा होशियारी से चलिए-फिरिए। गाँव का एक-एक आदमी आप दोनों से खफा है। थाना में सनहा लिखा दीजिए !

लोकमंच में मस्त जितेन्द्र को गाँव की कोई खबर नहीं। भिन्नलाता आए—ऐ जनता ! सत्याग्रह की तैयारी हो रही है।···दिनाकृति, समस्ती,

सोने से काम नहीं चलेगा। कमर कस कर आगे बढ़ना होगा।

—बंगाल-बिहार झगड़ा के समय जैसा अंडोलन हुआ था वैसा ही फिर होगा !

ऐसे आंदोलनों में बड़ा मजा आता है, गाँव वालों को ! रेलवे लाइन पर खड़ा होकर झंडा दिखा कर गाड़ी को रोकना, जिन्दाबाद करते हुए गाड़ी पर सवार होकर जोगबनी से कटिहार तक नारा लगाना ! क्या मजा ! जहाँ मन हो, चेन खींच कर रोक दो। इस आंदोलन में न पुलीस का डर, न गोली का भय।···काँग्रेसवाले पीठ पर हैं !

लुत्तो, जिला काँग्रेस के सभापति को चुनौती देकर आया है—परती छीनी गई, उस समय भी काँग्रेस की ओर से कोई मदद नहीं मिली। अब धनहर जमीन जा रही है, आप छोआ गुड़ लपेट रहे हैं !···इस बार हमारे इलाके में एक भी वोट नहीं मिलेगा काँग्रेस को, सो याद रखिए ! काँग्रेस के सभापति को क्या ! धरमपुर इलाके मे रहते हैं। लेकिन लुत्तो कैसे चुप बैठा रह सकता है। काँग्रेस ने यदि टिकट नहीं दिया, वह स्वतंत्र रूप से खड़ा होगा।···आठो गाँव इस बार मुट्ठी में आ जाएँगे !

समसुद्दीन मीर काँग्रेस का काम छोड़ कर घर में बैठ गया है। लुत्तो ने उसको फिर से उत्साहित करके अपने साथ कर लिया है।···काँग्रेसी हैं तो क्या ? सरकार पेट पर छुरी चलावेगी और हम चुपचाप झंडा ढोते रहेंगे ? इसबार—सत्याग्रह !! होगा क्या ? एक दो आदमी नहीं, सारे गाँव के लोगों को लेकर कल दस बजते बजते परानपुर आइए। वहाँ से जुलूस बना कर कोसी कैम्प पर धावा बोलना होगा। ट्रेक्टर की भटभटी बन्द करनी होगी। इसके बाद, रेलवे लाइन पर धरना ! बाल-बच्चा, औरत-मर्द को लेकर लाइन पर पिकेटिंग करना होगा। जब तक न दिल्ली खबर पहुँचेगी, कुछ नहीं होगा।

—ठीक है, ठीक है !···लुत्तो बाबू को छोड़ कर पब्लिक का दुख समझने वाला कोई नहीं।

मधुलता, मानिकपुर, दसपत्तर, रँगदाहा और पिपरा आदि गाँवों का चक्कर रात भर में ही लगा आया है लुत्तो। ···जनता तैयार है! देखना है मकबूल और जयदेव सिंह की पार्टी को। इस बार धोखा देंगे तो हमेशा के लिए चुक्ता-पार हो जायगा।

मकबूल की पार्टी के कामरेड, रात भर बैठक में बैठे बहस करते रहे। विश्वकर्मा ने कहा—जनमत के खिलाफ हम कोई कदम नहीं उठा सकते।
—ऊपर से कोई खबर आई?

—हाँ, जिला मंत्री ने लिखा है, स्थानीय समस्याओं पर स्थानीय यूनिट ही विचार करे। लेकिन, जनमत के खिलाफ कोई कदम न उठे, इसका ख्याल रखना होगा!

कामरेड मकबूल ने चुपचाप अपनी नुकीली दाढ़ी को चुटकियाते हुए पूछा—क्यों रंगलाल गुरुजी। आपकी क्या राय है?

—मैं? मैं बुद्धिहीन दलबद्धता को पाशविक वृत्ति समझता हूँ।

विश्वकर्मा बौखला उठा—ऐसे-ऐसे रिएक्शनरी जिस पार्टी में रहें, उसका कोई कदम सही नहीं पड़ सकता! जनता को पशु कहता है और आप लोग चुपचाप मुँह देख रहे हैं? जनता बुद्धिहीन है और आप बुद्धि के जहाज हैं!

—निश्चय! हम जब जानते हैं कि सरकार की इस योजना से जनता की भलाई होने वाली है तो बेकार बखेड़ा क्यों करें? हम, क्यों न गुमराह जनता को समझावें?

—समझाने का काम हमारा नहीं। हमारी पार्टी सरकारी प्रचार-विभाग नहीं। सीधी-सी बात आप नहीं समझते? बहुमत जिस बात के विपक्ष में हो उसका समर्थन करके हम अपने पाँव में कुल्हाड़ी क्यों मारें?

—माफ कीजिएगा। हैजे की सूई और चेचक के टीके के पक्ष में बहुमत कभी नहीं हुआ।

कामरेड मकबूल ने फैसला दिया—जनमत के साथ चलने के लिए कभी-कभी समाजवादी सत्य की सीमा को संकुचित करना निहायत जरूरी हो जाता है।

जयदेव सिंह की पार्टी तटस्थ रहेगी। न विरोध करेगी, न समर्थन !

अपनी मेम-माँ की कहानी पढ़ते समय जितेन्द्र की आँखें भर-भर आतीं !

···बाग-वन, पटार-मैदान, ताल-तलैये, नदी-पोखरे छायाछवि की तरह सामने आते, फिर ओझल हो जाते ! कचनार और हरसिंगार के स्पर्श का अनुभव करता।···रह-रह कर किसी कमलदह से हल्की सुरभि आती। गीत की एक कड़ी सिर धुनती—सखी हे-ए-ए-ए. हमर दुखक नहीं ओर ! ···मैंगा की हिनहिनाट ! उसके पिता का व्यक्तित्व उभर कर सामने आता, ब्रॉंज का स्टैच्यू !···छोटी पंडिताइन, दुलारीदाय ! गुड़िया जैसी ! कहाँ है उसकी बहन ?

—ताजू ! ताजू !! इधर आओ। यहाँ बैठो। सुनो। ···माँ ने निश्चय ही तुमसे कहा होगा। बोलो, कहाँ गई मेरी छोटी बहन, दुलारीदाय ?

जितेन्द्र की छलछलाई हुई आँखों को देखकर समझ गई ताजमनी, जित्तू के सपने में माँ आई हैं।—इस पोथी में क्या है ?

जितेन्द्र ने एक लम्बी साँस ली। ताजमनी उठ कर जाने लगी तो उसने अनुनय किया—तुम कहीं मत जाओ! मेरे पास बैठो आज।…ताजू रानी!

ताजमनी का रोम-रोम बज उठा!

…लॉली, डैडी आयगा?

…आय-आय!!

…मुझे टोको मत। ह्वेन आइ एम इन एक्शन, आइ एम नो मैन!…ब्रॉंज स्टैचू!

जितेन्द्र की रगों में एक अपरिचित वेग! अपूर्व स्पन्दन! मांसपेशियों में अजीब तनाव! …ताजमनी जरा डर गई। यह कौन पुरुष आकर सवार हो गया है उसके जिद्दा पर।—पखारनसिंह!-!-!-!

पखारनसिंह को लगा, बड़े मालिक पुकार रहे हैं। इसी तरह हवेली गनगना उठती, उनकी पुकार पर—ह-जौ-र!

दस बजते-बजते सारा परानपुर गाँव दलमला उठा! नारों से आकाश गूँजने लगा।

— नहर का फैसला रद्द करो!

उत्तेजना की पहली लहर दौड़ी। गाँव-गाँव के लोग जत्थे बनाकर आ रहे हैं। झंडे लहराते हैं, विभिन्न पार्टियों के।…लुत्तो, प्रसन्नता से दौड़ता फिरता है।

—ए! यह कहाँ का जत्था है? मानिकपुर का? जत्थेदार का नाम लिखाइए।…पहले, जमा होने दीजिए सभी गाँव के जत्थों को।…एक घंटा के बाद जुलूस रवाना होगा।

—तब तक गीत-नाद गाइए, नारा लगाइए।

—मधुलता गाँव के जत्थे में एक आल्हा गानेवाला आया है, गुलर

अल्हैता !

—शुरू करो जी गुलर अल्हैता, नया आल्हा । ढोलक पर थाप दो !

डिडि-चट, डिडि-चट···चटपटाक !

सुमरि भवानी जगदम्बा को, औ काली को शीश नवाय,
हाल बखानू् नेताजी का-आ-आ-आ-आ,
अरे, जिनकर धुजा रहल लहराय,
लहर-लहर लहराय जवानी-ई-ई-ई-ई !

डिडि-चट, डिडि-चट···चटपटाक् !!

आल्हा गीत सुनकर बूढ़े भी जवान हो जाते हैं । उत्तेजना की लहरें ! तुमुलध्वनि !!···मारो जवानो ! बढ़ो बहादुरो ! घेरो-घेरो···!

परमा, शिवमंगल, अनिरुद्ध, प्रेमजीत वगैरह डाक्टर रायचौधुरी को कन्धे पर लादकर हवेली में ले गये ।···इरावती भागकर सामबत्ती पीसी के घर में घुस गई । सामबत्ती पीसी हाथ में मूसल लेकर दरवाजे पर पहरा दे रही है—माथा थुर देंगे, इधर यदि कोई आया !

डाक्टर रायचौधुरी और इरावती हवेली की ओर आ रहे थे । उत्तेजित भीड़ ने नारा लगाया—कोसी कम्पवाले, दुश्मन हैं !···आल्हा की ढोलकी के ताल पर कसमसाते हुए लोगों के सामने शिकार ! डाक्टर रायचौधुरी को घेरकर मारने लगे ।

—जीत भैया ! बाहर आइए !

—सर्वनाश हो गया !

—वे कोसी कैम्प को लूटेंगे । रेल लाइन तोड़ेंगे, तार काटेंगे ।

—कहता है, सभी ट्रैक्टरों में आग लगावेंगे ।

—हमारी बात कौन सुनेगा ! वहाँ सभी पार्टी के लीडर लोग हैं ।

—इरावती वहन की साड़ी पकड़ कर खींच रहा था, ठीक दुशासन की तरह !

···बॉख, बॉख, बॉख !!

—दाज्यु ! कहाँ जा रहे हो ? ठहरो !

—जिद्दा, इरावतीदाय को देखिए जाकर ! काका के पास मैं हूँ। है, बाबू लोग, आप लोग भी जाइए ! गाँव के लोगों पर शैतान सवार है।··· माँ तारा !

गाँव के सभी पढ़े-लिखे नौजवान एकमत हैं—गलत बात !

डिडि-चट, डिडि-चट···!

बढ़ो बहादुर, डर काहे का-आ-आ-आ !···इनकिलाब, जिन्दाबाद !!

जितेन्द्रनाथ दौड़ता है। उसके पीछे गाँव के नौजवानों का दल—उन्हें सही बात बतलाकर समझाना होगा !···दाज्यु, तुम मत आओ। लौटो ! बात सुनो !!

जुलूस गाँव से निकल पड़ा ! जुलूस के आगे-आगे करीब तीस-चालीस लठैत लाठी भाँज रहे हैं।···मुहर्रम का ताजिया निकला है, मानो। समसुद्दीन के गाँववाले नारा लगाने के बदले अली-अली कर रहे हैं। बालगोविन मोची, चमार टोली के सभी ढोल बजानेवालों को हुक्म देता है—बाजा बन्द नहीं हो ! ठाकुरबाड़ी के पण्डित सरवजीत कहते हैं—बीच-बीच में गोध्वनि भी कीजिए—बाँ-आँ-आँ !!···चर-र-र-र-र-र्र ढिन्नर, डिग-डिग-डिग-दि-ढिन्नर ! अली-अली।···रद्द करो। कोसी कैम्प—तोड़ दो। गाँव हमारा—छोड़ दो। दुलारीदाय···! बाँ-आँ-आँ !! डिडि-चट, डिडि-चट···! अर्जी हँवँलदाँर क्याँ करेगाँ अकेलाँ ? आने दो, नाराँ सुनकँर भाँगेगाँ दुम दबाँकर ! ए ! काँग्रेस का झण्डा आगे रखो !···मकबूल को क्या हुआ, अपनी पार्टी के लोगों को क्या कह रहा है ?···हसुवा-हथौड़ा वाला झण्डा समेटता है काहे ?···बढ़े चलो ! छुत्तो, गरुड़धुज और रोशन

बिरवाँ बैलगाड़ी पर खड़ा है !

त्र-र-र-र-र र्र-ढिन्नर, ढिग-ढिग-ढिग-ढि-ढिन्नर···!!

—कौन हैं वे लोग ?

—गाँव के पढ़े लिखे लुच्चे हैं।···कम्फ की छोंड़िया के पीछे पागल हैं सभी।

—जित्तनबाबू !···जित्तन भी है ? तब, ठीक है। लगाओ नारा—जित्तन हमारा, दुश्मन है !!

जितेन्द्रनाथ हाँफते हुए जुलूस के सामने जाकर खड़ा हो जाता है—भाइयो !

—साला ! लीडरी करने आया है। मारो ढेला कस के।

—भाइयो। डरने की क्या बात ? उसके साथ सिर्फ एक कोड़ी लुच्चे-लहँगड़े हैं। ···मकबूल की पार्टी का एक कामरेड पूर्णियाँ से खबर ले आया है, वह जुलूस से अपनी पार्टी के लोगों को अलग कर रहा है—गलत कदम ! झण्डा समेटो !!

—भाइयो ! सुनिए !

—वाँ-आँ-आँ !! जित्तन हमारा, दुश्मन है। दुश्मन नम्बर, एक है।··· मारो ढेला, रोड़ा तिकाकर !

मँगनीसिंह···प्रेमजीत को पहला ढेला लगा !···सिर से खून बहने लगा। परमा, शैलेन्दर, त्रिवेणी और उपेन्द्र, जितेन्द्रनाथ को चारों ओर से बचा रहे हैं। चमार टोली का ननकेसर चमार ताल ठोककर नाचता हुआ आगे बढ़ आता है, जितेन्द्र के बालों को पकड़ कर खींचता है—स्साला !

मकबूल चिल्लाता है—साथियो ! यह क्या कर रहे हो ?

—इस साले को भी मारो। दगाबाज है। दाढ़ी पकड़ कर नोचो। सालो, यहाँ जमीन जा रही है हमलोगों की और तुम लोग लीडरी करते हो ?··· कभी आगे, कभी पीछे !!